॥ श्रीः ॥

शालहोत्रसंग्रह ।

(चित्रदर्पण सहित)

जिसको

तालुकेदार श्रीकेशवसिंहजी साहब तालुके तिआरिने

नानाप्रकारके मनहरन, सरस, सुंदर, सुगम भावभरित

छंदोंमें रचना किया ।

जिसमें

घोडोंके क्रयविक्रय, गुणदोष, शुभाशुभ, लक्षण कुलक्षण, अंग व प्रत्यंग,
निरीक्षण तथा उनके विषयक यावत् बातें और सम्पूर्ण रोगोंके
उपचार विचार निदान चिकित्सा विधि विधान सहित
विस्तारपूर्वक वर्णित हैं ।

वही

जगत्के परमोपकारार्थ,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

ज्येष्ठ संवत् १९६३, शके १८२८.

भूमिका।

सोरठा।

विविध ग्रंथकरसार, निजपर अनुभवहू सहित।
बुधिवर कविन विचार, मथि केशव अम्मृत लह्यो॥

महाशय! हमारे पूर्व ऋषि ब्रह्मर्षि प्रणीत सर्वमान्य संस्कृत ग्रंथ, संस्कृत पठन पाठना भावसे प्रायः लुप्तप्राय होतेजाते हैं; जिससे हमारी विद्या बुद्धि ज्ञान विचार क्रमशः उन्हींके साथ स्वाहा होरहेहैं। हममें क्या करनेकी शक्तिथी और वर्तमान कालमें हम कैसे अशक्त निर्जीव होरहे हैं, केवल विद्याभावसे जिस देशमें जिन मनुष्योंमें विद्यागुणकी गौरवता है। वही देश वही मनुष्य धन्यहै, लक्ष्मी महारानी उन्हींके आगे हाथ बांधे खड़ी है. बड़े विचारका स्थल है कि, विद्याकी वृद्धि कैसे हो? सो परमात्माकी कृपासे अब आपही आप नित्यप्रति लाखों ग्रंथ ऐसी युक्तिसे छपते और वृद्धिपाते हैं कि जो पुस्तक कुछही पूर्व आपको ५० रु० में भी समयपर इच्छातुरूप न मिलतीथी अब वर्तमान कालमें वैसीही नहीं किन्तु उससे सौ गुणा उत्तम पुस्तक रुपया दो रुपयेमें घर बैठे मिलजाता है। दृष्टान्तमें बंबईका "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय प्रत्यक्ष है, भाषा या संस्कृतकी कोई भी पुस्तक मँगा परीक्षाकर लीजिये बहुतही कम खर्चमें मिलेगा. उससे ईश्वरेच्छासे अब विद्वान् और गुणवान् होना कोई बहुत कठिन काम नहीं रहा, बहुत ही सुगम और सरल होगयाहै।

यह जो पुस्तक "शालहोत्रसंग्रह" आपके दृष्टिगोचर है। यह श्रीमान् तअल्लुकेदार श्रीकेशव सिंहजी साहब तअल्लुकै-तिअरि। तहसील-मोहाना। जिला-उन्नाव रचित और संगृहीत है। यह पुस्तक दोहा, चौ०,सोरठा, छप्पय, कुण्डलिया, कवित्त, सवैया, हरिगी०, पद्धरी, भुजंगप्रयात, नरेन्द्र, तोमरादि नानाप्रका-

अनुभविक और विचित्र चमत्कारिक प्रयोगों तथा परमपूज्य धर्मधुरंधर ऋषि मुनि, पाण्डव, नकुल, शालहोत्रादि महान् ऋषियोंकी उक्तियुक्तिसे परिपूर्ण ह। पूरा ग्रंथ दो काण्डोंमें विभक्त है ।

प्रथमकाण्डमें-अश्वोत्पत्तिसे आदिले जन्मफल, रात्रिदिवस जन्मफल, वर्णविचार, गणविचार, आयुप्रमाण,वाजो उत्पत्तिदेश, उत्तम नीच अनेकन प्रकारके रंग, सितारे पेशानी दोष, खरीद समयकी शुभाशुभचेष्टा, श्यामताल्ह, भौंरी, शुभाशुभ अंगपहिचान, दंतविचार युद्धसमय घोड़ा साजनके शुभाशुभ लक्षण, वेगवर्णन, सवारीवर्णन, कदमवर्णन आदि सैकड़ों परमोपयोगी विषय वर्णित हैं ।

द्वितीयकाण्डमें-घोड़ेकी सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा (सर्वप्रकारके रोगों और आधि व्याधि आदि बहुतेरी दैहिक दैविक निमित्तोंकी) विस्तारपूर्वक विधि विधान सहित वर्णित है तथा अश्व ताजा तयार तेज चालाक बनानेके अनेकन चूर्ण और मसाले हैं । घोड़ेकी सम्बन्धी कोई बात शेष नहीं है ।

इसप्रकार यह सर्वथा श्रेष्ठ और परममान्य अपूर्व चमत्कारिक सिद्ध शालहोत्र ग्रंथ है;यदि निरंतराभ्यासी भारतवासी सुजन जन चाहिंगे तो वोह इससे अनायासही कुछ गुण ढंग सीखकर बड़े भारी द्रव्योपार्जनके भागी बनैंगे । प्रायः लोगोंके व्यवहारमें घोड़ा आताहै, तिसमें भारतवासी तो घोड़ेका रखना बड़ाही उच्चतर समझते हैं । यह परमदुष्प्राप्य दुर्लभ ऋषि मुनि प्रोक्त ग्रंथ (घोड़ाके क्रय विक्रय और व्यवहारमें आपहीके लिये परम साक्षी और सच्चा सहायकमित्र आन प्राप्त हुआ है । स्वल्प मूल्यहीमें कड़ा दुर्लक्षण भयानक काम शालहोत्र पास रखनेसे सहजही दमडियोंमें अवसान होता है ।

प्रकट ये कि इसग्रंथमें घोड़ोंके अनेक चित्र हैं। प्रति चित्रमें नम्बर पड़ा हुआहै, पाठक जब चाहैंगे सहजहीमें ग्रंथके पृष्ठ लिखित घोडाके नम्बरसे ग्रंथके आदि सम्मिलित चित्रदर्पणके चित्रोंमें उसी नम्बरका घोड़ा खोजलेंगे ।

घोड़ोंके व्यवसाइयोंको यह पुस्तक बहुतही उपयोगी है जो हुनर वह सर्वस्व देकरभी न पावें वह इससे अनायासही सीखैंगे । घोड़ा होते मार्गमें चलनेसे यह

पुस्तक अवश्य पास होनी चाहिये। क्या राजा क्या रंक क्या धनी क्या कंगाल, क्या साधु क्या गृहस्थ यह पुस्तक सबको समान सुखदायी है घोड़ोंके दलाल (बेचवानी) इस पुस्तकसे बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे और बड़ा लाभ उठावेंगे शुभम् ।

आपका-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

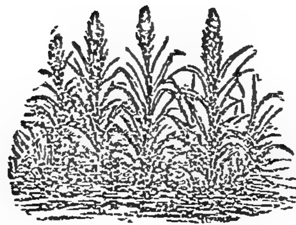
अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालय-बंबई.



शालहोत्रसंग्रहकी-

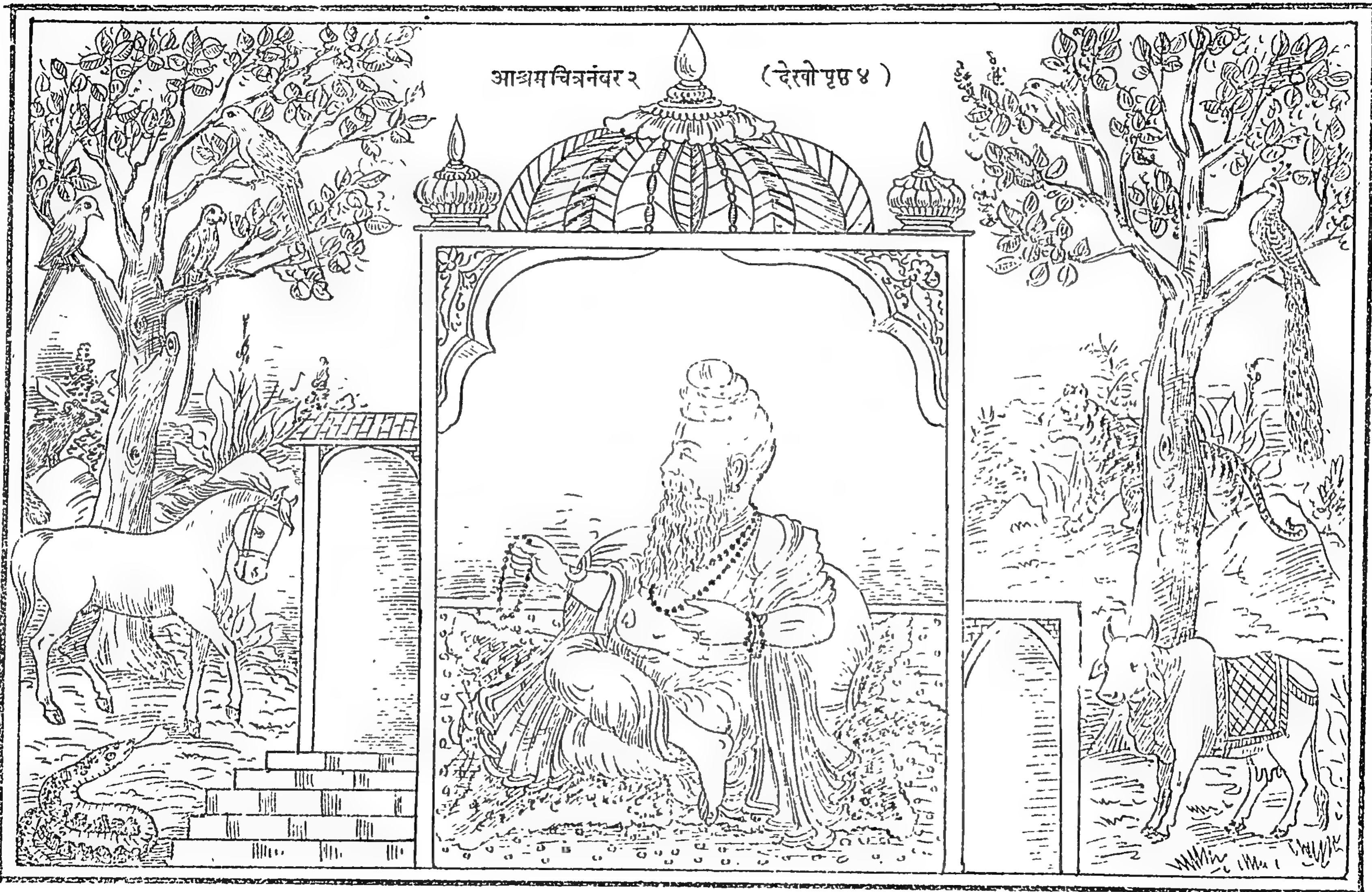
विषयानुक्रमणिका।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

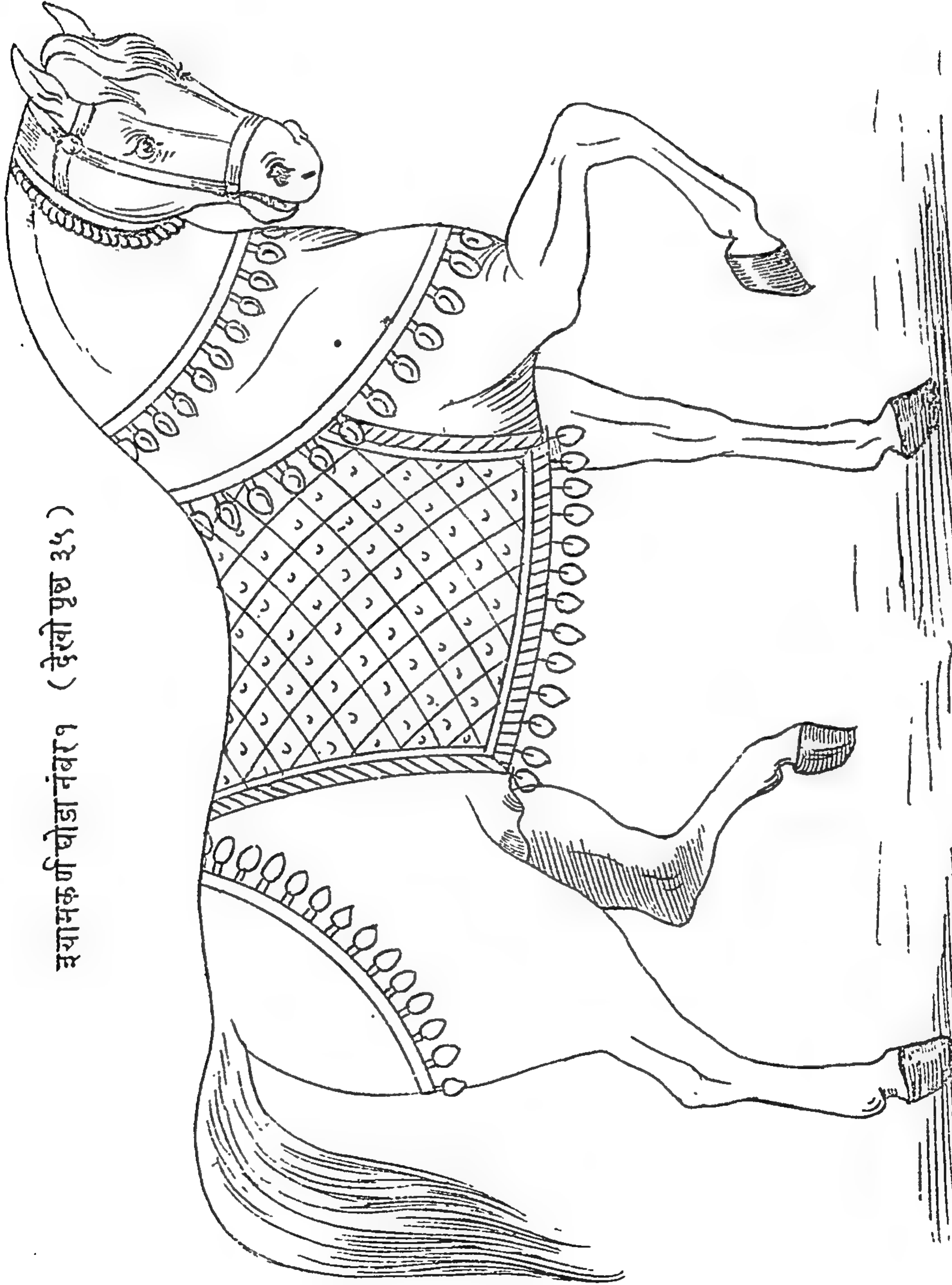




यज्ञशाला चित्र नंबर १ (देखो पृष्ठ ३)

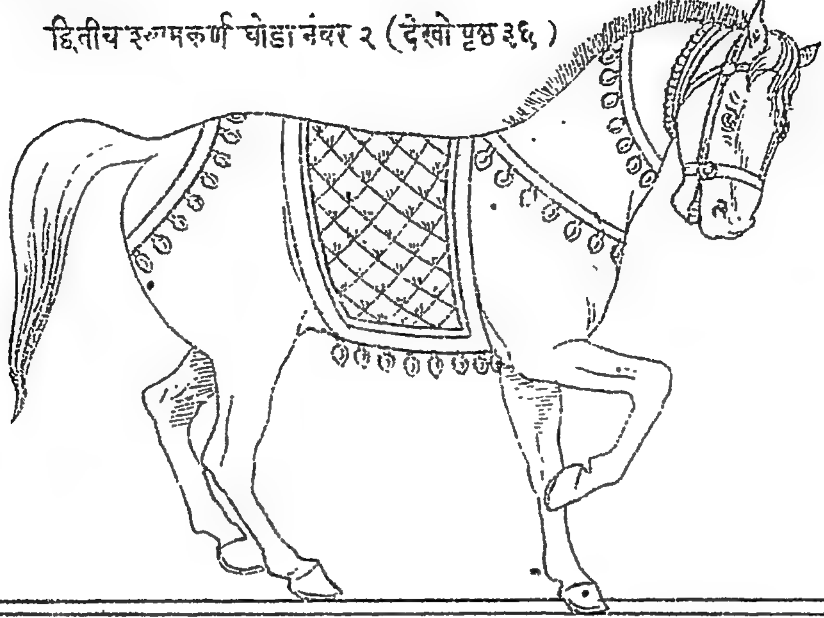


आश्रमचित्रनंबर २ (देखो पृष्ठ ४)

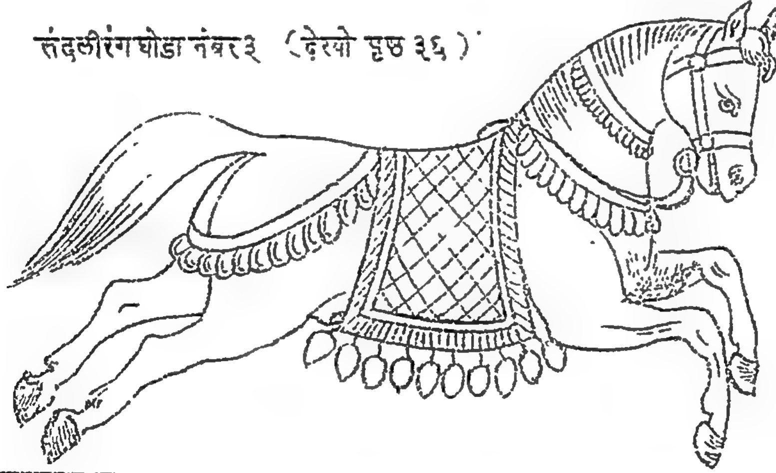


श्यामकर्णी घोडा नंबर१ (देखो पृष्ठ ३५)

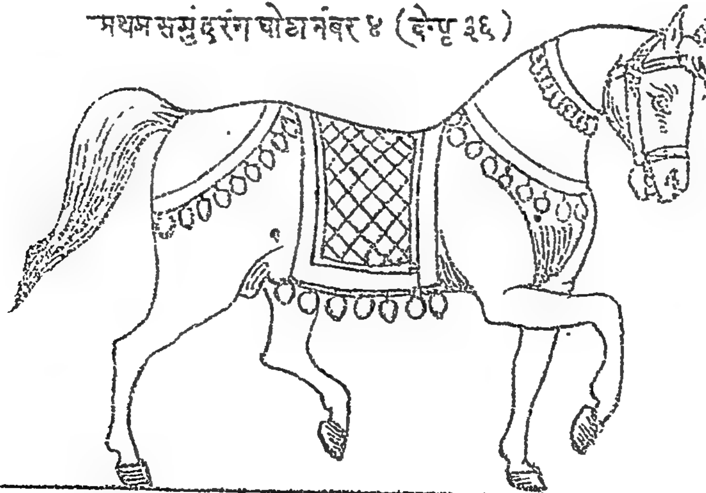
द्वितीय श्यामकर्ण घोडा नंबर २ (देखो पृष्ठ ३६)



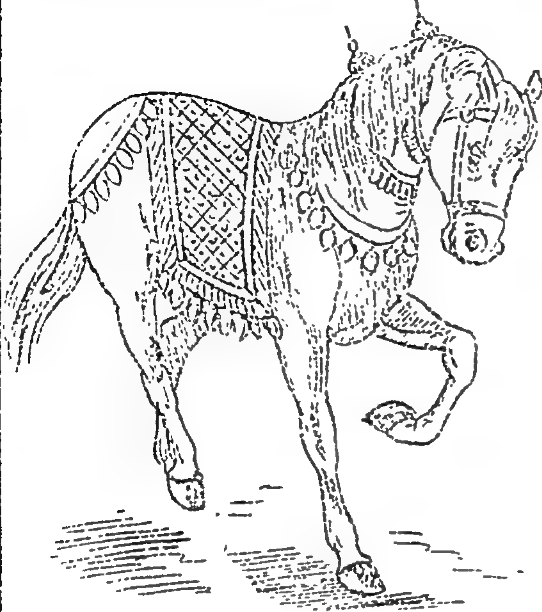
तंदुलीरंग घोडा नंबर ३ (देखो पृष्ठ ३६)



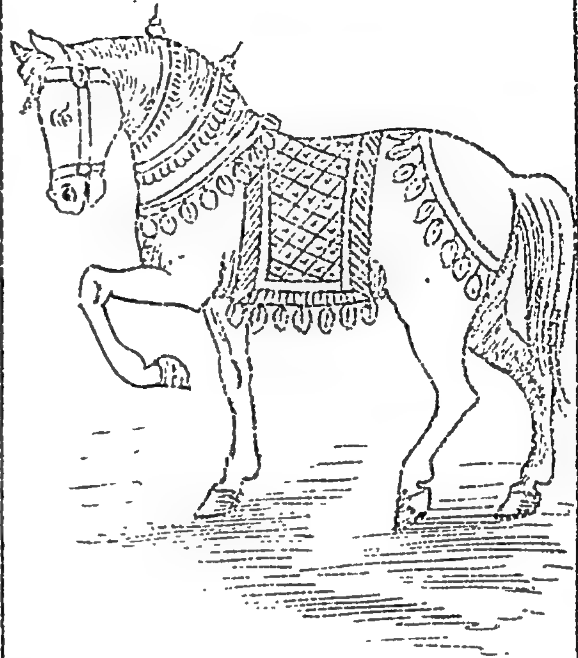
प्रथम समुंदरंग घोडा नंबर ४ (दे॰ पृ॰ ३६)



द्वितीय समंदरंग घोडा नंबर ५ (देखो पृष्ठ ३६)



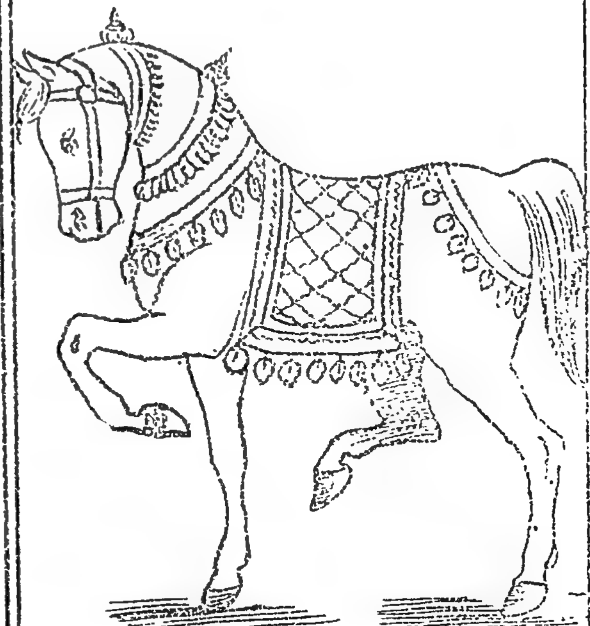
तृतीय समंदरंग घोडा नंबर ६ (देखो पृष्ठ ३६)



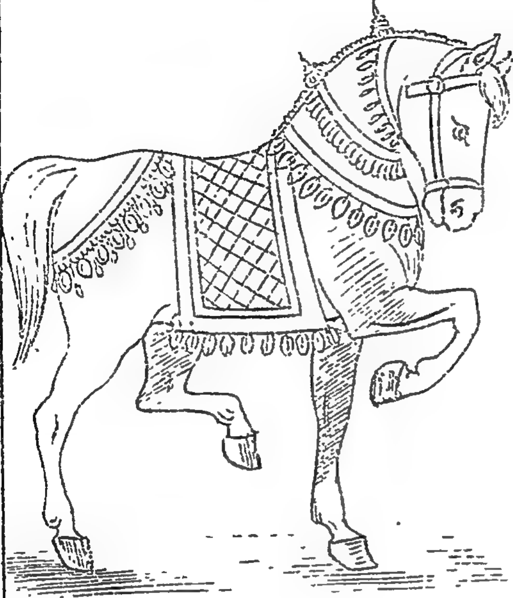
शूररंग अशुभ घोडा नंबर ७ (दे० पृ० ३६)



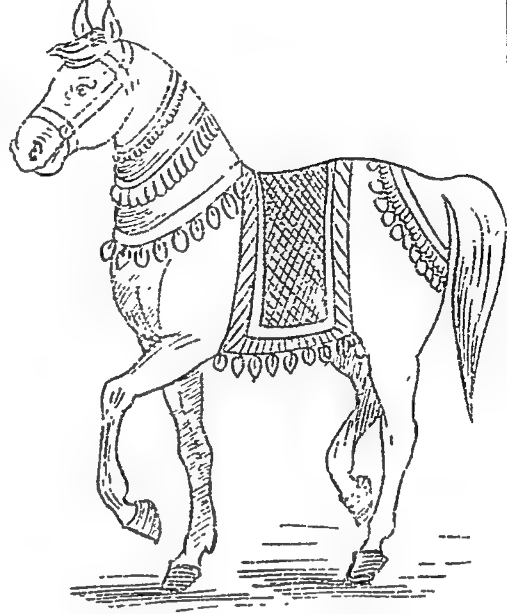
सुरखारंग शुभ घोडा नंबर ८ (देखो पृष्ठ ३७)



सुरंगगुंजारंग घोडा नंबर ९ (देखो पृष्ठ ३७)



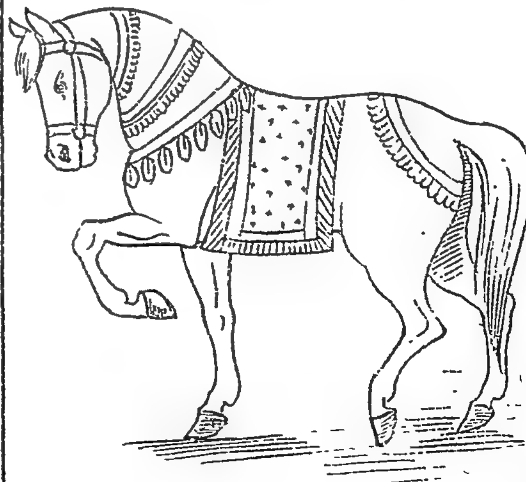
इयानसुरंग घोडा नंबर १० (देखो पृ० ३७)



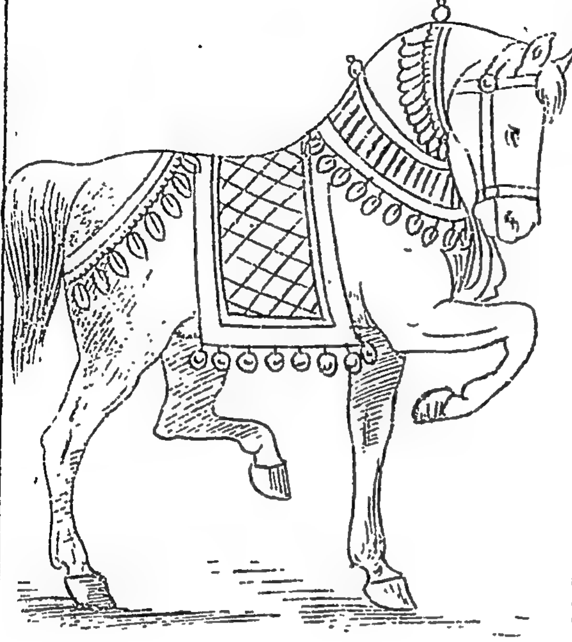
तैलसुरंग घोडा नबर ११ (देखो पृष्ठ ३७)



केहरी सुरंग घोडा नंबर १२ (देखो पृष्ठ ३७)



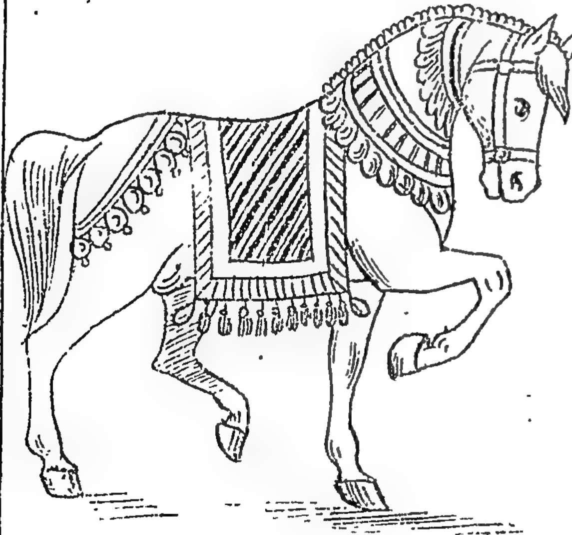
चिनीरंग घोडा नंबर १३ (देखो पृष्ठ ३७)



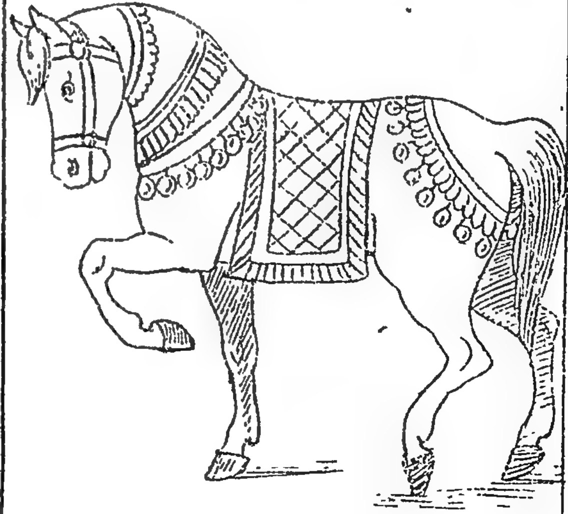
चौघररंग घोडा नंबर १५ (दे॰ पृ॰ ३७)



संजाफरंग घोडा नंबर १४ (देखो पृष्ठ ३७)



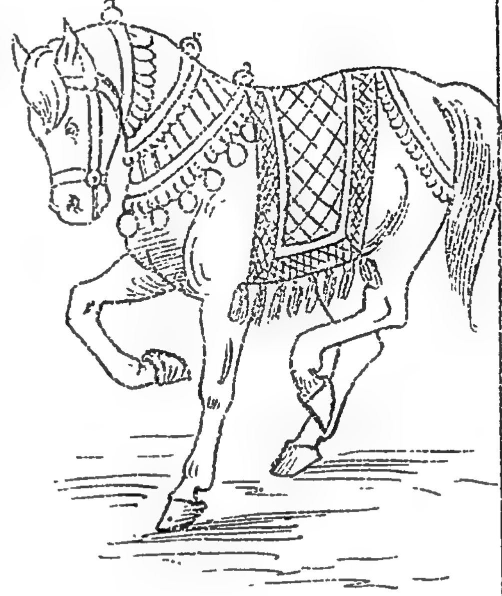
नीलरंग घोडा नंबर १६ देखो पृष्ठ ३८)



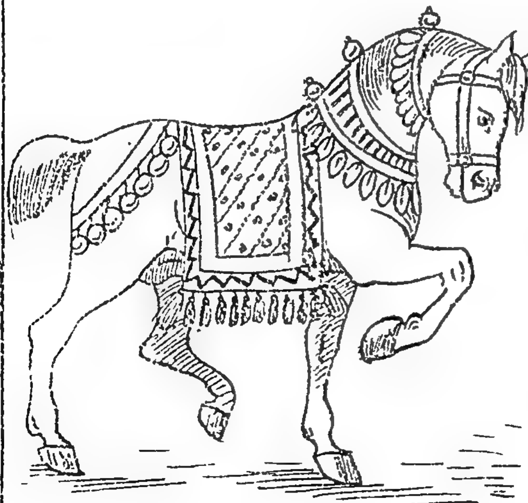
मकसी रंग घोडा नंबर १७ (देखो पृष्ठ ३८)



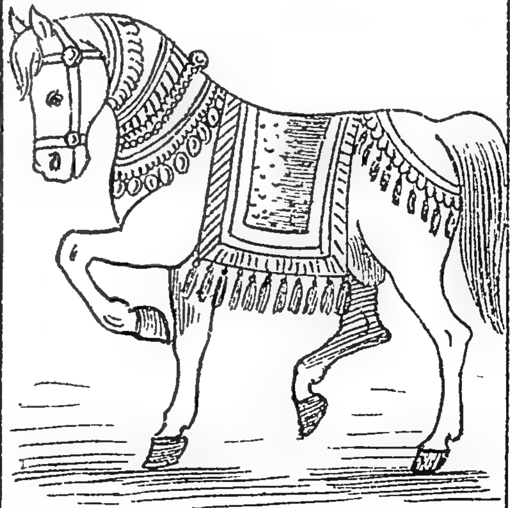
तामडा रंग घोडा नंबर १९ (देखो पृष्ठ ३८)



हरयल रंग घोडा नंबर १८ (देखो पृष्ठ ३८)



अरुणवर्ण घोडा नंबर २० (दे॰ पृ॰ ३८)



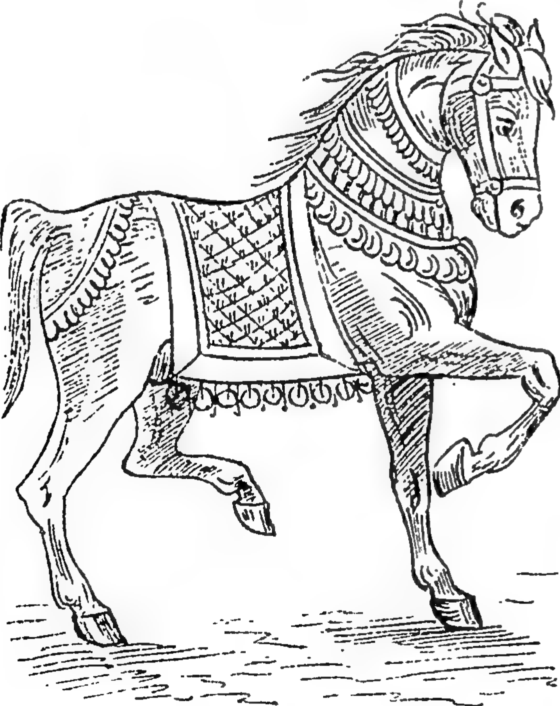
श्यामवर्ण घोडा नंबर २१ (देखो पृष्ठ ३८)



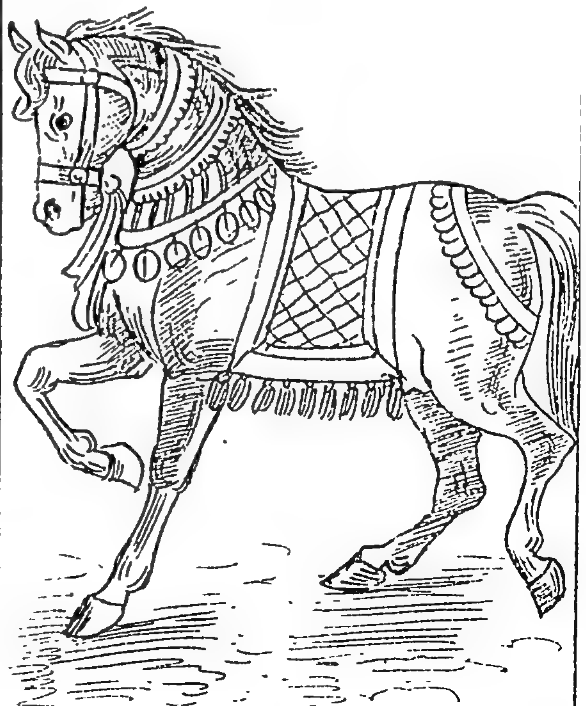
भोमियारंग घोडा नंबर २३ (दे॰ पृ॰ ३८)



अबलखरंग घोडा नंबर २२ (देखो पृष्ठ ३८)



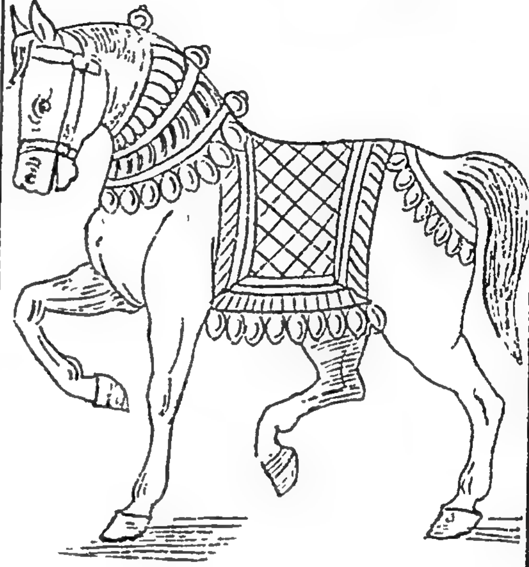
मटिहारंग घोडा नंबर २४ (दे॰ पृ॰ ३९)



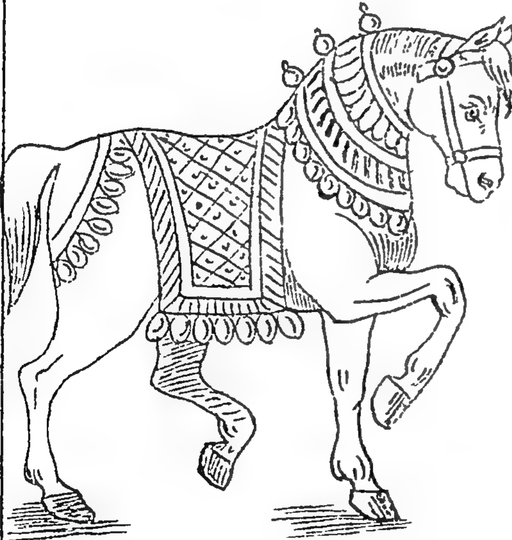
महुवारंग घोडा नंबर २५ (देखो पृष्ठ ३९)



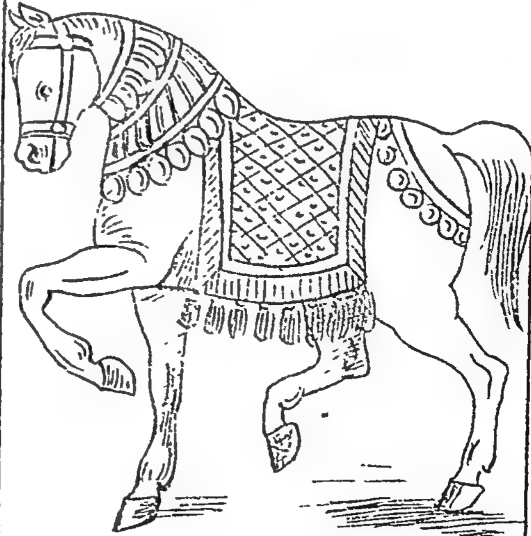
फुलवारीरंग घोडा नंबर २७ (देखो पृष्ठ ३९)



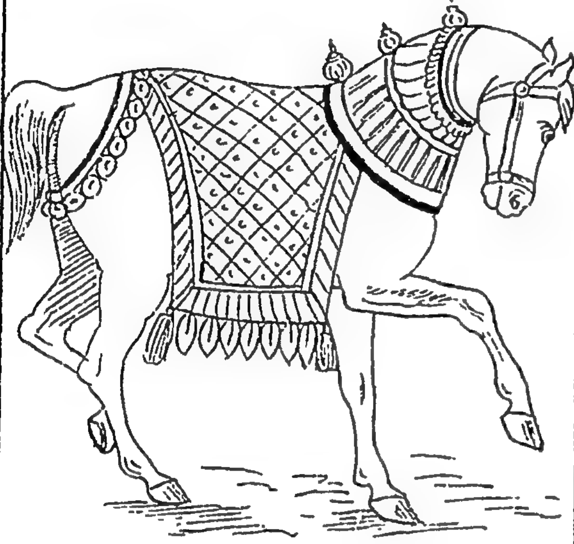
कुल्लारंग घोडा नंबर २६ (देखो पृष्ठ ३९)



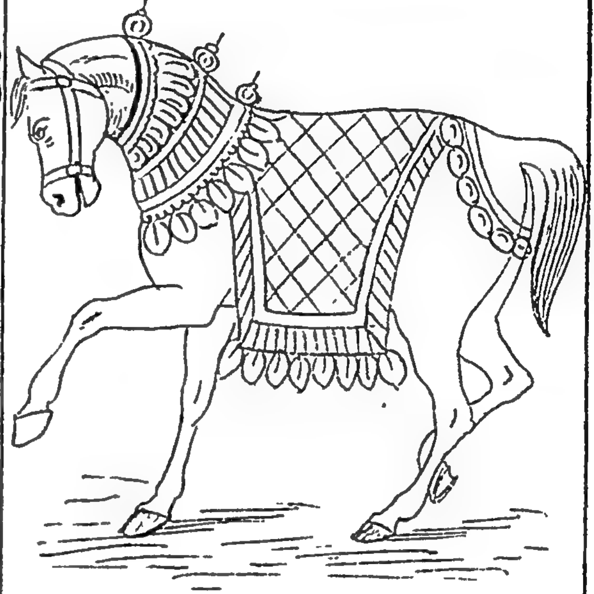
कुमईतरंग घोडा नंबर २८ (देखो पृ० ३९)



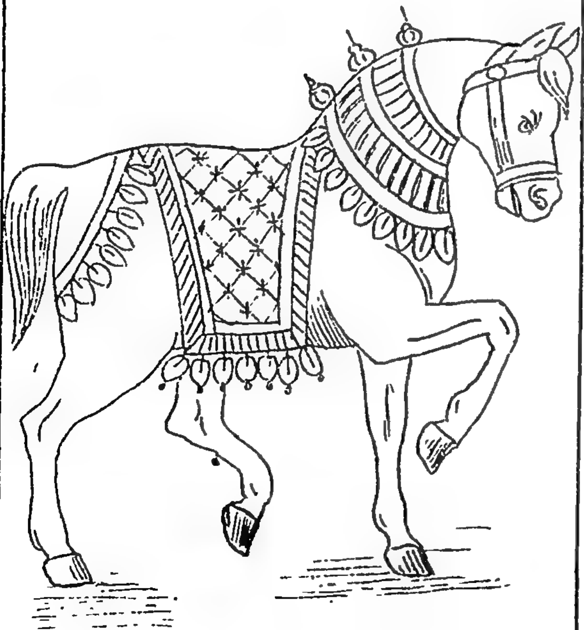
तेलिया कुमयतरंग घोडा नंबर २९ (देखो पृष्ठ ३९)



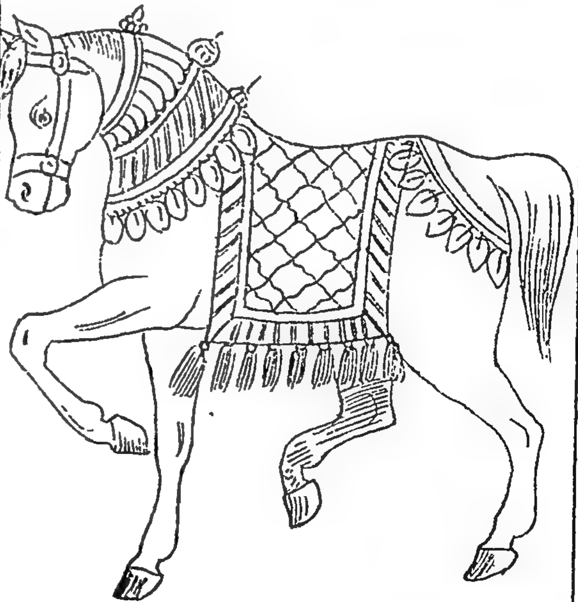
मुश्कीरंग घोडा नंबर ३१ (देखो पृष्ठ ३९)



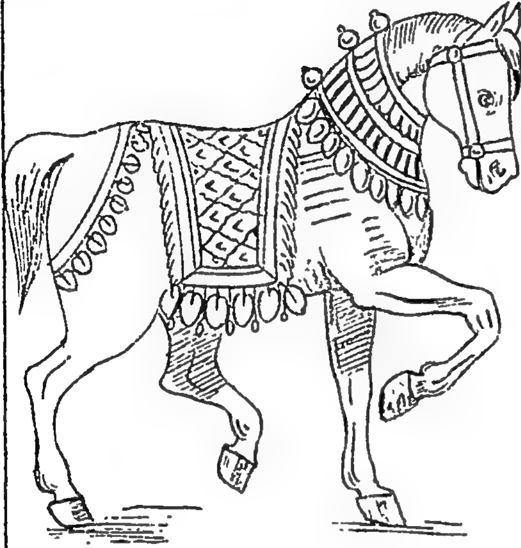
टोपरारंगघोडा नंबर ३० (दे-पृष्ठ-३९)



नोकरारंग घोडा नंबर ३२ (देखो पृष्ठ ४०)



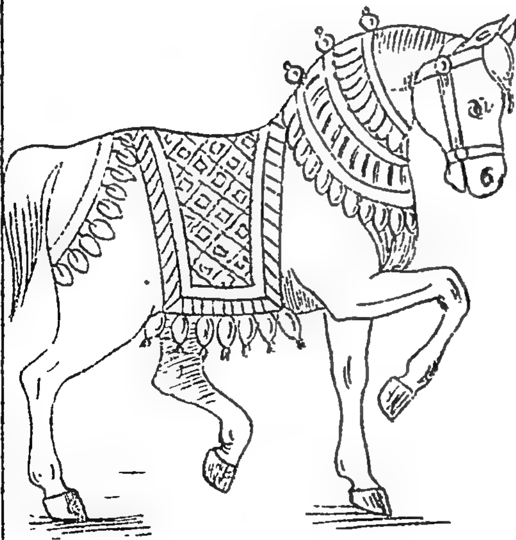
सिरगा रंग घोडा नंबर ३३ (देखो पृष्ठ ४०)



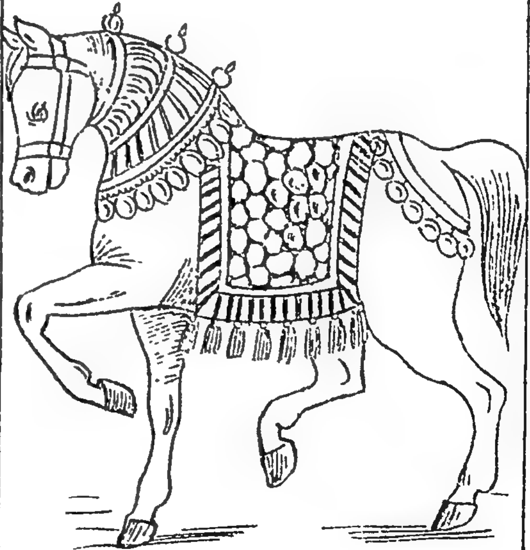
सवजा सारो रंग घोडा नंवर ३५ (देखो पृष्ठ ४०)



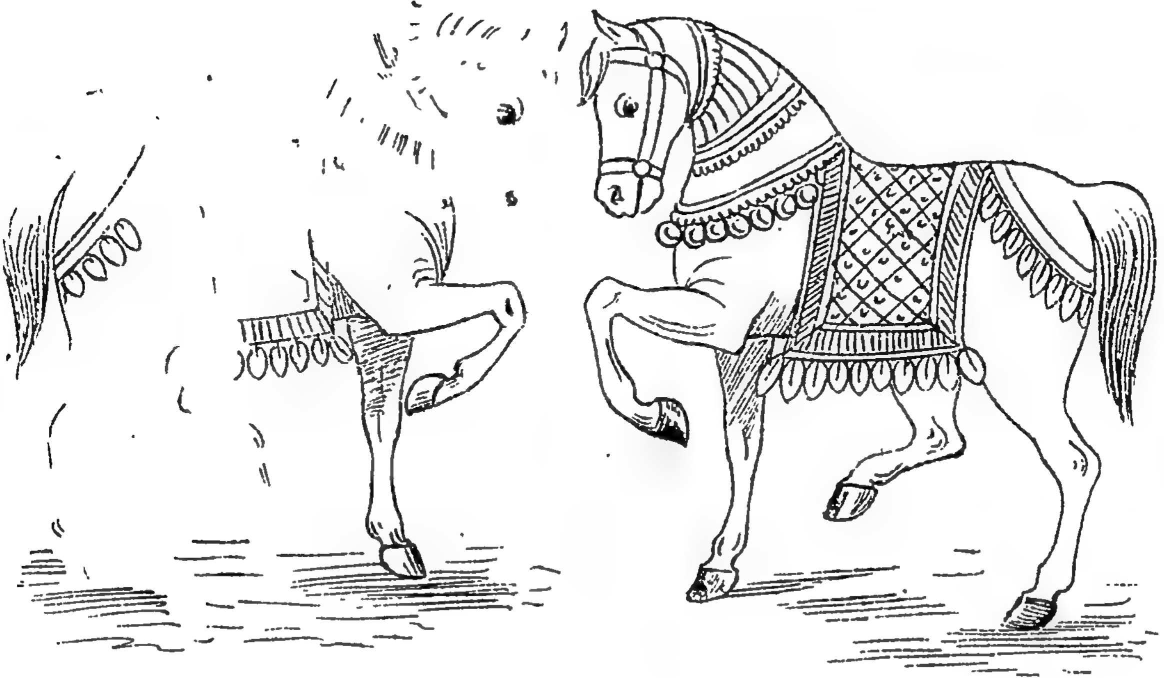
द्विविध सब्जा रंग घोडा नंबर ३४ (दे॰ पृ॰ ४०)



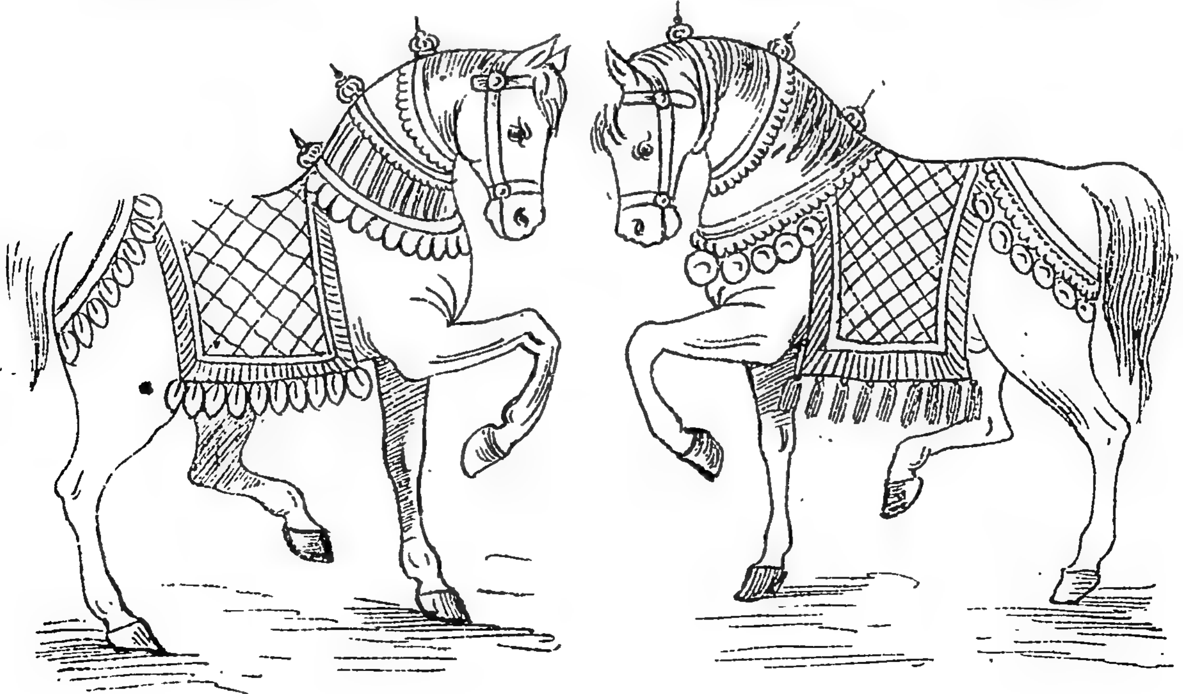
सबूजा घोडा नंबर ३६ (देखो पृष्ठ ४०)



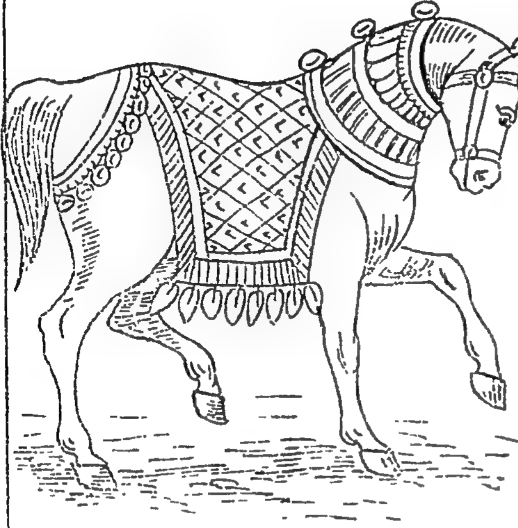
केहरीरंग घोडा नंबर ३७ (देखो पृष्ठ ४१)   बदामीरंग घोडा नंबर ३९ (देखो पृष्ठ ४२)



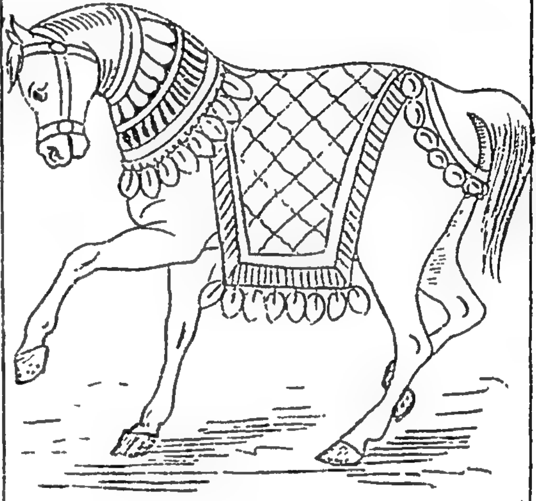
सिराजीरंग घोडा नंबर ३८ (देखो पृष्ठ ४१)   बोस्तारंग घोडा नंबर ४० (देखो पृ. ४२)



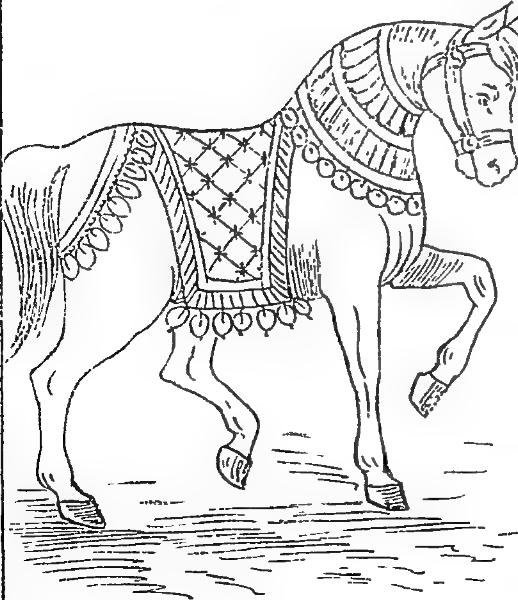
खंजरेटरंग घोडा नंबर ४१ (देखो पृष्ठ ४२)



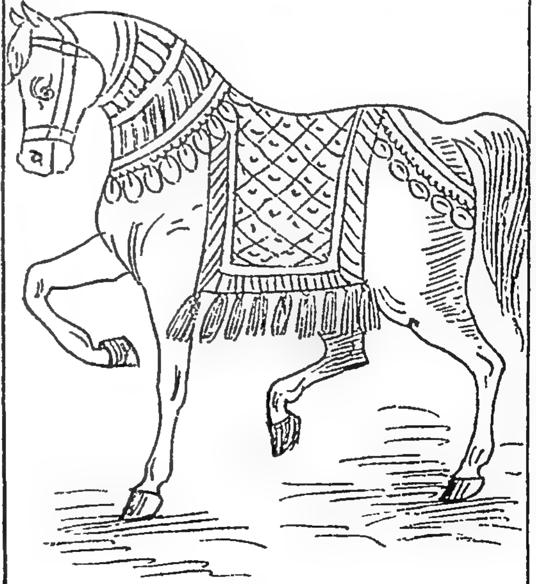
बिल्लौररंग घोडा नंबर ४३ (देखो पृष्ठ ४२)



कागजीरंग घोडा नंबर ४२ (देखो पृष्ठ ४२)



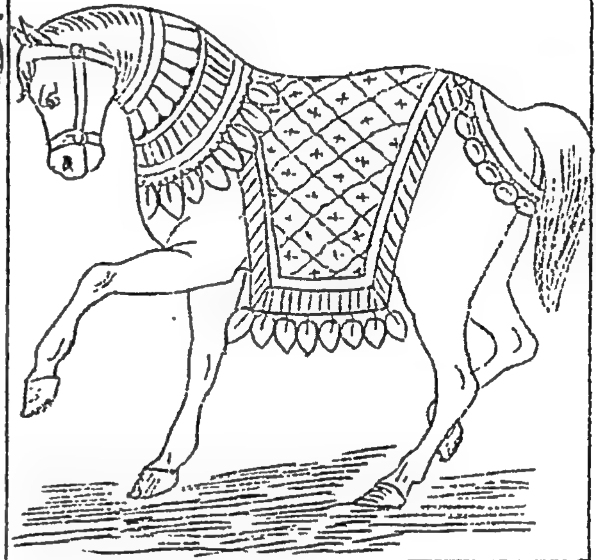
कपूरीरंग घोडा नंबर ४४ (देखो पृष्ठ ४२)



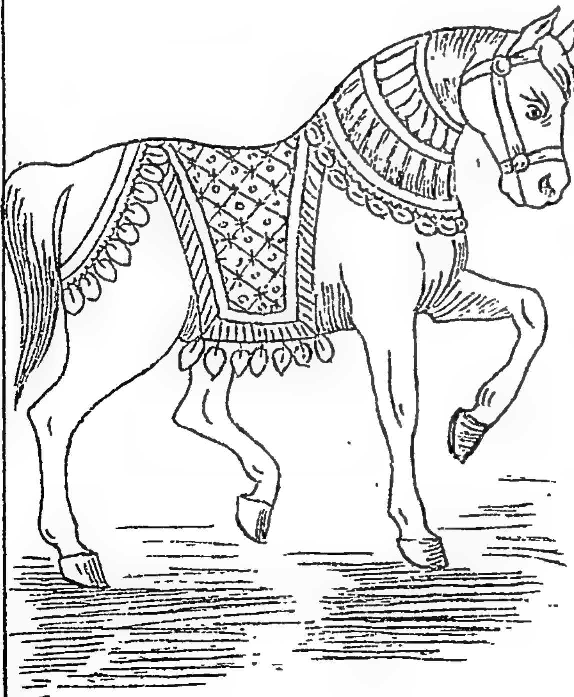
तूसीरंग घोडा नंबर ४५ (देखो पृष्ठ ४२)



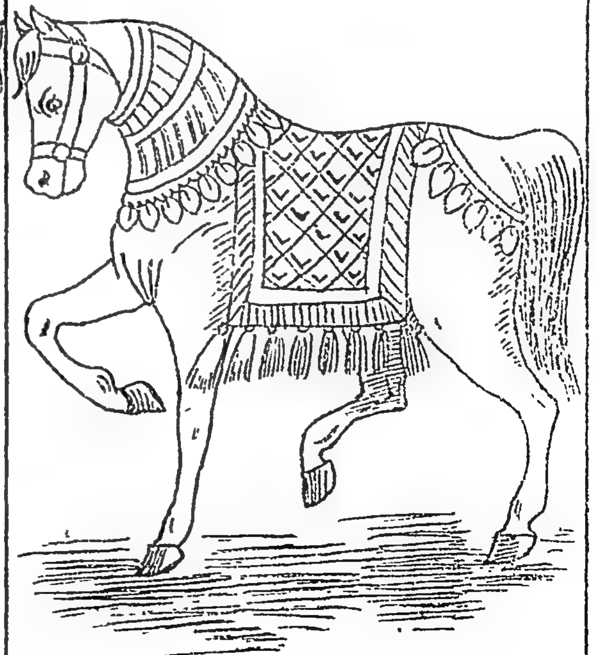
बिंगरंग घोडा नंबर ४७ (देखो पृष्ठ ४३)



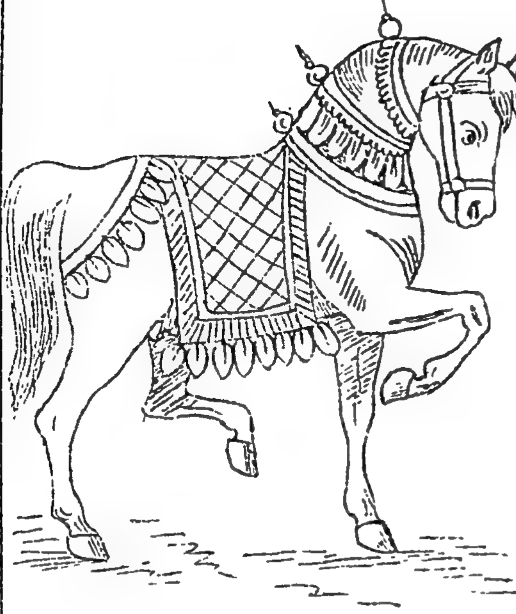
धूरिया रंग घोडा नंबर ४६ (देखो पृष्ठ ४२)



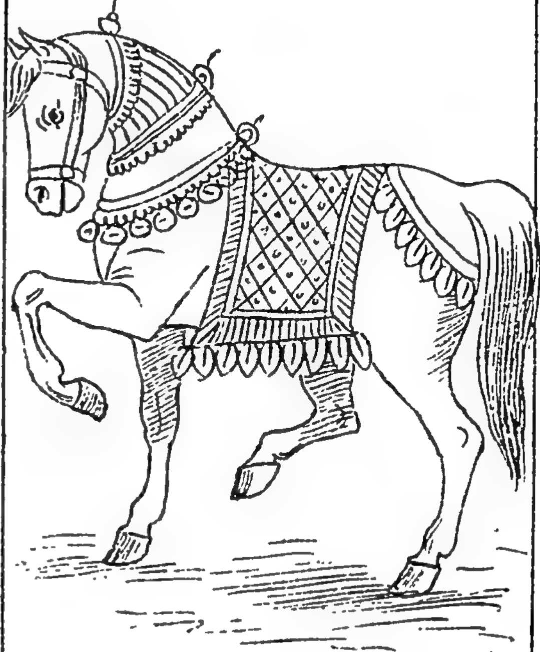
कबूतरंग घोडा नंबर ४८ (देखो पृष्ठ ४३



रमनीरंगघोडा नंबर ४९ (देखो पृष्ठ ४३)



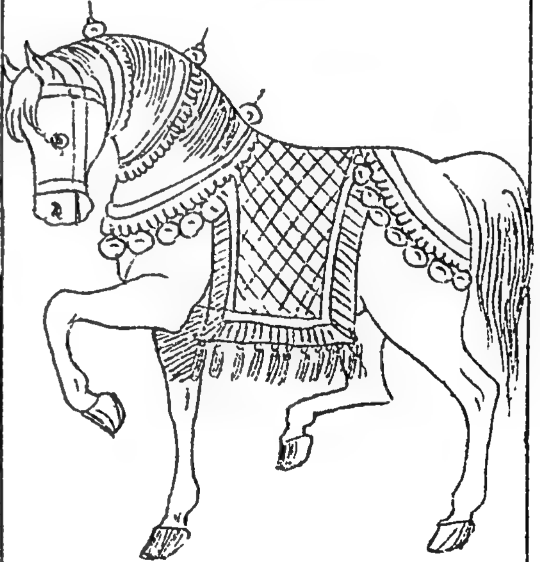
चालघाररंगघोडा नंबर ५१ (देखो पृ-४३)



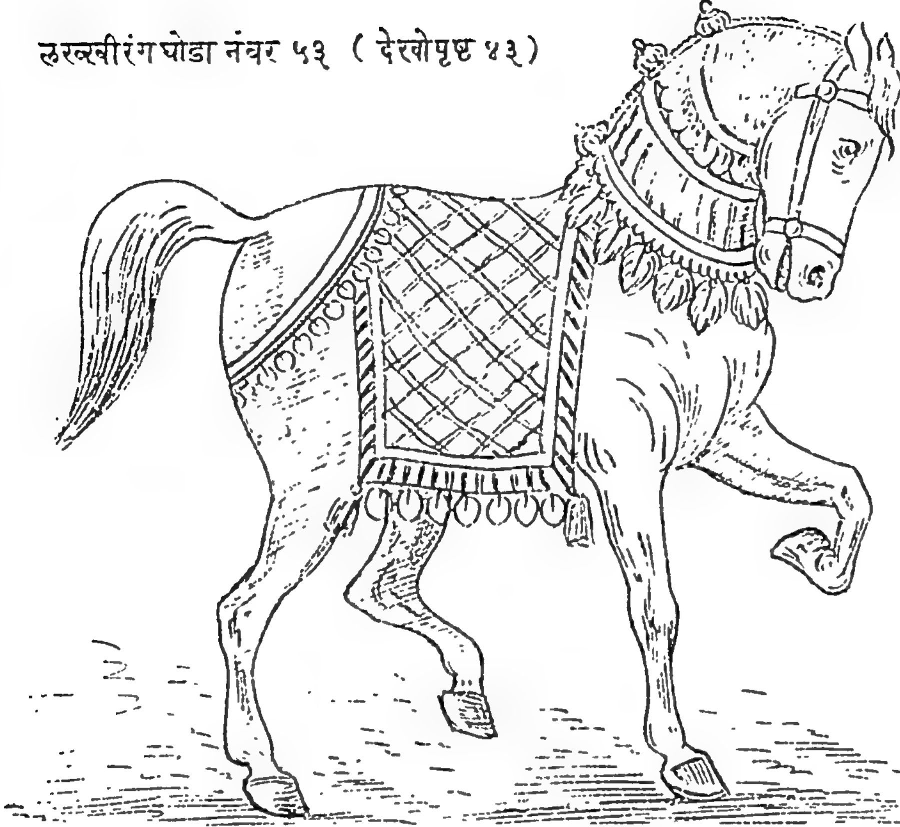
कल्याणीरंगघोडा नंबर ५० (देखो पृ-४३)



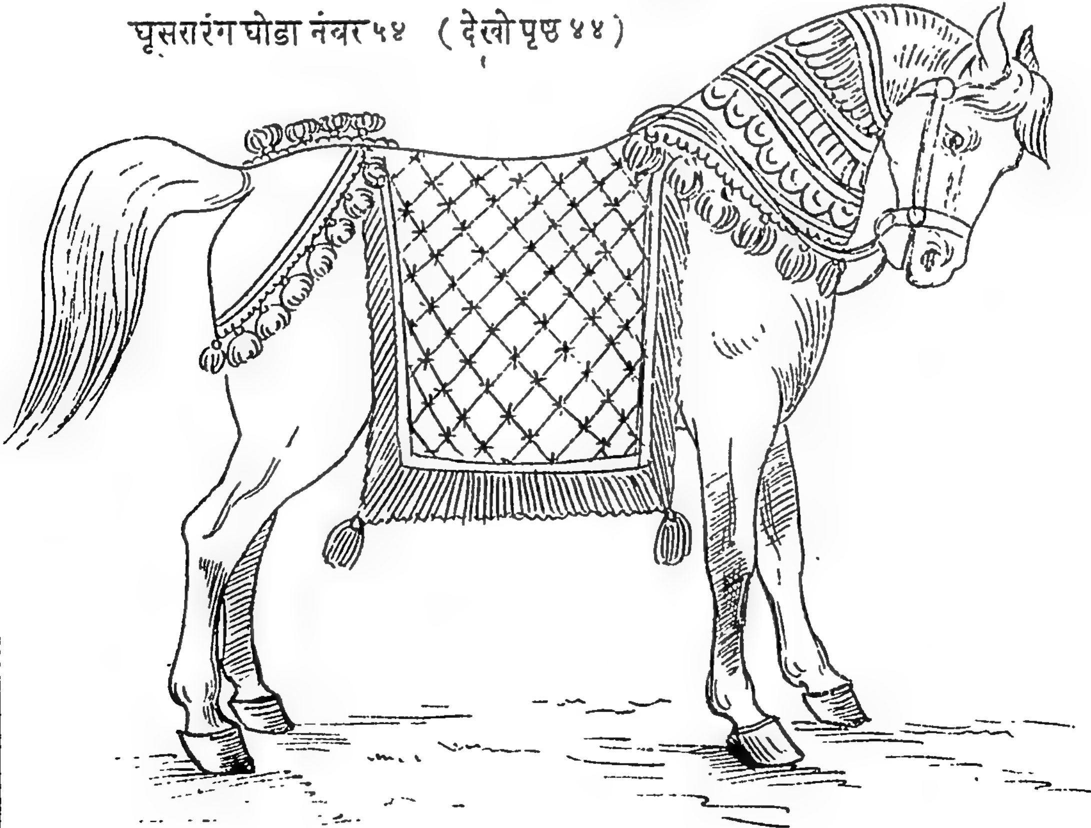
चंम्पारंग घोडानंबर ५२ (देखो पृष्ठ ४३)



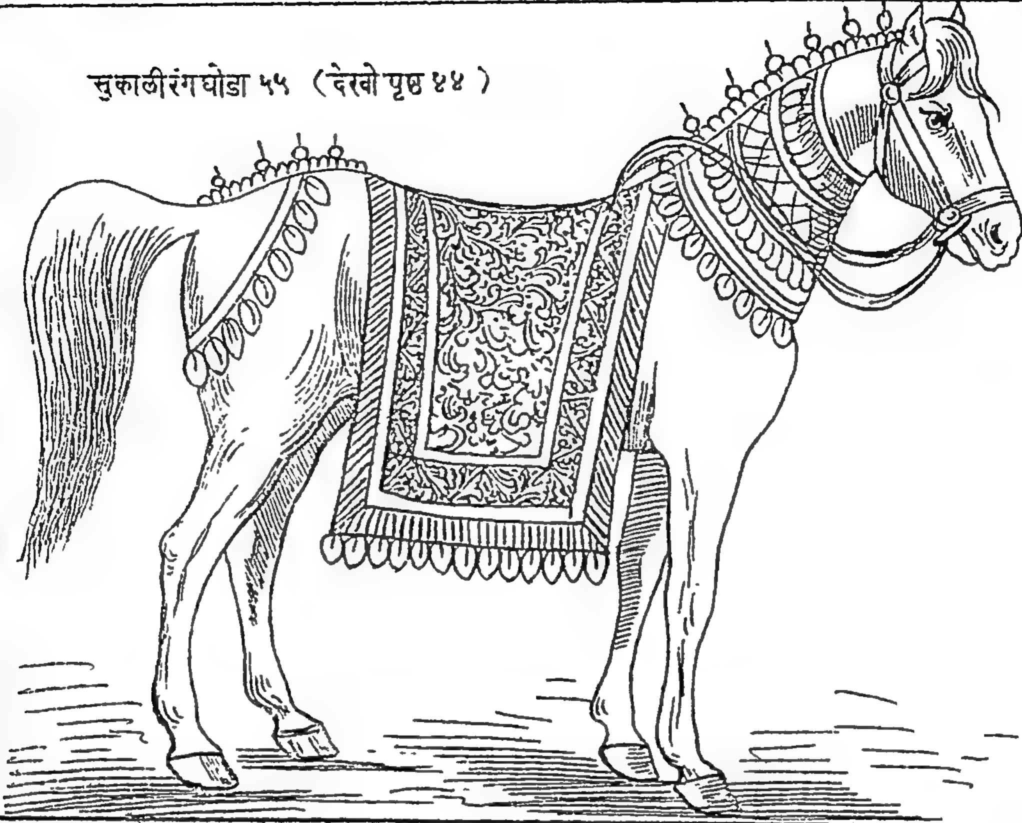
लखवीरंग घोडा नंबर ५३ (देखोपृष्ठ ४३)



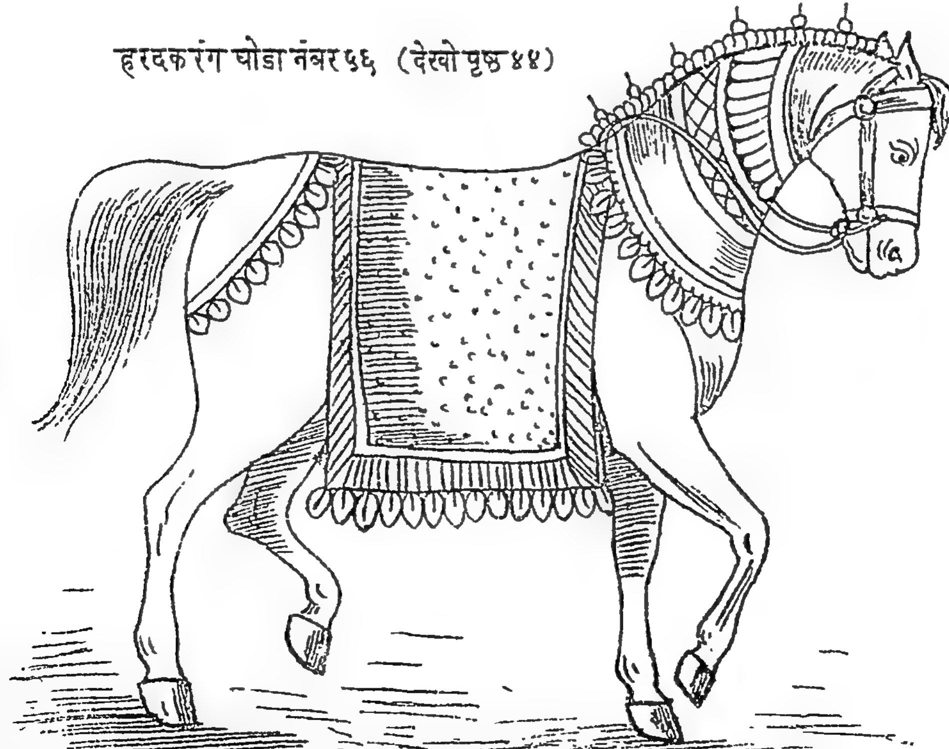
घूसरारंग घोडा नंबर ५४ (देखो पृष्ठ ४४)



सुकालीरंगघोडा ५५ (देखो पृष्ठ ४४)

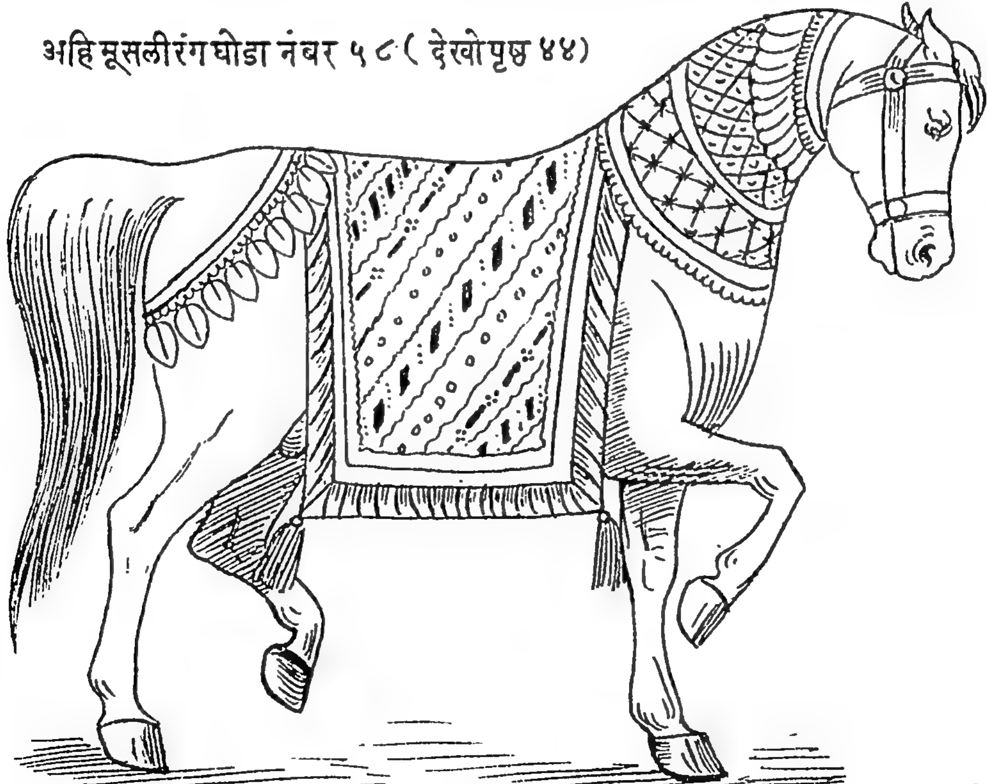


हरदकरंग घोडा नंबर ५६ (देखो पृष्ठ ४५)



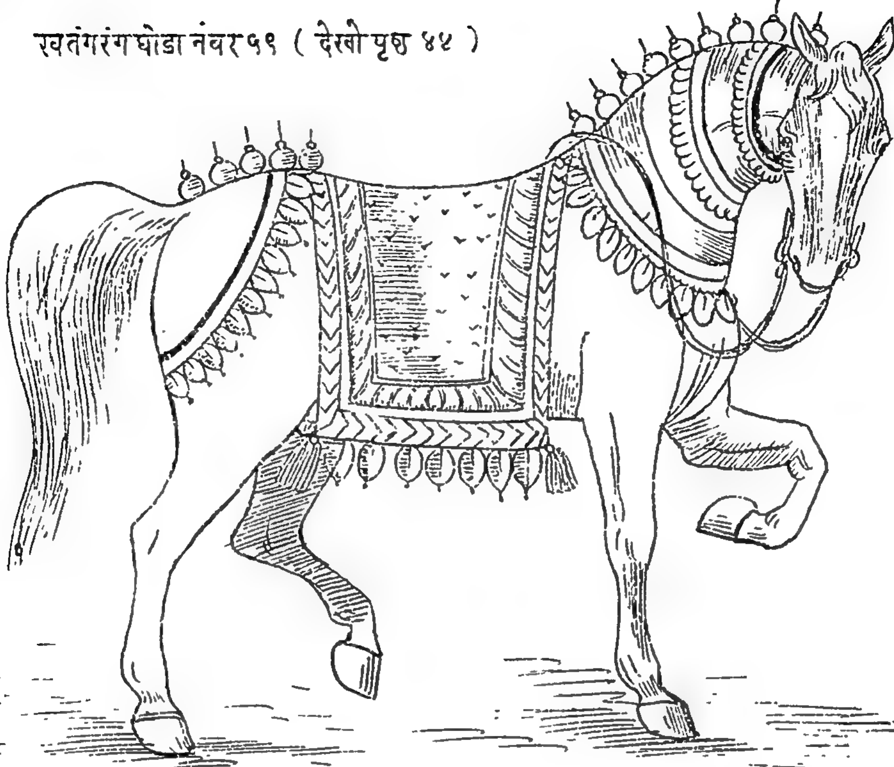


मूसलीरंग घोडा नंबर ५७ (दे॰पृ॰४५)

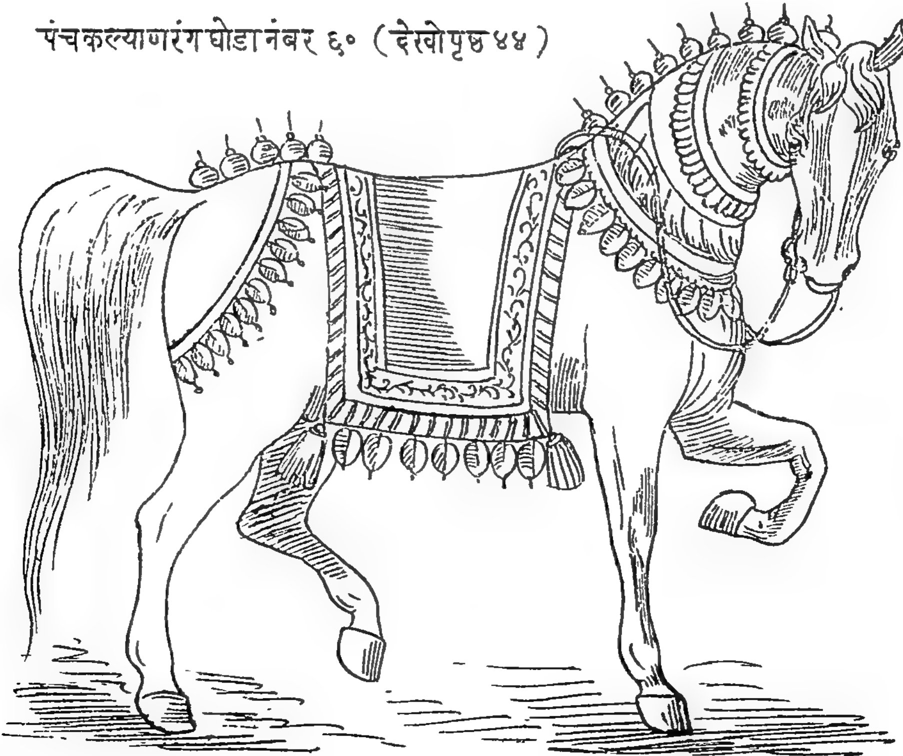


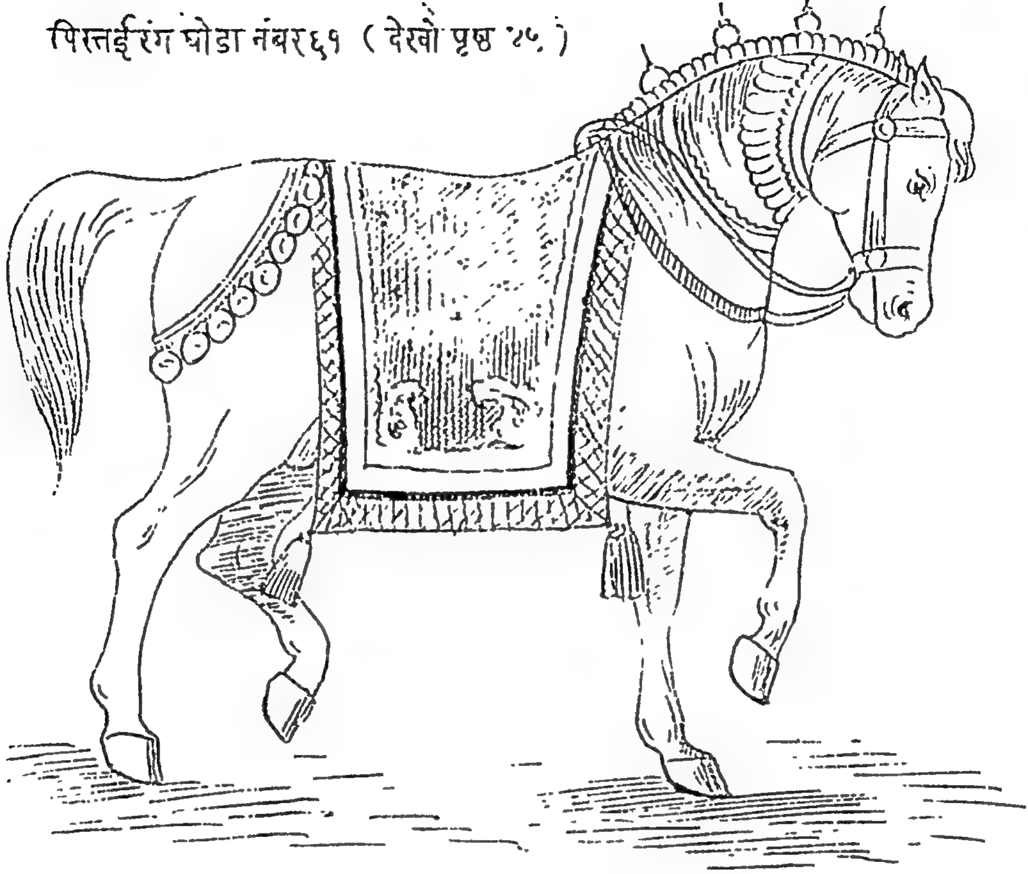
अहिमूसलीरंग घोडा नंबर ५८ (देखोपृष्ठ ४४)

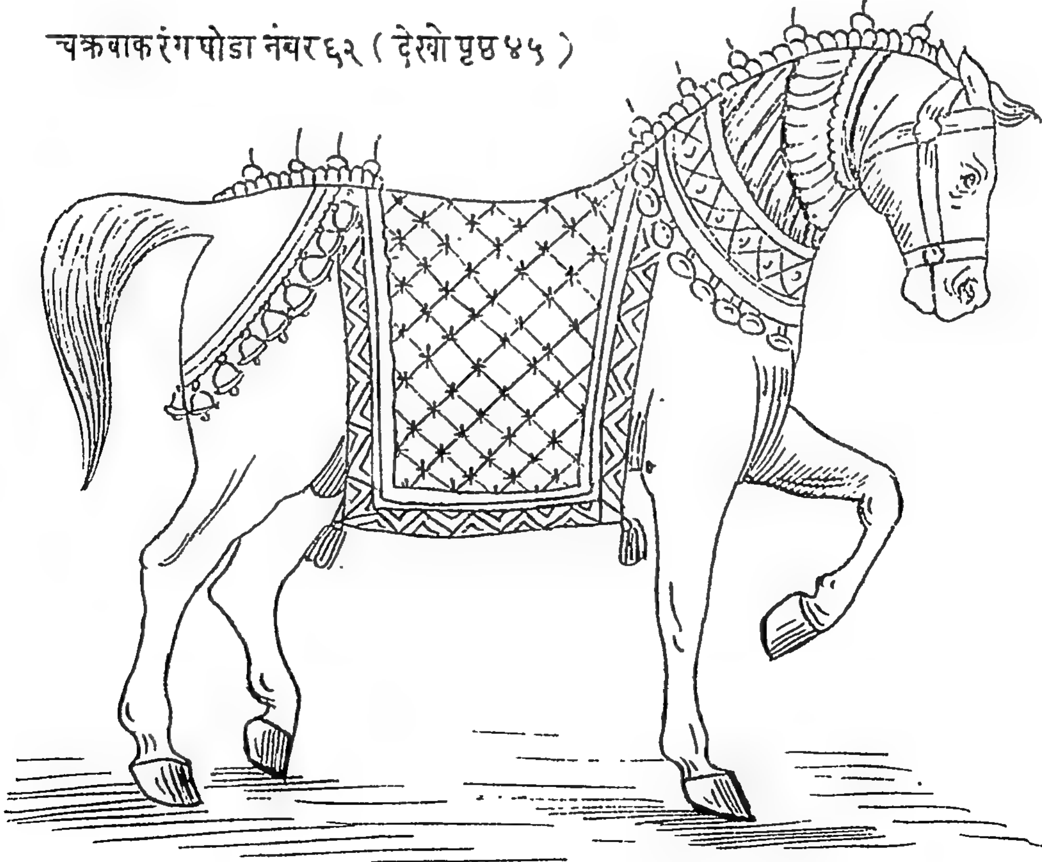
खतंगरंग घोडा नंबर ५९ (देखो पृष्ठ ४५)



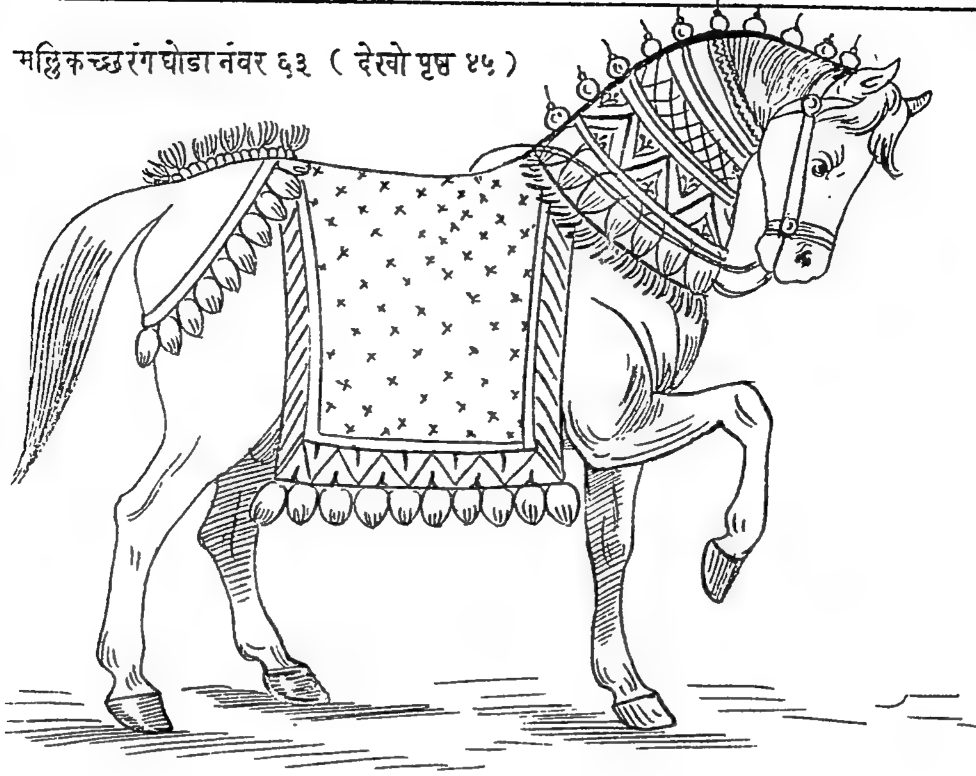
पंचकल्याणरंग घोडा नंबर ६० (देखो पृष्ठ ४४)



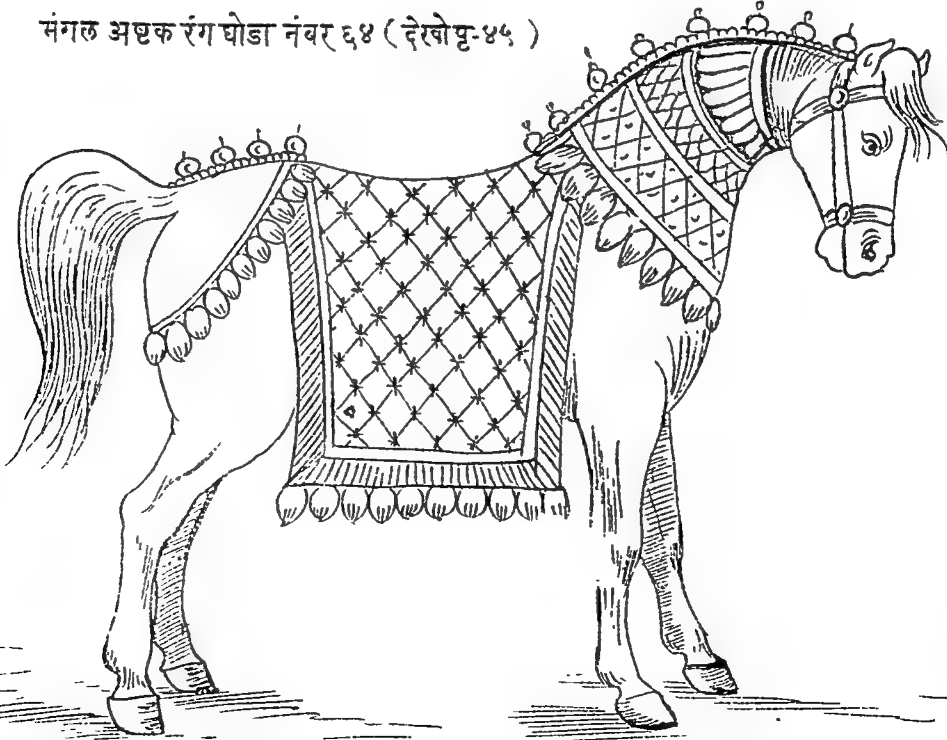

पिरत्तई रंग घोडा नंबर ६१ (देखो पृष्ठ ४५)


चक्रवाक रंग घोडा नंबर ६२ (देखो पृष्ठ ४५)

मल्लिकच्छरंग घोडा नंबर ६३ (देखो पृष्ठ ४५)

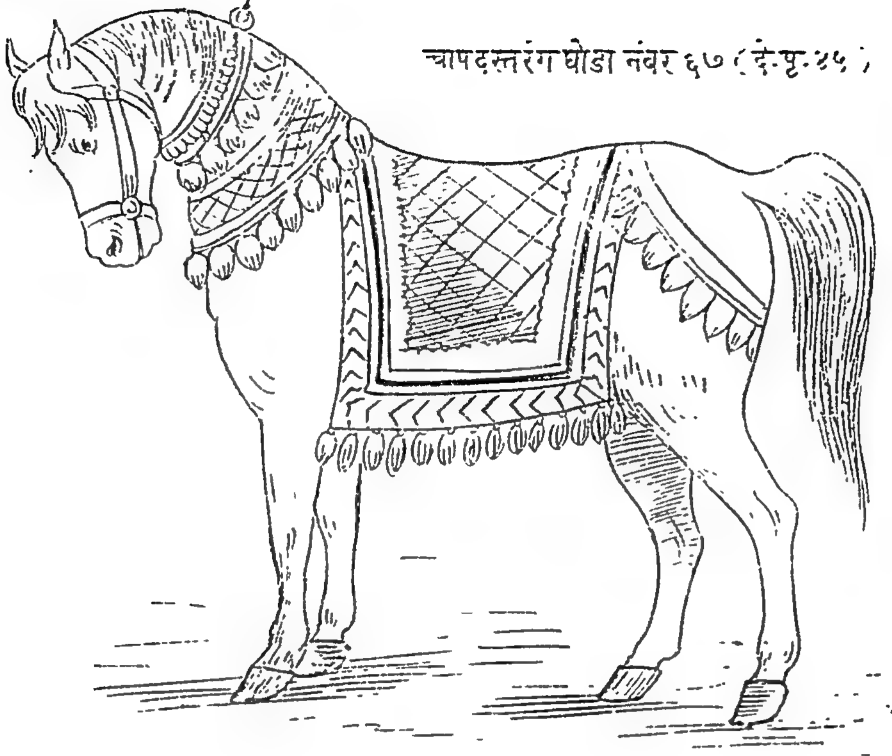


मंगल अष्टक रंग घोडा नंबर ६४ (देखो पृ-४५)

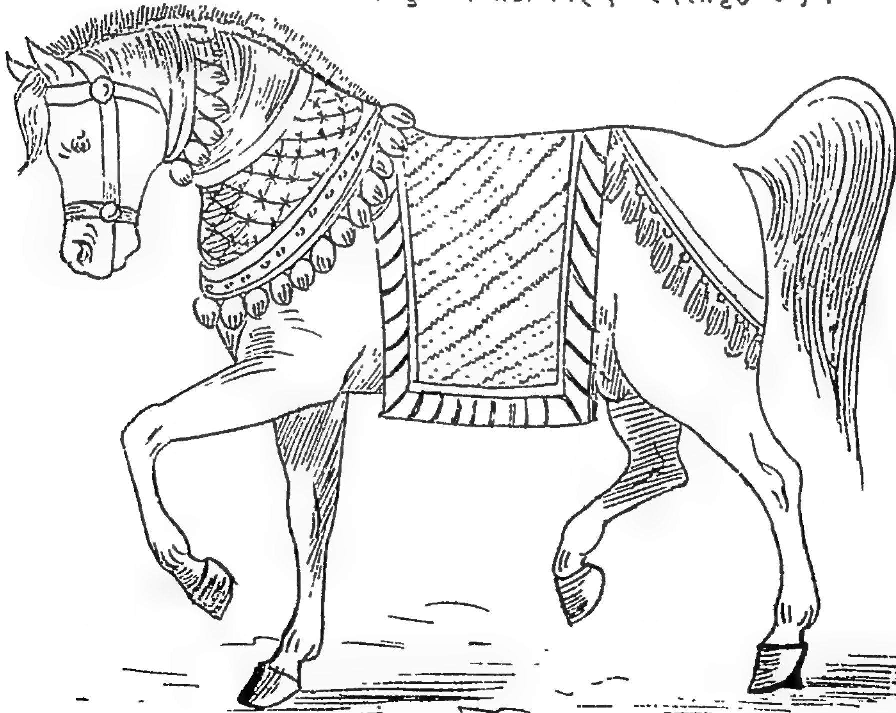



युगलरंग घोडा नंबर ६५ (देखो पृष्ठ ४५)

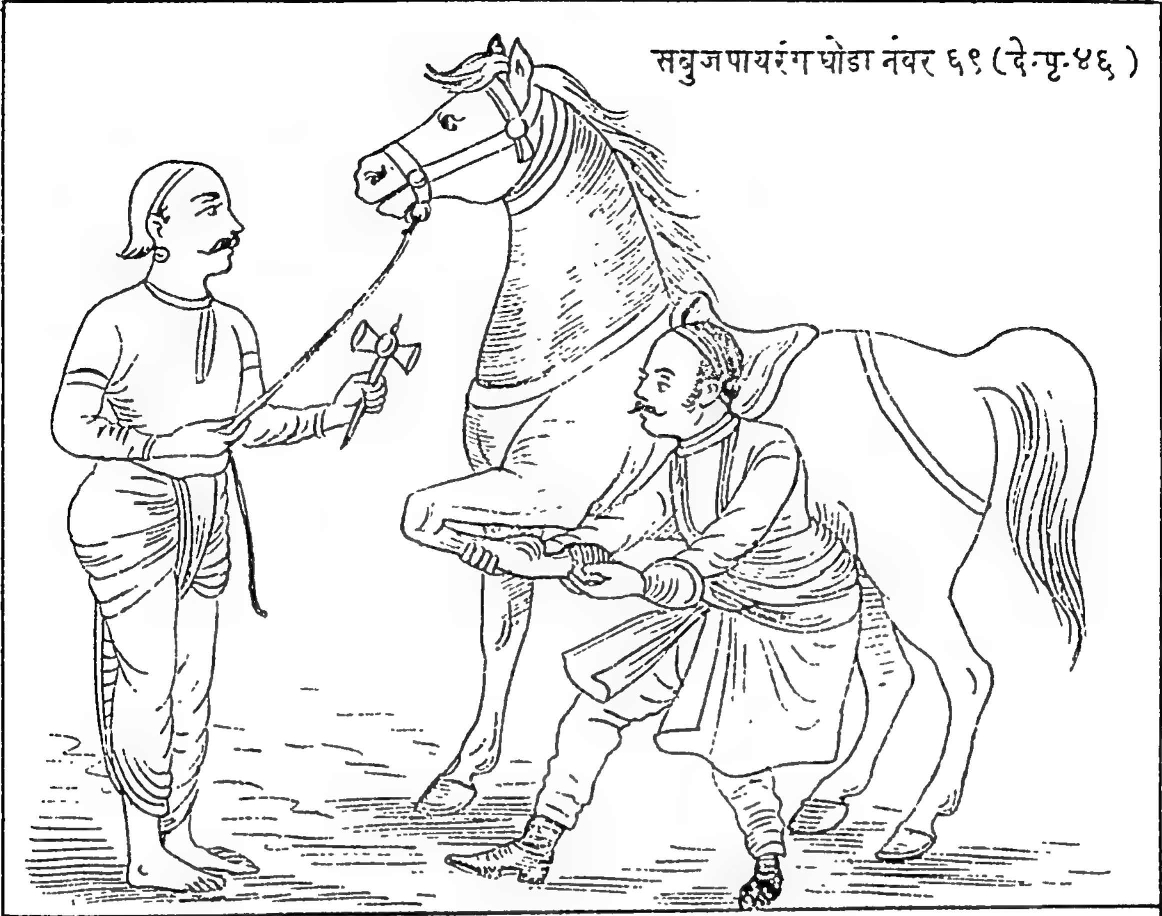

वधिकरंग घोडा नंबर ६६ (देखो पृष्ठ ४५)



चापदस्तरंग घोडा नंबर ६७ (दे. पृ. ४५)



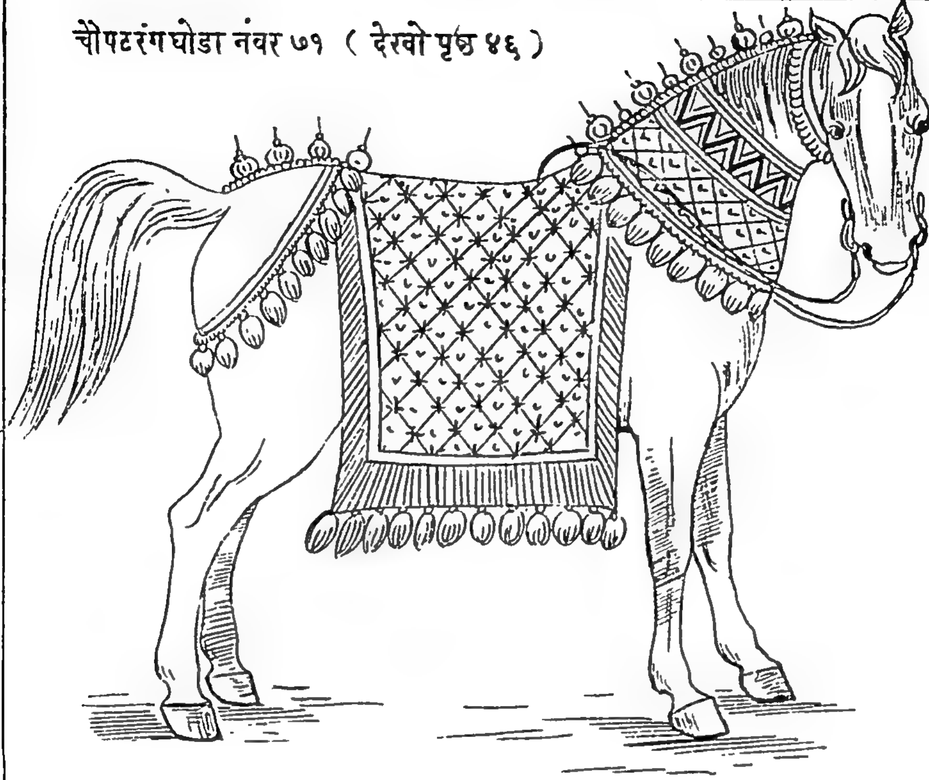
अग्जुलरंग घोडा नंबर ६८ (देखोपृष्ठ ४६)



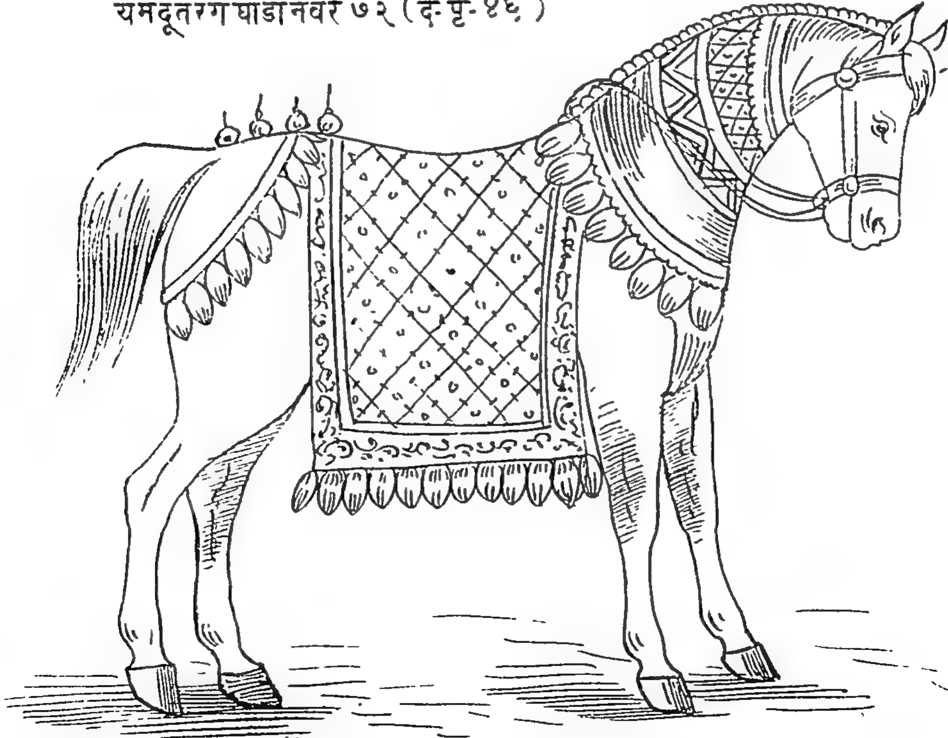
सब्जुजपायरंग घोडा नंबर ६९ (दे॰पृ॰४६)



श्वेतचरणघोडा नंबर ७१ (देखोपृष्ठ४६)

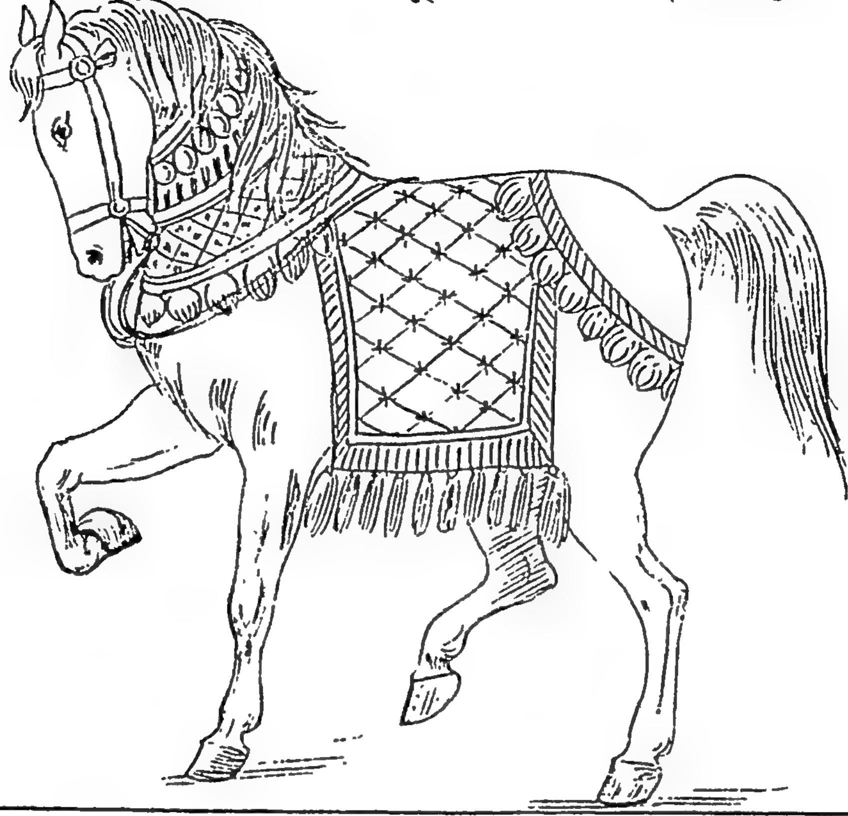


चौपटरंगघोडा नंवर ७१ (देखो पृष्ठ ४६)

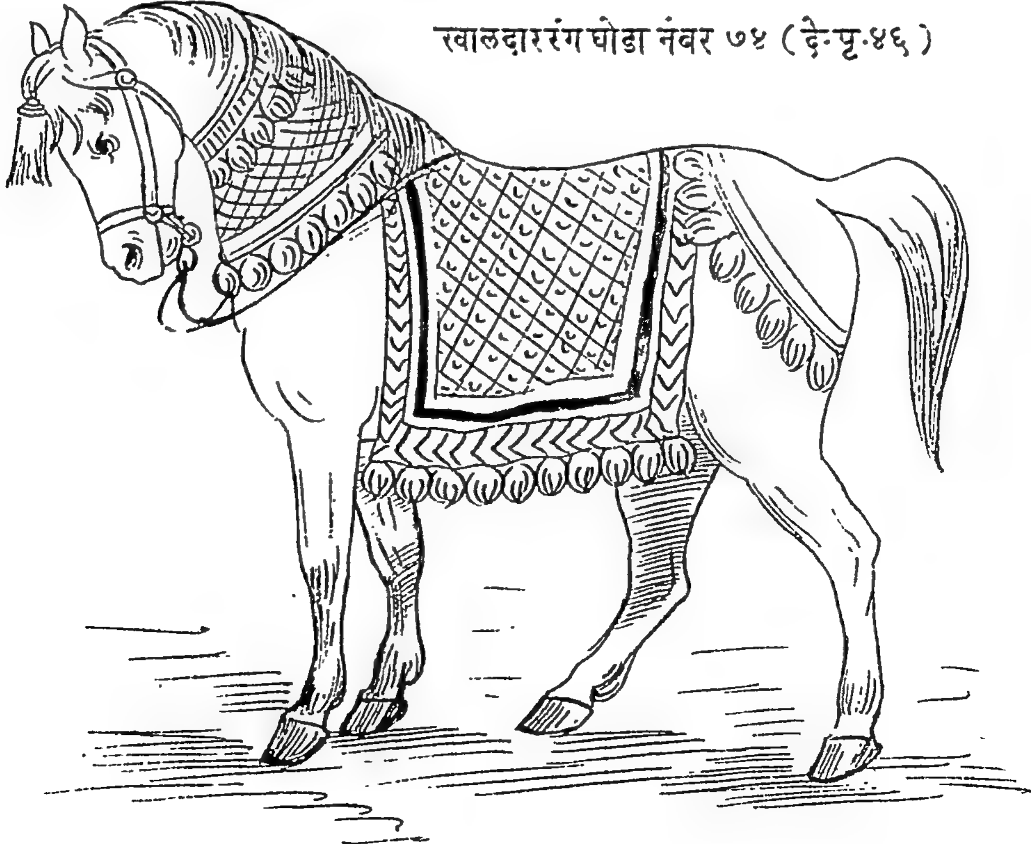


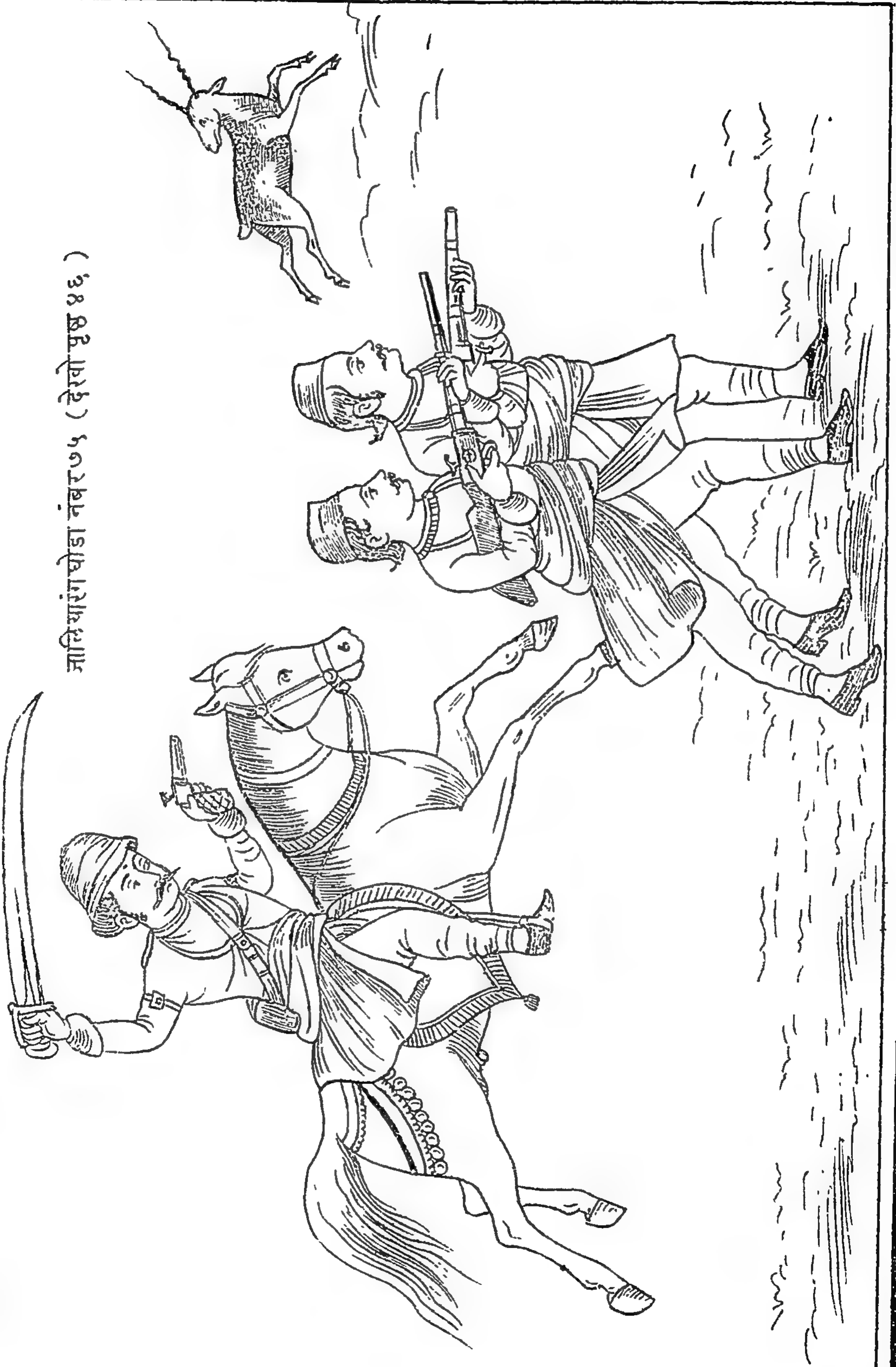
यमदूतरंगघोडानंवर ७२ (दे॰ पृ॰ ४६)

समरदूतरंग घोडा नंबर ७३ (देखो पृष्ठ ४६)



खालदाररंग घोडा नंबर ७४ (दे॰ पृ॰ ४६)

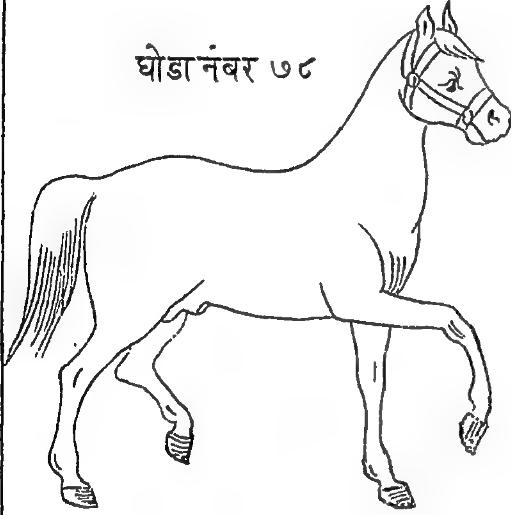


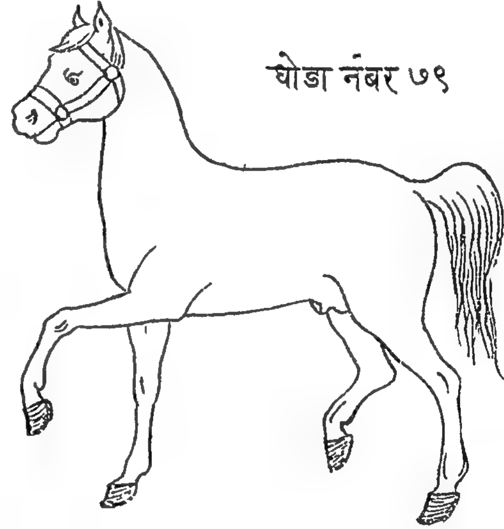


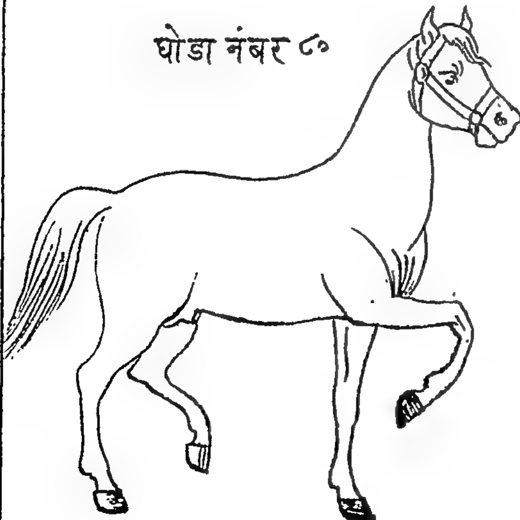
शालिधांगघोडा नंबर ७५ (देखो पृष्ठ ४३)


घोडानंबर ७६

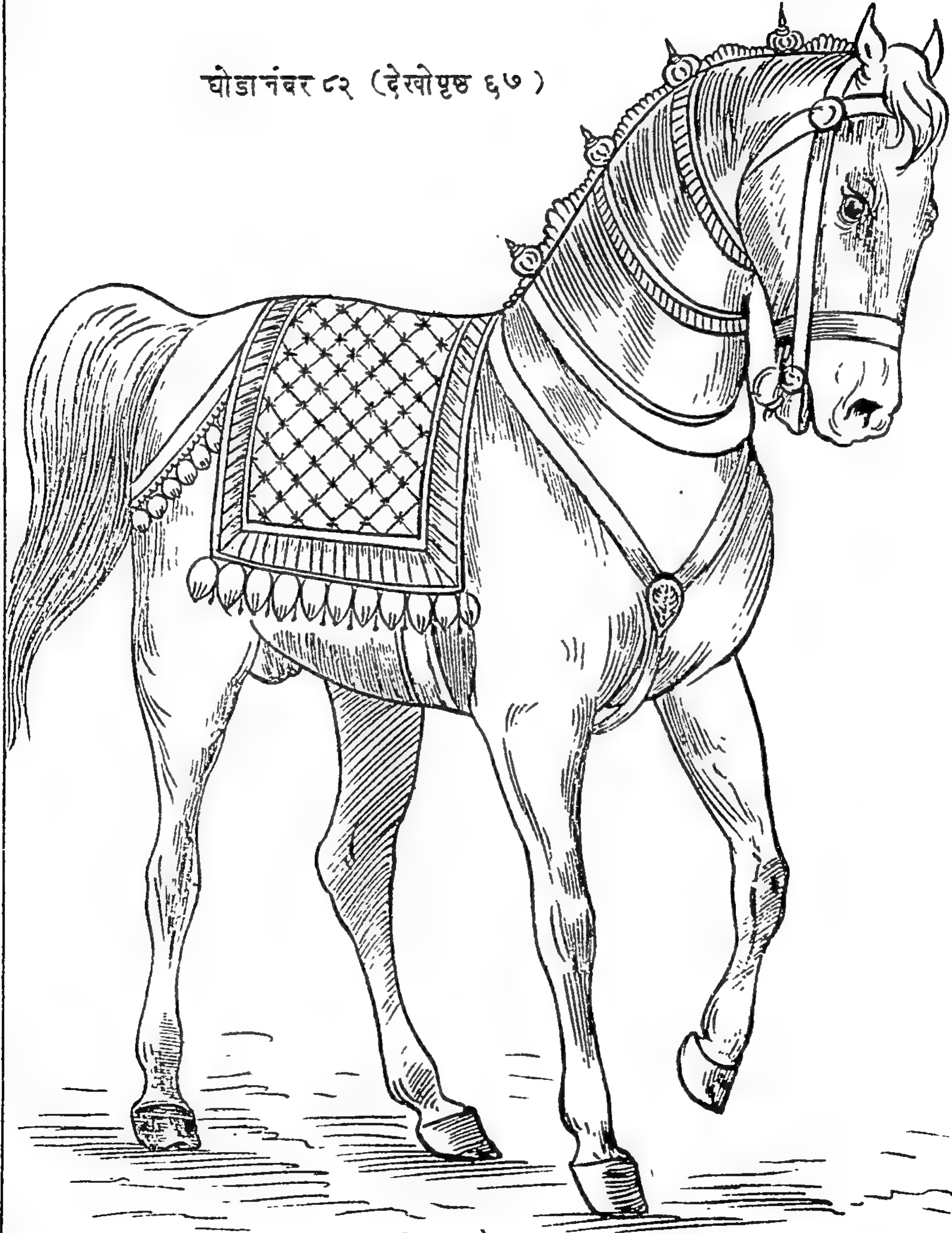

घोडानंबर ७७

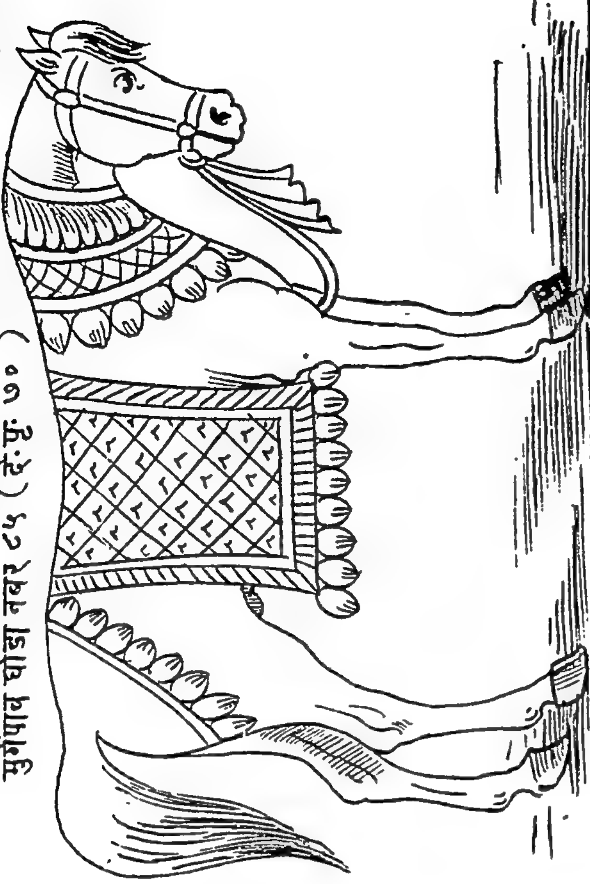

घोडा नंबर ७८


घोडा नंबर ७९

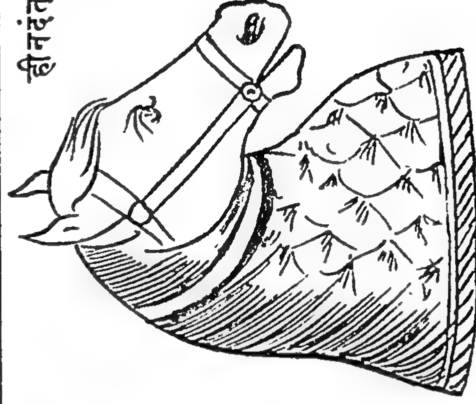

घोडा नंबर ८०


घोडानंबर ८१

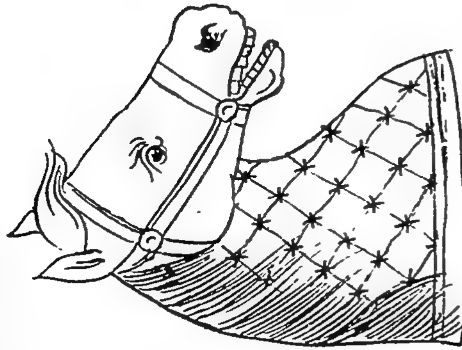

घोडा नंबर ८२ (देखोपृष्ठ ६७)



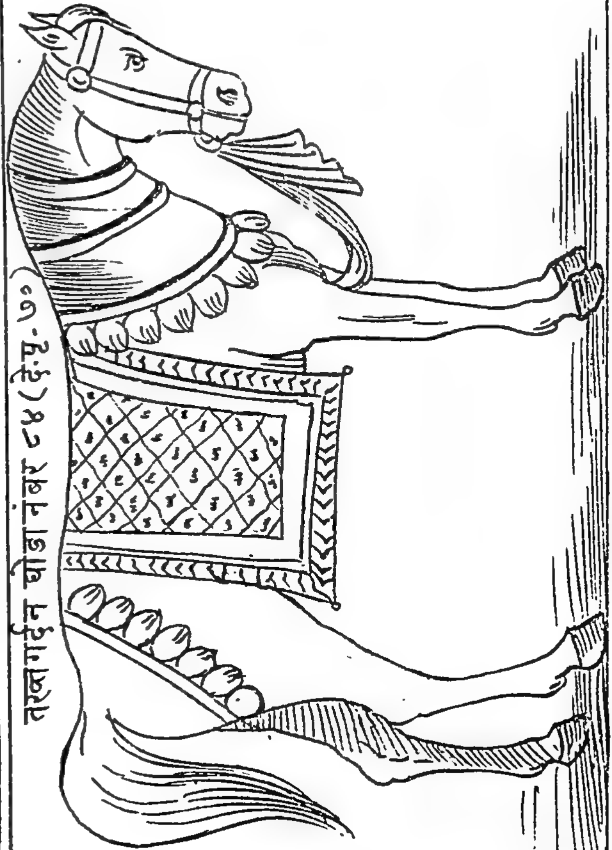
मुर्गपाव घोडा नंबर ८५ (दे॰पृ॰ ७०)



हीनदंत घोडा नंबर ८६ (दे॰पृ॰ ७०)



सुतरदंत घोडा नंबर ८३ (देखो पृष्ठ ७०)



तरलगर्दन घोडा नंबर ८४ (दे॰पृ॰ ७०)

अहिमुखी घोडा नंबर८७ (दे॰पृ॰७१)

उपरका वोठ उठाते घोडा नंबर ८८ (दे॰पृ॰ ७१)

करालीदोष घोडा नंबर ८९ (दे॰पृ॰७१)

मूसली घोडा नंबर ९० (देखो पृष्ठ ७१)

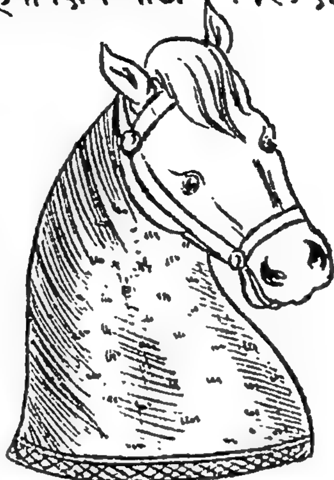
ससाकरण घोडा नं॰ ९१ (दे॰पृ॰७१)

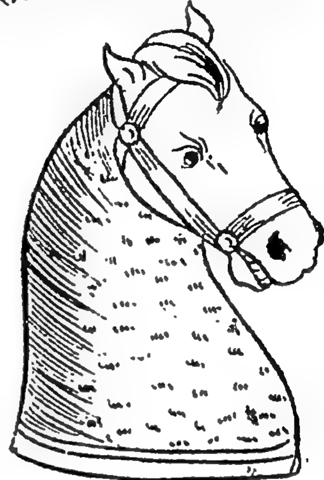
गजकरण घोडा नं॰ ९२ (देखो पृष्ठ ७१)

एक छोटा कान एक बडा कान घोडा नं॰ ९३ (दे॰पृ॰७२)

ताषी घोडा नंबर ९४ (देखो पृ॰ ७२)


चक्रदोषघोडानं॰ ९५ (देखोपृ॰ ७२)

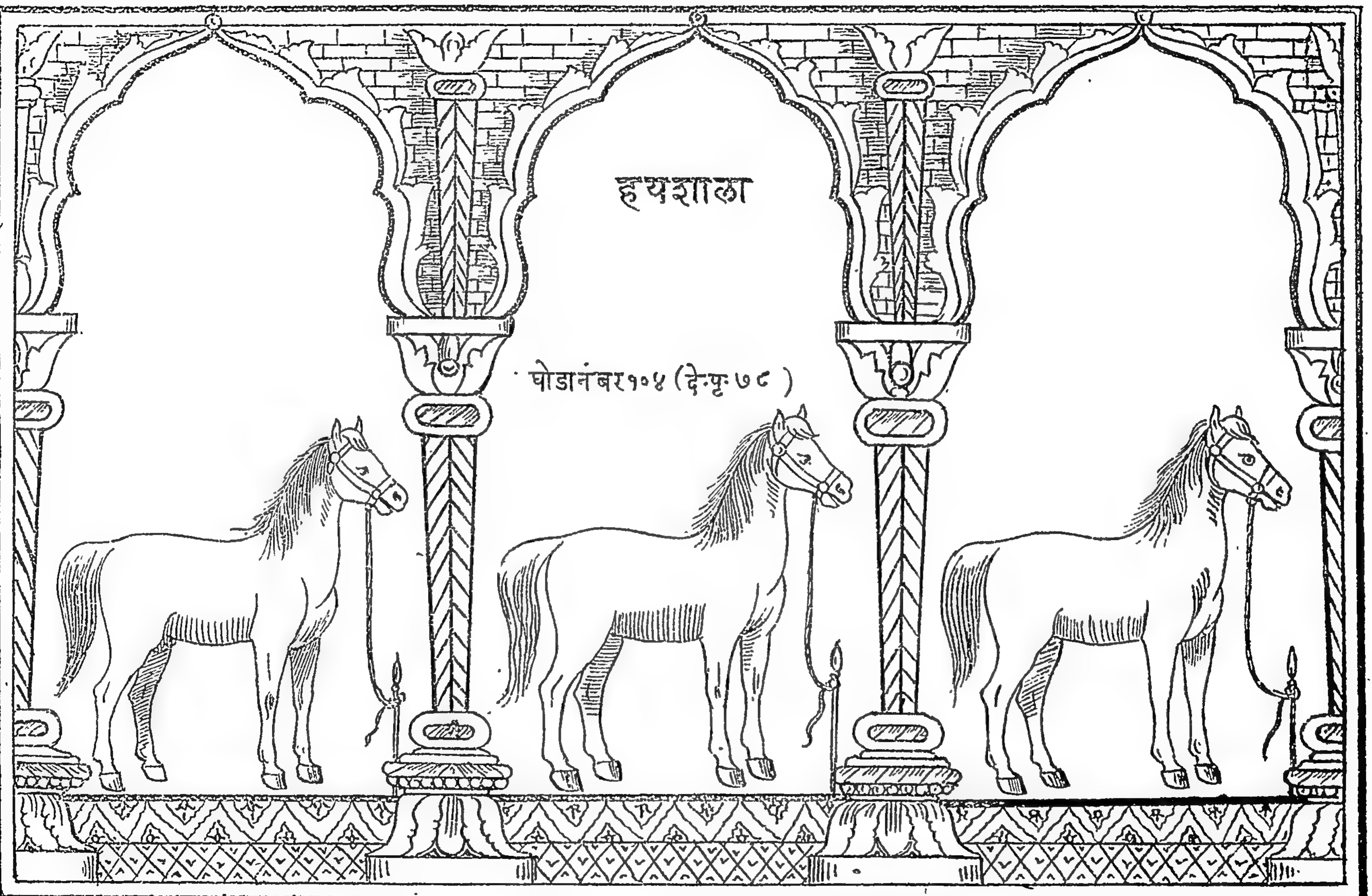

महिषागदोष घोडा नंबर९६(दे॰पृ॰ ७२)

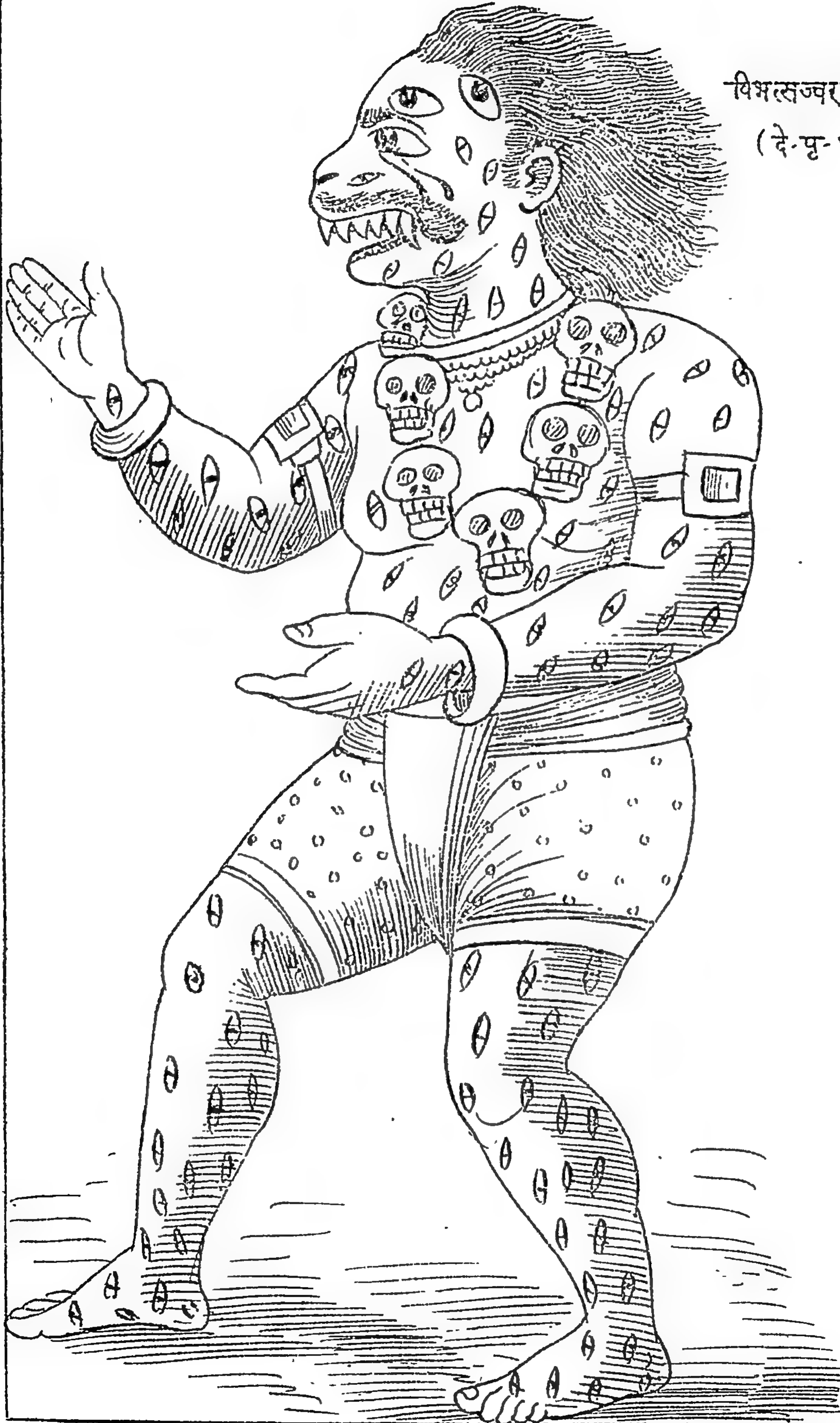

बिल्लीनेत्रवर्णदोषघोडा॰ नंबर९७(दे॰पृ॰ ७१)


कामालीवैलग्रीवननीदोष घोडानं॰ ९८(दे॰पृ॰ ७२)


कालिंजालिंगपरटीकागोदुमी खुरसुमती घोडानं॰ ९९(पृ॰ ७२)


पृछकीडंडीश्वेतझाडदुमकं ठघाटी घोडानंबर१००(दे॰पृ॰ ७२)

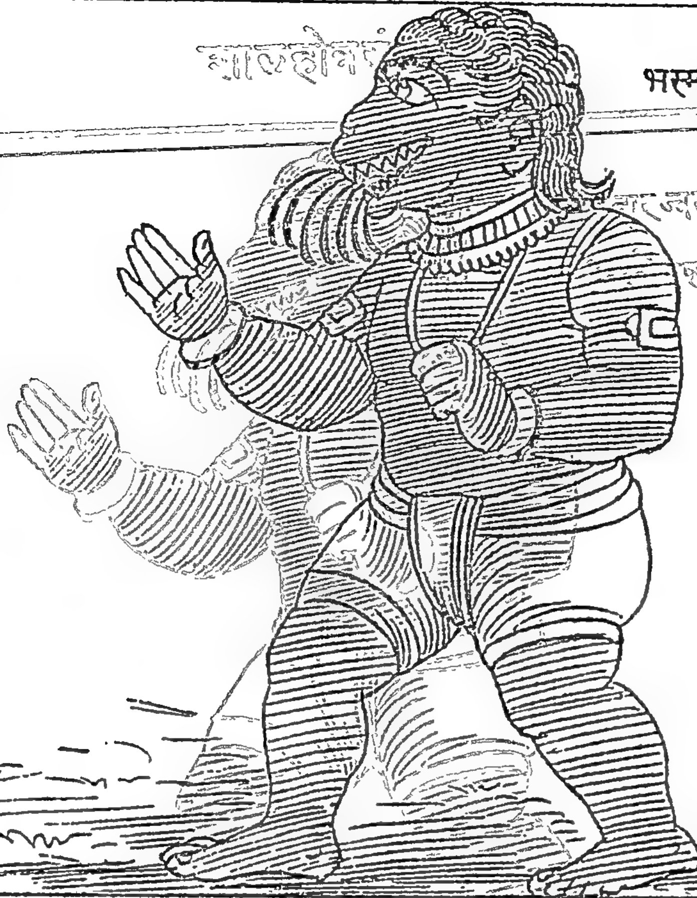

हयशाला
घोडा नंबर १०५ (दे. पृ. ७८)



विभत्सज्वर नबर १०५

(दे. पृ. ११९)


त्रिशिरज्वर नंबर१०६ (देखो पृष्ठ १२०)
कपिलज्वर नंबर१०७
(देखोपृष्ठ१२०)


भस्मप्रहारज्वरनंबर १०८
(देखोपृष्ठ १२१)

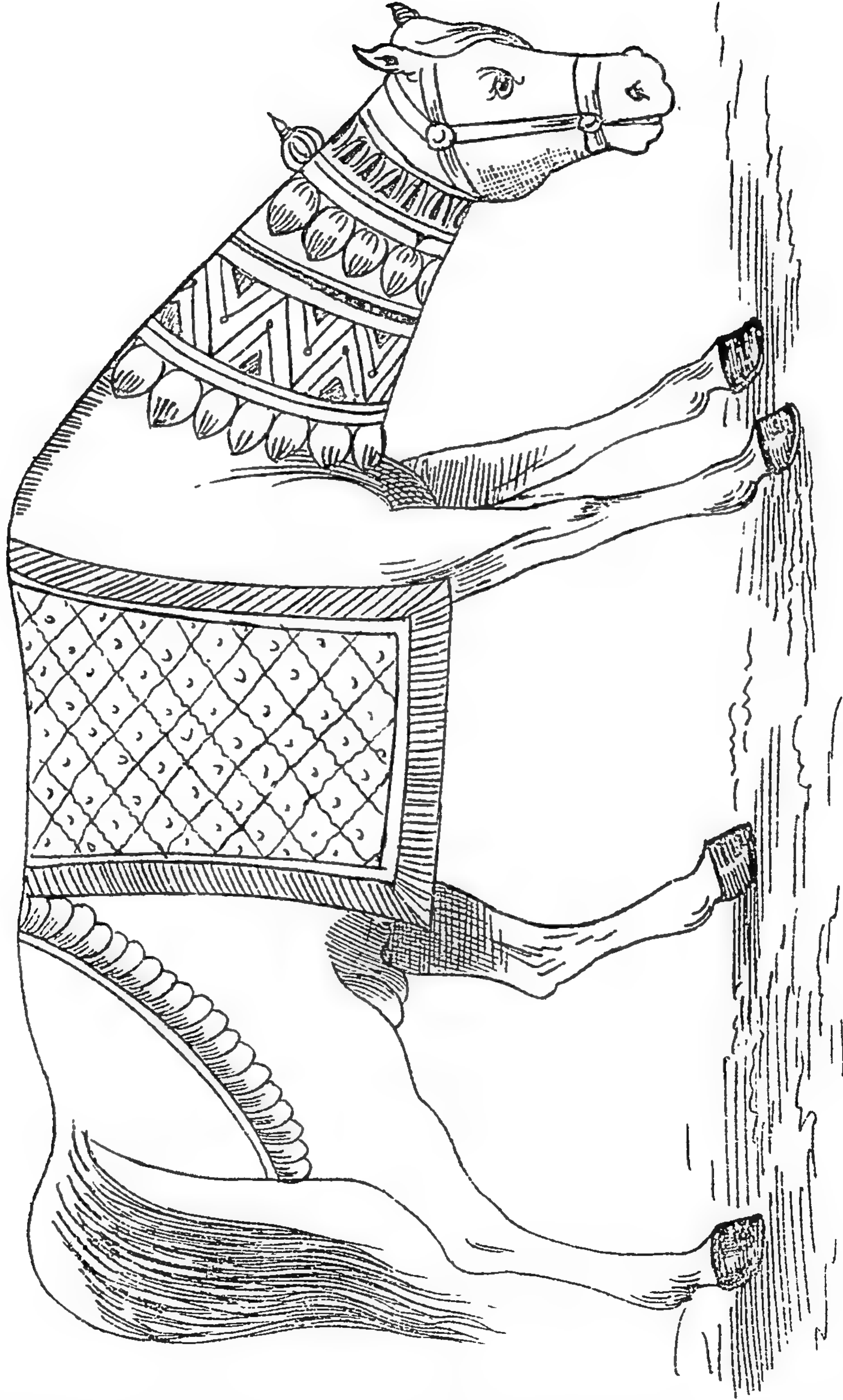

त्रिपादज्वरनंबर १०९ (देखोपृष्ठ
१२१


पिंगाक्षज्वर नं. ११०
(देखोपृष्ठ १२१)


लंबोदरज्वर नंबर १११
(देखोपृष्ठ १२१)

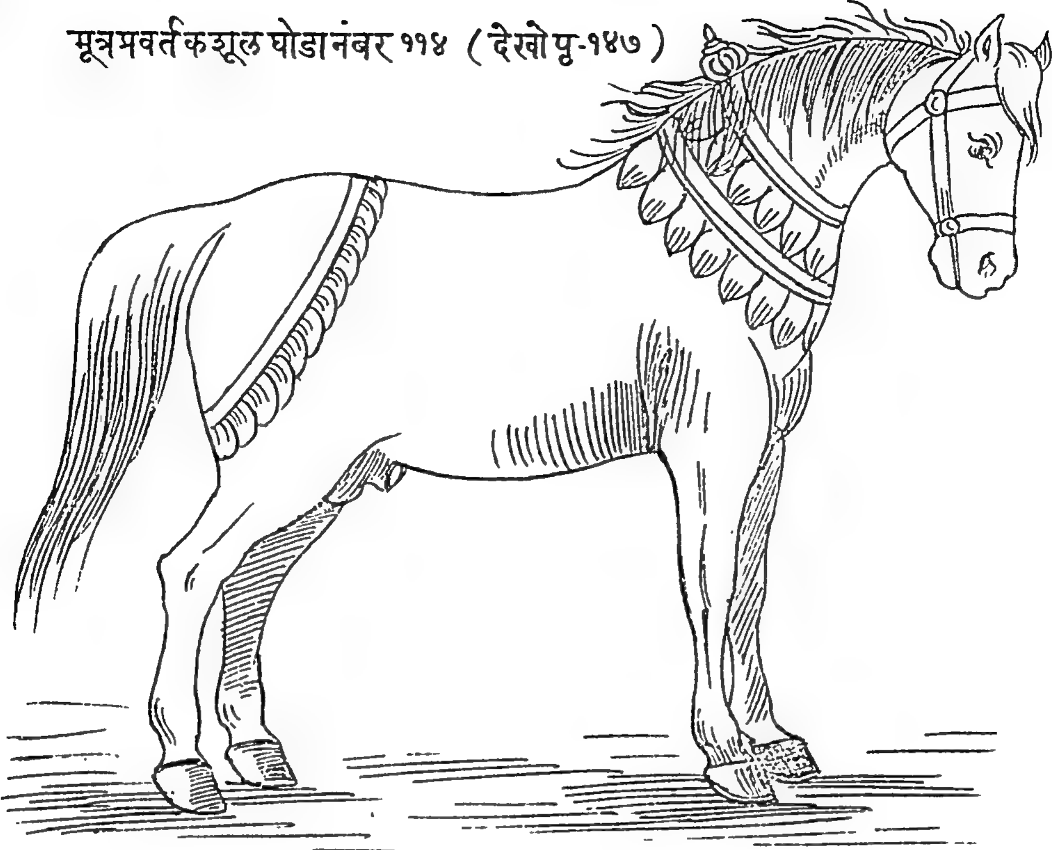


भैरोंज्वर नंबर ११२ (देखोपृष्ठ १२२)

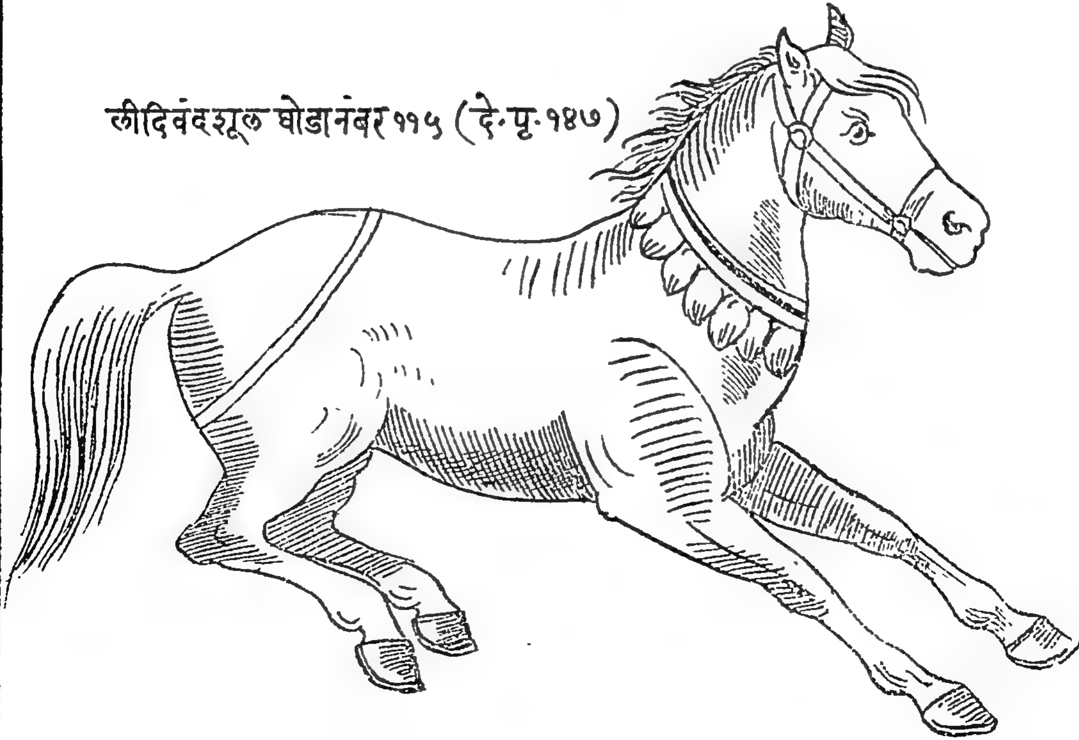


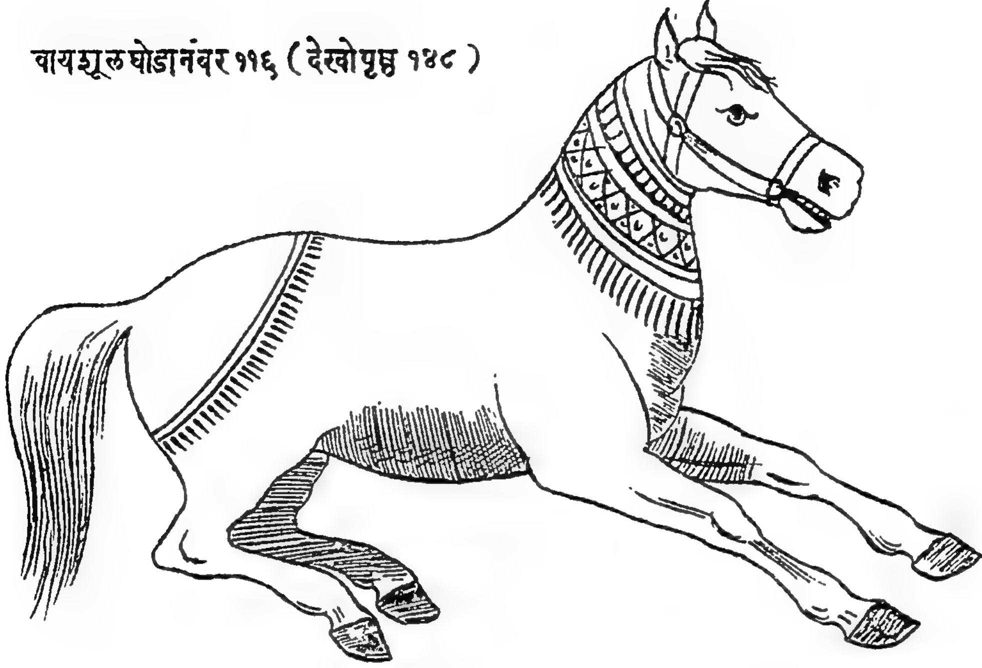
मूत्रशूल घोडानंबर ११३ (देखो पृष्ठ १४५)

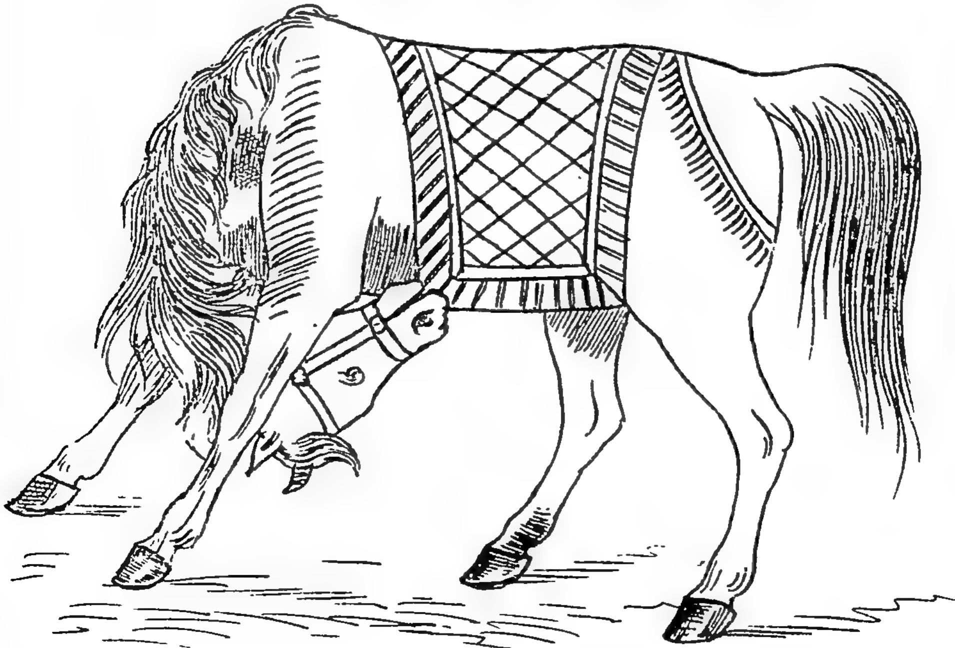
मूत्रप्रवर्तकशूल घोडानंबर ११४ (देखो पृ-१४७)



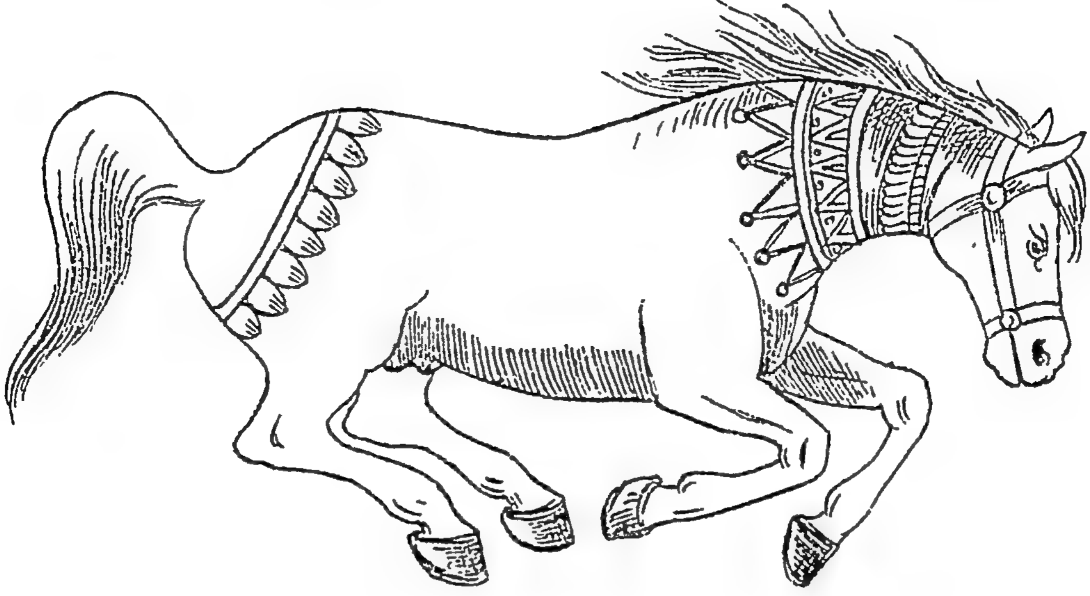
लीदिबंदशूल घोडानंबर ११५ (दे. पृ. १४७)



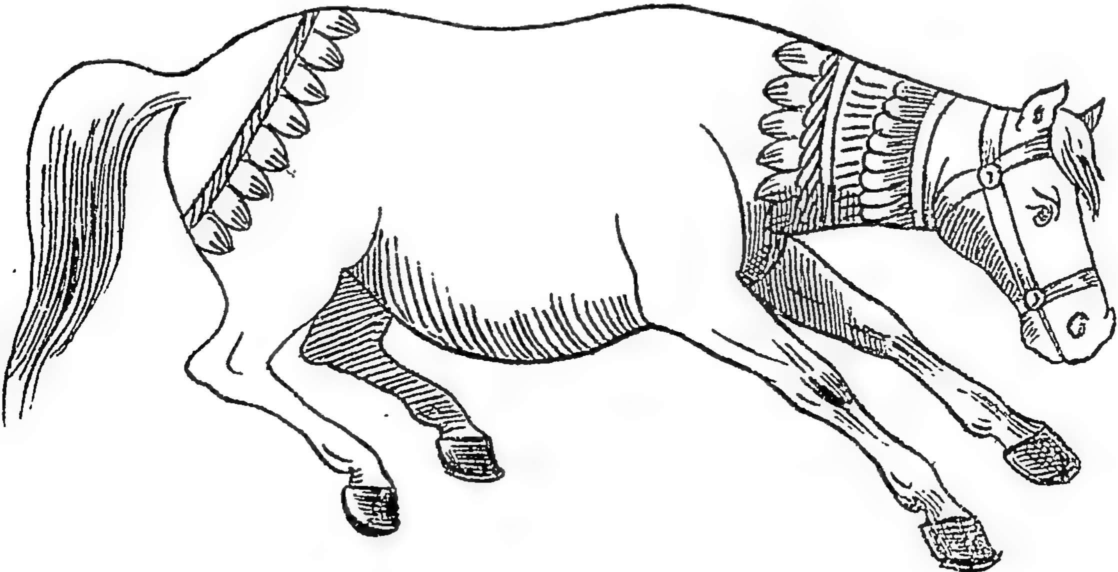

वायशूल घोडा नंबर ११६ (देखोपृष्ठ १४८)

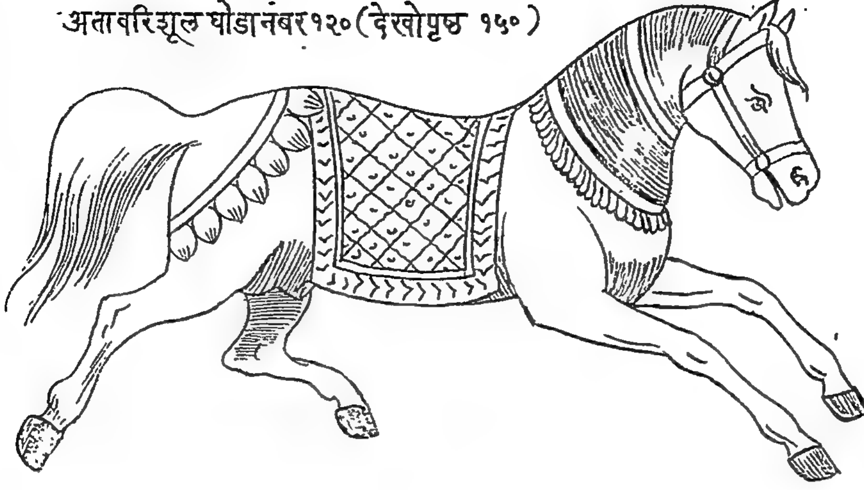

दूसरा वायशूल घोडा नंबर ११७ (देखोपृ॰ १४८)

दुमसिरोर शूल घोडा नंबर ११८ (देखोपृष्ठ १४९)



वायुभक्षशूल घोडा नंबर ११९ (देखोपृष्ठ १४९)

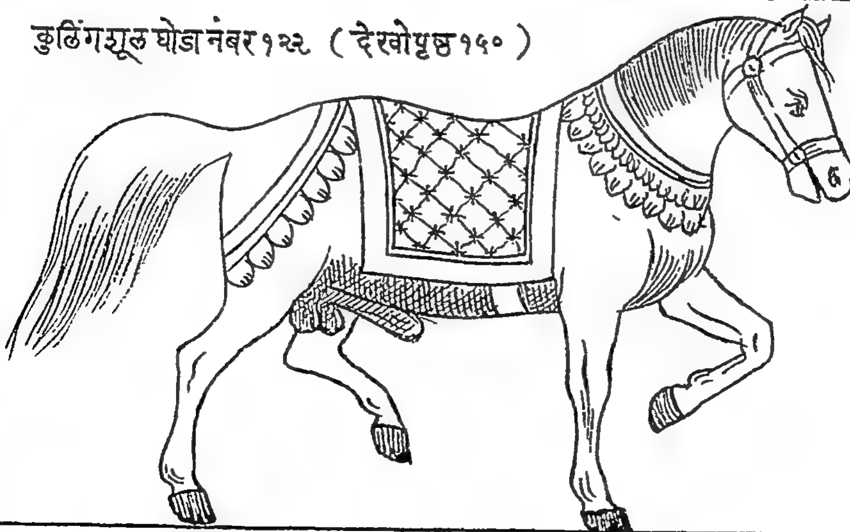




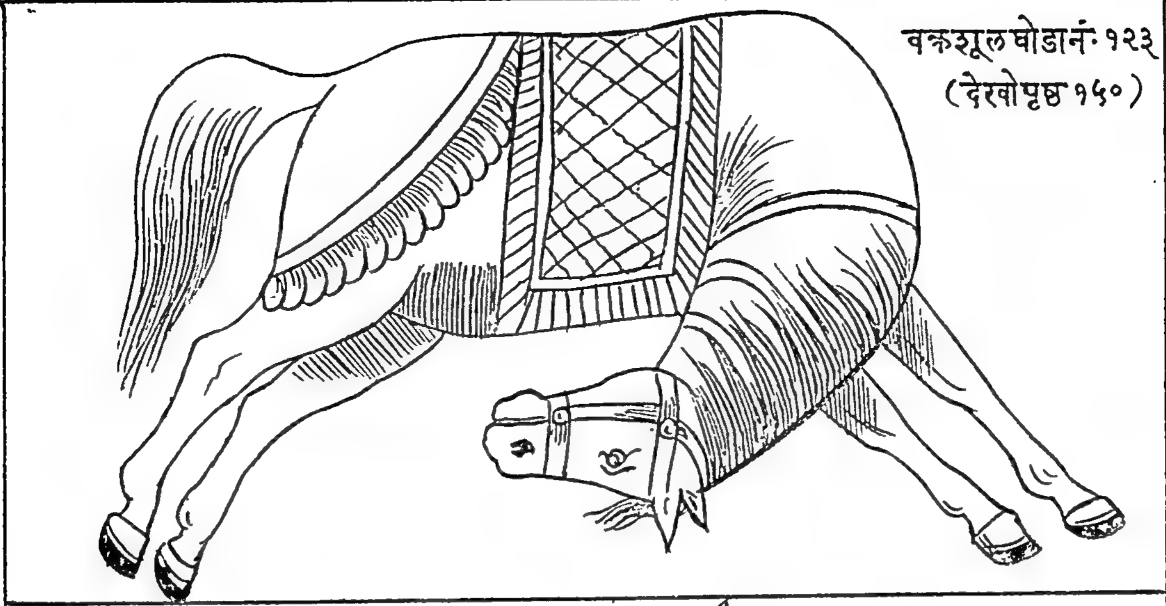
अतावरिशूल घोडा नंबर १२० (देखो पृष्ठ १५०)

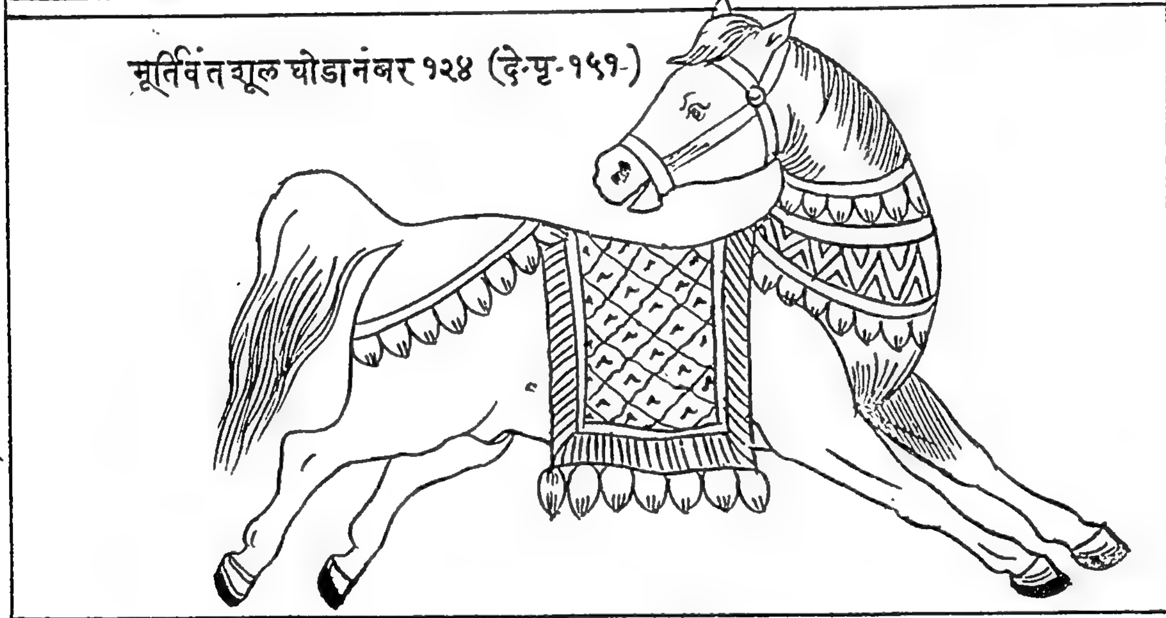


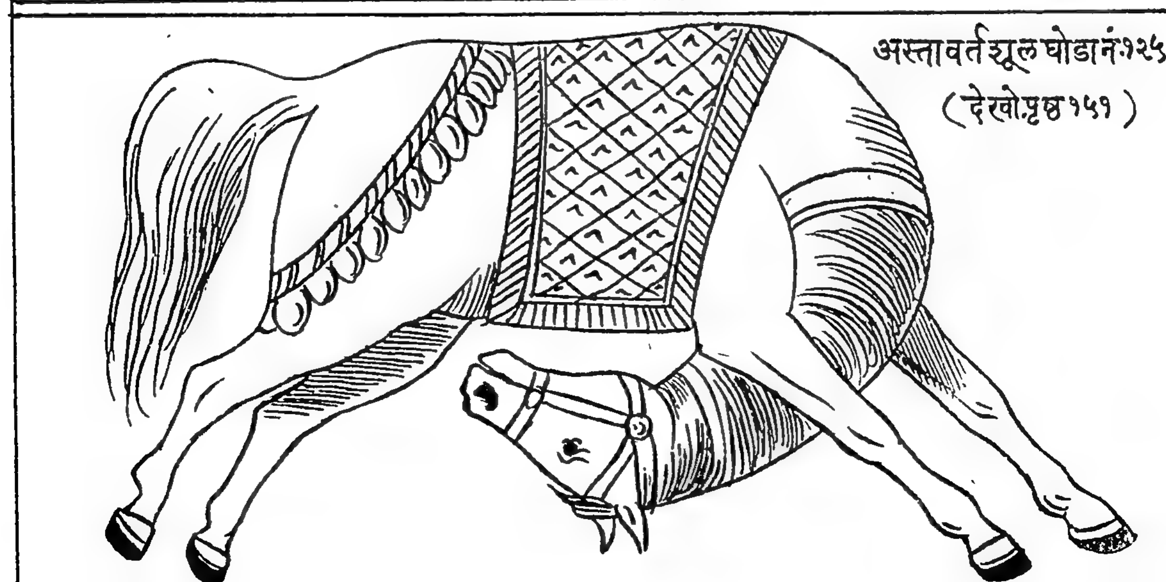
जीमारशूल घोडा नंबर १२१ (देखो पृष्ठ १५०)



कुलिंगशूल घोडा नंबर १२२ (देखो पृष्ठ १५०)


वक्रशूल घोडा नं. १२३
(देखो पृष्ठ १५०)

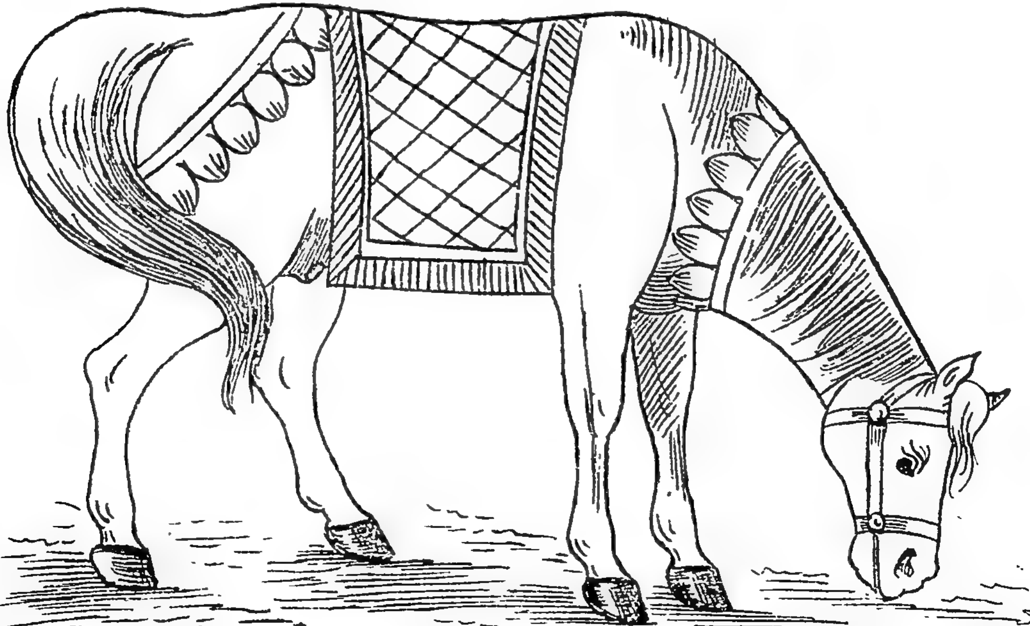

मूर्तिवंत शूल घोडा नंबर १२४ (दे. पृ. १५१.)

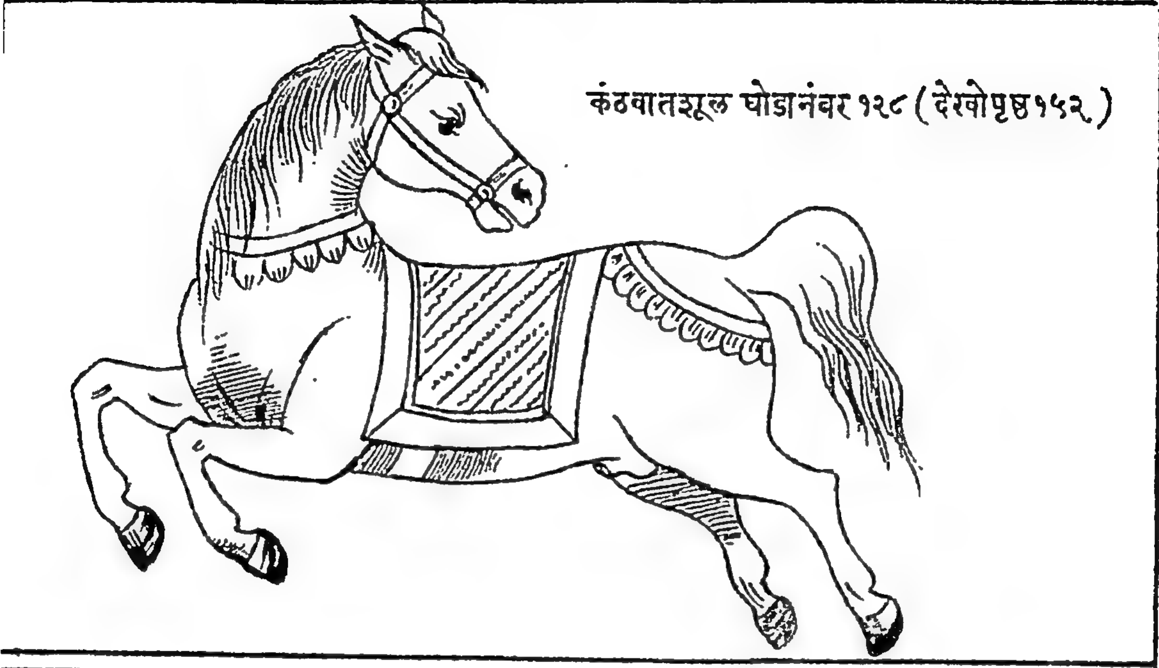

अस्तावर्त शूल घोडा नं. १२५
(देखो. पृष्ठ १५१)

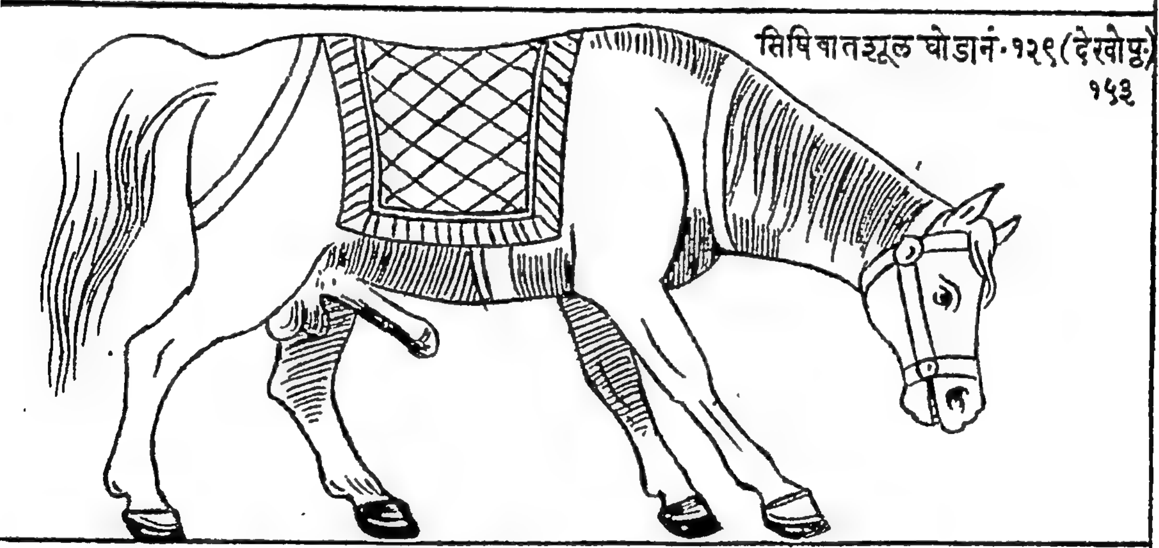
वातशूल घोडा नंबर १२६ (देखो पृष्ठ १५१)

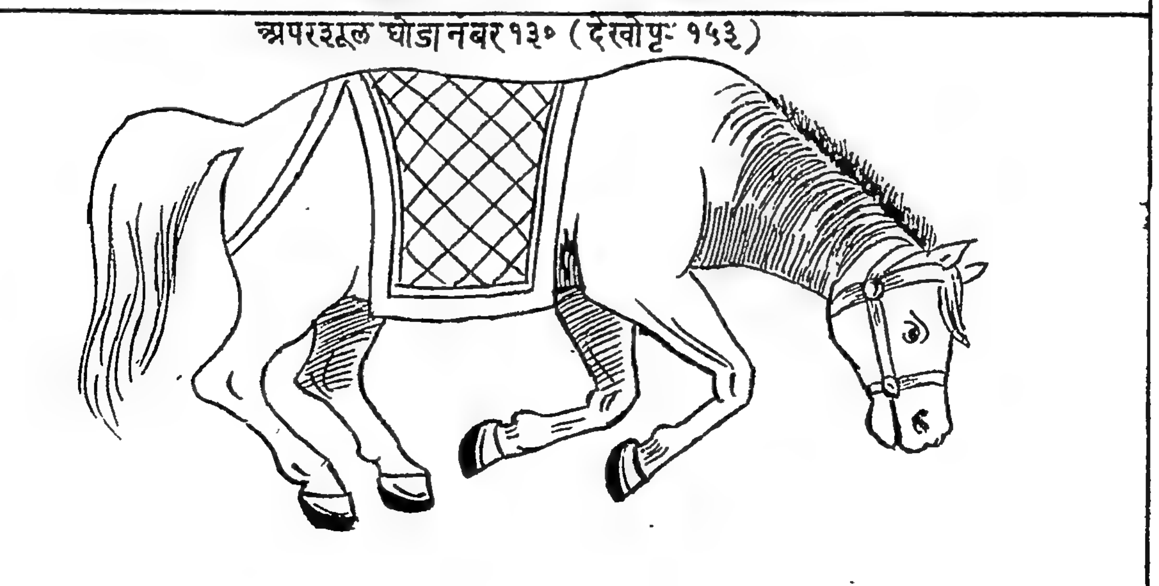


शुद्धवातशूल घोडा नंबर १२७ (देखो पृष्ठ १५२)

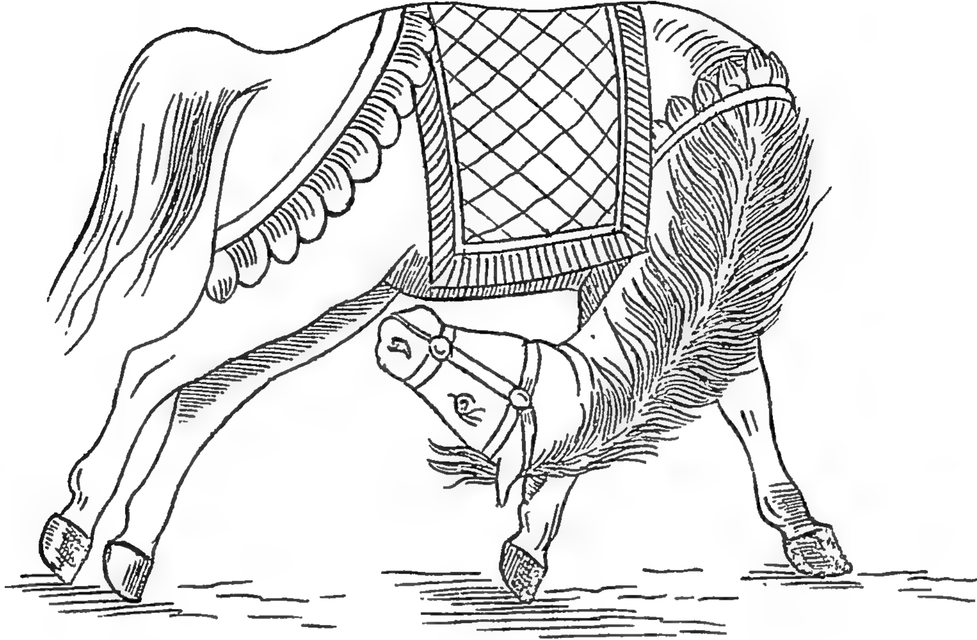



कंठवातशूल घोडा नंबर १२८ (देखोपृष्ठ १५२)

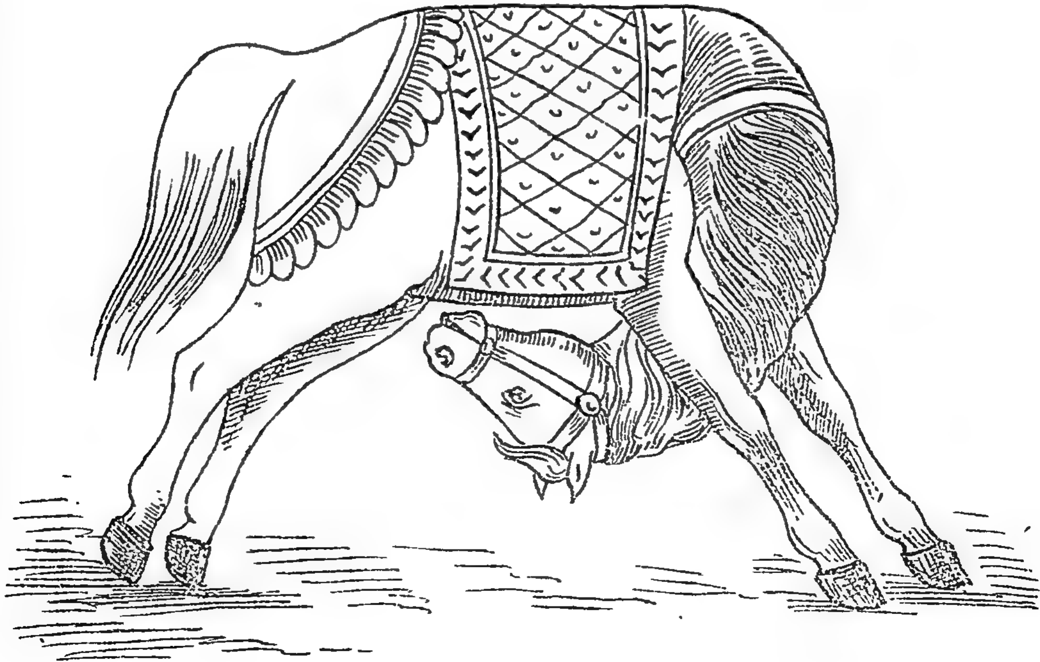

सिपिवातशूल घोडा नं. १२९ (देखोपृ. १५३


अपरशूल घोडा नंबर १३० (देखोपृ. १५३)

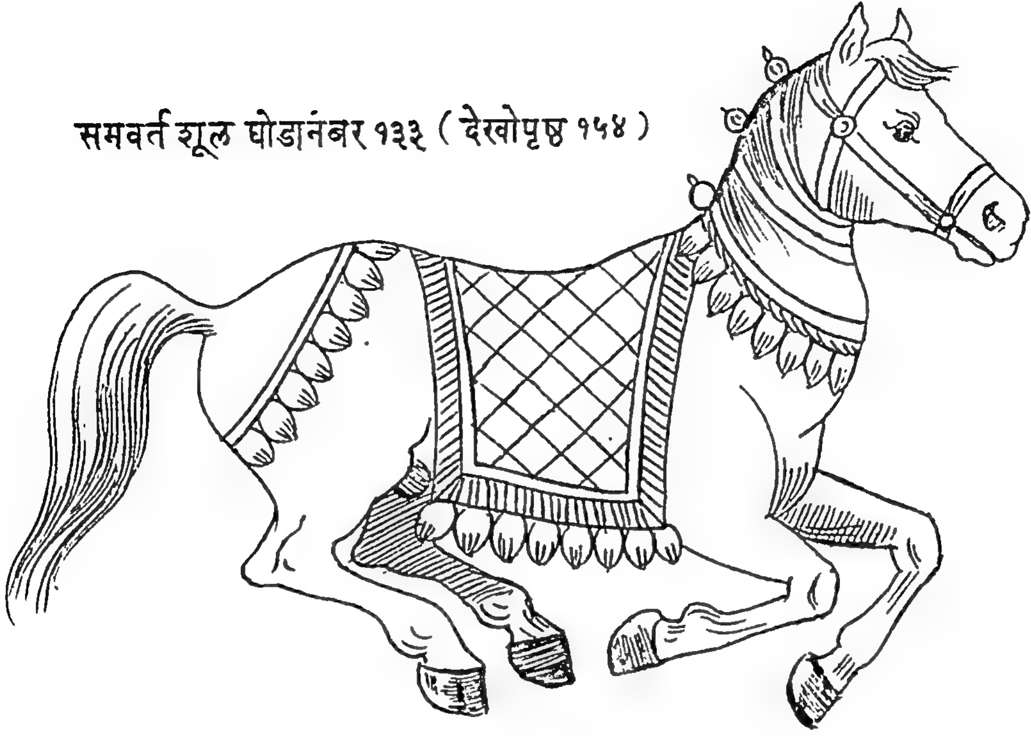
कृमिशूलघोडा नंबर १३१ (देखो पृष्ठ १५३)



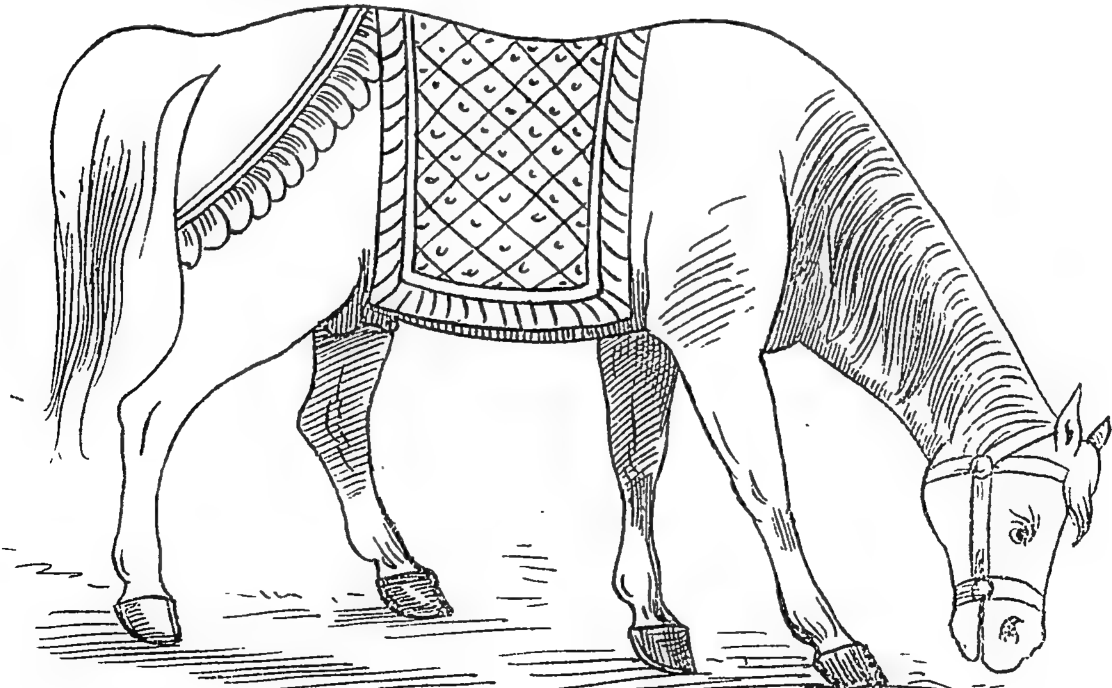
सर्वकृमिशूल घोडा नंबर १३२ (देखो पृ० १५४)



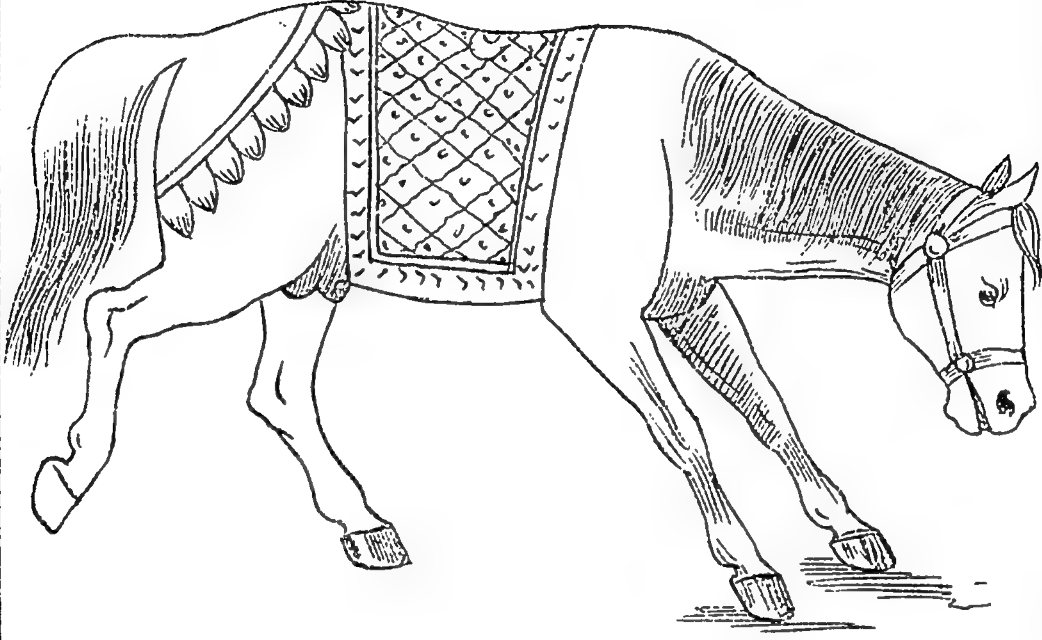
समवर्त शूल घोडा नंबर १३३ (देखो पृष्ठ १५४)



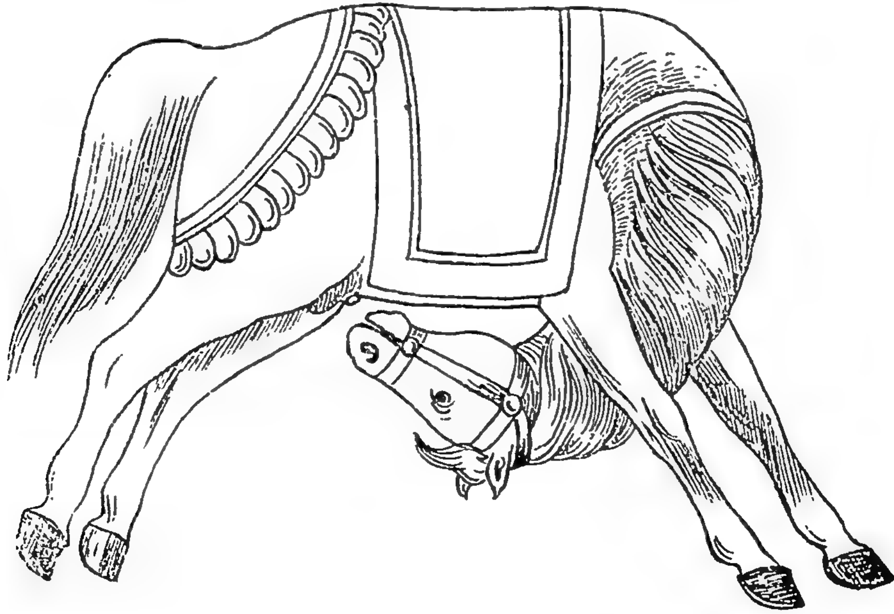
वैवर्तशूल घोडा नंबर १३४ (देखो पृष्ठ १५४)



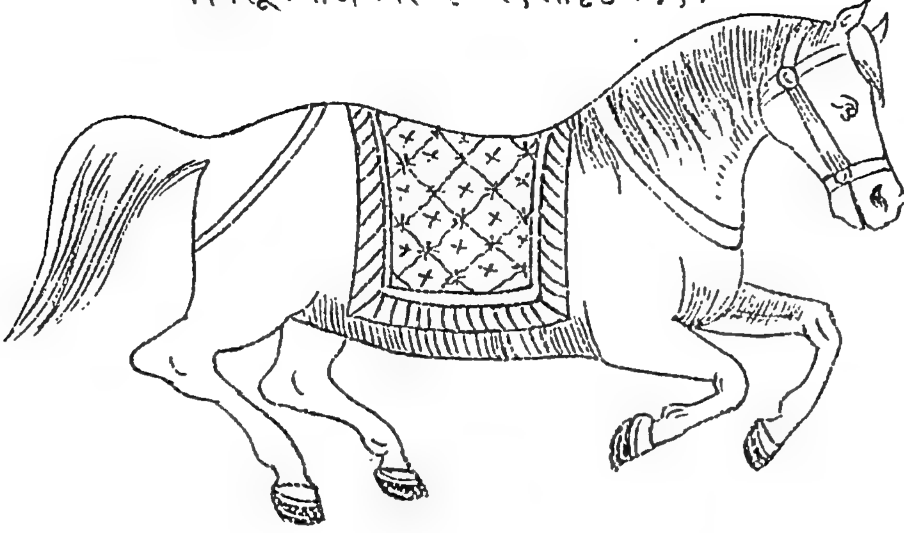
विभ्रमशूल घोडा नंबर १३५ (देखो पृष्ठ १५४)



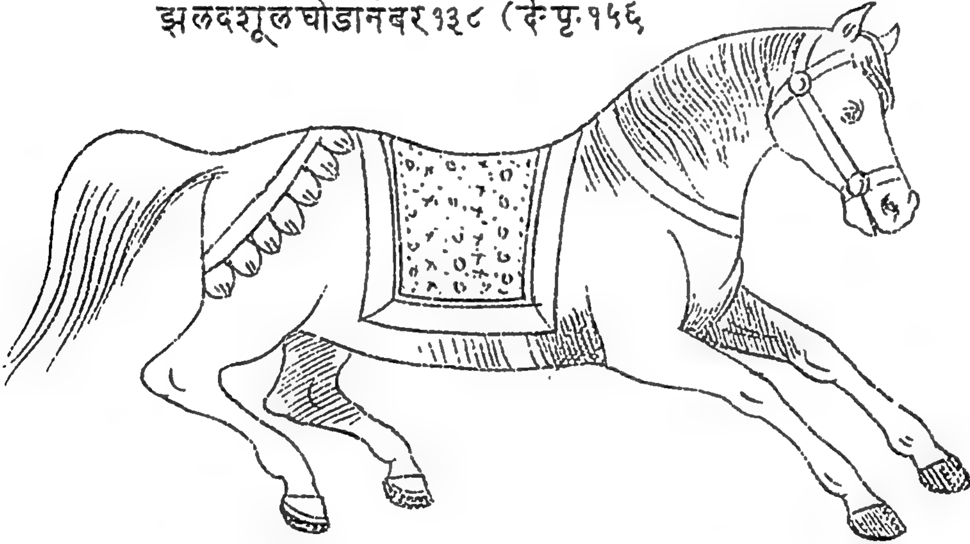
सनंदशूल घोडा नंबर १३६ (देखो पृ· १५५)



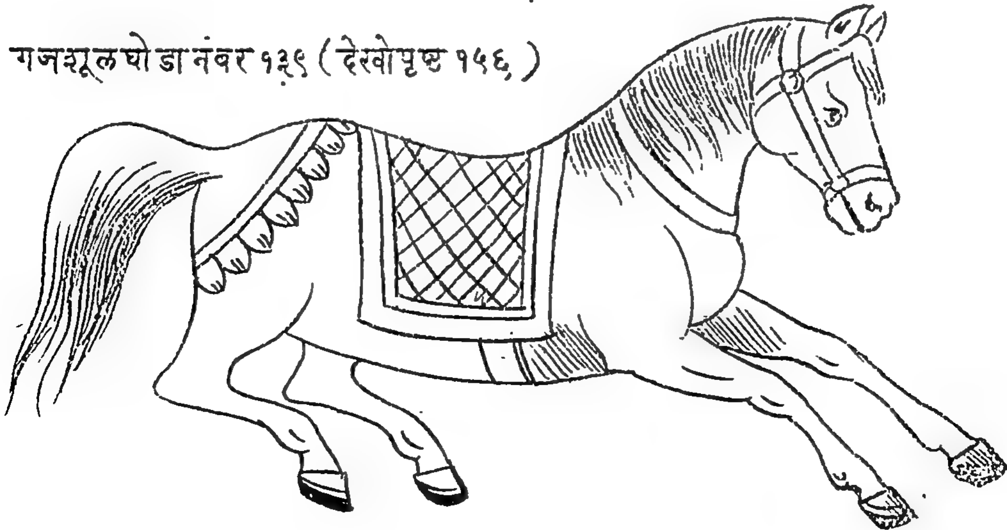
विंवशूल घोडा नंबर १३७ (देखो पृष्ठ १५६)

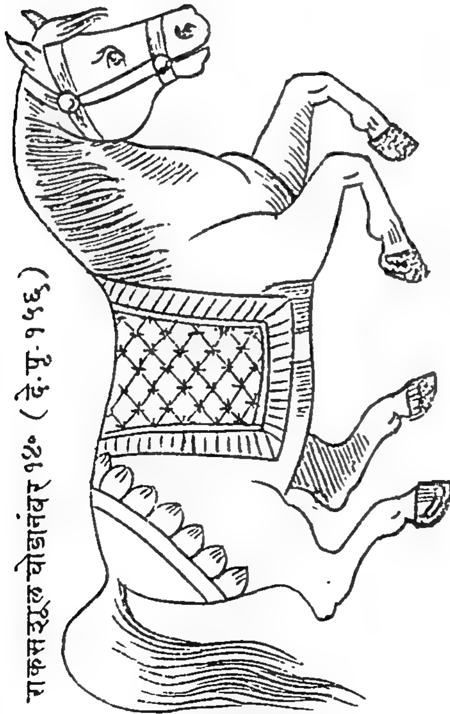


झलदशूल घोडा नंबर १३८ (दे॰ पृ॰ १५६

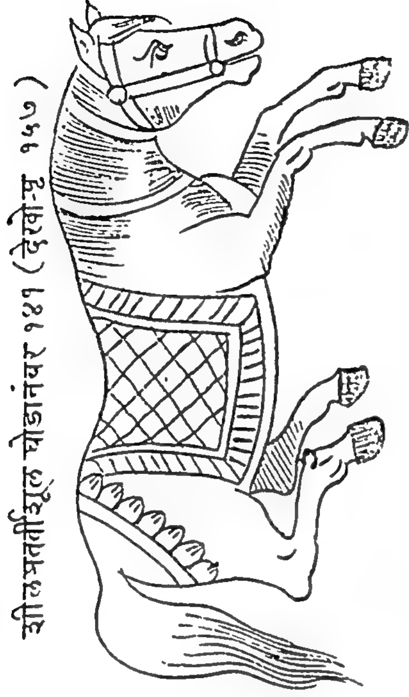


गजशूल घोडा नंबर १३९ (देखो पृष्ठ १५६)

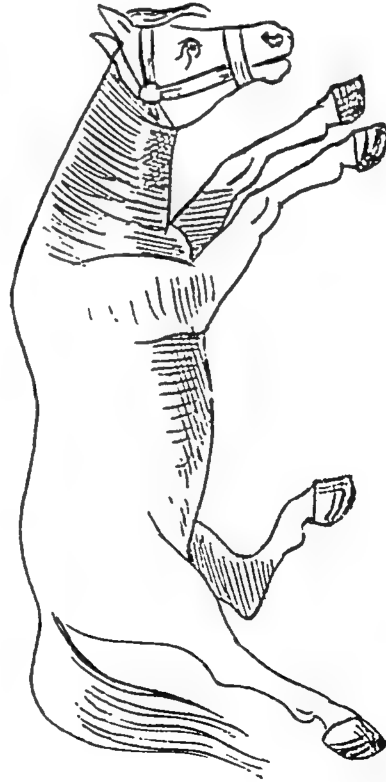




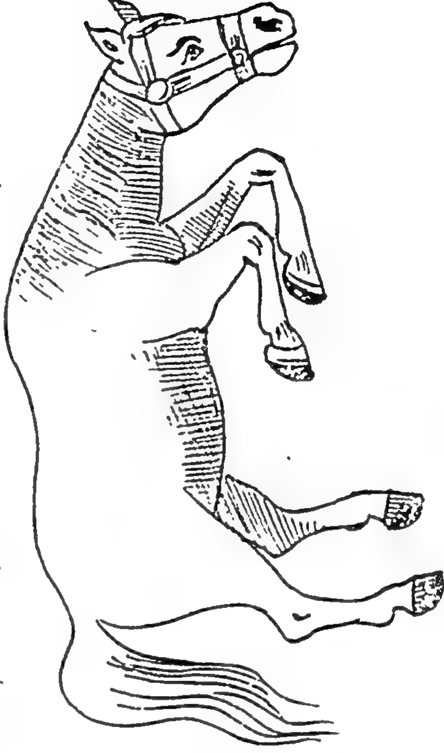
राकसशूल घोडानंबर १४० (दे·पृ·१५६)



शीलभतवीशूल घोडानंबर १४१ (देखो·पृ १५७)

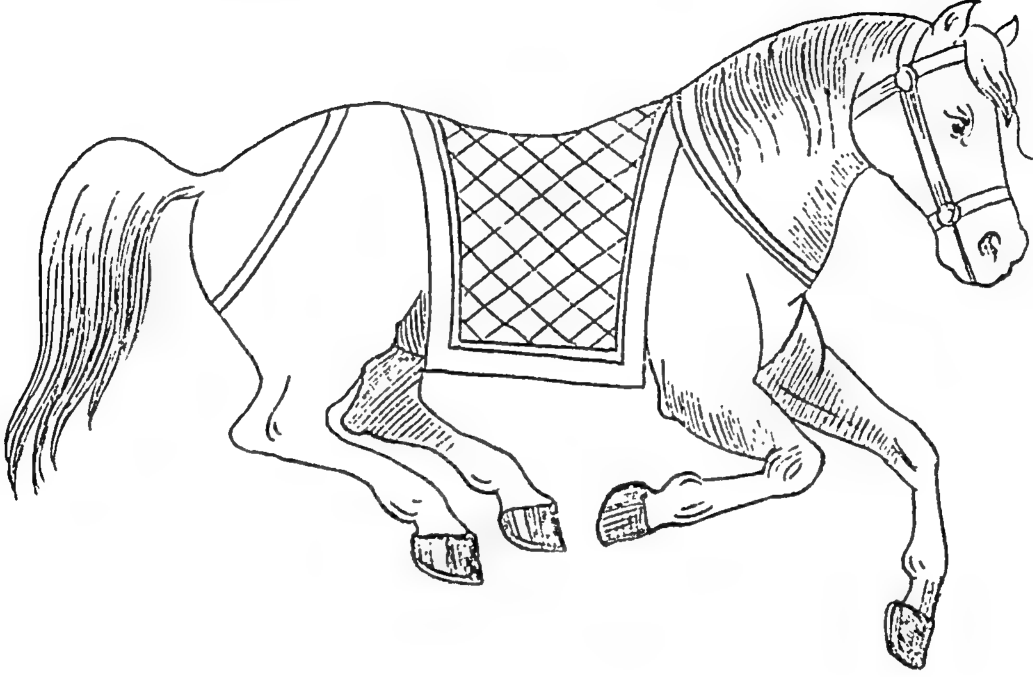


श्रवंतशूल घोडानंबर १४२ (दे·पृ·१५७)

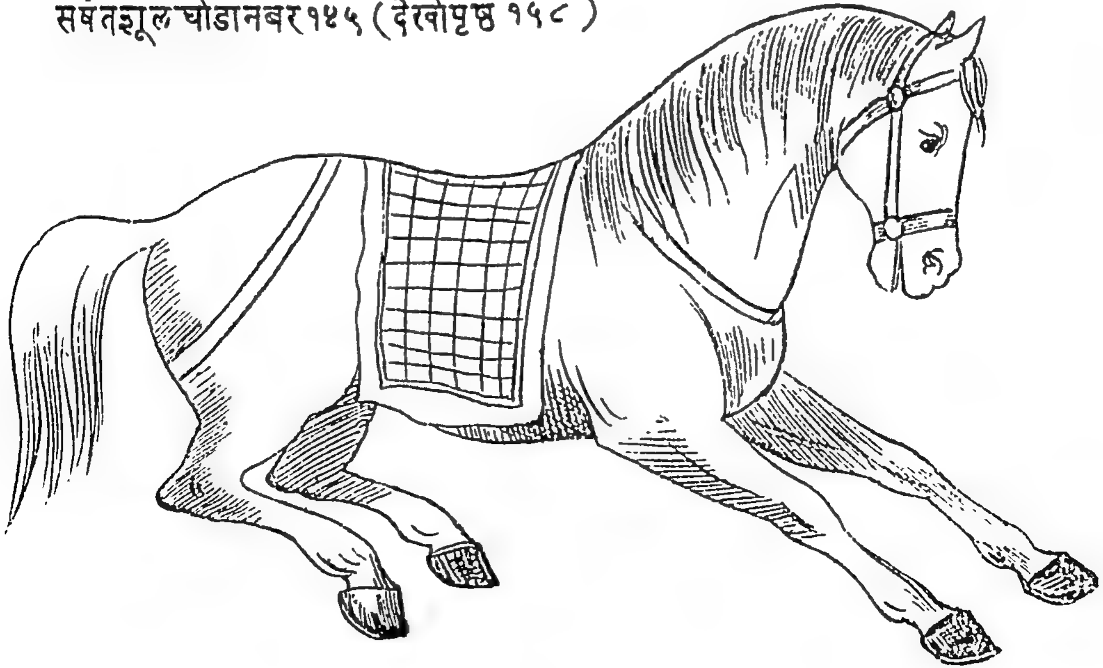


क्षुधाव्रतशूल घोडानंबर १४३ (दे·पृ·१५७)

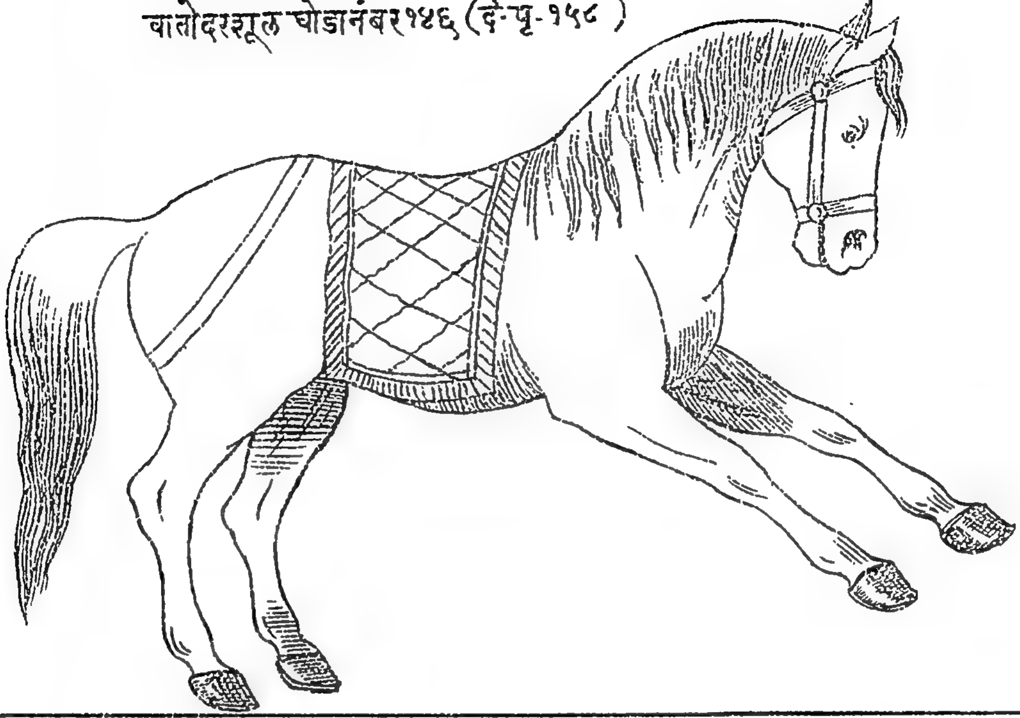
खंडशूल घोडानंबर १४४ (देखोपृष्ठ १५७)



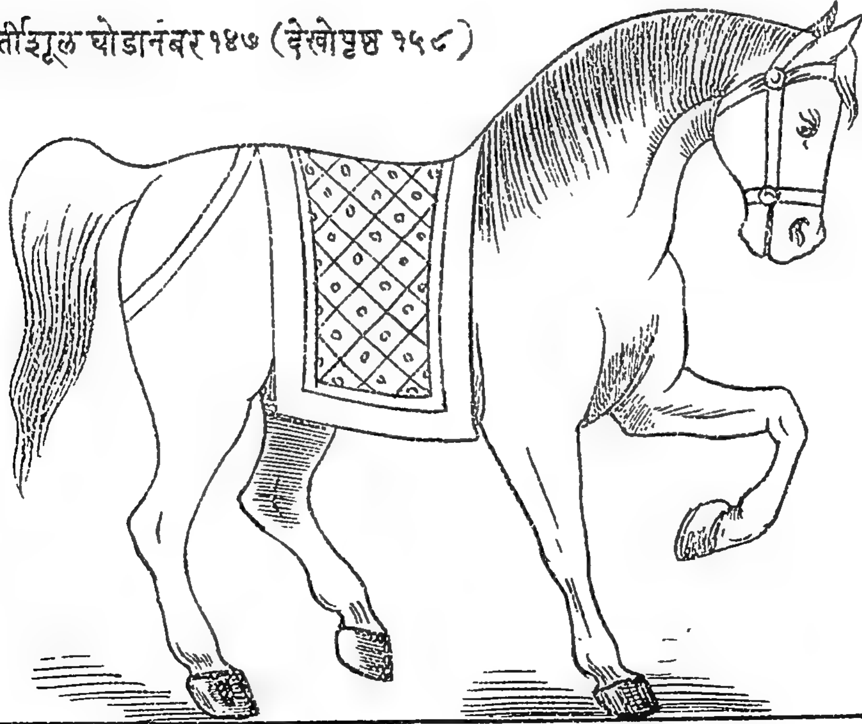
सषंतशूल घोडानंबर १४५ (देखोपृष्ठ १५८)



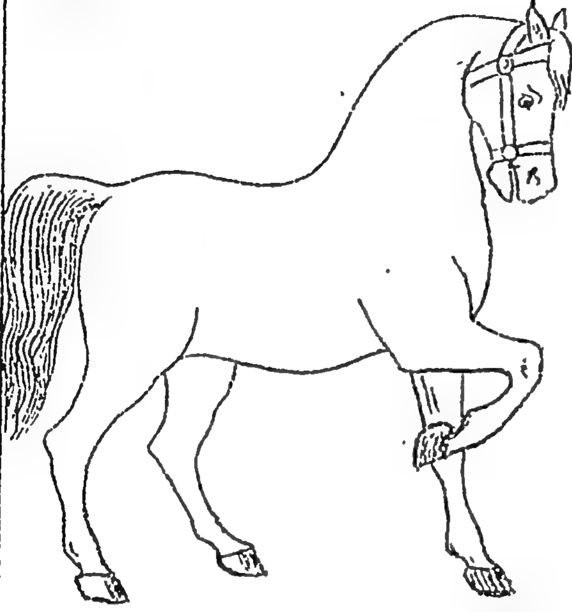
वातोदरशूल घोडानंबर१४६ (दे॰पृ॰१५८)



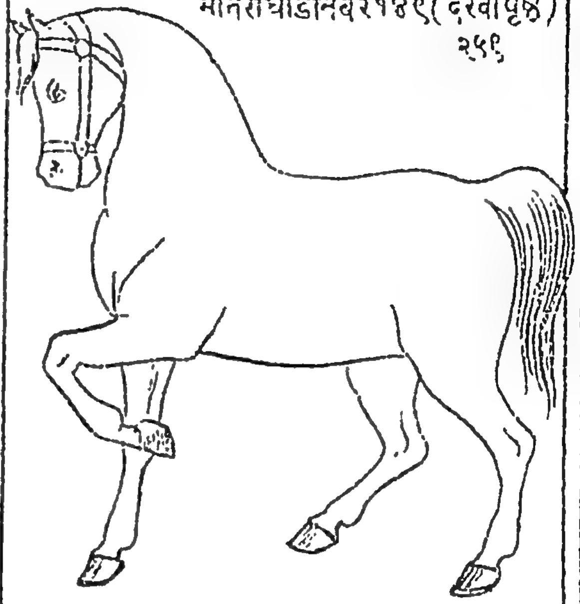
मवर्तीशूल घोडानंबर१४७ (देखोपृष्ठ १५८)



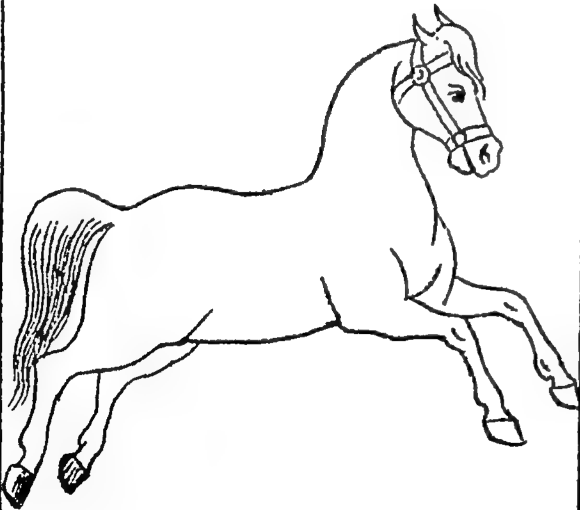
हल्ला घोडानंवर १४८ (देखोपृष्ठ २५६)



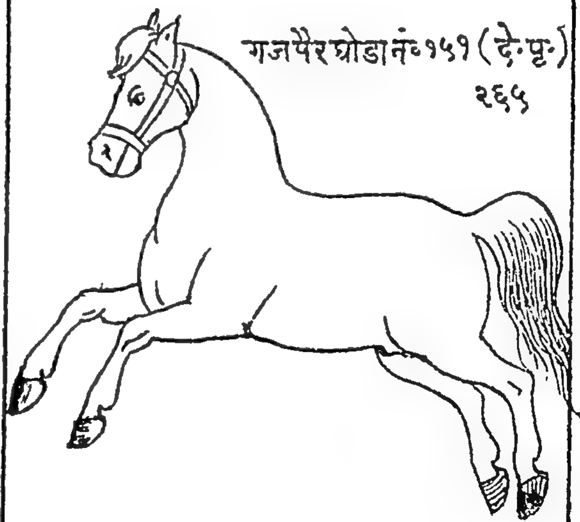
मोनरा घोडानंवर १४९ (देखोपृष्ठ २५९)



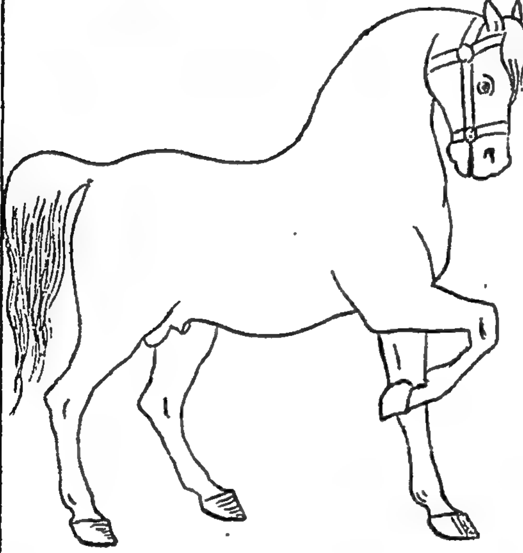
वैजामोतरा घोडा नंवर १५० (देखोपृष्ठ. २६४)



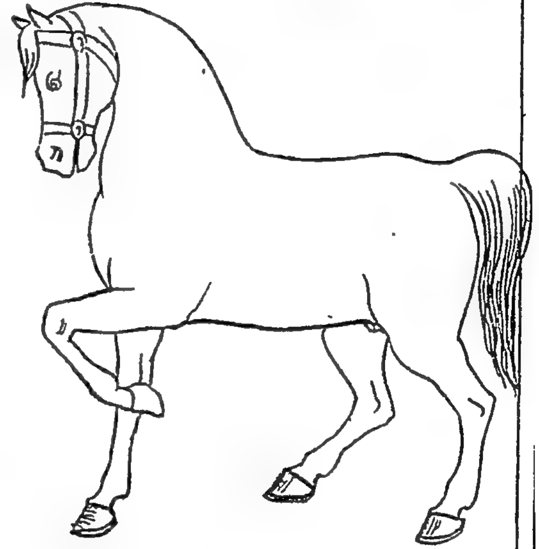
गजपैर घोडा नं. १५१ (दे. पृ. २६५)



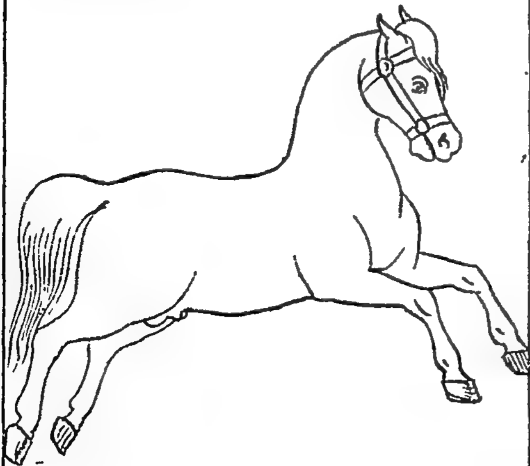
जानुआघोडानंबर१५२ (देखोपृष्ठ २६५)



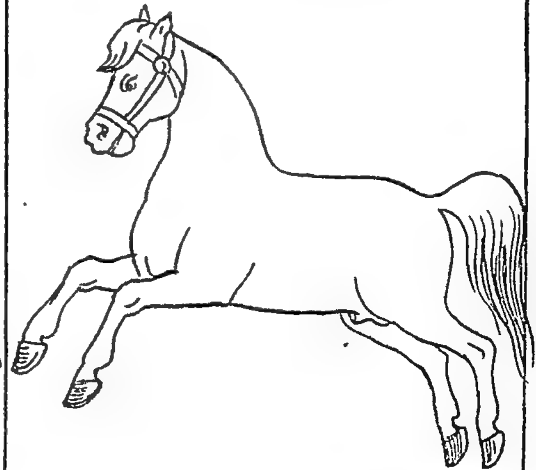
बेरहड्डी घोडानंबर१५३(देखोपृष्ठ २६८)

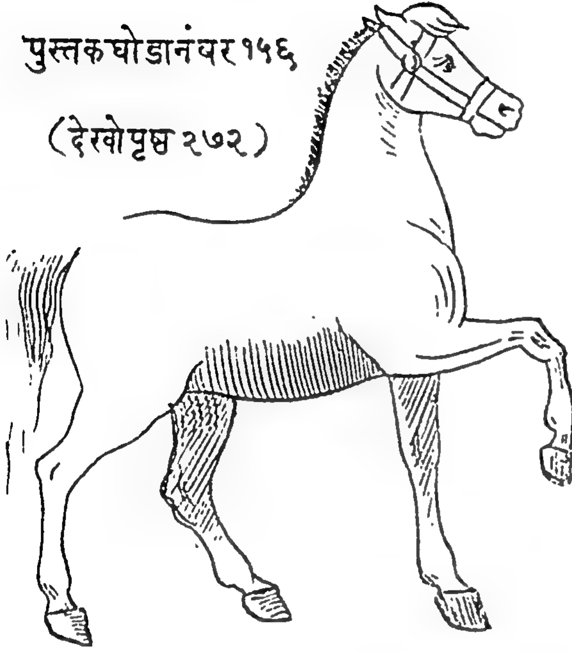


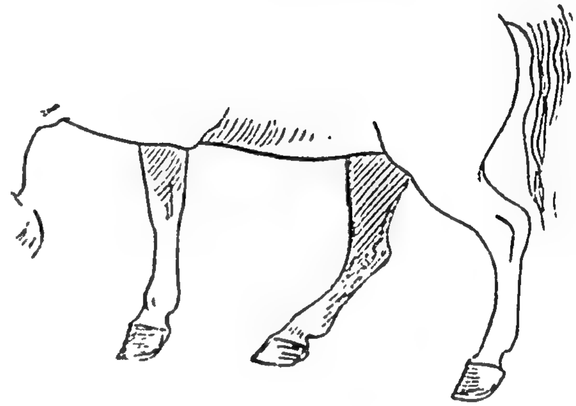
जेरवाईघोडानंबर१५४ (देखोपृष्ठ २७०)



चकावरि घोडानंबर१५५ (देखोपृष्ठ २७१)



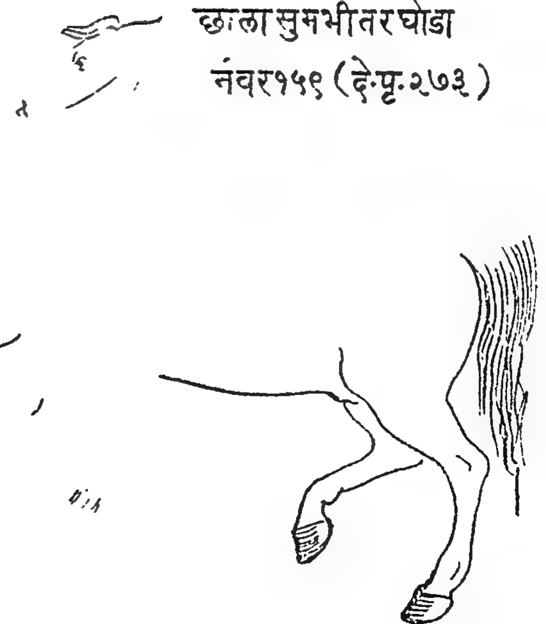




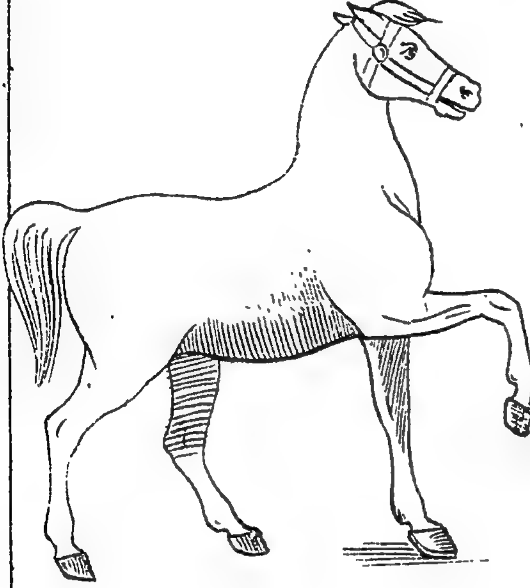
गानारोग घोडानं· १५७
(दे·पृ· २७३)

सुमफाटे घोडानंबर१५८ (देखोपृष्ठ २७३)

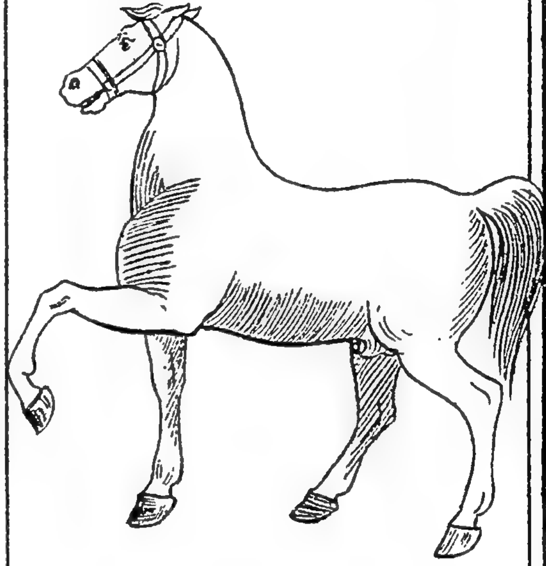




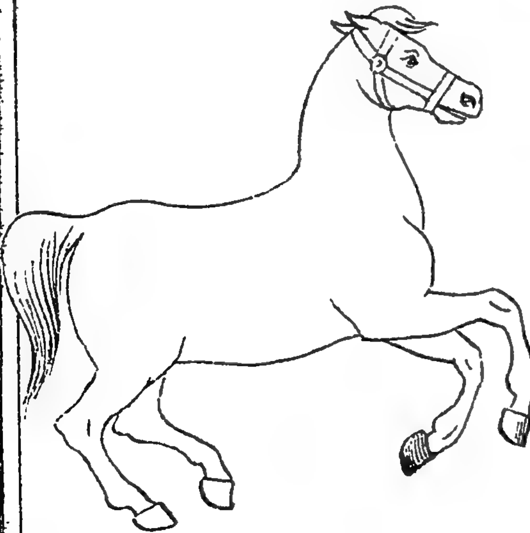
छीपालरोग घोडा नंबर १६० (देखो पृष्ठ २७४)



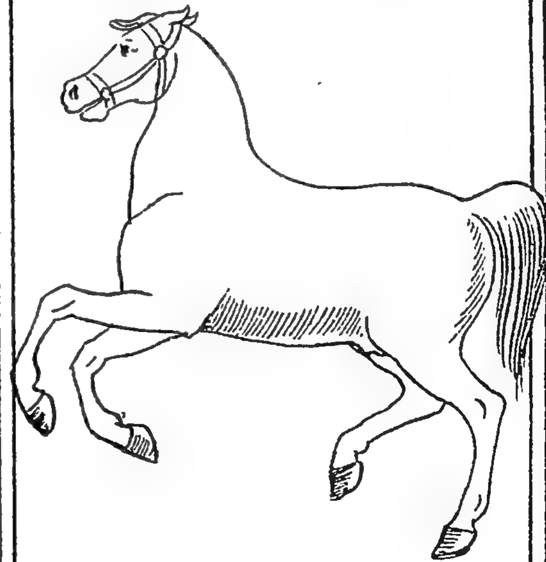
मसवृद्धि घोडा नंबर १६१ (देखो पृष्ठ २७४)



कफगीर घोडा नंबर १६२ (देखो पृष्ठ २७५)



मधुपंकजरस घोडा नंबर १६३ (देखो पृ· २७७)



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



अथ शालहोत्रसंग्रह प्रारम्भः ।

मंगलाचरण ।

दोहा—सिद्धिकरन अरु दुखदलन, गिरिजातनय गणेश ॥
हयचरित्र वर्णन करौं, दायाधरौ हमेश ॥ १ ॥
दुर्गा दुर्गति दुखदलन, भक्तनके सुखहेत ॥
दुष्टजननको नाशकरि, रचो धर्मश्रुतिसेत ॥ २ ॥
मार्तण्ड ब्रह्मांड यहि, तव प्रताप अधिकार ॥
कृपाकरौ जन जानि मुहिं, सुमिरौं चरण तुम्हार ॥ ३ ॥
कीन्ह रजोगुण सृष्टि सब, रचना रची अपार ॥
चतुराननकी बन्दना, हृदय चरण धरि सार ॥ ४ ॥
तमोगुणी अवतारहै, महादेव जगदीश ॥

तवचरणनकी बन्दना, नाइ धरणि धरि शीश ॥ ५ ॥
सतोगुणी जो रूपहरि, पालन करन अनन्द ॥
तिहि चरणनको ध्यान धरि, वर्णत चेतन चन्द ॥ ६ ॥

कवित्त गंगाजीका ।

निकसत कमंडलु नभ सोर सकल लोकनमें,
धारा बाँधि छूटीं शिवजटनमें हितै हितै ॥
जाके गुण गावतहैं शारद अरु सिद्धि सबै,
महिमा अपार सुर ध्यावतहैं नितै नितै ॥
भनत कविनिधान गंग तेरही तरंगनसों,
भाजतहैं मतंग पाप हेरतहैं इतै उतै ॥
यम आगे दूत रोवैं दूत आगे यम रोवैं,
चित्र औ गुपित्त रोवैं कागज चितै चितै ॥ १ ॥

दोहा—सकल सुरनपद बंदिकै, वरणौं अश्वचरित्र ॥
कृपाकरो जनजानि मुहिं, भाषौं ग्रंथ विचित्र ॥ १ ॥
अवध राजधानी जहां, शहर लखनऊ जान ॥
ताके पश्चिम जानियो, सोरह कोश प्रमान ॥ २ ॥
जिला लिखौं उन्नावको, मियागंजके पास ॥
आसीवनको परगना, ताहीमें मम बास ॥ ३ ॥

छंद—वैश्य वर्ण गोपनको ग्रामा तीयरि नाम कहायो ।
केशवसिंह तहांके बासी जिन यह ग्रन्थ बनायो ॥
शालहोत्रसंग्रह करि वहुमत अश्वनको सुखदाई ।
देव पितृ सुरगुरु भूसुरजो सबके चरण मनाई ॥
संवत उनइससैपैंतीसा नौमी तिथि मधुमासा ।
जो यह ग्रंथ लिखी विधि करिहै अश्वनको दुख नासा ॥

दोहा-पाण्डवसुत कुलकमलरबि, धर्मात्मा धर्मज्ञ ॥
सत्यसिंधु धीरज धुरी, राज युधिष्ठिर सज्ञ ॥ १ ॥
भीमसेन अर्जुन अनुज, सहदेव सर्व सुजान ॥
नकुल सकुल भूषण सकल, तुरँग तत्त्व गुरुज्ञान ॥ २ ॥
ग्रन्थ देखि बहु मुनिनके, कीन्हों नकुल विचार ॥
शालहोत्र मत समझिकै, रचना रची अपार ॥ ३ ॥
शालहोत्र पांडवसुवन, प्रथमै रचि सुखकंद ॥
ताहीके अनुसारते, ग्रन्थ बने बहु वृंद ॥ ४ ॥
सतयुग त्रेता द्वापरे, कलियुग युग सब योग ॥
ताहीमें भाषा रची, जो पहिचानै लोग ॥ ५ ॥
विजयकरण आनँदभरण, गावत चारौ वेद ॥
नकुल कहैं सहदेवसों, रविवाहनको भेद ॥ ६ ॥
विविध ग्रंथ अवलोकिकै, और कविन मत जानि ॥
केशव यह संग्रह रची, जो तुरँगन सुखदानि ॥ ७ ॥

अथ अश्वोत्पत्ति वर्णनम् ।

अश्वाऋषिके सुवन यक, शालहोत्र तिहि नाम ॥
तिनके चरणकमल द्युति, कविजन करैं प्रणाम ॥ १ ॥
ऋषि कीन्हों आरंभ मख, होमधूम रह छाय ॥
लागो लोचन ऋषिहिके, सलिलबुंद परे आय ॥ २ ॥
वामनेत्रते अश्विनी, दहिने भयो तुरंग ॥
भाष्यो ऋषि तब सुवनसों, हयको करौ प्रसंग ॥ ३ ॥

अथ यज्ञशाला । देखो चित्र नंबर १.

दोहा-शालहोत्र कह तातसों, अश्वपति करौं विचार ॥
बाजीके ण दोष क- , भाषौं मति अ सार ॥ १ ॥

नमो निरंजन देवगुरु, मार्तंड अखंड ॥
रोगहरण आनँदकरण, सुखदायक जगपिंड ॥ २ ॥
छंद–बाजी सपक्ष मनहरन वेश । श्रीजयकरता राजै हमेश ॥
लखिकै भाष्यो यह देवराइ । किहि विधि ये बाहन होंइ आइ॥
यह दिगिशनसों भाष्यो सुरेश । याको उपाइ कहिये सुवेश ॥
सबदिगिईशन यह विनय कीन । ऋषि शालहोत्र यामें प्रवीन ॥
दोहा–शालहोत्रके पास चलि, विनय करौ बहुभाव ॥
शालहोत्रकी विनकृपा, नाहिंन और उपाव ॥ १ ॥
सब विधि जीमों ठीकदै, लै दिगीश सब साथ ॥
शालहोत्रके आश्रमहि, गये सबै सुरनाथ ॥ २ ॥
अथाश्रम वर्णनम् । देखो चित्र नंबर २.
छंद–जहँ वेद घोष निज पाप हरैं । शुक सारिकादि मुख कहतरैं ॥
पिक हंस सारसन वाद परै । मतद्वैत भेद निर्वेद करै ॥
सवैया ।
बाघ बछानिको गाय जियावत बाघिनियें सुरभी सुत चोषै ॥
न्योरनको सहरावत सांप अहारनि देवै उन्हैं प्रतिपोषै ॥
व्याधके थानहिमें सुनिये अपलोकवसै जलकुण्डनिचोषै ॥
नैनानि रागमई पिकके अब विग्रह वैर शरीरके धोषै ॥
दोहा–एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ॥
शालहोत्र मुनि तिन विषे, जनु दूजो करतार ॥ १ ॥
वेदी वृक्ष अशोकतर, कुशको आसन चारु ॥
शालहोत्र मुनि ताहिपर, बैठे तप अवतारु ॥ २ ॥
चारो ओर ऋषीश सब, दंड कमण्डलु चार ॥
आनि सतोगुणको बस्यो, सुख पावत परिवार ॥ ३ ॥
अतिदुर्बल तनुहूवढो, झलक पुंज परकास ॥
सेवन हित जनु ब्रतन मिलि, करयो शरीरनिवास ॥ ३ ॥

त्रिभंगीछंद ।

सन्मुख तब आयो क्षिति शिरनायो टेर सुनायो करजोरे ।
सुनि सुरपति जान्यो उठि सन्मान्यो गुणन बखान्यो मनभोरे ॥
सादर उर लायो आसन आये: बैठायो सुखमानि सही ।
हँसिकै मुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल सूझी कुशल कही ॥
दोहा–सकल सुरन शिर मुकुटमणि, मिलत वोप सरसाति ॥
चरणकमल मुकुतावली, लखत नखनकी पाँति ।
मुनि भाष्यो मैं धन्यभो, त्रिभुवनमें यशवंत ॥
आये मोगृह देवपति, करिकै कृपा अनंत ॥ २ ॥

हरिगीतिकाछंद ।

भाष्यो ऋषीश सुरेशसों तुमतौ सदा सुखसों रहौ ।
केहिहेतु आयो इहांको अभिलाष सब जियकी कहौ ॥
अति कुल तुरंगनको उडै बहु पवनते किहि विधि धरौं ।
अब आप करैं उपाइ जाते पकरि मैं बाहन करौं ॥
दोहा–यहि उपायके करनको, और न आप समान ॥
ताते मुनिवर करिकृपा, देहु यहै वरदान ॥

तोमरछंद ।

मुनि शक्रओर निहारि । दिय मंत्र शास्त्र विचारि ॥
हिय काजुभो अवगक्ष । कटिहौं तुरंगन पक्ष ॥
मनको मनोरथ पाइ । चलिकै शचीपति राइ ॥
सगरे तुरंगम डाटि । सब पक्ष डारे काटि ॥

छंदरोला ।

कटेपक्ष व्याकुल अतिबाजी पीडित वचन पुकारैं ।
चलै पगनते शोणितधारा लखिलखि धीर न धारैं ॥
सुन्यो ऋषीश्वर शालहोत्रके मत मघवा पर खोये ।

तब तुरंग घायल चलि मुनिके द्वार जाइकै रोये ॥
नहिं कीन्हों अपराध कछू हम निशिदिन दूबअहारी ।
बासकरैं निरजन जंगलमें विहरैं व्योम विहारी ॥
तुम सर्वज्ञ सदा सम देखो सबहीको हरषायो ।
अथ मुनि करुणाकर किहि कारण हमैं विपक्ष करायो ॥
किहि कारण यह दशा कराई हम सगरे निर्दोषी ।
दयासिंधु मुनि सुनिये अरजी को हमको अब पोषी ॥
काँपै तनु घायनकी पीडा व्याकुलता सरसाई ।
तुम गुणसागर बिन त्रिभुवनमें कोअब हमैं जिआई ॥

तोमरछंद ।

अरजी सुनिकै मुनि बात कही । सब वाजिनके हियचित्तचही॥
तुम्हरे तनु के क्षत नीक करौं । अरु औरहु रोग अनेक हरौं ॥
दोहा—देव अदेव नृदेव अरु, धनी त्रिलोकी माहि ॥
तिनके बाहन होहुगे, रहियो सुखसों चाहि ॥ १ ॥
जे तुमपर करिहैं सदा, अतिसनेह महिपाल ॥
तिनके लक्ष्मी गृह बसै, होइ शत्रु उरशाल ॥ २ ॥
जो पोषै तव गातको, सुरसमाज चितचाहि ॥
ताहि डरैं दिगपाल सब, अपर शत्रु को आहि ॥ ३ ॥
दै वरदान तुरीनको, बिदा कियो मुनिराइ ॥
किहिविधि ये सुखसों रहैं, करौं सुतासु उपाइ॥४॥
जिहि प्रकार बाजी सबै, निशिदिन रहैं अरोग ॥
करौं चिकित्सा याहि विधि, करैं सदा सुखभोग ॥ ५ ॥

पद्धटिकाछंद ।

तब शालहोत्र संकल्प कीन । सोरहसहस्र अरु काण्ड तीन ॥
सोई लखिकै श्रीवर सुपंथ । भाषा भाष्यो सो रुचिर ग्रंथ ॥

दोहा--शालहोत्रकी प्रतिज्ञा, हरिकुलको सुखदानि ॥
शालहोत्रकी कृपाते, श्रीधर कह्यो बखानि ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पंचदेववन्दना अश्वाकृषि यज्ञ अश्वधराअवतरणकथनं नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अथ उत्तरायण वा दक्षिणायण फलम् ।

दोहा—उतरायण शुभ फल कहौं, दक्षिण मध्यम जानि ॥
ताहूमें श्रावण विषे, महानिषिद्ध बखानि ॥ १ ॥
उतरायणमों रातिको, वाजी जन्म जुहोय ॥
रातिकेर जस फल अहै, ताते दूनो जोय ॥ २ ॥
उतरायणमें दिन विषे, बडवा जासु बियानि ॥
जैस दोष दिनको कहो, ताते थोरा जानि ॥ ३ ॥

ताकी शांति ।

दोहा—आहुति दीजे व्याहृतिन, सुतौ एकसौ आठ ॥
अरु कीजे दश बार फिरि, सहस्रशीर्षा पाठ ॥

अथ दक्षिणायणविचार ।

दोहा—दछिनायनमें दिन विषे, जन्मै घोडी जासु ॥
निशिमा जैसा फल कहा, आधा जानौ तासु ॥ १ ॥
दिनमें दूनो दोषहै, जैसा दिन को आहि ॥
शांति कीजिये तासुकी, दिनकी जैसि कहाहि ॥ २ ॥
फिरि व्याहृतिको होमकरि, करै एक गोदान ॥
दोष मिटै सब ताहिते, जानौ बात प्रमान ॥ ३ ॥

अथ अमावसको दोष ।

दोहा—जौन अमावस तिथि विषे, निशिमो घोड़ि बिआइ ॥
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मत आइ ॥ १ ॥

उतरायण मावस विषे, निशि में घोड़ि बिआय ॥
तासु फलाफल कछुनहीं, शालहोत्र मतआय ॥ २ ॥
चौपाई—तिथि मावस उतरायन होई । दिनमें जन्मी घोड़ी सोई ॥
दिनमें शांति कहीहै जैसी । शांति कीजिये ताकी तैसी ॥

अथ दक्षिणायण अमावसको दोष ।

सोरठा—वड़वा होइ बियानि, तिथि मावसकी रातिमें ॥
पुनि दछिनायन जानि, दोषहोय दिनके समय ॥
दोहा—शांति कीजिये तासुकी, जैसी दिनकी जानि ॥
ऐसो योगहि दिन विषे, बडवा होइ बियानि ॥

ताकी शांति ।

दोहा—यम कुबेरको मंत्र जपि, होम करै सुखदाइ ॥
और कही जस शांतिहै, दिनकी देहु कराइ ॥

अथ श्रावणको फल ।

दोहा—श्रावणके महिना विषे, घोड़ी होइ बिआनि ॥
निधन करै निजस्वामिको, धनकी हानि बखानि ॥

ताकी शांति ।

दोहा—श्रावणमें जो रातिको, जन्म घोड़िका होइ ॥
सहित बछेरा विप्रको, घोड़ी दीजै सोइ ॥ १ ॥
श्रावण महिना दिन विषे, कोइ पहर जोहोइ ॥
सबै दिगीशनकोपसों, जानि लेहु जिय सोइ ॥ २ ॥

ताकी शांति ।

दोहा—दिगपालनके मंत्रजे, पृथक् पृथक् जपवाइ ॥
अरु व्याहृतियुत होमकरि, दुइ गोदान कराइ ॥ १ ॥
और शांति दिनकी कही, जैसी दिन की आइ ॥

शालहोत्र मुनि यों कहैं, सर्वदोष मिटिजाइ ॥ २ ॥
शांति करैकी स्वामिको,जो सामर्थ्य नहोइ ॥
यथाशक्ति करि दीजिए, दान विप्रको सोइ ॥ ३ ॥
घोड़ी देवेको लिखी, तहाँ बछेरा युक्त ॥
होइ नहीं सामर्थ्य जो, तौ कीज यह युक्ति ॥ ४ ॥
करै एक गोदानसो, उत्तम विप्र बुलाय ॥
यथाशक्ति कछु दीजिये, अन्नदान करवाय ॥ ५ ॥
श्रावण महिना माहिमें, सूर्य कर्कके होय ॥
तिथिहि अमावस जो अहै, ऐसो दिनहै जोय॥ ६ ॥
यही योगमें दिन विषे, पहर तीसरो होय ॥
घोड़ी जन्मै पुत्रको, तासु शांति नहिं कोइ ॥ ७ ॥
जाकी घोड़ी होइ वह, दोष ताहि अस होइ ॥
धन दारायुत पुत्रको, नाश करैगो सोइ ॥ ८ ॥

अथ रात्रिजन्मफलम् ।

दोहा–निशा माहि पहिले पहर, बड़वाजासुबिआइ ॥
शत्रु न जीवे ताहिको, फल यह ताको आइ ॥ १ ॥
ताके होत तुरंग वहु, नितप्रति सुख अधिकाइ ॥
निश्चय जानौ वात यह, कृपा शक्र की आइ ॥ २ ॥
पहर दूसरे रात्रिको, घोड़ी बच्चा देइ ॥
घोड़ीहै जेहि पुरुषकी, जीति शत्रु सो लेइ ॥ ३ ॥
धन अति बाढ़ै ताहिके, जाकी घोड़ी होइ ॥
संवतसरके भीतरै, पुत्र तासुके होइ ॥ ४ ॥
सोरठा–पहर तीसरे माहि, बड़वा जन्मै पुत्रको ॥
जाकी घोड़ी आहि, होइ तासुके धान्य बहु ॥

दोहा–जानौ चौथे यामको, घोड़ी जासु विआइ ॥
गो अरु महिषी ताहिके, नितप्रति अति अधिकाँइ ॥

अथ दिवसको फल ।

दोहा–दिनके पहिले पहरमें, बड़वाहोइ बिआनि ॥
ताको मध्यम दोषहै, कहत सबै गुणखानि ॥

अथ ताकी शांति ।

दोहा–सुरभी एक मँगाइकै, बोलि विप्रको देइ ॥
दोषजाइ मिटि ताहिको, जो यह विधि करिलेइ ॥ १ ॥
घोड़ी पहिले याममें, जन्मै बच्चा जौन ॥
काटै दहिने कान को, कछुक थोर बुधिभौन ॥ २ ॥
होइ बछेरी तौन जो, बायें कानहि माहिं ॥
कछु थोरोसो चीरिये, तहूं दोष मिटिजाहि ॥ ३ ॥
पहर दूसरे जाहिके, वड़वा होइ बिआनि ॥
जानौ ताके मातृको, मृत्यु पहूँची आनि ॥ ४ ॥

अथ ताकी शांति ।

दोहा–निरतदेवके कोपते, ऐस उपद्रव होइ ॥
निरतिऋचाको होम जप, दशहजार करिदेइ ॥
चौपाई–सहसमूर्त्ति शिवकी पुजवावै । देइ दक्षिणा विप्र जिवावै ॥
और करै दुइ गाइन दाना । तबतौ दोष मिटै विधि नाना ॥
सोरठा–घोड़ी जासु बिआइ, पहर तीसरे दिवसके ॥
ताको फल असआइ, निश्चयजानौ बात यह ॥
दोहा–घोड़ीहै जिहि पुरुषकी, नाश तासु जिय होइ ॥
कीतौ ताके पुत्रको, नाश सहीतै जोइ ॥

ताकी शांति ।

दोहा–पहर तीसरे माहिमें, घोड़ी जासु बिआनि ॥
तापर जानौ कोप यम, अरु सूरजको मानि॥ १॥
यम अरु सूरजमंत्रको, अयुत अयुत जपवाइ ॥
फेरि पूजि यमदेवको, दीजै होम कराइ ॥ २ ॥
अरु सूरजको पूजिये, ब्राह्मण देइ जेंवाइ ॥
यथाशक्ति सो दानकरि, सकल दोष नाशिजाइ॥ ३ ॥
चौपाई–वेदपात्र विप्रहि बुलवावै। दशहजार पारथी पुजावै॥
ताहि सुवर्ण दक्षिणा देई। शांति पढाइ तासुते लेई॥

अन्य शांति विधि ।

दोहा–मृत्युंजयको होम जप, शिव मूरति पुजवाइ ॥
देइ जेंवाइ विप्र बहु; औरौ यह विधि आइ ॥ १ ॥
घोडीबच्चा सहित वह, नाहिं देखै निजनैन ॥
दीजै काहू विप्रको, कहिकै केवल बैन॥ २॥
दिनके चौथे याममें, वड़वा जासु विआय ॥
त्रियामरै ताकी सही, धन स्वाहा ह्वैजाय ॥ ३ ॥

ताकी शांति ।

दोहा–जानौ कोप जलेशको, तासु ऋचा जपवाइ॥
पूजा कीजै बरुणकी, ब्राह्मण देइ खवाइ ॥ १ ॥
घोड़ी जौन बियानिहै, ता बच्चा युत खोलि ॥
और कछू धन धान्य युत, दीजै ब्राह्मण बोलि॥ २ ॥
औरकरै गोदान यक, सबै दोष मिटिजाइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कह्यो, याबिन कुशल नआइ ॥ ३ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीजन्मशुभाऽशुभशांतिकथनं नामाद्वितियोध्यायः ॥ २ ॥

अथ घोडीके प्रसव समयमें बछेराके राखैकी विधि ।

दोहा—घोडीकेरे प्रसवको, समय आनि जब होइ ॥
तबहीं याविधिसों करे, वर्णतहौं अब सोइ ॥ १ ॥
बच्चा निकसै पेटसों, कम्मर पर लैलेइ ॥
लिये ताहि ठाढ़ो रहै,भूमि न आवन देइ ॥ २ ॥
घोडी ताके तनुहिको, लेट चाटि सब लेइ ॥
लिये रहै तेहि ऊपरै, तौलौं भुँइ नहिदेइ ॥ ३ ॥
होइ बछेरा जलद अति, पवन समान उड़ाइ ॥
रोगहोइ नहिं देह तेहि, ऐसी विधि यह आइ ॥ ४ ॥
यहि विधि में यक खौफहै, देइ बछेरा छोडि ॥
तेहिते विधि दूसरि कहौं, जानि लेहु मतिजोडि ॥ ५
जो यह विधि नहिं ह्वसक, तौ यह यत्न करेइ ॥
धरामाहिं नहिं आवई, थाँभि ऊपैर लेइ ॥ ६ ॥
की कमरी की घासपर, बच्चाको धरिदेइ ॥
लेट ताहि की देहको, चाटि घोडिका लेइ॥७॥
देहमाहिं रहिजाय जो, पोंछिलेइ निज हाथ ॥
लेटरहन नहिं दीजिये, यहभाष्यो मुनिनाथ॥८॥
ठाढो बच्चा होय जब, धरामाहिं निज पाँय ॥
तब तौ ताको दोष नहिं, भूमि विषे जो जाय ॥९॥
तबहूँ होय चलाक यह, पैतासम नहिं होय ॥
ये दुइ विधिको छोंडिकै, नीकीविधि नहिं कोय ॥ १० ॥
बच्चा निकसत पेटसों, जब आधा दरशाय ॥
अक्सर की उठिकै तबै, घोड़ि ठाढि होजाय ॥ ११ ॥
गिरत बछेरा भूमिपर, तासु ऐसि गति होइ ॥
झटका लागत कमर में, यातौ कमरी जोइ ॥ १२ ॥

बच्चा ओदो लेटसों, भूमि परश तेहि होय ॥
घीमहोतहै ताहि ते, कहत सयाने लोय ॥ १३ ॥
यासे औरौ कहत हौं, यत्न एक परमान ॥
बच्चा जनने के समय, कीजै यहै विधान ॥ १४ ॥
कम्मरी एक मँगाइ कै, चारौं कोन पसारि ॥
बच्चा जब निकरन लगै, ऊपरै लेवै धारि ॥ १५ ॥

अथ खूझा निकारैकी विधि ।

दोहा–घोडी केरे पेटसों, बच्चा बाहर होइ ॥
खूझा ताके सुमनसों, काढि डारिये सोइ ॥ १ ॥
खूझा ताको कहतहैं, नीचे सुमके होइ ॥
सुममें लागो होतहै, सुम समानहै सोइ ॥ २ ॥
श्वेतरूप सुमके तरे, प्रकट देखाई देत ॥
सुमके टेढे होनको, ताहि जानिये हेत ॥ ३ ॥
जो खूझा नहिं काढिये, औरौ दोष लखाय ॥
रस गंधादिक रोग जे, होत तुरीके आय ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोडीके प्रसवसमय बछेराकी विधिकथनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ बच्चाके दूध पिवावैकी विधि ।

दोहा–प्रथमै घूंटी देइ करि, पीछे दूध पिआइ ॥
दोष करत नाहिं दूध तब, जानौ सत्य उपाइ ॥

घूंटीविधि ।

दोहा--करुव तेल अतिही खरो, पैसाभरि मँगवाइ ॥
नीबपातको अर्क सम, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥

तप्त कीजिये अग्निपर, चौथभाग जरिजाइ ॥
तेहि उतारि ठंढो करौ, बच्चहि देउ पिआइ ॥ २ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–पैसाभरिकै नीबको, रँगनु लेउ मँगवाइ ॥
तिहिको आधो लेउ गुड, तामैं देउ मिलाइ ॥

अन्य विधि ।

चौपाई--केवल करुवा तैल मँगावै। तुरी बछेरहि आनि पिआवै॥
पीवै दूध रोग नहिं होई । घूँटी तीनि कहीये सोई ॥

अथ बछेराके अन्हवावैको विधि ।

दोहा--लेट रहतिहै देहमें, बाजि बडो जब होइ ॥
होत खरिस्ति सु ताहिके, सही जानियो सोइ ॥ १ ॥
जबहिं बछेराके बदन, लेट सूखि सब जाइ ॥
तप्त जलहि करवाइकै,देहु ताहि अन्हवाइ ॥ २ ॥

जो घोडी बच्चा को छोडि देइ ताको लैलेनेकी विधि ।

दोहा–लोनु लहौरी लेइकर,तासम खैरु मिलाइ ॥
बच्चाकेरी पीठिपर, दीजै ताहि मलाइ ॥ १ ॥
ताहि चटावै घोडि वह, बच्चाको लैलेइ ॥
जो यहिविधि ते लेइ नहिं, तौ यह विधि करिदेइ ॥ २ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–घोड़ीको ठाढ़ी करै, बंधन देइ छँड़ाइ ॥
ताके सम्मुहे दूरि कछु, बच्चाको ठढिहाइ ॥
सोरठा–श्वान एक मँगवाइ, बच्चाकेरी पीठिपर ॥
दीजै ताहि छँड़ाइ, भाजि चलैं नर होंइ जे ॥
दोहा–श्वानहि काटनको तबै, दौरत घोड़ी आहि ॥
लेत बछेराको सही, उपजत ममता ताहि ॥ १ ॥

होइ दूध नहिं घोड़िके, की तौ नहीं बिआइ ॥
रोग औषधी जहँ कही, तहँहै तासु उपाइ ॥ २ ॥

अथ दूधको अजीर्ण होइ ताकी औषधि ।

दोहा–आधापैसा तौलभरि, अजवाइनिको लाइ ॥
ताते दूनो लेइ गुड़, दूनौ पीसि मिलाइ ॥ १ ॥
होय बछेरा छोट जो, देइ बखतमहँ सोइ ॥
नाहिन यक मौताजहै, देत अजीरणखोइ ॥ २ ॥
और अजीरण औषधी, जेती वर्णी आइ ॥
कदहि देखि सो दीजिये, तहूं अजीरण जाइ ॥ ३ ॥

अथ दूध पिआवैकी विधि ।

दोहा–मास एकको होइ जब, घोड़ीकेर बछेर ॥
तबै पिआवै दूधको, नहिंकीजै अतिदेर ॥ १ ॥
उत्तम अजया दूधहै, मध्यम गऊ क जानि ॥
और दूध नहिं दीजिये, करत रोग यह मानि ॥ २ ॥

चौपाई–बरतन एक लीजिये ताता । तामें यह विधि कीजै भ्राता ॥
सैंधवलोनु धरै बरतनमें । ऊपर दूध डारिये तामें ॥
वही दूधको देइ पिआई । लोनु बछेरहि देइ चटाई ॥

सोरठा–खील सोहागा लाइ, दूध धार संग छोंडिये ॥
पियत बछेरा जाइ, करत बहुत गुणको अहै ॥ १ ॥
धेला भरिसे लाइ, पैसा भरितक दीजिये ॥
उमिरि देखिकै ताइ, खील सोहागा देहु तेहि ॥ २ ॥

दोहा–दूध पियेते अश्वतनु, होत वात अधिकार ॥
दिये सोहागा होतनहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
प्रथमहि दीजै दूधको, पावसेरसों लाइ ॥
फिरि जितना वहु पीजिये, वतना देहु पिआइ ॥ २ ॥

जो यतना नहिं दीजिये, जबते दाना खाइ ॥
दाना दूध भिगोइ करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥
चनाको दाना दूधमें, दीजै ताहि भिगोइ ॥
दिनामातु भीजा करै, अश्वहि दीजै सोइ ॥ ४ ॥

अथ मक्खन देइकी विधि ।

दोहा—दोइ टकाभरि दीजिये, प्रथमहि माखन लाइ ॥
दिनदिन ताहि बढ़ाइये, एक सेर लगुजाइ ॥ १ ॥
मक्खन दीजै अश्वको, सैंधव लोन मिलाइ ॥
देइ टकाभरि लोनको, मक्खन सेरहि माइ ॥ २ ॥
एक सालभरि अश्वको, माखन देइ खवाइ ॥
ताको बल औ पौरुषौ, घटत कबहुँ नाहिं आइ ॥ ३ ॥
तुरी दूध जबलौं पियै, कीतौ माखन खाइ ॥
पैसाभरि अजवाइनिहि, देत निताहि प्राति जाइ ॥ ४ ॥

बछेराको मुसव्वर देइकी विधि ।

दोहा—अलुआ मासे दोइलै, दूधमाहिं पकवाइ ॥
कद अरु बैस विचारिकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥
दिये मुसव्वर अश्वको, सगरे रोग नशाँइ ॥
शरदी बलगम वातते, जनित रोग सब जाँइ ॥ २ ॥
मक्खन पयके दियेसे, जो अवगुण कछु होइ ॥
दिये मुसव्वर अश्वको, पचत सकलहै सोइ ॥ ३ ॥
कद अरु बैस विचारिकै, देइ मुसव्वर ताहि ॥
कम ज्यादा मौताजसे, करदीजै सो वाहि ॥ ४ ॥
दूध परत जहँ होइनहिं, शरद मुलुक अतिहोइ ॥
दूनिदेइ मौताज यह, मूसव्वरकी सोइ ॥ ५ ॥
होत जानुवाँ नहीं तिहि, सो जानौ मतिवान ॥
शालहोत्रमत देखिकै, कह्यो सुतौन विधान ॥ ६ ॥

अथ बछेराकी चौबंदी दागैकी विधि।

दोहा—मास ग्यारहें ऊपरै, दागिय बाजीसोइ ॥
तब चौबंदी दागिये, मौसम जाड़ा होइ ॥ १ ॥
दोइ साल पर्यंतलौं, दागत हय सबकोइ ॥
ताते बढिकै वैसमहँ, दागे गुण नाहिं होइ ॥ २ ॥
ऊपर आँगुर चारिसो, चारिउ गांठिन माहिं ॥
रगैं देखाई देतिहैं, तरफ भीतरी आहिं ॥ ३ ॥
तहाँ दागिये अश्वको, ताते बहु गुण होइ ॥
दुइदुइ लीकै कीजिये, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
और रगैहैं अश्वके, तेऊ दागी जाइ ॥
ते अब वर्णन करतहौं, ताको गुण दरशाइ ॥ ५ ॥
दाढ पिछारी शिरहितर, गर्दनिको जहँ जोर ॥
रगै दोइ तहँ होतिहैं, तहाँ दागिये घोर ॥ ६ ॥
शिरके जेते रोगहैं, सो हयके नाहिं होइ ॥
दागी जाकी रगैवे, बिरले जानत कोइ ॥ ७ ॥
दोऊ तरफन दागिये, पारा करिये चारि ॥
आँगुर तीनिके होंयसो, + याही भांति विचारि ॥ ८ ॥
दोऊ अगिले भुजनपर, बंदहोंइ तहँ दोइ ॥
जहाँ हाडको जोरहै, तहाँ दागिये सोइ ॥ ९ ॥
ताकी छाती भराति नाहिं, ये बंद दागे जाहि ॥
दागै पारा+चारिकरि, शालहोत्र मत आहि ॥ १० ॥
दोइबंद कोखिन विषै, वाजीके सो होइ ॥
जहँ भौंरीहै कोखि की, ताके पीछे सोइ ॥ ११ ॥
तहाँ दागिये अश्वको, ताको फल अस आइ ॥
होत कुरकुरी ताहि नाहिं, उदररोग नशिजाइ ॥ १२ ॥

रगै चारि औरौ अहैं, बाजी पाँइन माहि ॥
होत मुजम्मा ऊपैर, तरफ भीतरी आहि ॥ १३ ॥
मोज्राको जो जोरहै, तापर जानौ सोइ ॥
तहाँ दागिये अश्व जो, यतने रोग नहोइ ॥ १४ ॥
पुस्तक और चकावरी, ता हयके नहिं होइ ॥
बंद एकहै औरऊ, भाषतहौं अब सोइ ॥ १५ ॥
लिंग अगारी पेटतर, नसैं जौन दरशाइ ॥
तहाँ दागिये अश्वको, ताको गुण यह आइ ॥ १६ ॥
अंडकोश ता वाजिके, कबहूँ नहिं घटि जाइ ॥
उतरत नाहिन आँतहै, ता बाजीकी आइ ॥ १७ ॥
दागेते इन वदनको, गुणतौ येते आहि ॥
याते दागतहैं नहीं, अवगुण कुछ दरशाहि ॥ १८ ॥
रोग होतहै वाजिके, कोउ यक ऐसो आइ ॥
फस्तखोलना परतिहै, विना फस्त नहिं जाइ ॥ १९ ॥
जेती दागी नसैहैं, ते नहिं खोली जाहि ॥
हठ करिकै जो खोलिये, लोहू निकसत नाहि ॥ २० ॥
दागत नहिं सो ताहिते, बाजीको सबकोइ ॥
जो कदाचि कोइ दागिहै, अवगुण और न सोइ॥ २१ ॥
चौवंदी जो दागहै, दागौं ताहि जरूर ॥
शालहोत्र मुनि के मते, जानिलेउ जारूर ॥ २२ ॥

अथ बछेराकी परीक्षा जानै कि कैसा घोडा होगा ।

दोहा–कर्ण जासु के लघु लसैं, छाती चौडी होइ ॥
बीचु जाहिके अधिकहै, दुहूँ कानते सोइ ॥ १ ॥
गर्दन लंबी होइ अरु, चौंडे सुमहैं जाहि ॥
कर्ण होंइ ढीले नहीं, लंबो मुखहै ताहि ॥ २ ॥

पातर सुखको वा सुछम, आँखिवडी जब होइ ॥
थुथुनी होइ लुकीलि अरु, बाँसा ऊँच न सोइ ॥ ३ ॥
पूँछ पातरी अश्वकी, गुदा चाकली होइ ॥
चढिकै जामें पूँछ अरु, चौंडे पुठ्ठन सोइ ॥ ४ ॥
ये लक्षण जासें अहैं, नीक तुरी सो होइ ॥
इनते होइ विरुद्ध जो, मध्यम जानो सोइ ॥ ५ ॥
जा वाजीकी देह में, ये लक्षण नाहिं आहि ॥
होय नहीं सो नीक वहु, ऐसो जानौ ताहि ॥ ६ ॥
होय गामची छोटि वहु, यहू सुलक्षण होय ॥
शालहोत्रमुनि के मते, जानिलेहु तुम सोय ॥ ७ ॥

अथ बेचढे अश्वकी परीक्षा कदम चलैगा की नहीं ।

दोहा—अगिलो जाको पग जहाँ, परत धरणि में सोइ ॥
तातें पछिलो बाढिपरै, कदमबाज सो होइ ॥ १ ॥
पछिले पुट्ठा जाहिके, अतिही उतरे जानि ॥
सेर कूंच सो होइ हय, कदमबाज सो मानि ॥ २ ॥

बछेराकी उँचाई यानी केतना ऊँचा होयगा ।

दोहा—सुम ऊपरकी टाँकते, चौगुण ताको जान ॥
तुरी उँचाई होतिहै, ताको मनमें मान ॥ १ ॥
यातौ कान प्रमाण को, नव गुण कीजै तात ॥
अश्व उँचाई जानियै, सही सही यह बात ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोडेके सकलउपचार कथनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ बाजी वर्ण वर्णन ।

दोहा—हय अपार बल सहजही, जानत सकल जहान ॥
तिनमें चारिउ वर्ण हैं, तिनको करौं बयान ॥ १ ॥

अश्व सबै समरत्थ हैं, येकै रूप लखात ॥
तिनके लक्षण कहतिहौं, जाते जानेजात ॥ २ ॥
वण वर्णके भेदसों, भिन्न भिन्न हय होत ॥
कितने पाले देह हैं, कितने रण उद्योत ॥ ३ ॥
तिन अश्वनको जानिकै, वर्ण भेदसों कर्म ॥
देश प्रभावहि लखि कछू, कहत यथामति मर्म ॥ ४ ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु, शूद्र वर्ण हय जानि ॥
तिनके लक्षण कहतहौं, शालहोत्र मतमानि ॥ ५ ॥

ब्राह्मण वर्ण लक्षण ।

दोहा–स्वच्छ स्वभाव अनूप छबि, जासुतेज अधिकार ॥
जाको देखत मोहिकै, नमित होत संसार ॥ १ ॥
भोजनकी रुचि जासुकी, जलसों नहीं सकाइ ॥
अग्निपुंज सम ज्वलित अति, रण देखत ह्वैजाइ ॥ २ ॥
अरु प्रतिभटको देखिकै, नाहिं भय मानै सोइ ॥
सरल सुभाव विवेक अति, जलपीवै मुख धोइ ॥ ३ ॥
पुष्पसमान प्रस्वेद तनु, आवै बासु सुबासु ॥
श्वेत रंगहै तासुको, ऐन नैन सम जासु ॥ ४ ॥
ताते बार गरीब अति, बड़ो जासुको बोल ॥
सूरति प्यारी होय अति, ऐसो अश्व अमोल ॥ ५ ॥
रणमें दगा करै नहीं, क्षतते नाहिं अकुलाइ ॥
बिह्वलभे असवार को, घरहि देहि पहुँचाइ ॥ ६ ॥
हठ पकरे छोडै नहीं, डरै न त्रासे त्रास ॥
विप्रवर्ण पहिंचानिये, रससों आवै रास ॥ ७ ॥
ते दरियाई बाजि वा, नीलसरो के पार ॥
श्वेत रंगके जानिये, होत विशेष अपार ॥ ८ ॥

अथ क्षत्रियवर्ण लक्षण ।

दोहा–मानै हारि न नेकहू, करै विरोध जु कोइ ॥
संगरमें लखि शत्रुको, अतिशय क्रोधित होइ ॥ १ ॥
युद्ध समय असवारके, मनके साथ उड़ाइ ॥
शत्रु शस्त्र निज स्वामिपर, लागत देइ बचाइ ॥ २ ॥
बारबार युध शब्दको, ललकारै जनु वीर ॥
एकीएका शत्रुको, आवै देइ न तीर ॥ ३ ॥
टापैहींसे बल करै, युद्ध समय उत्साह ॥
ऐसो बाजी भाग्य सों, पावत हैं नरनाह ॥ ४ ॥
असवारी प्यारी लगै, निशि बासरमो ताहि ॥
बंधन तोरत तासुते, ताको दोष न आहि ॥ ५ ॥
रण देखत परचंडहै, पवन समान उड़ाइ ॥
अस्त्रचोट मानै नहीं, सन्मुखगोल मझाइ ॥ ६ ॥
अगर समान प्रस्वेद तनु, आवत जाके बासु ॥
अथवा और सुगंधको, तनुते होत प्रकासु ॥ ७ ॥
सहजै चौंकतहै नहीं, चहुँदिशि चितवत जाइ ॥
गनै नहीं उपवासको, सघन तेज सरसाइ ॥ ८ ॥
सदा क्रोध राखै बहुत, जलदी करै अहार ॥
पानी पीवै टापिकै, ऐसो तासु विचार ॥ ९ ॥
वेग तासुके तेजबहु, कदम चलै सुखदाइ ॥
बोलत बोल सुलगै इमि, मानौ बाघै आइ ॥ १० ॥
अग्नि पवन अरु तोपसों, नेकौ नहीं सकाइ ॥
ऋच्छ बाघ गज देखिकै, सन्मुख ताके जाइ ॥ ११ ॥
मरदानो क्रोधी बड़ो, क्षत्रिय वर्ण जु होइ ॥
ताके बल अरु पौरुषै, बाजि न दूजो कोइ ॥ १२ ॥

घोड़ी लखि बोलै नहीं, नाहिंन करै सरार ॥
दुइपद ठाढ़ो होइ नहिं, करै न पाँय प्रहार ॥ १३ ॥
अड़ै न काटै भूलिहू, अति गरीब सो होइ ॥
रससों रस राखैरहै, क्षत्रिय बाजी सोइ ॥ १४ ॥
रंग कुमैतसो होतहै, जानौ ताहि प्रमान ॥
व्योषा ईरानी थवा, ईराकी हय जान ॥ १५ ॥

अथ वैश्यवर्ण बाजी वर्णन ।

दोहा—सुरत होइ सिमिटै बहुत, मनमलीन ह्वैजात ॥
तंग कसति तरसाति अहै, कांपि उठै सब गात ॥ १ ॥
रहै अधीन सवारके, क्रोधकरै डारिजाइ ॥
भीर देखि झझकै बहुत, डरु मानै अधिकाइ ॥ २ ॥
चाबुक मारे क्रोध करि, तबहिं शीघ्रगतिहोइ ॥
मन कपटी अरु मंदगति, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
जलदी चलत न दूरिलौं, कितनौकरै उपाइ ॥
अरगा अविआ कदमहै, जाको जाति सुभाइ ॥ ४ ॥
दाना नीको होइ जो, तौतौ खाइ अघाइ ॥
भोंड़ो छाँडै तुरतही, की थोरो सो खाइ ॥ ५ ॥
रणकाचो नाचो फिरै, कीतौ जाइ पराय ॥
तेजसहै नहिं तोपको, भयते अतिसकुचाइ ॥ ६ ॥
चाहकरै घोडीनकी, बारबार हिहनाइ ॥
मारेते सीधो चलै, मोटी खाल लखाइ ॥ ७ ॥
बासु प्रस्वेदहि घीवसम, कै अजया सम होय ॥
कीतौआवै बासुनहिं, जानिलेहु जिय सोय ॥ ८ ॥
जलपीवतहै ओठसों, मोटो होइ शरीर ॥
ए लक्षण सब जानियो, वैश्यवर्ण तासीर ॥ ९ ॥

सिरगारंग विशेषकै, वैश्यअश्वको होय ॥
तेपरतीके जानिये, निश्चयकरिकै सोय ॥ १० ॥

अथ शूद्र वर्ण बाजी वर्णनम् ।

सोरठा—मलिनरंगहै जासु, शूद्र वर्ण सो जानिये ॥
तासु प्रस्वेदहि बासु, आवत है सम मीनको॥
दोहा—खाल जासु मोटी अहै, मोटहैं सब बार ॥
लीदि मूत्र युत थानमें, लोटत बारहि बार ॥ १ ॥
मंदमंद भोजन करत, झझकै पानी देखि ॥
पलकै मोटी होंइ अरु, मुखमें गंधि विशेषि ॥ २ ॥
निपटहि धीमो होइ सो,बोलत बारहि बार ॥
बोल न प्यारो तासुको, बहुतै करै सरार ॥ ३ ॥
कहा नकरै सवारको, मोटो होइ शरीर ॥
लड़ै वहुत घोड़ेनसों, आवनदेइ न तीर ॥ ४ ॥
काटै मारै लात अरु, दुइ पग ठाढ़ो होइ ॥
करै हरामी वहुत विधि, शूद्र वर्ण हय सोइ ॥ ५ ॥
सोरठा—मारे सीधो होय, करै हरामी फेरि वहु ॥
फिरिमारै जोकोय,तौ तौ फिरि सीधो चलै॥
दोहा—कोइ रंग जो देहमें, होइ मलीन विशेषि ॥
तेखड़हर मड़वारके, जान्यो मनमें देखि ॥

अथ शंकरवर्ण वर्णनम् ।

दोहा—मिलि लक्षण जहँ होतिहैं, दोइ वर्णके आनि ॥
तिन अश्वनकोकहतिहौं, शंकरवर्णबखानि ॥
चौपाई—शंकर वर्ण होहिं बहुतेरे । ते नाहिं वर्णे यामधि घेरे ॥
तिनके लक्षण वहुविधि जानौं । तासों कछु संक्षेप बखानौं ॥

अथ उचित अश्व कथनं ।

दोहा–विप्र योग ये चारिहैं, तीनि नराधिप चाहि ॥
वैश्य सुखद दोई अहैं, शूद्रहि एकहि आहि ॥ १ ॥
कोऊ पंडित कहतहैं, भूपयोग ए चारि ॥
वर्ण वर्णके काज सब, भिन्नै भिन्न विचारि ॥ २ ॥
चौपाई–मंगलकाज सिद्धि द्विज देई। क्षत्रिय जाति विजय रण लेई ॥
धनके काज वैश्य चढ़ि जाई । औरे काज शूद्र सुखदाई ॥
चारौ वर्ण रहैं ये जाके । संपति भवन तजाति नहिं ताके ॥
बहुतक सुख आवै तिहि पाहीं । देखत शत्रु नाश ह्वै जाहीं॥
दोहा–सब बाजिनमें होत नहिं, सब ए लक्षण आनि ॥
एक दोइ जो होंइ कछु, लेहु वर्ण पहिचानि ॥ १ ॥
सब देशनमें होतहैं, चारि वर्ण जो आनि ॥
जौन देशमें जो कहे, ते विशेष करि मानि ॥ २ ॥
इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजिवर्णकथनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५॥

अथ गणविचार ।

दोहा–शुभबाजी अशुभै करै, अशुभ करै शुभ आनि ॥
ताको कारण गण अहै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
सब वाजीहैं तीनि गण, सो अब कहौं बखानि ॥
देवतागण मानुष्यगण, अरु राक्षसगण जानि ॥ २ ॥

अथ देवतागण वाजी ।

दोहा–देखतही मनको हरै, ऐसो रूप ललाम ॥
देह धरेहै वाजिकी, सोहत मानौ काम ॥ १ ॥
नमितहोहिं सब देखिनर, जानौ सरल सुभाउ ॥
अंग सुपुष्टित होइ सम, देवजात परभाउ ॥ २ ॥

भौंरी कही अनिष्ट जो, होंइ नहीं ते कोइ ॥
जे शुभ लक्षणहैं कहे, तिनयुत वाजी होइ ॥ ३ ॥
दहिने नासा भीतरै, परै भँवरि अरु आनि ॥
मिलत भाग्यसों वाजि अस, देवजाति सो जानि ॥ ४ ॥
बाँधे हाथी थुत्थसो, अस हय जाके होय ॥
होनहार निज स्वामिसों, कहत सयाने लोय ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यगण वाजी ।

दोहा—भौंरी दुष्ट अनिष्ट जो, होंय नहीं ते कोइ ॥
देखत होय सुहावनो, मानुषगण हय सोइ ॥

अथ राक्षसगण वाजी ।

दोहा—भौंरी परै अनिष्ट कोइ, जा वाजीके आनि ॥
और चिह्न सब शुद्धहैं, रौद्र रूप पुनि जानि ॥ १ ॥
टेढ़ो होइ सुभाव सब, पुष्ट बहुत सो आहि ॥
क्षुधा तृषा अधिकार बहु, राक्षसगणकहि ताहि ॥ २ ॥

अथ द्वितीयप्रकार गणविचार ।

दोहा—मनुज राक्षस देवगण, सकल नरनको जानि ॥
जाते जाने जाहिं गण, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥
आदि वर्ण जो नामको, जौन ऋक्षको होय ॥
तौन ऋक्ष जेहि गण विषे, गणहै नरको सोइ ॥ २ ॥

अथ राक्षसगण ऋक्षकथनं ।

दोहा—चित्रा सतभिष ज्येष्ठा, मघा विशाषा जानि ॥
अरु अश्लेषा कृत्तिका, मूल धनिष्ठा मानि ॥ १ ॥
ये नक्षत्र सब जानिये, गण राक्षसके आहि ॥
मुनिवर वरणो चाउ करि, जानिलेहु मन माहि ॥ २ ॥

अथ मनुष्यगण ।

दोहा–तीनौं पूर्वा रोहिणी, भरणी आर्द्रा मानि ॥
और उत्तरा तीनि जे, ये मनुष्यगण जानि ॥

अथ देवतागण ।

दोहा–पुष्य पुनर्वसु मृगाशिरा, अश्विनि श्रवण बखानि ॥
अनुराधा स्वाती सहित, हस्त रेवती जानि ॥ १ ॥
कहे देवगणके विषे, ये नव नखत बखानि ॥
ताहि प्रयोजन अब कहौं, शालहोत्र मत जानि ॥ २ ॥

अथ नर देवतागण, घोडा नरगण ताको फल ।

सोरठा–नरगण बाजी होइ, मोललेइ सो देवगण ॥
ताको फल अस जोइ, तुरीरहै आधीन तेहि ॥

अथ नर देवगण, बाजी राक्षसगण ।

सोरठा–देवगणहि नर जानि, बाजी राक्षस गण अहै ॥
ताको फल यह मानि, करै उपद्रव स्वामि घर ॥

अथ नर बाजी दोनौं देवता गण ।

दोहा–बाजी जानौ देवगण, नरौ देवगणहोइ ॥
देत अहै निज स्वामिको, पूरण सुखको सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, बाजी देवतागण ताको फल ।

दोहा–घोड़ा जानौ देवगण, नर राक्षसगण होइ ॥
यद्यपि भौंरी शुभ सहित, हानि करै यह सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, घोडा मनुष्यगण ताको फल ।

दोहा–राक्षसगण नर होइ सो, नरगण बाजी आइ ॥
ताहि खरीदे फल यहै, तुरी सही मरिजाइ ॥

अथ नर राक्षस गण, बाजी राक्षसगण ताको फल ।

दोहा–बाजी राक्षसगण अहै, नर राक्षसगण जानि ॥
यद्यपि भौंरी अशुभ युत, तदपि होइ सुखदानि ॥

अथ नर नरगण, बाजी देवतागण ताको फल ।

दोहा–अश्वजानि सो देवगण, नरगणको नर लेइ ॥
ताहि खरीदै सुखलहै, नितप्रति उत्सव देइ ॥

अथ नर नरगण, बाजी राक्षसगण ताको फल ।

सोरठा–हय राक्षसगण होइ, खरीदार मानुष्यगण ॥
स्वामी नाशै सोइ, धन दारा अरु कुल सहित ॥

अथ नर बाजी दोनों नरगण ताको फल ।

सोरठा–मोललेइ नर जोइ, मानुषगणको होइ सो ॥
बाजी नरगण होइ, तासु फलाफल कछु नहीं ॥

दोहा–शुभचेष्टा बाजीकरै, शुभ भौंरी युत सोइ ॥
नहिं दूषितगण भेदसो, तब पूरण फल होइ ॥ १ ॥
बाजी मिश्रित गण अहै, ताहि खरीदै कोइ ॥
तहाँ विचारै गण नहीं, शालहोत्र कहि सोइ ॥ २ ॥
भौंरी जे शुभ अशुभहैं, त्यों गण चेष्टा जानि ॥
एक एक ये फलद नाहिं, द्वै त्रिय मिलि सुखदानि॥ ३ ॥
कहुँ चेष्टा भौंरी फलद, कहुँ चेष्टा गण मानि ॥
कहुँ गण भौंरी फलदहैं, कहुँ तीनौं ते जानि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतबाजीगणविचारकथनं
नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ बाजी आयुप्रमाण दंतपरीक्षा ।

दोहा–आयु अश्वकी होतिहै, बत्तिस बर्ष कि जानि ॥
याते नाहिन बाढ़िहै, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
कितनी बीती ताहिमें, तासु कहौं पहिंचानि ॥
देखि रदन जान्यो परत, ताते रदन बखानि ॥ २ ॥
कितने दिनमें होत कस, सो अब कहौं बखानि ॥
जाते सब बाजीनके, साल परतिहैं जानि ॥ ३ ॥

अथ दंत वर्णनम् ।

दोहा–प्रथम दिवसके अश्वके, चारि मसूढ़ा होइ ॥
आठरोजको होइ जब, दाँत जमतिहैं दोइ ॥ १ ॥
चारि महीना होंय जब, दोइ दोइ अरु मानि ॥
चारिदाँत तरके लसैं, ऊपर चारिय जानि ॥ २ ॥
दोइ और तरके कढैं, दोइ उपरके जानि ॥
षटतर षट ऊपर लसैं, एकसालको मानि ॥ ३ ॥
ताहि कहत आषंडहैं, जे जानतहैं कोइ ॥
दशमहिनाके ऊपरै, बारहलगु तेहि होइ ॥ ४ ॥
एक सालको अश्व जो, श्वेत रदन तेहि आहि ॥
षटदश मास प्रयंतलौं, ताही सम दरशाहि ॥ ५ ॥
जौन सफेदी रहतिहै, षोड़शमास प्रमान ॥
ता ऊपर जे मासहैं, कीजै तासु बखान ॥ ६ ॥
लगत सत्रहें मासते, हीन सफेदी होइ ॥
जरदी बाढ़ति जाति है, दोइसाल लगु सोइ ॥ ७ ॥
जरदी दशनन माहिं जो, दोइ साल लगु जानि ॥
ताहि कहत नाकंद हैं, शालहोत्र मत मानि ॥ ८ ॥
दुइ दांतनमें मैलु जो, मास पचीसै होइ ॥
मैल दियोहै दोकको, ताहि कहत सब कोइ ॥ ९ ॥
तीसमास लगु रदनमें, रहत मैलु यह जोइ ॥
ता ऊपर जो बाजिहै, दोक जानिये सोइ ॥ १० ॥
तीसमासके ऊपरै, छत्तिस मास प्रमान ॥
दोइ दाँत तरके गिरैं, दुइ ऊपरके जान ॥ ११ ॥
छतिस मासके ऊपरै, जामि बरोबरि होइ ॥
तीनि साल षटमासलै, दोक कहावै सोइ ॥ १२ ॥

संवत साढे तीनिके, जब ऊपर हय होइ ॥
दोइ रदन तरके गिरैं, दुइ ऊपरके सोइ ॥ १३ ॥
चारि वर्ष पर्यंतमें, जामि बराबरि होइ ॥
ताहि तुरीको कहतिहैं, चारि साल सब कोइ ॥ १४ ॥
सोरठा–तब निकसतिहै नेस, बैस कुमारहि जानिये ॥
चढ़िबे लायक वेश, इच्छा सम मेहनति करै ॥
दोहा–चारिसालके ऊपरै, पाँचसाल लगु मानि ॥
दुइ दुइ रद औरौ गिरैं, तर ऊपरके जानि ॥ १ ॥
पांचवर्ष पर्यंतमें, जामि बरोबरि होइ ॥
युवा अवस्था बाजिहै, पंज कहावै सोइ ॥ २ ॥
पांच वर्षके ऊपरै, षष्ट वर्षमें जानि ॥
स्याही सब दांतन विषे, रेख समान बखानि ॥ ३ ॥
षट संवतके ऊपरै, सातवर्ष लगु जानि ॥
सब दांतनके बीचमें, छिद्र परति हैं आनि ॥ ४ ॥
मलै पंजसो जानिये, शालहोत्र कहि सोइ ॥
युवा अवस्था बाजिकी, तहां लगे सो होइ ॥ ५ ॥
सातवर्षके ऊपरै, जहँ लगु अठई वर्ष ॥
सब दांतनके शिरविषे, पहुँचत स्याही सर्ष ॥ ६ ॥
बीतत अठई वर्षके, नव वर्षन परयंत ॥
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ ७ ॥
सो वह जरदी यों लगै, जिमि मैलो हटतार ॥
और दांत सब स्याहहैं; यह कीन्हों निरधार ॥ ८ ॥
नव वर्षनके ऊपरै, दशवर्षन लगु जानि ॥
सब दाँतनमें होति है, जरद रेखसी मानि ॥ ९ ॥
जरद होति हैं दांत सब, वर्ष ग्यारहीं माहिं ॥

नेसनकी जो नोकहैं, ते मोटी ह्वै जाहिं ॥ १० ॥
ग्यारहवर्षन बीतते, वर्ष बारहीं माहि ॥
जरदी दांतन शीश जो,कछुक श्वेत दरशाहि ॥ ११ ॥

सोरठा–बीते बारह वर्ष, वर्ष चौदहींलों कहो ॥
होत सफेदीसर्स,हयके दशनन माहिं सो ॥

दोहा–तौन सफेदी होइ यों, दही रूप ज्यों आहि ॥
याहि उमरके ऊपरे, और परीक्षा नाहि ॥ १ ॥
बीतत चौदह वर्षके, वर्ष सत्रही जानि ॥
बाजीरदनन परतहैं, जरद विंदुसे आनि ॥ २ ॥
जानौ यकइस वर्षते, बीते तेइस वर्ष ॥
दशननमें जे विंदुहैं, ते वै बाढत सर्स ॥ ३ ॥
बीते तेइस वर्षके, वर्ष पचीस समाप्त ॥
रदन जातिहैं बढति अति, अरु सीधे ह्वैजात ॥ ४ ॥
दांतनकेरी जर विषे, लीक समान देखात ॥
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेहु अवदात ॥ ५ ॥
बढ़े पचीसहिते उमिरि, तीसवर्ष लौं जानि ॥
दाँत जातिहैं हालि सब, बाजीके यह सानि ॥ ६ ॥
कटत घास नहिं दशन सों, करत कूचिका तात ॥
ता ऊपर बत्तीसलौं, बाजी रदन निपात ॥ ७ ॥
अरबी और इराकके, बहुरौ जानि इरान ॥
इन्हैं आदि जे हैं तुरी, दीरघ आयु प्रमान ॥ ८ ॥
तिनके दांतन भेद कछु, कहति अहों अब सोइ ॥
तीसमास पर्य्यंतलौं, बाजि अखेड़े होइ ॥ ९ ॥
तीनि वर्ष षट मासलौं, सोनकंद कहि जात ॥
चारिवर्षको होइ जब, तब तोरै दुइ दांत ॥ १० ॥

दोऊ कहतहैं ताहिको, शालहोत्र कहि सोइ ॥
चारिदांत जबहीं गिरैं, आठ वर्षको होइ ॥ ११ ॥
नव वर्षनके ऊपरे, ग्यारहलौं यह मानि ॥
होत पंज तब बाजिहै, श्रीधर कहो बखानि ॥ १२ ॥
ग्यारहते बारह लगे, दशनन रेख लखाइ ॥
बारहते तेरह लगे, छिद्र परतिहैं ताइ ॥ १३ ॥
बीतत तेरह वर्षके, जहँलगि चौदह वर्ष ॥
सब दांतनके ऊपरे, बाढ़त स्याही सर्स ॥ १४ ॥
बीतत सोरह वर्षके, अष्टादश पर्यंत ॥
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ १५ ॥
जरद रेख दशनन विषे, बीसवर्षमें होइ ॥
एकबीस वर्षहि विषे, जरदी व्यापति सोइ ॥ १६ ॥
दोइ औरके बीतते, जरदी कछुक सफेद ॥
होत आइ दशनन विषे, जानि लेउ बिन खेद ॥ १७ ॥
बढ़ति सफेदी सो अह, वर्ष पचीसप्रमान ॥
जरद बिंदु दशनन परैं, बत्तिस वर्ष बखान ॥ १८ ॥
दोइ और बीते बरष, बिंदुस्याह वै होइ ॥
सो वह स्याही अति बढै, पैंतिस वर्षन सोइ ॥ १९ ॥
बीते छत्तिस वर्षके, दांत बाढ़ि सब जाहिं ॥
हालि जाति सब दांतहैं, अर्तिस वर्षन माहिं ॥ २० ॥
फिरि चालिस वर्षन विषे, बाजी रदन निपात ॥
और तुरिनके रदनते, यतनो भेद लखात ॥ २१ ॥
येती आयु तुरीनकी, रदन भेद सों जानि ॥
शालहोत्र लिखि देखिकै, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ २२ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीआयुप्रमाण रदनपरीक्षा वर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ बाजी उत्पत्ति देशकथनम् ।

दोहा--बाजी चारि प्रकारके, औरौ होत सुजान ॥
देश प्रकृतिके भेदसों, तिनको करौं बखान ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम अधम अरु,नीच जानिये और ॥
तिन बाजिनके कहतिहौं, शालहोत्र मत ठौर ॥ २ ॥
देश प्रभावहि होतिहैं, बाजी प्रकृति सुभाउ ॥
देश देशके हय कहौं, करि करि चितमें चाउ ॥ ३ ॥
सब देशनमें होतिहैं, बाजी उत्पाति आइ ॥
ए जे देश विशेषहैं, तेई कहत बनाइ ॥ ४ ॥

अथ बाजी उत्पत्ति उत्तम देश कथनं ।

दोहा--नीलरोदके पारके, दरिआई पुनि जानि ॥
अरबी जाति सुठारहै, और इराकी मानि ॥
सोरठा--इनसम जानि इरान, बलख बुखारो है कहौं ॥
भक्खर तुरकिस्तान, देश कुरंग तुरंगहैं ॥
दोहा--चक्रवारपुठवार अरु, बहुरि कहौं कंधार ॥
सिंधुदेश तिब्बत सहित, जानिलेहु चिन्हार ॥ १ ॥
पुनि येसौरौ जानिये, धन्नीसो हय मानि ॥
अरु पंजाबौ देशको, श्रीधर कहत बखानि ॥ २ ॥
कच्छभुज्ज अरु जानिये, बहुरि काठिआवार ॥
फेरि भीमनाथली कहि, इनकेहरि सुखसार ॥ ३ ॥
इन देशनके बाजि जो, उत्तम लीजो जानि ॥
शालहोत्र मत जानिकै, दीन्हें इहां बखानि ॥ ४ ॥

अथ मध्यमदेश बाजीवर्णनम् ।

दोहा--सतलजके यहि वोरके, जे जंगलके खेत ॥
वाजीहोत विशालहैं, ये मध्यम कहिदेत ॥ १ ॥

पूना रजहरिया बहुरि, ग्वालिआरिया मानि ॥
एते देशन बाजि जे, पौरुष हीन बखानि ॥ २ ॥
और कही करनाटहै, जानौ पुनि गुजरात ॥
इन वाजिनमों बल बड़ो, अधिक तेज सरसात ॥ ३ ॥
सोरठा–एक देश कूरंग, इनमें बाजी होत जे ॥
तिनके पुष्टित अंग, शालहोत्र मुनिको मतो ॥ १ ॥
बहुत दूरि चलि जाहिं, मानत नाहिन हारिको ॥
अतिहि बली सो आहिं, पै वै टर्रा होतिहैं ॥ २ ॥
दोहा–रंगपुरी जुमिला सहित, और भुटानी जानि ॥
इनमें जे टांघन अहैं, ते मध्यम करि मानि ॥ १ ॥
सनीपूर जैता सहित, कनकाई अरु मानि ॥
इन देशनके वाजि लघु, तेऊ मध्यम जानि ॥ २ ॥

अथ अधमवाजीवर्णनम् ।

दोहा–अधम खेत अब कहतहौं, बाजिनके जे आहिं ॥
माडवार खड़हर सहित, अति बलहीन कहाहिं ॥ १ ॥
रंगपुरी जुमिला सहित, और भुटानी जानि ॥
इनमें बड़े तुरंग जे, तेऊ अधम बखानि ॥ २ ॥

अथ नीचतरवाजीवर्णनम् ।

दोहा–महानीच तिरहुति विषे, वाजी उत्पति होइ ॥
औरो जे पर्वत अहैं, तिनमें नीचे जोइ ॥ १ ॥
और सुदेश कहे नहीं, बाजी सब जग होइ ॥
जेते देश विशेषहैं, या माधि वर्णे सोइ ॥ २ ॥
सोरठा–नीच देशमें नीच, उत्तम देश न नीच कहुँ ॥
यह करि जियके बीच, बाजी लेहु विचारि यों ॥

अथ अन्यमत ।

चौपाई–उरकर साकर खुरकर मोटा । लंबी गर्दन कमरक छोटा ॥
सो अरबी सोई ईरानी । पतरी थोबरी खुंदाकानी ॥
चौड़ो माथ थोबरी पतरी । रोम महीन कनौटी सुथरी ॥
थाने सूध चढ़े वहु तलषी । घन्नीखेत सो हय इमि परषी ॥
अधिक असाल तलासिकभारी । कूदफांदमें आतुरकारी ॥
छवोबंद अति शुद्ध बनोहै । सोई भक्खर खेत गनोहै ॥
ठट्ठर भक्खर औ कंधारा । जंगल और काठियावारा ॥
सुमको हलुक रोमको मोटा । ना अति सुन्दर ना बहु खोटा ॥
तिनके नीचे काबुल भाष्यो । दशमें एक बिलाती राख्यो ॥
सोइ जटिआला रजपूतानै । गर्दन बड़ी बड़ोई कानै ॥
कमर गामची श्रुतिको छोटा । दुम सुम भारी मुखको मोटा ॥
आगे पाछ बराबरि देखै । ताको सब कोइ तुरकी रेखै ॥
तुरकी टांचन घुटकन काई । चारिहुको वँद एकै ठाई ॥
कहूं कहूं तसवीरन देख्यो । सो तुरंग दरिआई लेख्यो ॥

दोहा–जा घोड़ेकी पीठि बुध, अतिखाली अवरेषि ॥
ताको कच्छी कहत सब, अति स्वरूपको देषि ॥

चौपाई–उत्तम बाजी देश बखानो । चारु बुखारु महामन मानौ ॥
खुरासानके होतहैं नीके । राजत साजत काजनहीके ॥
करनाटक गुजरात बखानौ । अतिअहार सो मध्यमजानौ ॥

दोहा–माड़वार कसमीरके, उत्तर दिशिके अश्व ॥
नीच कहेहैं नकुल मत, शालहोत्र सर्वस्व ॥ १ ॥
कहे बाजि जे विपिनके, सिंधनदीके तीर ॥
और देशके जानियो, हैं कनिष्ट मतिधीर ॥ २ ॥

अथ देश आयु वर्णन ।

दोहा—काशीपूरव दशबरष, हरद्वार लगु वीस ॥
कहुँ कहुँ जंगल के तुरंग, जियत तीस चालीस ॥ १ ॥
जे असीलहैं ठौरके, खुरासान मुलतान ॥
और इरानी अरबके, कच्छी दीरघ जान ॥ २ ॥
तिनकी तैसी आयुहै, दीरघ वर्ष प्रमान ॥
चंदन सदनते जानियो, रदन बदन पहिचान ॥ ३ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीदेशउत्पत्ति कथनं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ रंग नाम पहिंचान छब्बिश रंग वर्णनम् ।

कवित्त—श्यामकरण संदली समुंद शूर सूरखा सुरंग,
चीनी चौधर संजाफ नीलमकसी प्रमानिये ॥
तामरा हरयल गर्रा मोमिआ अबलख मटिहा,
महुआ फुलवारी कुल्ला एते रंगन बिधानिये ॥
भाषौं कुंमैत मुसकी टोपरा सो युद्ध धीर,
नोकरा अरु सिरगा सारो सब्जा बखानिये ॥
रंग ये भनेहैं षटविंशति प्रसिद्ध करि,
अतिही प्रवीन जो तुरंग कला जानिये ॥

अथ प्रथम श्यामकर्ण रंग स्वरूप वर्णनम् । देखो घोड़ा नंबर १.



यह घोडा रामाश्वमेधमें छोडागया था ।

दोहा—श्रवण श्याम बिंबा अधर, शशि समान सब गात ॥
पीतपूँछ नखअरुण जिहि, वेगवंत जिमि वात ॥
चौपाई—शीश केश बहु पीतसुहायो। मुनिबसिष्ठ के सो मन भायो ॥
सुरँग रत्न मणि माल गुहाये । तुरंग कंठ बहु विधि पहिराये ॥

कंचनपत्र कीन्ह यक सुंदर। बाजिभाल बांध्यो लिखि ऊपर ॥
तब प्रभु कह्यो बोलि रिपुदमनू। तात तुरग संग करु गमनू ॥

अथ द्वितीय श्यामकर्ण रंग । देखो घोड़ा नंबर २.



इस रंगका घोड़ा युधिष्ठिरकी अश्वमेधमें छोडागया ।



व्यासमुनि राजा युधिष्ठिरसे कहत भये ।

चौपाई–पुनि यह बाजिमेधहित भूपा। चहिय तुरँग वर शुभग स्वरूपा॥
दोहा–जो वैसो हय ना मिलै, प्रथम चिह्नके रूप ॥
तौ यहि विधिको छांडिकै, यज्ञ कीजिये भूप ॥
चौपाई–श्रवणहु पूँछ श्याम शिर केशा। होय जासु वपु वर्ण नरेशा॥

संदली रंग । देखो घोड़ा नंबर ३

दोहा–रंग बदामी संदली, वरणैं सुकवि निधान ॥
फीको हय सब रँगनसें, भाषैं तिहि गुणवान ॥

समुँदरंग तीनि तरहके । प्रथम समुँद रंग । देखो घोड़ा नंबर ४

दोहा–रोमावलि जो अश्वकी, उदर फेन सम होइ ॥
चरण आल दुम श्याम है, समुद कहावे सोइ ॥

द्वितीय समुँद रंग । देखो घोड़ा नंबर ५.

दोहा–रंगहोइ सब समुँदको, कर्णश्याम कछु जान ॥
समुँदकर्ण तेहि नामहै, जानौ चतुर सुजान ॥

तृतीय समुँद रंग स्याह जानू । देखो घोड़ा नंबर ६.

दोहा–समुँद स्याह जानू कहौं, जाके जंघा श्याम ॥
बडो रंग मजबूतहै, याको राखो धाम ॥

शूर रंग अशुभ । देखो घोड़ा नंबर ७.

दोहा–धूम्रवर्ण जनु भस्महै, देखत दूरि कराहि ॥
शूर कहावत नकुलमत, सेंति न लीजै ताहि ॥

सुरखा रंग शुभ । देखो घोड़ा नंबर ८.

दोहा–होइ सफेदी गात सब, दूधफेन अनुहारि ॥
सुघर पूँछरी कंध कच, सुरखा कहेउ विचारि ॥

सुरंग गुंजारंग । देखो घोड़ा नंबर ९.

दोहा–अरुणगात जिहि अश्वको, जिमि गुंजाको रंग ॥
अरुणपूंछरी कंध कच, जानव ताहि सुरंग ॥

श्वान सुरंग । देखो घोड़ा नंबर १०.

दोहा–अरुणगात जिहि बाजिको, जिमि हाटकको रंग ॥
तैस पूँछरी कंध कच, कहिये श्वान सुरंग ॥

तैल सुरंग । देखो घोड़ा नंबर ११.

दोहा–होय अरुणता आल दुम, मिलै श्यामता जाहि ॥
कह्यो नामहै कोविदन, तैल सुरंगी ताहि ॥

केहरी सुरंग । देखो घोड़ा नंबर १२.

दोहा–आलचरण दुमश्वेतहै, अरुणगात सब होत ॥
सो केहरी सुरंग लखि, शालहोत्र कहि देत ॥

चीनी रंग । देखो घोड़ा नंबर १३.

दोहा–कहुँ कहुँ श्वेतरु नील कहुँ, त्वचा कहौं कहुँ श्याम ॥
सो चीनीरँग कहतिहैं, नकुल सते अभिराम ॥

संजाफ रंग । देखो घोड़ा नंबर १४.

दोहा–पूँछ चरणलगु जानिये, दूजी रंग लकीर ॥
सो संजाफी नाम कहि, सब रँगकेर वजीर ॥

चौधर रंग । देखो घोड़ा नंबर १५.

दोहा–गज समान जिहि अश्वको, रंगहोइ सब गात ॥
चौधर चौकस अशुभ अति, करौ न याकी बात ॥

नीला रंग । देखो घोड़ा नंबर १६.

दोहा-लील वर्ण जा अश्वको, रोमावली शरीर ॥
नीलारंग बखानु तिहि, बड़ो जोर गंभीर ॥

मकसी रंग । देखो घोड़ा नंबर १७.

दोहा-श्याम श्वेत फुटकी परैं, सकल शरीर प्रमान ॥
मकसीरंग बखानिये, नकुल कहैं पहिंचान ॥

हरयल रंग । देखो घोड़ा नंबर १८.

दोहा-अशित हरित मिश्रित ह्वै, रोमावली शरीर ॥
हरयलरँग जगछिप्रहै, नकुल कहैं मतिधीर ॥

तामड़ा रंग । देखो घोड़ा नंबर १९.

दोहा-चमकै ताँबेकी झलक, रंग तामरा नाम ॥
युद्धविषे स्वामी सहित, करै आपु संग्राम ॥

अरुण गर्रा । देखो घोड़ा नंबर २०.

दोहा-अरुण गात जिहि अश्वको, मिलै सफेदी जाहि ॥
अरुण पूंछरी कंध कच, गर्रा जानव ताहि ॥

श्याम गर्रा । देखो घोड़ा नंबर २१.

दोहा-अरुण श्वेत रोमावली, अश्वाके तनु माहि ॥
श्याम पूंछरी कंधकच, गर्रा श्याम कहाहि ॥

अबलख रंग । देखो घोड़ा नंबर २२.

दोहा-अश्वा केरे गातमें, अर्द्ध उर्द्ध द्वै रंग ॥
अबलख नीको रंगहै, कीजै ताहि प्रसंग ॥

चौपाई-नील श्वेत यक अबलख भाषो।अरुणश्वेत दूजी विधि राषो॥

मोमियां रंग । देखो घोड़ा नंबर २३.

दोहा-मोमरंगको मोमियाँ, अश्वाके तनु होइ ॥
ताहूमें जो गुल परैं, गुली मोमियां सोइ ॥

मटिहा रंग । देखो घोड़ा नंबर २४.

दोहा–मटिहा रंग पतंग सम, तनुको वोचा होइ ॥
सुस्त चुस्त सब काममें, याहि लेउ मति कोइ ॥

महुआ रंग । देखो घोड़ा नंबर २५.

दोहा–मधु समान रोमावली, महुआ रंग बखान ॥
अरुण चमक कछु गातमें, ताहि सुनहुलाजान ॥

कुल्ला रंग । देखो घोडा नंबर २६.

दोहा–जरद रंग सबगात में, सेली पीठि म होइ ॥
पैरन में पंजा परै, कुल्ला कहिये सोइ ॥

फुलवारी रंग । देखो घोड़ा नम्बर २७.

दोहा–जगह जगह तनु होतहैं, वहु रंगनके फूल ॥
अति शुभ ताहि वखानिये, कहैं नकुल प्रतिकूल ॥

कुंमैत रंग । देखो घोड़ा नम्बर २८.

दोहा–गात होइ जो अरुणता, आल चरण दुम श्याम ॥
सो कुंमैता कहत हैं, नकुल सते अभिराम ॥

तेलिया कुंमयत रंग । देखो घोड़ा नंबर २९.

दोहा--लाखरंग सो रंगहै, श्यामचरण दुम आल ॥
तैल कुमयता नाम तिहि,नीको रंग बिशाल ॥

टोपरा रंग ॥ देखो घोड़ा नंबर ३०.

दोहा–जिहि बाजीके शीश पर, श्वेतटोप दरशाइ ॥
कहेउ टोपरा नाम ऋषि,युद्ध धीर सो आइ ॥

मुसकी रंग । देखो घोड़ा नंबर ३१.

दोहा--श्याम वर्ण रँग अश्वको, महिषी रूप शरीर ॥
पाक फँरेंदेसों चमक, मुसकी रंग सुधीर ॥

नोकरा रंग ॥ देखो घोड़ा नंबर ३२.

दोहा–चरण आल दुम गात सब, श्वेतवर्ण जो होइ ॥
नयन नासिका शीशलौं, कपिला नुकरा सोइ ॥

सिरगा रंग । देखो घोड़ा नंबर ३३.

दोहा–होय सफेदी गात सब, जैस रुकुमको रंग ॥
कहो रंगहै नाम ऋषि, सिरगा चपल तुरंग ॥

द्विविध सबुजा । देखो घोड़ा नम्बर ३४.

दोहा–श्याम श्वेत मिलि अरुणता, रोमावली शरीर ॥
सबुजा द्विविध बखानिये, नकुल कहैं मतिधीर ॥

सबुजा सारो रंग । देखो घोड़ा नम्बर ३५.

दोहा–पीठ लीकहै अरुणता, सबुजाहय सब अंग ॥
श्वेत शीश आनन सकल, सबुजा सारोरंग ॥

सबुजा । देखो घोड़ा नम्बर ३६.

दोहा–सबुजा होवे श्याम शित, कहैं रंग परवीन ॥
श्यामलीक हय आलदुम, महासुफल सुखदीन ॥
चौपाई--कहुँ कहुँ श्याम श्याम गुल देखै । गुलेदार सबुजा अवरेखै ॥

अथ सत्रह रंग मिश्रित ।

कबित्त–केहरी बदामी औ सिराजी बोस्ता खँजरेट,
बिल्लौरी कागजी कपूरी तूसी रेषिये ॥
षिंग रंग धूरिया कबूतई रसनीत्यौंचालधार,
कल्यानी चंभालखी सुमति विशेषिये ॥
प्रथम कवित्त षटविंशति गनाये रंग,
यामें सप्तदश ठीक तेतालिस लेखिये ॥
येते रँगप्रगट तुरंगनके युद्धधीर,
इनहींमें केवल अरु मिश्रित परेषिये ॥

पुनः भिन्न भिन्नरंगकी पहिंचान ।

छंद पद्धरी-मुख उदर जानु सेतीनिहारि।सुरखाताजि सब केहरि विचारि
फुटकी बदाम सम श्वेत माहि। लखिरंग बदामी कहि सो ताहि ॥
मिलि श्वेतरंगसें पीत रोम । कहि नकुल सिराजी तुरी कोम ॥
नहिं समुद नसुरखा रंग पाय । तिनको बुध वस्ता रँग बताय ॥
तल नैन ग्रीव अध असित रेष। खंजरेट कहौं तिनको विशेष ॥
बिल्लौर अरुण तुचजहँलखाय। तुच अतिसहीन कागजी पाय ॥
जहँ तनुकपूररंग भासमान । तहँ कहत कपूरी नकुलजान ॥
समफूल तीसिया तूसरंग। लखि बागरोम सेली जु षिंग ॥
मैलो सफेद जिमि धूपरंग। कहि नकुल प्रगट धूरी तुरंग ॥
लखि दादुरके रँग तुरंग वेष। तिनको कबूत कहिये विशेष ॥
रसनी विलोकि रँग सारजार। बहु रंग रोम मिलि चाल धार ॥
लखि क्षेमकरी समतनु विचित्र। कल्यानीहै सो कहिय मित्र ॥
चंभा रँग सुखसित अरुण जान । तनुकहूँ श्वेत कहुँ श्याम आन ॥
अतिही गहिरो कुंमयत जान । सोरँग लक्खी कहिये सुजान ॥

दोहा-वर्ण वर्ण मिश्रित भये, शुद्ध अशुद्ध अनेक ॥
लक्षण सबके कहतहौं, शुद्धधीर सविवेक ॥ १ ॥
चोखरु संद विभेद करि, नहिं भाष्यो यहि हेत ॥
हयगति कला प्रवीन जो, चढि फिराय लखिलेत ॥ २ ॥

अथ सत्रह रंगके घोडोंकी पहिंचान वा लक्षण ।

केहरी रंग । देखो घोड़ा नंबर ३७.

दोहा-उदर जानु मुख श्वेतहै, सुरखाताजिकहिसोइ ॥
कह्यो केहरी नाम ऋषि, रंग असीलो सोइ ॥

सिराजी रंग । देखो घोड़ा नंबर ३८.

दोहा-श्वेतरंग सब गातहै, पीतरोम मिलिजाय ॥
ताहि सिराजी कौमियति, मध्यम रंग कहाय ॥

बदामी रंग । देखो घोड़ा नंबर ३९.

दोहा—फुटकी होंय बदाम सम, श्वेतरंग तनु माहिं ॥
ताहि बदामी कहतहैं, नकुल मतो सो आहि ॥

बोस्ता रंग । देखो घोड़ा नंबर ४०.

दोहा—नाहिं सबुदा नाहिं सूरखा, रंग लेहु पहिचानि ॥
ताको बोस्ता कहतहैं, मध्यम कहौं वखानि ॥

खंजरेट रंग । देखो घोड़ा नंबर ४१.

दोहा—तालु नयन ग्रीवा अधर, रेखा असित सुजान ॥
खंजरेट ताको कहैं, मध्यमरंग प्रमान ॥

काग़ज़ी रंग । देखो घोड़ा नंबर ४२.

दोहा—त्वच महीन रँग श्वेत लखि, जा बाजीको होत ॥
कह्यो काग़ज़ी नाम शुभ, राजनको सुखदेत ॥

बिल्लौर रंग । देखो घोड़ा नंबर ४३.

दोहा—श्वेतरंग सब अंग में, अरुण त्वचा दरशाय ॥
बिल्लौरी सो जानिये, उत्तम महा कहाय ॥

कपूरी रंग । देखो घोड़ा नंबर ४४.

दोहा—जा हयकी रोमावली, रँग कपूर सम होय ॥
ताहि कपूरी जानियो, उत्तम भाषों सोय ॥

तूसी रंग । देखो घोड़ा नंबर ४५.

फूल बराबरि बदनमें, रंग तीसिया तूस ॥
महाअशुभ ताको कहैं, करै वित्तको खीस ॥

अथ धूरिया रंग । देखो घोड़ा नंबर ४६.

दोहा—मैल सफेदी बदन सब, धूपरंग सम रंग ॥
कह्यो धूरिया तुरंगको, मध्यमहै सब अंग ॥

षिंग रंग । देखो घोड़ा नंबर ४७.

दोहा–आलरोम दूनौं तरफ, सेलीसी दरशाय ॥
कहेउ षिंग रंग शुभग बहु, शालहोत्रमत आय॥

कबूत रंग। देखो घोड़ा नंबर ४८.

दोहा–दादुरके रँग तनु सबै, वेष बाजि को होइ ॥
ताको नाम कबूतई, शालहोत्रमत सोइ ॥

रमनी रंग। देखो घोड़ा नंबर ४९.

दोहा–रमनीरंग मँजारसम, देखि चिह्न पहिंचान ॥
कहेउँ नाम हयको विदित, शालहोत्र परमान ॥

कल्याणी रंग । देखो घोड़ा नंबर ५०.

दोहा–क्षेमकरी सम रँगकहो, कल्याणीरँग तात ॥
सो कल्याण बढ़ावई, जानो उत्तम बात ॥

चालधार रंग। देखो घोड़ा नंबर ५१.

दोहा–बहुतरंग मिलि रोममें, चालधार तिहि नाम ॥
उत्तमरंग बखानिये, याको राखौ धाम ॥

चंभारंग । देखो घोडा नंबर ५२.

दोहा–चंभा मुख सित अरुणमें, तनु कहुँ सित कहुँ श्याम ।
मध्यम ताहि बखानिये, कह्यो रंगको नाम ॥

लक्खी रंग । देखो घोड़ा नंबर ५३.

दोहा–अति गहिरो कुंमैत जहँ, लक्खी कहत ललाम ॥
नीकोरँग सो जानिये, अति बलिष्ठ अभिराम ॥

अथ बाइसरंगके घोडोंके नाम । कवित्त ।

धुसरा सुकाली हरदक मूसली अहिमूसली षतंग रंग जानिये ॥
पँचकल्यान पिस्तई चक्रवाक मलयकच्छ मंगल अष्टकसो वखानिये॥

युगल वधिक चापदस्त अर्जुल औ सबुजपाँयश्वेतचरणमानिये ॥
चौपट यमदूत समरदूत खालदार जालिया द्वै विंशति प्रमानिये ॥

अथ धुसरा रंग । देखो घोड़ा नंबर ५४.

दोहा–भूरीदुम अरु आलकच, धुमिलैहै सब गात ॥
धुसरा कहिये नाम तिहि, शालहोत्रकी बात ॥
चौपाई–उत्तम अरु निकृष्ट नहिंजानौ।मध्यम याको रंग बखानौ ॥

सुकाली रंग । देखो घोड़ा नंबर ५५.

दोहा–श्यामगात जो अश्वको, श्यामआल दुम केश ॥
ताहि सुकालीकहतहैं, नकुल मते नहिं बेश ॥

हरदक रंग । देखो घोड़ा नंबर ५६.

दोहा–जरदगात जिहि अश्वको, भूरिआल दुम केश ॥
हरदक कहिये रंग तिहि, उत्तम जानौ वेश ॥

मूसली रंग । देखो घोड़ा नंबर ५७.

दोहा–एक चरणहै श्वेत जो, फूल सकल तनु माहि ॥
नाम मूसली दोष यह, भूलि न लीजै ताहि ॥

अहिमूसली रंग। देखो घोड़ा नंबर ५८.

दोहा–आँवरंग मुख ऊपरै, अहिफणकी आकार ॥
अहिमुसली तिहि जानिये, कलहकरै बिकरार ॥

खतंग रंग । देखो घोड़ा नंबर ५९.

दोहा–श्वेतवर्ण हयको निरखि, रंग षतंग बखानि ॥
हृदय आल अरु ग्रीव लग, पुट्ठा अरुण सुजानि ॥
चौपाई–मध्यभाग यह रँगहै नीको । बहुत तेजाई नहिं बहु फीको ॥

पंचकल्याण रंग । देखो घोड़ा नंबर ६०.

दोहा–श्वेतचरण चारौ निरखि, टीका भाल समान ॥
पँचकल्यानी रंग सोइ, सदा करै कल्यान ॥

पिस्तई रंग। देखो घोड़ा नंबर ६१.

दोहा–पीतगात जिहि अश्वको, पीतआल दुम होय ॥
नाम पिस्तई रंगहै, उत्तम कहियो सोय ॥

चक्रवाक रंग । देखो घोड़ा नंबर ६२.

दोहा–श्वेतचरण तनु पीतहै, अक्षु श्वेत मुख जान ॥
चक्रवाक सो रंगहै, लीजो सुमति सुजान ॥
चौपाई–उत्तमसहापुनीत कहावै । पूरणभाग जासु गृह आवै ॥

मल्लिकच्छ रंग । देखो घोड़ा नंबर ६३.

दोहा–श्यामवर्ण सब अंगहै, चरणचारि सितहोइ ॥
माथे टीका श्वेतलखि, मल्लिकच्छरँग सोइ ॥
चौपाई–अतिशुभ वृद्धि करै सब काहू । पूरणपुण्य जो राखै वाहू ॥

मंगलअष्टक रंग । देखो घोड़ा नंबर ६४.

दोहा–आल पूँछ मुख चरण उर, जा तुरंगके श्वेत ॥
मंगलअष्टक नामहै, नकुल मते कहिदेत ॥
चौपाई–वहुतवृद्धि वहु सुख दिखरावै । दिन दिन मंगल मोद बढ़ावै ॥
दहिने अंग जरद चट होई । सोमंगल जय करत सदाई ॥

युगल रंग । देखो घोड़ा नंबर ६५.

दोहा–बहुतरंग मिश्रित भये, युगल अशुभ अवरेषि ॥
शालहोत्र मत जानिकै, हरै सकल धन लेषि ॥
(खड़ी आलहोइ तिसको भी युगलदोष कहतेहैं ॥)

वधिकरंग अशुभ । देखो घोड़ा नंबर ६६.

दोहा–कृष्ण नीलरँग कलितजो, महाअलक्षण जानि ॥
लोपि भलोरँग गहत बद, वधिक नाम दुखदानि ॥

चापदस्त रंग । देखो घोड़ा नम्बर ६७.

दोहा–आगिलकर बाईतरफ, श्वेतरंग दरशाय ॥
चापदस्त तिहि नामहै, महादोष सो आय ॥

अरजुल रंग । देखो घोड़ा नम्बर ६८.

दोहा-पछिलो पग जो एक सित, अर्जुल ताहि कहाय ॥
दोषविशेषिनमोगनौ, नकुलमते सो आय ॥

सबुज पाँय रंग । देखो घोड़ा नम्बर ६९.

दोहा-एकचरण तनरंगहै, श्वेतहोंय पग तीन ॥
सबुजपाँय सो दोष बर, रहै संपदा हीन ॥
तीनि पाँय यक रंगहैं, एक पाँव तनुरंग ॥
शालहोत्र मुनिके मते, करै राज्यको भंग ॥

श्वेत चरण । देखो घोड़ा नम्बर ७०.

दोहा-श्वेतचरण दूनों निरखि, रंग द्वितीय शरीर ॥
शालहोत्रातिहि अशुभकहि, महादोष गंभीर ॥

चौपट रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७१.

दोहा-चारौ चरण जु श्वेत लखि, माथे तिलक विहीन ॥
नाम चौपटादोष तिहि, राजनको दुखदीन ॥

यमदूत रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७२.

दोहा-श्वेतचरण चारौ निरखि, श्याम शरीर प्रमान ॥
ता वाजीको परिहरौ, है यमदूत समान ॥

समरदूत रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७३.

दोहा-श्वेत वर्ण सब देह लखि, चरणचारि जिहि श्याम ॥
युद्धधीर सो अशुभ अति, समरदूत तिहि नाम ॥

खालदार रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७४.

सोरठा-कोई रँग तनु होय, तामें खत नीले परैं ॥
खालदारहै सोइ, याहूको मध्यम कहो ॥

जालिया रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७५.

दोहा-पुट्ठा पछिले आगिले, औरौ अंगम होइ ॥
जारीसम रँगश्वेतहै, महादोष कहिसोइ ॥

सोरठा–जालपरै तनुमाहि, कछुक अवस्थाके गये ॥
भूलि न राखौताहि, याको त्यागन कीजिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत वाजीरंगकथनं नाम नवमोऽध्यायः॥९॥

अथ पद्म रंग शुभ ।

दोहा–हाथ सफेदी माहिंजो, किंचित तिल परिजाय ॥
पद्मनाम ताको कहैं, अति शुभ लक्षणराय ॥

अथ दाग अंजनीदोष वर्णनम् ।

दोहा–दाग निसानी चारिविधि, ताहि अंजनी नाम ॥
भिन्न भिन्नसो कहतहौं, दोष सहित अरु नाम ॥ १ ॥
दाग अंजनी कहतहौं, दूसर नाम बखानि ॥
कोऊ कोऊ कहतिहैं, लहसुन नाम सुआनि ॥ २ ॥
दागहोइ जो अश्वके, धूमवर्णको आनि ॥
की कस्तूरी रंगको, की असमानी जानि ॥ ३ ॥
लालअंजनी कहतहौं, ताकर नाम बखानि ॥
तैसो दाग जु श्वेतहै, श्वेत अंजनी जानि ॥ ४ ॥
जरद दाग जो अश्वके, अंजनि पद्म कहाइ ॥
वामअंग जो अश्वके, होत अंजनीआइ ॥ ५ ॥
ताकर फल अस कहतिहैं, सकल सयाने लोइ ॥
स्वामीघातक अश्वहै, तजौ ताहिको जोइ ॥ ६ ॥
श्वेत अंजनी बगलमों, जो बाजीके होय ॥
त्रियामरै ताकी सही, जाके अस हय होय ॥ ७ ॥
यहफल जो वर्णन कियो, श्वेतअरुणको जान ॥
दहिने अंग जु अंजनी, ताको दोष न मान ॥ ८ ॥

अथ पद्मअंजनी दोष।

दोहा–दहिने बाँयें अंगमों, पद्मअंजनी होइ ॥
सम्वत्सरके भीतरै, दोषहि लीजौ जोइ ॥ १ ॥
अश्वअहै घर जाहिके, ताहि परै अस दुःख ॥
भाईको बेटा मरै, लहै न सपने सुःख ॥ २ ॥
सोरठा–जेई अंजनि माहि, विंदु होइ रँग देहको ॥
बालअंजनी आहि, स्वामीको नाशै सही ॥
दोहा–केहरि फुलवारी सहित, अरु सबजा गुलदार ॥
इनमें अंजनिदोष नहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
औरौ दोषी रंग जे, ते अब कहौं बखानि ॥
चापदस्त हय येक पुनि, दूजो अरजल मानि ॥ २ ॥
सब देहीको एकरँग, कोई रँग किन होय ॥
तामें ये लक्षण परैं, कहत अहौं अब सोय ॥ ३ ॥
और सफेदी अंगनाहिं, आगिल पाँउ सफेद ॥
चापदस्त सो जानिये उपजत लीन्हें खेद ॥ ४ ॥
यही प्रकारहि अंग सब, पाछिल पाँव सफेद ॥
अरजल ताको नामहै, वहुत करै सो खेद ॥ ५ ॥
सोरठा–जाके हय यह होय, तासु त्रिया रोगिनि रहै ॥
भूलि न लीजौ कोइ, जाको ऐसो रंगहै ॥
चौपाई–प्रथम सितार पेसानी जानौ। दूजो अकरब नाम बखानौ ॥
इनयुत बाजी दोषी होई। शालहोत्र मुनिको मत सोई ॥

अथ सितारे पेसानी वर्णनम्।

चौपाई–भाल जासुके टीकाहोई। नखत बरोबरि जानौ सोई ॥
और देह सब एकै रंगा। नाहिं सफेदी कर परसंगा ॥

जाके तनु ए लक्षण अहैं । सितार पेसानी ताको कहैं ॥
सो वहु मध्यम दोष बखानौ। जहँ वह हय तहँ चिंता मानौ ॥

अथ अकरब दोष वर्णनं ।

दोहा—भाल जासु टीका अहै, और कहूँ नाहिं सेत ॥
तासधि देही रंगहै, अकरब सो कहिदेत ॥ १ ॥
जाके वाजी यहु रहै, ताके सुख नाहिं होत ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, दिन दिन दुख उद्योत ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

दोहा—ऐबदोइ औरौ अहैं, ते अब कहौं बखान ॥
कसका जानौ टेढ़ यक, अधर बिंदु यक जान ॥ १ ॥
कसका जाके भालको, टेढो होइ बनाय ॥
और सफेदी अंग नाहिं, सोऊ ऐब कहाय ॥ २ ॥

अथ अधरबिंदुदोष ।

दोहा—श्वेत अधर जा वाजिके, तामें भँवर समान ॥
श्यामबिंदु जाके परै, सोऊ अधमबखान ॥
चौपाई—की वाजी आपुहि यहु मरै । की कछु और हानिको करै ॥
दोहा—कहूं सफेदी अंगनाहिं, ऐसो वाजी होइ ॥
श्वेतहोइ जो नाकपर, ऐबी वाजी सोइ ॥

अथ दागरंग गोमै ।

दोहा—होयरंग जो बाघको, बरगोलै महँ होय ॥
गोमै कहिये नाम तिहि, बड़ोदोषहै सोय ॥ १ ॥
गोमय होय जु पेट तर, कटि आनन पर सोइ ॥
वाम दाहिने होइ जो, कहौं नीक नाहिं कोइ ॥ २ ॥

स्तुति मंगलदाग शुभ ।

दोहा–जिहि घोड़ेके पूँछपर, खायनकेरनगीच ॥
हृदय चरण अरु शीशपर, दाढ़ीकेरे बीच ॥ १ ॥
होइ सफेदी ठौर इन, तौहै बाहर रंग ॥
अस्तुतिमंगल नाम तिहि, लक्षण भले तुरंग ॥ २ ॥

अथ पुष्परंग अशुभ ।

दोहा–लोपकरै निज बरनजो, प्रगट करै वियरंग ॥
पुष्पाहय ताको कहैं, भूलि नकरै प्रसंग ॥

अथ अशुभरंग दाग ।

छप्पय–अतिलघु टीका श्वेत सितारा कहि दुखदायक ।
शिरको टीका कढो आसु स्वामी सुखनाशक ॥
शिरशितटीका माहिं परे तनु रँग अकरबगति ।
श्यामअरुण कै टीक भालकरि दोष फहसअति ॥
जहँ टीकाऊपरनोक बाढ़ि दलभंजन अतिदोषकर ।
काकटोंट पदश्वेत विषम अति प्रबल दोषबर ॥
कै एक सफेदी भाल लखि मन न इन्हैं लेबो करै ।
सतदोष विचारिकै तब भूप हय चढ़ि रण करै ॥

अथ पीठिदाग अशुभ ।

दोहा–अश्वाकेरी पीठिपर, दीरघहोय सफेद ॥
लीनहोइ तौ फेरिये, दूरिहि दूरि खरेद ॥

अथ तिलकतोरदोष ।

दोहा–जिहि घोड़के बदनपर, बढी सफेदी होइ ॥
बीचबीच खंडित परै, तिलक तोर हय सोइ ॥ १ ॥
याको कबहुँ न लीजिये, महादोषगंभीर ॥
राज्यविनाशै सुखहरै, रोगीरहै शरीर ॥ २ ॥

अथ शहर भूकरंग दागदोष ।

दोहा—होइ सफेदी नासिका, शहर भूक तिहि नाम ॥
पेटभरै नहिं ताहिको, जो यहि खरचै दाम ॥

अथ कंचुकी दागरंग अशुभ ।

दोहा—जानु पाछिले बाहु खुर, काँधो अंड जु सेत ॥
नाम कंचुकी अशुभ अति, नाशै कुल धन खेत ॥

अथ चौरंगीरंग दागदोष ।

दोहा—नासाकेरे भीतरै, फुटकी श्वेत देखाय ॥
सो चौरंगी दोष बर, करै अलक्षण आय ॥

अथ श्रुतिहतरंग दागदोप ।

दोहा—श्रवण श्वेत यक कछु निरखि, श्रुतिहत दोष कहाइ ॥
रोगकरै सब सुख हरै, नकुल मतो सो आइ ॥

अथ श्यामतालू ।

दोहा—टीका तालू मधि लखै, श्यामवर्ण रँग होय ॥
महानिषिद्ध बखानिये, शालहोत्र कह सोय ॥

अथ पंचस्थलशुभ ।

दोहा—गर्दनि पोता पीठि दुम, चरण श्वेत जो होइ ॥
पंचस्थल सित तुरँगके, महासुलक्षण सोइ ॥ १ ॥
की थल चारौ तीनिकी, की दुइ जानौ सीत ॥
गुलदस्ती शुभ नामहै, शालहोत्र परतीत ॥ २ ॥

अथ मिश्रित रंग ।

सवैया—श्वेततुरंगमहै हिमरूप सो भूपतिको सुखदायक नीको ॥
रक्ततुरंगसो औ पुनिपीत लसै सबभाँति गौरंगुल फीको ॥
नील तुरंगम पन्नगके इत श्यामनिधानसो नीलमनीको ॥
भाग्यबडे घर आवत जासुके सुंदर रूप सो भावत जीको ॥

चौपाई-सबते अधिक श्वेत जिय जानौ।राजतिलकके योग्य बखानो॥
सो न होइ तौ क्रमकै लीजै । श्यामरंगको दूरि करीजै ॥
दोहा-रंग न जाको समुझिये, वाजी होय विशाल ॥
और अश्वको भयकरै, ताहि तजौ ततकाल ॥ १ ॥
बालअवस्था नीलहै, दिन दिन बढै जु श्याम ॥
सो वाजी निज परिहरौ, भूलि नराखौ धाम ॥ २ ॥
अधिकरंग जाकी सुरति ,घटै सो नितप्रति मान ॥
होयवृद्ध बहु लघु बरन, ताहि न लावै जान ॥ ३ ॥
नुकरा हंस स्वरूपहै, राजत सित यक रंग ॥
सुरखा सुरँग कुमैतकहि, मुसकी सफल प्रसंग ॥ ४ ॥
ए पाँचौ रँग अतिहि दृढ़, महा बलिष्ठ बखानु ॥
पंचदेवकी सकल महि, शालहोत्र मत जानु ॥ ५ ॥

अथ रंग प्रकृति शरद गरम ।

दोहा-शीतल गरम स्वभाव कहि, और दुंद जो होय ॥
शालहोत्र या विधि कहै, जो पहिचानै कोय ॥
चौपाई-मुसकी औ कुम्मयत समुंदा । गरम प्रकीर्ति होय सुनुचंदा ॥
सुरखासुरंग सु हरयल जानौ।अश्वाद्विज कहिये लखबानो ॥
नीला औ चीनीसबुजारा । शरद प्रकीर्ति होय बेंतारा ॥
बाकीरँग अश्वाके जितने । अरुणै पीत छदैहैं तितने ॥
हैप्रधान सबके अँगपित्ता । वातापित्त मिलि होय विचित्ता ॥
पहिचानै अँग अँगकी रीती । कारि औषध आवे परतीती॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत बाजीदागरंग व प्रकृति
शुभाशुभवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ भौंरी शुभाशुभ वर्णनम् ।

दोहा–भौंरी रूप सुतीनि विधि, एक अवर्त्तक जानि ॥
खनखजूर सम दूसरी, लीकरूप सो मानि ॥ १ ॥
तीसरिहै सम सीपके, येते रूपहि होइ ॥
गात थलके भेदसों, भिन्न २ फल जोइ ॥ २ ॥
ते वै भौंरी पंचदश, सब बाजिनके होइ ॥
ताते घटि बढि जो परै, तासु फलाफल जोइं ॥ ३ ॥
ऊपर ओंठहि एकहै, चोटी तरहै एक ॥
दोइ होंइ छातीविषे, दूहूँ दिशि यक एक ॥ ४ ॥
दुइ अरसानिकी होतिहै, तेतौ बाग कहाहि ॥
दहिने बायें दुइ अहैं, बाजिन कोखिन माहि ॥ ५ ॥
कोखिनकेरीभ्रमरि जो, पुठनजोरके पास ॥
मिलीहोंइ तौ अशुभ नहिं, टरी ऐबहै खास ॥ ६ ॥
दुइ तोंदीके पासहैं, दुहुँदिशि पेटी माहिं ॥
कवि श्रीधर वर्णन करैं, शालहोत्र मत चाहि ॥ ७ ॥
दुइ भौंरी तर दाढके, भौंरी एक लिलार ॥
दुइ सेजाके ऊपरे, पछिले पगन सुढार ॥ ८ ॥
ये जो भौंरी पंचदश, ताते घटि जो होइ ॥
तौ शुभदायक होइ नहिं, शालहोत्र मत जोइ ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा–भौंरी बारह बाजिके, सदा शुभगकरि जानि ॥
सोऊ अब वर्णन करौं, क्रमते ताहि बखानि ॥
चौपाई–भौंरी शीश कनपटी दोई । मस्तक एक चोटितरहोई ॥
एकै भ्रंग भाल पर जानौ । एक नासिका आगे मानौ ॥
पेसबंदतर युगल लखावै । कुच्छा भौंरी दुइ देखरावै ॥

एकहोइ नाभी अस्थाना । जंघमूल युग करौं वखाना ॥
ए सब उत्तम थान बखानौ । सूनहोयतेमध्यम जानौ ॥

अथ अशुभभौंरी वर्णनम् ।

दोहा–प्रथमै भौंरी शीशमें, अशुभ कही जे आहि ॥
तिनको वर्णन करतहौं, दोष तासु दरशाहि ॥

अथ मेढ़ाशृंगी भौंरी अशुभ ।

दोहा–दोउ शृंगके थानमें, जो भौंरी दुइ होइँ ॥
मेढ़ाशृंगी नाम तेहि, दोष कहै सबकोइ ॥

अथ दूसरी सिंगिनि ।

दोहा–औरौ सिंगिनि एकहै, कहत अहौं अब सोइ ॥
सहसपाद समलीक द्वै, बीचभालमें होइ ॥
सोरठा–येकै लीक जुहोय, ताहूको सिंगिनि कहैं ॥
ऊरध कह हयसोइ, शालहोत्र मत जानियो ॥
दोहा–औरौ सिंगिनि रूप यक, सोऊ कहौं बखानि ॥
तासु रूप वर्णन करौं, महादोषकी खानि ॥ १ ॥
भौंरीहै बिच भालके, ताके ऊपर सोइ ॥
काननके तर जानियो, या मधि गुच्छा होइ ॥ २ ॥
बार बड़े सब भालते, ता गुच्छाके आहि ॥
तामें घूमे होंइ कछु, शृंगरूप दरशाहि ॥ ३ ॥

सिंगिनिको फल ।

दोहा–धनको नाशकरै सही, कोई सिंगिनि होइ ॥
नाशकरै निज स्वामिको, समर पराजय होइ ॥

अथ दोकरा भौंरी ।

दोहा–भौंरी चोटीतर अहै, ताके पाँजर होइ ॥
चोटीतरकी भौंरि युत, दुइ भौंरीहैं सोइ ॥ १ ॥

कहत विलाइतमें अहै, ताको खोसा जानि ॥
मध्यम दोषी सो अहै, अवरि दोकरा मानि ॥ २ ॥

अथ गंजनी भौंरी ।

दोहा—भौंरी जो बिच भालके, ताके ऊपर होइ ॥
कीतौ ताके तर लसै, भौंरी तीसरि सोइ ॥ १ ॥
भौंरी जो बिच भालके, तायुत जानौ होइ ॥
दोइ दोइकी तीनि पुनि, ताहि गंजनी सोइ ॥ २ ॥
ताको नाम प्रसिद्ध यह, कहत भड़ेहरि लोग ॥
शालहोत्र मुनिके मते, अशुभ तासु संयोग ॥ ३ ॥
सोवह होत विशेषसो, तर ऊपर यह जानि ॥
पाँजर पाँजर होति नाहिं, यहौभेद पहिचानि ॥ ४ ॥

तिसका फल ।

दोहा—नाशैस्वामीकुलसहित, जाहि भड़ेहरि होइ ॥
ताहि तुरी असवार जो, रणमें हारै सोइ ॥ १ ॥
नाम भड़ेहरि भ्रमरिजे, तिनको कहौं बखानि ॥
भाँति दुई अरु तीनिकी, होतीहैं यह जानि ॥ २ ॥
थोरी पाँजर तरफ दवि, सोउ भड़ेहरि आइ ॥
तर ऊपर पयहोय जो, दोष विशेष कहाइ ॥ ३ ॥
चोटी केरी भ्रमीर जो, तातर भौंरी और ॥
नाम भड़ेहरि तेहुको, कहत मुनिनशिरमौर ॥ ४ ॥

अथ भौंहावर्ती भौंरी ।

सोरठा—भौंरी जाके होइ, एक भौंह वा दुहुँनमें ॥
भौंहावर्ती सोइ, बुद्धि स्वामिकी हरतिहै ॥

अथ आँसूढार भौंरी ।

चौपाई–आँखिनतर भौंरी जो होई । आँसूढार नामहै सोई ॥
एकै आँखितरे जो अहई। आँसूढारतेहुकोकहई ॥
नाशैवहि घोड़ाहै जाको । आँसूढारनामहै ताको ॥

अथ कर्णमूल भौंरी ।

दोहा–बामकर्णके तर भँवरि, होइ कनपटी माह ॥
कर्णमूल ताको कहैं, दोषनको नरनाह ॥

अथ कपोलावर्ती भौंरी ।

चौपाई–बामकपोल भँवरि जो होई । आपु मरै स्वामीको खोई ॥
ताहूको जनि संग्रह करौ । ऐसो हय देखत परिहरौ ॥

अथ श्रुत्याहत भौंरी ।

दोहा–भौंरी दोनों कान तर, महादोष सो जानि ॥
शालहोत्रको यह मतो, तजौ याहि पहिचानि ॥

अथ नासापुटवर्ती भौंरी ।

दोहा–बायें नासापुट विषे, द्वै आवर्तकहोय ॥
स्वामीको नाशितकरै, सहित पुत्रके सोय ॥
सोरठा– एकै भँवरि जु होय, ताहूको ऐबी कहैं ॥
तासम जानो सोइ, निधन करै निज स्वामिको ॥

अथ अधरावर्ती भौंरी ।

दोहा–जा बाजीके अधरमों, भौंरी होइ सुजान ॥
एक होयकी युगलपुनि, अधरावर्त्ति बखान ॥

अथ प्रेतावर्ती भौंरी ।

दोहा–द्वौनासापुट बीचमें, जो आवर्त्तक होइ ॥
प्रेतावर्ती जानियो, कहत सयाने लोइ ॥

श्वेतावर्त्ती अधरावर्त्ती दोनौंका फल ।

दोहा—कुल धन सुत निज स्वामिको, करैनाश यह जान ॥
श्वेतावर्ती दोष सम, अधरावर्ती मान ॥

अथ ग्रीवऐन भौंरी ।

दोहा—अब ग्रीवहिके कहतहौं, अशुभ चिह्न जे आहि ॥
नाम सहित पहिचानि पुनि, फल ताको दरशाहि॥ १ ॥
वाईकैती बल विषे, जो द्वै भौंरी होइ ॥
सोक्षवर्ति गलवर्तिते, अशुभ जानिये सोइ ॥ २ ॥
स्वामिहि नाशैं द्वै भँवरि, शालहोत्र कहि सोइ ॥
स्वामी धन नाशित करै, इनसें एकौ होइ ॥ ३ ॥

अथ साँपिनि भौंरी दूसरानाम कीर युद्धमें शुभ और सब काममें अशुभ ।

दोहा—प्रथम वासको कहतहौं, तासु हेतुहै याहि ॥
तासु ज्ञानते लखिपरै, व्यालीरूपजुआहि ॥ १ ॥
अरसानि भौंरी जो कही, एक तरफसो होइ ॥
तरफ दूसरी होइ नाहिं, जानौ व्याली सोइ ॥ २ ॥
एक तरफ अरसानि अहै, तरफ दूसरी सोइ ॥
दुइ भौंरी की तीनिहैं, सोऊ साँपिनि होइ ॥ ३ ॥
दुहूँतरफ यक एकहैं, आगे पाछे सोइ ॥
सोऊ व्याली जानिये, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
दुहूँतरफ विच आलतर, भँवरि बरोबरि होइ ॥
ताहूको व्याली कहैं, मध्यमरूपहि जोइ ॥ ५ ॥
एक तरफ आवर्त्तहै, तरफ दूसरी लीक ॥
सोऊ व्याली जानिये, जानौ तासु नजीक ॥ ६ ॥
डेढ़बाग अरु बागबिन, जेती भौंरी होइ ॥
तरे आलके जानिये, साँपिनि कहिये सोइ ॥ ७ ॥

फल ।

सोरठा—साँपिनि जाके होय, स्वामीको नाशितकरै ॥
रोगी करि करि सोइ, ताते जानि संग्रहकरो ॥

अथ बाग भौंरी ।

दोहा—भौंरी अरमानिकी कही, आलअंतलौं होइ ॥
होइ बरोबरि दुहूँदिशि, बाग कहावे सोइ ॥ १ ॥
आल कानके बीचमें, अरमनि भौंरी होइ ॥
कमजाफातिनि पुच्छहै, डेढ़ बागहै सोइ ॥ २ ॥

अथ केशवती भौंरी ।

दोहा—चोटी पाछे आल बिच, भौंरी जाके होइ ॥
केशावती जानिये, हनै स्वामिको सोइ ॥

अथ सोकावती भौंरी ।

दोहा—आलअंतलौं जे भँवरि, सोकावती सोय ॥
शालहोत्रमुनिके मते, नास सहशफल होय ॥

अथ गिद्धिनि भौंरी ।

दोहा—दहिने बायें ककुदके, भौंरी निकैट होइ ॥
मृत्युदेइ निज स्वामिको, गिद्धिनि जानो सोइ॥

अथ छत्रभंग भौंरी ।

सोरठा—तीनि भँवरि जो होइ, जा बाजीकी पीठिपर ॥
छत्रभंगहै सोइ, स्वामीको नाशितकरै ॥

अथ धूमकेतु भौंरी ।

सोरठा—जाके भौंरी होइ, जीन पिछारी पीठिपर ॥
धूमकेतुहै सोय, अतिदोषी सो बाजिहै ॥
दोहा—धूमकेतुयुत बाजिको, घरमें आनै कोइ ॥
पुत्र त्रिया हय स्वामिकी, नाश सहीते होइ ॥

अथ त्रिकालवर्त्ती भौंरी ।

दोहा—भौंरी जाके कटि विरे, एक होइकी सोइ ॥
नाशकरै संग्राममें, त्रिकालवर्त्ती सोइ ॥

अथ मूलघातिनी भौंरी ।

दोहा—पूछमूलमें जो भवँरि, तीनिहोंइकी होइ ॥
अथवा एकै होइ जो, मूलघातिनी सोइ ॥ १ ॥
ताहि चढै असवारजो, ताकी असि गति होय ॥
पुत्र त्रियायुत जाइहै, यमके घरको सोइ ॥ २ ॥

अथ स्वामिघातिनी भौंरी ।

दोहा—गुच्छ पुच्छमें भँवरि जिहि, ऐसो तुरी जु होइ ॥
ताको जानि संग्रह करो, यमदूतै है सोइ ॥ १ ॥
ऐसो बाजी जाहिके, घरमें आयो होइ ॥
प्राणहरणको दूतहै, यमको जानौ सोइ ॥ २ ॥

अथ दुष्पावर्त्ती ।

दोहा—भँवरिहोइ या बारजो, मूलद्वार जिहि बाजि ॥
दुष्पावर्त्ती तिहि कहैं, भरो दुःखकी राजि ॥

अथ बिंदुक भौंरी ।

दोहा—गले हृदयके जोरपर, जो आवर्त्तक होइ ॥
बिंदुक ताको कहतहैं, पुत्र नाशकर सोइ ॥

अथ भुजउट भौंरी ।

दोहा—जाके दोऊ भुजनपर, या एकैपर होइ ॥
भौंरीकीसी लीकहै, भुजआउटहै सोइ ॥ १ ॥
षटमहिनाके भीतरे, दोष जनावै सोइ ॥
स्वामीको भाई मरै, नाश पुत्रको होइ ॥ २ ॥

अथ हृदयावली भौंरी ।

दोहा–हृदय माह जो द्वै भँवरि, तिनके बीचहि होइ ॥
आवर्तककी लीकहै, हृदावलीहै सोइ ॥

चौपाई–हृदयमाह भौंरी जो होई । सो डारै स्वामीको खोई ॥
ऐसो वाजी भूलि नलीजै । जानि दोष तेहि त्यागन कीजै ॥

अथ तंगतोर भौंरी ।

दोहा–जा वाजीके उरविषे, भौंरी तँगतर होइ ॥
वंशहरै निज स्वामिको, तंगतोरहै सोइ ॥

अथ गोम भौंरी ।

दोहा–षट अंगुल लघु तंगके, होइ भ्रंगको वास ॥
गोमनाम कहि ताहिको, करती वित्त बिनास ॥

अथ शैल भौंरी ।

दोहा–गोमपिछारी भँवरि जो, शैल नाम सो आहि ॥
ता वाजीके स्वामिको, विपति सही परि जाहि ॥

अथ कच्छावर्ती भौंरी ।

दोहा–कही भँवरि जो बगलकी, कच्छावर्ती होइ ॥
पंच बगल कारि प्रगटहै, दुखदायकहै सोइ ॥

अथ पार्श्वावर्ती भौंरी ।

दोहा–भँवरि होइ पसुरीन पर, पार्श्वावर्त्ति बखानि ॥
धनमेटै निज स्वामिको, अहै असंगल खानि ॥

अथ क्रोड़ावर्त्ती भौंरी ।

दोहा–भौंरी जो दुइ होतिहैं, बाजीकोखिनमाहि ॥
अधिक होइ तिन दुहुँनते, क्रोड़ावर्त्ती आहि ॥

सोरठा–भौंरी कोखिनमाहिं, एकतरफमें होइ जो ॥
एक तरफमें नाहिं, सोऊ क्रोड़ावर्तीहै ॥

दोहा—उदर तरे जो बाजिके, तोंदी पाँजर जोइ ॥
भौंरी जोहैं दुहूँदिशि, दक्षिण नामहि सोइ ॥ १ ॥
जैसी भौंरी कोंखिकी, दीन्हों रूप बताइ ॥
तैसीये येडाँलसे, क्रोड़ावर्ती आइ ॥ २ ॥
जा बाजीके पेटमें, क्रोड़ावर्ती होय ॥
रावणकीसी संपदा, क्षणमें डारै खोय ॥ ३ ॥

अथ असिफकंदावर्ती भौंरी ।

दोहा—पछिले पुट्ठन माहिं जो, जो आवर्त्तक होइ ॥
नाम असिफकंदा कहैं, स्वामी बधिहै सोइ ॥

अथ लोटावर्ती भौंरी ।

दोहा—तिन भौंरिनके ऊपरै, भँवरि और जो होय ॥
लोटावर्ती जानियो, ऋणै बढावै सोय ॥

अथ कुक्षावर्ती भौंरी ।

दोहा—भीतर दोऊ रान के, भँवरिहोय जो आनि ॥
कुक्षावर्ती जानियो, अहै असंगल खानि ॥

अथ वज्री भौंरी ।

दोहा—जा बाजीके लिंगमें, भँवरि होयकी बार ॥
वज्री ताको कहत हैं, भरो दुःख भंडार ॥

अथ द्विमुखावर्त्ती भौंरी ।

दोहा—बैजापरहैं जाहिके, भौंरीकीतो लोम ॥
द्विमुखावर्ती जानिये, मेटै स्वामी कोम ॥

अथ छुरिकावर्ती भौंरी ।

दोहा—जाके आगिले जानुमें, भँवरि ग्रन्थि पर होय ॥
हनै स्वामिको पुत्र धन, छुरिकावर्ती सोइ ॥

अथ पीडावर्ती भौंरी ।

चौपाई—अगिले पगन भँवरि जोहोई । पगमें पैर कहूँ पर सोई ॥
पीडावर्ति भँवरि सो जानौ । खुटडखारजाहिरजगमानौ ॥
सो वह होत सुजम्मा ऊपर । एकै पगपर की पग दूसर ॥
ताहूमें यह भेद विचारौ । जंघमाहिं दुखदेइ अपारौ ॥
दोहा—भौंरी जाके जानुमें, ऐसो अश्व जुहोय ॥
स्वामीको निधनी करै, वंशहिडारै खोय ॥

अथ जान्वावर्ती भौंरी ।

दोहा—जाके पछिले जानुमें, भँवरिहोय जो आनि ॥
डंष उजारि प्रसिद्धहै, जान्वावर्तीजानि ॥ १ ॥
जान्वावर्तीभँवरियुत, जाके हय यहु होय ॥
सदारहै परदेशमें, चिंता व्याकुल सोय ॥ २ ॥
जा घोड़ेकी गुदामें, भँवरि होयकी बार ॥
दुखदायक सो बाजिहै, कीन्हो यह निरधार ॥ ३ ॥

अथ मस्तककी भौंरी ।

दोहा—भौंरी जो बिचभालके, जानौ अंग प्रभाव ॥
ताको कछु दोषौ नहीं, गुणोनहीं कबिराव ॥

अथ चंद्रकोष भौंरी ।

दोहा—तीनि भँवरि हय भालमें, ऊरध मुखहि बखानि ॥
तासम लक्षण और नहिं, चंद्रकोश सो जानि ॥
सोरठा—होइ बरोबरि होइ, तातर भौंरी भालकी ॥
चंद्रकोशहैसोय, ताहि निश्रेनी कहतिहैं ॥ १ ॥
जो द्वै भौंरीहोइ, तासु पुच्छ तरको लसै ॥
पै अवगुंठित होइ, चंद्रकोश सोऊ अहै ॥ २ ॥

दोहा—चंद्रकोशहै जाहिके, अस हय पावै कोइ ॥
पुत्र पौत्र दारा सहित, चिरंजीव जग सोइ ॥ १ ॥
देय विजय संग्रामसें, चंद्रकोशहै जाहि ॥
देशकोषमहिपालके, सदा बढ़ावति आहि ॥ २ ॥

त्रिकूट भौंरी।

दोहा—जाके भँवरि लिलाटमें, तीनि अधोमुख देषि ॥
ताहि त्रिकूट बखानिये, संपति करै विशेषि ॥ १ ॥
भँवरिहोय जो ऊर्द्धमुख, चंद्रकोश सो जानि ॥
ताहि त्रिकूट बखानिये, होइ अधोमुख आनि ॥ २ ॥
भौंरी होइ त्रिकूट जिहि, सो हय जाके होय ॥
धन दारा अरु पुत्रसुख, देइ स्वामिको सोय ॥ ३ ॥

अथ चंद्रार्क भौंरी।

दोहा—बीचभालमें भँवरिजो, दूसरि ताके पास ॥
होइ बरोबरि ताहिके, सो वह करिके खास ॥ १ ॥
सो तर ऊपर होय नाहिं, नहीं लीकसम आहि ॥
तासु नाम चंद्रार्कहै, लक्षणनीककहाहि ॥ २ ॥
जाके होय लिलाटमें, भँवरि युगल रविचंद ॥
देइ स्वामिको भ्रातसुख, दिन दिन करै अनंद ॥ ३ ॥

अथ शिव भौंरी।

दोहा—भौंरी होइ कपोलमें, दक्षिण अंग सुजान ॥
ता भौंरीको शिव कहत, नितप्रति करकल्यान ॥
चौपाई—दुऔ कपोल भवँरि जोहोई। जानोशुभलक्षणहै सोई ॥
बाजीरहै सदा अस जाके। दिन दिन बाढै संपतिवाके ॥

अथ इंद्राक्ष भौंरी।

दोहा—कान पिछारी मूलमें, दक्षिण अंग बखानि ॥
भँवरिहोय जा बाजिके, इंद्रअक्ष सो जानि ॥ १ ॥

इंद्राक्षि जो बाजिहै, होयसुजाके आनि ॥
वासव सम सुखदेतहै, कहँलौं कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ यशोदा भौंरी ।

दोहा–वामकर्णके मूलमें, भँवरि पिछारी होइ ॥
नाम यशोदा जानियो,सुखकारी हय सोइ ॥

अथ चक्रवर्ती भौंरी ।

दोहा–ये दोनौं लक्षण परैं, तामधि लक्षण येइ ॥
भौंरी कानन कोशमें, चक्रवर्ति कहि देइ ॥ १ ॥
राजनके वह योगहै, सकल सिद्धिकहँ देइ ॥
तापर जो कोई चढै, विजययुद्धमहँ लेइ ॥ २ ॥

अथ वृषभाण्ड भौंरी ।

दोहा–कर्णमूलको छोड़िकै, नेत्रप्रांतलौं जानि ॥
भौंरी दहिने अंगमें, सो वृषभांड बखानि ॥ १ ॥
पुत्रपौत्र निजनाथको, देति अहै वृषभांड ॥
राज्य अभूषण धन सहित, संपूरणफल भांड ॥ २ ॥

प्रसादतारन भौंरी ।

सोरठा–दहिने बायें तात, चोटीतरके भँवरिके ॥
चारि पांच षटसात, सो प्रसादतारन अहै ॥ १ ॥
जाके असहय होइ, उत्सव ताके नितरहै ॥
देत अहै धन सोय, संपूरण अभिलाषमन॥ २ ॥

अथ विजय भौंरी ।

चौपाई–दहिने नासा भौंरीहोई । विजय नाम लक्षण शुभ सोई ॥
जाके घर बाजी अस आवै । विजयसहितकीरतिको पावै ॥

अथ सग्विनी भौंरी ।

दोहा–नासापुटके ऊपरै, दहिने अंगहि जानि ॥
धनबर्द्धकहै स्वामिको,ताहि सग्विनी मानि ॥

अथ ग्रीवकी भौंरी शुभ ।

दोहा—भौंरी चारि गरेतरे, शुभहैं सुखको धाम ॥
तिनके कहि अस्थान अब, अरु लक्षणयुत नाम॥ १ ॥
चिंतामणि अरु गुणमणी, होत कंठमणि नाम ॥
चौथी द्योमणि जानिये, करै सुःख अभिराम ॥ २ ॥

अथ चिंतामणि भौंरी ।

दोहा—जा बाजीके कंठमें, भँवरि तीनि सुखदानि ॥
ताको चिंतामणि कहौं, जयकारी हय जानि ॥

अथ कण्ठमणि भौंरी ।

दोहा—कंठमाहिं भौंरी शुभग, जाके एकै होइ ॥
ताहि कंठमणि कहतहैं, जयकारी हय सोइ ॥

अथ गुणमणि भौंरी ।

दोहा—भौंरी ऊपर कंठके, दहिने अंगहि होय ॥
एक दोय की तीनि पुनि, गुणमणि जानौसोय ॥

देवमणि भौंरी ।

दोहा—बीच गलेके होतिहै, कंठहिके कछु दूरि ॥
द्योमणि जानौ ताहिको, देत अहै सुखभूरि ॥

चारौ भौंरिनको फल ।

दोहा—पुत्र पौत्र धन राज्य सुख, विजय कीर्ति अरु जानि ॥
इन चारौमें एक जो, मनइच्छित फलदानि ॥

अथ गरुडमणि भौंरी ।

दोहा—दोउ भुजनके बीचमें, आवर्त्तक जोहोइ ॥
नाम गरुड़मणि ताहिको, सकल दुःखहरिलेइ ॥

अथ क्षेमकरी भौंरी ।

दोहा—द्वै भौंरी बिच कंठके, ते तर ऊपर होय ॥
नितप्रति जानौ सुखद बहु, क्षेमकरीहै सोय ॥

श्रीवत्साक भौंरी ।

दोहा--भौंरी छाती माहि की, प्रथमहि वरणी जोइ ॥
बामअंग सो होइनहिं, दहिने अंगहि होइ ॥
सोरठा--तायुत बाजी सोइ, श्रीवत्साकसुचिह्नहै ॥
जाघर अस हय होय, देहधरे लक्ष्मी बसैं ॥
दोहा--तिन दोनौंके मध्यमें, एक भँवरिकी दोइ ॥
सोऊ वह वत्साकहै, शालहोत्र मत सोइ ॥

अथ शुभकर भौंरी ।

दोहा--भौंरी गामचिके तरे, सुमके ऊपर होइ ॥
ताहि शुभाकर जानिये, शुभकी आकर सोइ ॥ १ ॥
अगिले बायेंपाँइपर जो, यह भौंरी होइ ॥
ऐसो बाजी जहँरहै, नितप्रति उत्सवहोइ ॥ २ ॥
ताहिचढै असवार जो, लक्ष्मी ताके हाथ ॥
अधिपहोय सो भूमिको, शत्रु नवावैं माथ ॥ ३ ॥

अथ विजयकर्ण भौंरी ।

दोहा--जाके पछिले पाँवमें, भँवरि गामची माहि ॥
विजय करणहै नाम तिहि, शुभगुण जानौ ताहि ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखदनित, रहै जासुके साथ ॥
युद्ध विजय यह जानियो, विजय तासुके हाथ ॥ . ॥

अथ चक्रीनामहय ।

दोहा--होय तुहिन सम श्वेतहय, श्वेतनेत्र अरु होय ॥
चक्रपरै तालूविषे, चक्री बाजी सोय ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, सकलमिटावै दोष ॥
कीरतिबाढै तासुकी, दिन दिन बाढै कोश ॥ २ ॥

अथ काम बिगारी भौंरी ।

दोहा—अश्वाकेरे जीभतर, होय जु अलि यहि ठौर ॥
कामबिगारी नाम तिहि, काज बिगारै और ॥

अथ बनियाँ भौंरी ।

दोहा—भौंरी होय जो पेटतट, अंगुल युगल प्रमान ॥
कच्छीरघ वा ठौरमें, बनियां ताहि बखान ॥ १ ॥
ऐसो तुरँग जो लीजिये, महादोष गंभीर ॥
राजपाट सुख संपदा, नाशै और शरीर ॥ २ ॥

इति श्रीसालहोत्रसंग्रहकेशरसिंहकृतबाजीभौंरीशुभाशुभवर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ विशेषदोष ।

दोहा—हिरदावलि अरजल सहित, अरुमुख कारो जासु ॥
इन्हैं बिहाय कुंतिसुत, कारक बिबिधविनासु ॥
चौ०-हिरदावलि सिंहिनि बनियारी। अरजल अहिमुख अकरबभारी॥
यते दोष प्रथिराज बिहाई । और दोष कस करत बुराई ॥
सीताराशिर अरु तँगतोडा । विक्रम त्यागकीन दुइ घोडा ॥
थनी गोस अरु नैन जु तापी । सबल साहि तीनै तजि रापी ॥

दोहा—धर घोडीको पैद जो, दान मिलै दै जोर ॥
ताको दोष न मानिये, मंगल मूरति घोर ॥

अथ घोडीके दोष । देखो घोड़ी नंबर ८२.

दोहा—हिरदावलि सिंहिनि सहित, अरजल अकरबनेस ॥
खरसुंमी अरु गोदुमी, यह अश्वनि कृतखेस ॥

अथ आलदोष ।

सोरठा—दुहूंतरफ़ जो आल, खडीरहै कैधौं चिकुर ॥
युगल दोष करि ख्याल, ऐसो तुरँगनलीजिये ॥

अथ चिंतामणिवारशुभ।

दोहा--जिहिघोडेके बदनपर, कच दीरघ अतिहोय ॥
चिंतामणि तिहि तुरँगको, नाम कहैं सब कोय ॥ १ ॥
तिहिबाजीगुण शुभग अति, जसपूरणिमाचंद ॥
सुखीकरै निज प्रभुनको, दिन दिन बढैअनंद ॥ २ ॥

अथ बत्तिस लक्षण अंगकी पहिचान शुभ ।

छप्पयछंद--दीरघ जानौ चारि चारि उन्नत अनूप धर ।
चारि अरुणहैं अंग चारि सूक्ष्मअनंदधर ॥
चारिहोंय लघु जासु चारि आयुत प्रवीन कहि ।
चारिहोंयअधठौर चारि विनमास जासु लहि ॥
यहिभाँति वरणिबाजीकहे बत्तिस लक्षण जासुतन ।
गनि निदान ग्रंथन मते सो कर्महि सहित विचारि मन॥

पुनः नामअंग ।

छंदतोमर-मुख केश दीरघ जानु । भुज ग्रीव सो परमानु ॥
पग नासिका पुट थान । अरु भाल उन्नतकान ॥
गनि ओंठ अरुणो तालु । पुनि लिंग जीभ रसालु ॥
लहि कोषिमोजातुच्छ । गहिगुंज सूक्ष्म पुच्छ ॥
लघु कान नाक सुवेह । कटिवंशटीसो येह ॥
युगपुट्ठआयुत भाल । मणिकंध उर करु ख्याल ॥
उदर चिबुक अधजानि । कटि जानु सो परमानि ॥
विन मास मुख औ तालु । पसुरी कलाइको हालु ॥

दोहा--शालहोत्र औ नकुलमत, लक्षण वरणिबतीस ॥
ऐसे वाजी शुभगवर, चाहत तिन्हैं महीस ॥

अंगस्वरूप लक्षणवर्णनम् ।

चौपाई—अँगके लक्षणमैंकछुभाषौं । जोकछु शालहोत्र गुणिराषौं ॥
कलसूं ढार नयन बहुभारे । थुथुनी छोटी अधर कठोरे ॥

क्रटिससूल ग्रीवा अस्थूला । छाती चौंडी उदरसमूला ॥
सूधे सूक्षम सास न होई । करपद मृगसमानहै सोई ॥
ग्रीवा पूंछ ऊँच सबऔवे । कटि लघु चौड़ी पीठिलखावै॥
छोटे कर्ण श्याम शुभभारे । लंबोदर कोषाफुलवारे ॥
चारौ चौका आठौ बंदा । जो पावे या मनको चंदा ॥
भूरिभाग्य तिहिनरको गावै । जो घोड़ा या विधिको पावै॥
छप्पय–ग्रीश दीरघ नैन भाल जाके विशाल अति ।
पीन उरस्थल भीर नटी सूगम सूधे अति ॥
अरुणअधर मणितालु अरुणरसना निधान घनि ।
स्वच्छ केश शुभ चारु चरणलघु पुच्छ अधरमानि॥
अतिगोल जंघअरु जानु गनि सम श्वेत दशन बखानिये ।
इमि अंग शुद्ध बाजी शुभग सब भूपनके मनमानिये ॥
छंद–हग दीरघ अश्वापीनमाहि ।अरु ठनत कंध सोग्रीवताहि ॥
चामरकेसम केश लसै । पुच्छनिसुच्छ सो वार न्रसै ॥
अति चीकनरोम कठोर कटी । उर उन्नत उर्धसुबीचअटी ॥
थूल भुजा हग ग्रंथि गही । हैपग सोतन पीन तही ॥
सोरठा–ऐसो बाजी पाय, सुखी होत भूपतिमहा ॥
समर सुधारो जाय, शत्रुनको शालै सदा ॥

अंगनकी नाप वर्णनम् ।

छंद मनहरन–अंगुल सत्ताइसलों आनन प्रमानको,
करण प्रमान रसअंगुल वखानिये ॥
अंगुल नषतके प्रमाण कटि पुच्छ तट,
लघु अति पुच्छ हाथ युगल प्रमानिये ॥
तारू चारि अंगुल विदित कंध सैंतालिस,
पीठि पीन चौविशई अंगुल सो जानिये ॥

ग्रीवाको प्रमाण अब अंगुल चालीस लघु,
जानु चारु चौबिसई अंगुल सो ठानिये ॥

दोहा—लिंग सु हस्त प्रमाणहै, अंडचारि शुभजान ॥
मोजा अंगुल चारिके, कहत ग्रंथ परमान ॥ १ ॥
पुच्छनते गनि ग्रीव लघु, लीजे वहै प्रमान ॥
अंगुल असी विचारिये, वर्णत सुकविनिधान ॥ २ ॥
दुइ अंगुल बत्तिस समुझि, ऊँचो बाजि प्रमान ॥
सो भावै भूपतिनको, ताते करौ सुमान ॥ ३ ॥
इनते अंगुल जो अधिक, जा बाजीको होय ॥
शालहोत्र मुनिके मते, यह प्रमाणहै सोय ॥ ४ ॥

मध्यम ।

कवित्त—कहिये सुतुरदंत रदन बडोहै जासु,
ढील श्रवण चौडीश्रीपरेसागोस भाषेहै ॥
छोटी पेस जासुकी कहत तख्तगर्दनेहैं,
ऊंचो बाहुजाको गावसाना नाम राषेहै ॥
सीधोपाँव जाहिको सुरुगं पाँव ताको कहैं,
लागै घूट चलत कचल कहि लेखिहै ॥
सूक्षम उदर पीठि लपव्यो न ताजा होत,
सोई आहूशिकम अशन कम चाषेहै ॥

अथ हीनदंतदोष । देखो घोड़ा नंबर ८६.

दोहा—अश्वाकेरे वदनमों, एक दंत नहिं होइ ॥
हीनदंतहै नाम तिहि, वाहि लेइ मतिकोइ॥

कवित्त—पद छिटकोहै ताहि कहत कुसादेरव,
पतले सुमनको चपाती सुम रेषियो ॥
अतिहि फिरायेते पिछानोजात लंगपद,

१ देखो घोडा नंबर ८३. २ देखो घोड़ा नंबर ८४. ३ देखो घोड़ा नंबर ८५.

लंगकोहनाशो अतिनीठि करि पेषियो ॥
कमखोर जानो जात छोटी लेडी हीतै,
करत रदन घाव बंदागिरि लेखियो ॥
निशिमें नदेखै सब खोर ताकी पाहिचान,
कमल देखायते अँधेरेमें न देखियो ॥
सोरठा–अधिक हीन रद जासु, बिररे बिररे जो लहैं ॥
करै वित्तको नासु, धनी धाम नाहिं रहि सकै ॥
दोहा–अश्वाकेरे बदनमें, उभै होंइ बड़दंत ॥
जठरदंत दूषित बडे, स्वामीको बहु चिंत । १ ॥
सात दशन जो देखिये,बाजि सदन सो मानि ॥
महादोष त्यागौ तुरत, घरमें राखे हानि ॥ २ ॥
दंत अधिक जिहि अश्वके, सघन जानिये जोइ ॥
गानि कराल दूषणमहा, नकुलमतेहै सोइ ॥
सोरठा–आधा रदन जु एक, इक विहीन जो देखिये ॥
दूषणमहा विशेष, नकुल कहैं सहदेवसों ॥

अथ अशुभलक्षण ।

पद्धरी-तजुनेसदंत मुनिअधिक जानि।लखिपाँचदंत दोउ दुखद खानि
बिनु कारण रसना लफलफाय । अहिमुखीदोष तेहि नकुल गाय ॥
मुख अर्द्ध ऊर्द्ध संपुट कराहि । नृप देखतही परिहरौ ताहि ॥
जो अधरै दोउ राखैबगारि । सो दोष करौली अशुभकारि ॥
बड़ छोट होत जेहि अधर दोय । अतिदोष मूसली भनत सोय ॥
नित अधर बुलावै जो तुरंग । कहि वायभक्ष सुख करत भंग ॥
जो शशाँकरन सम अश्वजानि । सो शशाकरन दोषै बखानि ॥
त्रयकरन जासु लखिये तुरंग । गजकरन नाम नहिं करु प्रसंग ॥

---

१ देखो घोड़ा नंबर ८७. २ देखो घोड़ा नंबर ८८. ३ देखो घोड़ा नंबर ८९.
४ देखो घोड़ा नंबर ९०. ५ देखो घोड़ा नंबर ९१. ६ देखो घोड़ा नंबर ९२.

अति अशुभ ताहि भाष्यो सुजान। यक छोट बडो यक तुरै[1] कान ॥
यक कजनैन अरु श्यामएक। अतिदोष गनौ तोषी विवेक ॥
जब दुवौ नैन कंजालखाय । तेहि चक्र[2]दोष कहि नकुल गाय॥
दृग कंज दोष इनमें बिहाय। दुइरंग दुखद अतिही कहाय ॥
महिष। दृग सम लखि नैन जासु। मुज्जायुततजि कृत विविध नासु॥
जो तुरै नेत्र बिल्ली[3] समान । तेहि सेंति न लीजो बुधनिधान ॥
कामाली[4] लखि हय बैल ग्रीव। दृग ढरत रहत युग दोषशीव॥
नाजावै वाके वीच माहि । पैसदनथनी अतिदोष चाहि ॥
लघुदेखिमनी कहिये सु दोष । तुचने जाके ढिग उपर चोष ॥
सुतनापर टीका श्याम हेरि। कालिंजर्[5]नाय अस दोष टेरि॥
कहि शालहोत्र मत जो प्रबीन। ऐसो तुरंग सो त्याग कीन ॥
लखि एक अंडकी तीनि हेरि। कैसून अंडमत नकुल केरि ॥
जहँ बार जम्यो लखितुरै अंड। इनको तजिये जहँ दुअन झुंड॥
जहँ पूँछ दंडि सेती निहारि । कहि दोष अन्नहत दरिद्कारि ॥
खर सरिस सुंम खरसुमी भाषि। सो दोषनमें वहु गनित राषि ॥
बोलै तुरंग निशि बार बार । निज स्वामि गवन परदेश कार॥
दुम अंग सबै निशिचमक जासु। चिलकै चिलगी कच करत नासु॥
जब मादवान सम तुरय हेरि । तिनको नहिं लीजै कहत टेरि ॥
दुम परसै जो महिमें तुरंग। कहि झारू दुम झाडदोष अंग ॥
वहु शीशहलावै तुरँग जौन । सो थान त्याग करि सकै भौन ॥
जब लीदि करै आँसू ढराइ। बहु टेरै सो रणमें पराइ ॥
जिहि तुरँग घाँटि है कंठमाहि । तिहि स्वामि भारजा रुज कराहि ॥

---

१ देखो घोड़ा नंबर ९३. २ देखो घोड़ा नंबर ९४. ३ देखो घोड़ा नंबर ९५.
४ देखो घोड़ा नंबर ९६. ५ देखो घोड़ा नंबर ९७. ६ देखो घोड़ा नंबर ९८.
७ देखो घोड़ा नंबर ९९. ८ देखो घोड़ा नंबर १००.

अथ श्वेततालू ।

दोहा—तालू जाको श्वेत सब, नाहिं ललाई आहि ॥
तामहँ शंख समान सो, चिह्नकछूदरशाहि ॥
चौपाई—ऐसो बाजी जोकोइ होई । निंदित भँवरि सहित शुभ सोई ॥
जोकोउ आपन जीवन चहै । भूलिहु ताको जनि संग्रहै ॥

अथ श्यामजिह्वाबाजी ।

दोहा—जाकी जिह्वा श्याम सब, की विंदुककोउश्याम ॥
जिह्वाश्यामबखानहीं, वाको सब बुधिधाम ॥

उद्दालक ऐब ।

दोहा—ऊपरको रद बाढिकै, अधरहि लेइ दबाय ॥
सो उद्दालक नामहै, स्वामीको दुखदाय ॥ १ ॥
बाढि जाहि अधको रदन, ओंठहि लेइ दबाइ ॥
सो उद्दालक हय अहै, करै अमंगल आइ ॥ २ ॥

अथ भल्लूकास्य हय ।

सोरठा—दुहूँ तरफको होइ, आलगिरे जा बाजिके ॥
भल्लुकास्यहै सोइ, हरै स्वामिके वंशको ॥
दोहा—नेस निकासे होय जो, ऐसी घोड़ी होय ॥
ऐबी जानौ ताहि को, भूलि न लीजौ कोय ॥

अथ मेषदंतबाजी ।

दोहा—बिररे जाके दंत हैं, मेषदंत कहि ताहि ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, भूलि न लीजौ वाहि ॥ १ ॥
तिहिकी आदिकजे कहे, ऐसे ऐब बखानि ॥
करत स्वामिको घात अरु, समर पराजय जानि ॥ २ ॥

अथ अंगविकार ।

सोरठा—गुलरीफल आकार, गूंथी कोवा माहि जेहि ॥
कीजौ तहाँ विचार, मासाते अतिरिक्तहै ॥
दोहा—ऐसीगूंथी देहमें, होइ कहूँ पर आय ॥
जानौ अंगविकारसो, महादोष दरशाय ॥

अथ शृंगीबाजी ।

दोहा—दोउ काननके बीचमें, होत शृंग यह जानि ॥
मासा समहै रूप तेहि, कहौं तासु पहिचानि ॥ १ ॥
अजयासुतके शृंग ज्यों, प्रथमहि निकसति आय ॥
खालके भीतर ऊँच कछु, टोयेते दरशाय ॥ २ ॥
शृंगीबाजी होय जो, महिपालौके आय ॥
नाशैधन कुल स्वामियुत, अपर पुरुषको आय ॥ ३ ॥

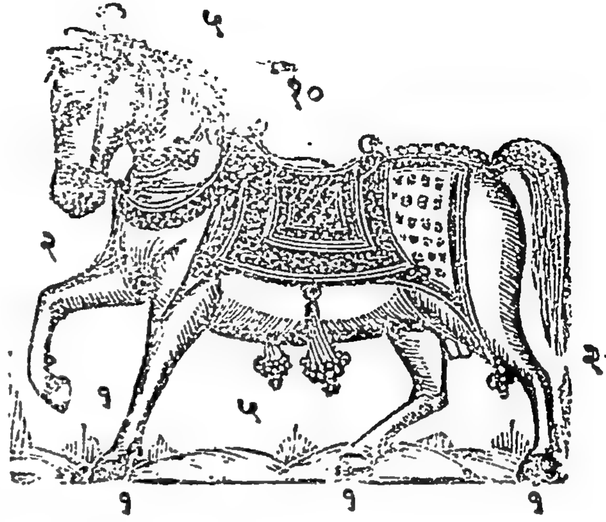
अथ दृष्टांतमाह विशेष दोष ।

हरिश्चंद्र त्र्यकर्णते, वेणु दुसफते जानि ॥
रावण शृंगीअश्वते, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
कृष्णक्षीणरंग वाजिते, सहस्रार्जुन नास ॥
हरितरंगके बाजितें, रामचंद्र वनवास ॥ २ ॥
शंखाक्षी हय त्रिशंकुको, कर्णश्वेतरँग छीन ॥
अधिक रदन दुर्योधनै, पाँडव दंतन हीन ॥ ३ ॥
सोकावर्ती बाजिते, भयो परीक्षित काल ॥
एबीबाजी संग्रहै, ऐसो होय हवाल ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीविशेषादिदोषकथनं
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ अश्वलेवेको मुहूर्तचक्रम् ।

ति.	वा.	नक्षत्र
१	र.	पु. पु.
२		
३	चं.	
५		रे. मृ.
६		
७	बु.	
८		अ. श.
१०	बृ.	
११		स्वा.
१२	शु.	
१३		ह.
१५	श.	
३०		



दोहा—अश्वाकारहि चक्र लिखि, अभिजित सहित नक्षत्र ॥
न्यास कीजिये तासुमें, या क्रमसों सर्वत्र ॥ १ ॥
कंध पाँच रवि नषतते, दश पीठीपर धारि ॥
फेरि देइ धरि पूंछमें, द्वैचरणनमें चारि ॥ २ ॥
पाँच नषत पुनि उदरमें, द्वयमुखमें पुनि जानि ॥
अर्थलाभ मुखमें परै, उदर बाजिकी हानि ॥ ३ ॥
भागै रणते पगनसें, पूँछहि त्रिया विनासु ॥
पीठिमाहिं सुख देइ बहु, कंधमाहिं सुखजासु ॥ ४ ॥

मुहूर्त ।

दोहा—पुष्य पुनर्बसु रेवती, मृगशिर अश्विनिहोइ ॥
शतभिष स्वाती जानियो, हस्त सहित शुभसोइ ॥
सोरठा—इन नषतनमें कोइ, रिक्तातिथि कुज वार विन ॥
वाजिकर्म शुभ सोइ, शुद्ध परै जब चक्रमें ॥

अथ खरीद समयकी चेष्टा ।

दोहा—शुभवाजी नहिं शुभकरै, अशुभ करै नहिं हानि ॥
सो फल चेष्टा देखिकै, ताको कहौं वखानि ॥ १ ॥

प्रथम एब देखै नहीं, चेष्टालेइ विचारि ॥
बदचेष्टा जो हय करै, ताको तजो निहारि ॥ २ ॥
नीकी चेष्टा हय करै, ताहि जरूरौ लेइ ॥
घरमें पहुँचै बाजि बहु, तुरतै सुखको देइ ॥ ३ ॥

अथ शुभचेष्टा ।

सोरठा—अश्वखरीदन जाइ, देखि खरीदारै तुरी ॥
फुरकै अति सुखपाइ, ताहि खरीदै सुखलहै ॥
दोहा—याहीविधिसों देखिये, शाँक साधि हय लेइ ॥
ताहि खरीदै सुखलहै, नफा वहुत कुछु होइ ॥
सोरठा—वाजी देखन जाइ, लीदिकरै तब वाजि जो ॥
सो सुख पतिको देइ, ताहि जरूरौ लीजिये ॥
चौपाई—हींसै वाजी नृत्यहिठानै । धरै पगन हर्षित मन मानै॥
लेनहारको यहै बतावै । संपति घरमें वहुत बढावै ॥

अथ अशुभचेष्टा ।

दोहा—लेनहारको देखिहय, पीठिहि देइ खलाइ ॥
मोहि खरीदे नाहिं नफा, बाजी देइ बताइ ॥ १ ॥
कितनौ मदा होइजो, तहूँ न लीजै वाहि ॥
हठकरि कोऊ लेइ जो, घटा सही परिजाहि ॥ २ ॥
जाइ खरीदन अश्वको, खरीदार जो कोइ ॥
काढ़ै अपनो लिंग हय, कीतो सूतै सोइ ॥ ३ ॥
कितनो लक्षण शुभ अहै, बाजीहोय विशाल ॥
शालहोत्र अस कहतहै, ताहि तजौ ततकाल ॥ ४ ॥
लेनहारको देखि हय, सभय डुलावै पाँइ ॥
ताहि खरीदेते तुरत, अवशि वाम नशि जाइ ॥ ५ ॥

पूँछ हलावै करनहू, कीतौ तानैं देह ॥
नाशकरै निज स्वामिको, वाजी विन संदेह ॥ ६ ॥
शुभभौंरी जाके परै, बदचेष्टित हय होइ ॥
सो शुभ ताको नहिं करै, जानिलेहु सबकोइ ॥ ७ ॥
चेष्टानीको जोकरै, भँवरि अशुभयुतजानि ॥
ता वाजीको जानियो, करत नहीं सो हानि ॥ ८ ॥
शुभचेष्टा बाजीकरै, शुभभौंरीयुतहोइ ॥
देत अहै निज स्वामिको, पूरणसुखको सोइ ॥ ९ ॥
भौंरी जाके अशुभहै, बदचेष्टित हय होइ ॥
करती पूरण दोषको, श्रीधर वरणो सोइ ॥ १० ॥
घोड़ा लेने जाइ जो, पीठि डुलावति देषि ॥
यहा अशुभ नहिं लीजियो,करिहैनाशविशेषि ॥११॥
दूर्वभक्षते तुरँग जो, निकट श्रवणके जाहि ॥
देखत छाँड़ैं घासको, सोति न लीजौ ताहि ॥ १२ ॥

अथ शिक्षा वर्णनम् ।

दोहा–कोउ यक ऐसे रोगहैं, प्रथम परत नहिं जानि ॥
फिरि बीते कछु कालके, ते उघरतहैं आनि ॥ १ ॥
लीजै वाजी मोल जब, तिन रोगनको जानि ॥
जहां चिकित्साहै कही, कहो तहां पहिंचानि ॥ २ ॥
बड़ी नजरबीनी किये, परैं रोग वे जानि ॥
तजौबाजितिनरोगयुत, ते अब कहौं वखानि ॥ ३ ॥
हड्डा पुस्तक मोतरा, पछिले पगमें होइ ॥
लँगरा बाजी होइगो, इन रोगनको जोइ ॥ ४ ॥
होत आगिले पांउमें, रोग चकावरि एक ॥
दूजो जानौ जानुआँ, करिकै बहुत विवेक ॥ ५ ॥

दाग परेहैं जाहिके, जालदारकी आहि ॥
इन रोगन युत बाजिको, देखत छांड़ो ताहि ॥ ६ ॥
इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतबाजीमुहूर्त्तचक्रखरीदसमयचेष्टादि
शिक्षाकथननाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ हयशाला रचना विधि । देखो हयशाला नंबर १०४.

दोहा—निज मंदिरते बाजिको, शाला पूरब होय ॥
की उत्तरदिशि चाहिये, कहत सयाने लोय ॥ १ ॥
तहां भूमिको कीजिये, प्रथम प्रशस्तहि जानि ॥
पूछि ज्योतिषी विप्रसों, दीजै नीवहि आनि ॥ २ ॥
जितनो ऊंचो कीजिये, तितनो चौडो होइ ॥
लंबाकीजे नापसों, आयत नीको सोइ ॥ ३ ॥
गज आयतको कीजिये, वृष आयतकी होइ ॥
हयको आयत होइ जो, तौ अति नीको सोइ ॥ ४ ॥
जितने थान तुरीनके, तितने मोहरा होइ ॥
कीजे दुहुँ पाखन विषे, दुइ दरवाजा सोइ ॥ ५ ॥
प्रति थानहिके अग्रमें, कीजे लघु दरवाज ॥
हयशाला चारिउ तरफ, कीजे छज्जासाज ॥ ६ ॥
सो छज्जा या विधिकरै, नहिं आवै बौछार ॥
ता सायाको जानियो, सोहै सुखको सार ॥ ७ ॥
सब दरवाजन माहिंमों, देहु केंवार लगाइ ॥
जिन्हैं कीजिये बंद जो, आवै नाहिन बाइ ॥ ८ ॥
कुरसी कीजे ताहिकी, शालहोत्रमत मानि ॥
एक हाथसों नीच नहिं, दोइ हाथ लघु जानि ॥ ९ ॥
शालाकी पूरुब दिशा, की उत्तरादिशि जानि ॥

तहां जलाशय होइजो, तौ अति शुभग बखानि ॥ १० ॥
लोहमई बनवाइये, खांचे यह जिय जानि ॥
जेतने बाजी बाँधिये, उतने खांचे आनि ॥ ११ ॥
बाजि अगारी माहिमें, छतिमो देइ टँगाइ ॥
तामें डारै घासको, झरति धूरि सब जाइ ॥ १२ ॥
होइ नहीं सामर्थ जो, यतनी मालिक माहि ॥
तौ छपरा डरवाइये, अश्वथानपर आहि ॥ १३ ॥
बाँस एक चिरवाइकै, खांची लेइ बनाइ ॥
अश्व अगारी बांधिये, घास वहीमें खाइ ॥ १४ ॥
अथवा चरानि बनाइये, माटी पोढि सँगाइ ॥
होइ ऊंचि दो हाथकी, घास वहीमें खाइ ॥ १५ ॥

अथ हयशाला प्रवेशन वा निःशारन मुहूर्त्त—मुहूर्त्तचिंतामणिमतेन ।

घनाक्षरी—राशी शुभ लगनकी अठवों सदन शुद्ध,
जौन जाकी योनि और चर नषत गायेहैं ॥
ऐसे समय सदनमें पशुन को राख्यो जिन,
दिन तिन तिनहीं अशेष सुखपायेहैं ॥
रिक्ता दरश आठैं मंगल श्रवण ध्रुव,
चित्रामें सदनते जिन बाहर पठायेहैं ॥
पाये सब सुख तिन इनहीमें राखे जिन,
तिन निज जीको भूरि शोक उपजायेहैं ॥

मुहूर्त्त हयशाला प्रवेशन शुभलग्न अष्टम शुद्ध होय.					
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	अ.	१	र.	अ. भ.
२	चं.	ध.	२	चं.	कृ. मृ.
३			३		आ. पु.
५	बु.	श.	५	बु.	पु. श्ले.
६			६		
७	बृ.	पुनः	७	बृ.	म. पू. फा.
१०	शु.		१०	शु.	ह. वि.
११			११		ऽनु. ज्ये. मू.
१२	श.		१२	श.	पू. षा. ध.
१३			१३		श. पूभा.
१५			१५		रे.

मुहूर्त्त अश्वकृत्य. मुहूर्त्त गजकृत्य.					
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	ह. अ.	१	र.	मृ. रे.
२			२		
३	चं.	पु. पु.	३	चं.	चि. ऽनु.
			५		ह. अ.
५	बु.	मृ. स्वा.	६	बु.	
६			७		पुष्य.
७	बृ.	ध. आ.	८	बृ.	
८			१०		ऽभि.
१०	शु.	श. रे.	११	शु.	
११			१२		स्वा. पु.
१२	श.		१३	श.	
१३			१५		श्र. ध.
१५					
३०			३०		श.

अथ अश्वगजादि कर्म ।

नरेन्द्र छन्द–हस्त अश्वनी पुष्य पुनर्वसु मृग स्वाती वसु लीजै ।
शिव शतभिषा रेवती इनमें बाजि कर्म सब कीजै ॥
रिक्ता मंगल बिना कहत अब गजराजनके कर्म ।
मृदु चर छिप्र नषत लै भाषत जे जानतहैं मर्म ॥

अथ हयशालाप्रवेशनविधि ।

दोहा–शाला विधि हय सब कही, शालहोत्र मत जानि ॥
तामें बाजि प्रवेश विधि, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥
प्रथम पूँछिये विप्र सों, दिन नीको जब होइ ॥
ताके पहिले एक दिन, तासम नीको सोइ ॥ २ ॥
तादिन कीजै ताहिमें, सो अब कहौं बखानि ॥
उच्चश्रवाको कीजिये, स्थापन जिय जानि ॥ ३ ॥
पूजा कीजै तासुकी, सो षोड़श उपचार ॥
फिरि लक्ष्मीको पूजिये, करिकै सब विस्तार ॥ ४ ॥
लक्ष्मीजीको दीपतहँ, दीजै एक बराय ॥
बरत रहै सो राति दिन, ताकी विधि यह आइ ॥ ५ ॥

पूजै तहाँ कुवेरको, और बरुणको जानि ॥
तादिन राखै ताहिमें, सात धेनु यह सानि ॥ ६ ॥
दोइ वृषभ अरु जानिये, थनवारहि युत मानि ॥
दीपहि रक्षक होइ जो, तिनते अधिक बखानि ॥ ७ ॥
प्रातभये सब लीजिये, गाईं वृषभ खुलाइ ॥
बंदनवारी बाँधिये, भूमि सबै लिपवाइ ॥ ८ ॥
वास्तु विधानहिं कीजिये, नवग्रह देउ पुजाइ ॥
पूजाकीजै वायुकी, दीजै होम कराइ ॥ ९ ॥
फेरि खवावै विप्रबहु, तिन्हैं दक्षिणादेइ ॥
चारि विप्रको दीजिये, वस्त्र गहन युत सोइ ॥१०॥
याविधिको जब करि चुकै, बाजी लेइ मँगाइ ॥
विधि पूजनकी कीजिये, तिन बाजिनकी जाइ ॥११॥
तिन विप्रनको बोलिये, अति आदर करवाइ ॥
अलंकार अरु वस्त्र जो, जिन्हको दीन्हे आइ ॥ १२ ॥
तिनहीते पठवाइये, इन मंत्रनको जानि ॥
शत शत बारहि मंत्रप्रति, शालहोत्र मत मानि ॥ १३ ॥

मंत्र—श्रीकृष्णायनमः ॥ श्रीगुरुवेनमः ॥ श्रीसरस्वतीभ्योनमः॥ श्रीवायुपुत्राय नमः ॥

दोहा—द्विजवर तहँ मंगल पढ़हि, और शांतिको जानि ॥
शाला महँ तहँ बांधिये, वाजिनको सुख मानि ॥ १ ॥
यहिप्रकार बाजीनको, जे राखैं महिपाल ॥
तिनको विघ्न नहोइ कछु, भाषत बुद्धि विशाल ॥ २ ॥
यहि प्रकार बाजीनको, जे पालत महिपाल ॥
तिनके शत्रुन माँझहिय, बनी रहतिहै शाल ॥ ३ ॥

यह विधि राजनको कही, और नरनको नाहिं ॥
राजनके तर नर अउर, यथा शक्ति तिन आहि ॥ ४ ॥
लालवर्ण कपि बांधिये, शालाद्वारे माहिं ॥
हयबलाय जो होइ कछु, ताके शिरपर जाहि ॥ ५ ॥

अथ हयशालामें गिरदान आये अशुभ ।

दोहा–सरटाको हयशालमें, आवन देहु न मीत ॥
जो आवै तौ सकल हय, कछू होंय भयभीत ॥

अथ हयशाला उपद्रव कथनम् ।

छन्दतोटक–मधु मक्षिका हयसार । जिन कीन्ह आनि अगार ॥
यह कहत पण्डित बात । ता अश्वनाहिं कुशलात ॥
जब यहै अवगुण जानु । तब शांतिकी विधि ठानु ॥
द्विज पूजि हवन कराइ । बहु दक्षिणा देजाइ ॥

दोहा–शत प्रकार रुद्री बनै, पूजे विधिवत सोय ॥
अश्वक्षेम मधु मक्षिका, शांति करावै कोय ॥

अन्यशांति ।

दोहा–द्विजवर बोलै मानकरि, तिनके पूजै पाँइ ॥
ता पीछे जो कीजिये, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
पुजवावै तिहि विप्रसों, शतपार्थिव यह जानि ॥
मृत्युंजयको जप करै, दशहजार सो मानि ॥ २ ॥
तासु दशांसहि होमकरि, द्विजवर देइ खवाइ ॥
शांति पढावै द्विजनसों, सबै दोष मिटिजाइ ॥ ३ ॥
फिरि दीजे व्याहृतिनसों, आहुति एक हजार ॥
गाइनको घृत छानिकै, कीजे बुद्धि उदार ॥ ४ ॥
देइ दक्षिणा भाँति बहु, विप्रनको यह जानि ॥
मधुमाखी जो वास किय, शांति तासुकी मानि ॥ ५ ॥

अथ युद्धसमय घोड़ा साजैके शुभाऽशुभ शकुन।

दोहा—इन चिह्नते कहतिहौं, शुभ अरु अशुभ तुरंग॥
शालहोत्र मत जानिकै, भाषत बुद्धि उतंग॥ १॥
सजत वाजिको होइजब, उच्च वक्र हेहनाइ॥
भूमि उखारै टापसे, हारि बतावत आइ॥ २॥
समर सामने जो करै, ऐसि चेष्टा बाजि॥
वाको स्वामी जीतिकै, घरको आवै गाजि॥ ३॥
युद्धमाहि चलिबे लिये, सजत बाजिको होइ॥
करै जो लीदि पेशावको, ताकी यह गति जोइ॥ ४॥
आशु मरै स्वामी सहित, रणमाहिं यह जानि॥
शालहोत्र मत देखिकै, श्रीधर कहो बखानि॥ ५॥
युद्धकार्यको चलतसें, बाजि सजावै कोइ॥
बिनाव्याधि यह आँखिसों, आँसू निकसति होइ॥ ६॥
जाको हय वह होय जो, ताको नीक नआहि॥
रोवत हय निज स्वामिहित, देत बतायो ताहि॥ ७॥
जा बाजीकी पूँछते, झरन लगैं चिनगारि॥
रणको चढि तापर चलै, ताको काल विचारि॥ ८॥
रणको निकसतहोइ कोइ, बाजीपर असवार॥
सोबाजी निज पूंछके, थिरकावै जो बार॥ ९॥
निज स्वामीको रणविषे, मारि डरावै सोइ॥
शालहोत्र यों कहतहैं, ताहि सवार नहोइ॥ १०॥
बिन कामहि अधरातको, घोड़ा हर्षित होइ॥
जाको वह घोड़ा अहै, तासु पयाना सोइ॥ ११॥
बारबार निज पूँछके, थिरकावै जो बार॥
जाको वह घोड़ाअहै, ताको यह निरधार॥ १२॥

कितनौ स्वामी होइ थिर, भूप होइकी राइ ॥
ताकी थिरता नहिं रहै, सही कहूंको जाइ ॥ १३ ॥
हयके शकुन अनेकहैं, कहँलौं कहौं बखानि ॥
येते श्रीधरहैं कहे, शालहोत्र मत जानि ॥ १४ ॥

अश्व वेग वर्णन ।

दोहा–सब तुरीनके कहतहौं, क्रमते वेग बखानि ॥
जानि जाहिं जाते सबै, सो वर्णत सुखदानि ॥ १ ॥
रूप वर्ण क्रम देह बल, गति आवर्त्तक जानि ॥
वेग रहत सब बाजिके, लक्षण यही बखानि ॥ २ ॥
लज्जा भूषण त्रियनको, क्षत्रिय भूषण तेग ॥
द्विजको भूषण वेदहैं, बाजी भूषण वेग ॥ ३ ॥
मातृदोषते होतिहै, लघुता बाजी माहि ॥
करत सरारी अश्व जो, पितादोष सो आहि ॥ ४ ॥
स्वामिदोषते दूबरो, और पातरो होइ ॥
नाहीं दोष तुरीनको, जानि लेउ जिय सोइ ॥ ५ ॥

अथ शीघ्रतावर्णनं ।

छंद चौपैया–खैंचत लीकसी भूमिहिये । मानौ अंबर लेत पिये ॥
अमरादि समीर सुभ्रमि भरे । अरु पक्षिनकी गति लेत हरे ॥
जिनके तनु तागति जानि परै । नवला दृग जैसहि सैन करै ॥
मानौं मन हय यह रूप धरै । क्षणमें फिरि शीतल होतखरै ॥

अथ गतिवर्णनं ।

दोहा–हलति देह नहिं नेकहू, चलत ऐसि गति जाहि ॥
अभरनगनते तनविषे, तेनहिं बाजत आहि ॥ १ ॥
साह गाम यक जानियो, तेज गाम अरु मानि ॥
मंद गाम यक होतिहैं, और दुगामा जानि ॥ २ ॥

खरगा अविया दोइये, औरहि बाल बखानि ॥
येते भेदनगति तुरी, निजमति लेहु पिछानि ॥ ३ ॥

अथ आवर्त्तक वर्णनं ।

दोहा-आवर्त्तक ताको कहत, सोइ कोडरी आइ ॥
कावाकारि परसिद्धहै, बाजीको सुखदाइ ॥ १ ॥
करति मंडली वाजिहै, तिनकी गति असिहोति ॥
चूमतिसें नहिं जानिये, ज्योंदीपककी ज्योति ॥ २ ॥
इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतहयशाला रचनाप्रवेश
नादिकथनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सवारवर्णनम् ।

दोहा-अब आरोहण गुण कहौं, शालहोत्र मत मानि ॥
लक्षण जाहि तुरीनके, प्रगट परतहैं जानि ॥ १ ॥
शिला समानहि जानु जेहि, वज्रहि सों कटिदेश ॥
अरु क्रोधीहै नाहिनो, शास्त्र पढोहै वेश ॥ २ ॥
होइ चलाक सवार जो, बुद्धिमान अतिहोइ ॥
जानै जो गति भेद सब, शालहोत्र मत जोइ ॥ ३ ॥
शीत तोय अरु धूपते, नेको नाहिं अकुलाइ ॥
समर माह उत्साह अरु, जासु हिये सरसाइ ॥ ४ ॥
आवत नाहिं प्रस्वेदतनु, थोरी मेहनति माहि ॥
समय जानि ताड़न करै, और दक्ष सो आहि ॥ ५ ॥
येते गुणहैं जाहिमें, दृढ़ असवार सुजानि ॥
श्रीधर वरणो चावसो, शालहोत्रमत मानि ॥ ६ ॥

अथ अश्व ताड़न विधि ।

दोहा-प्रातसमयमो मंद जो, तुरी चलत जोहोइ ॥
ताको चाबुक मारिये, पिछिले पुट्ठन सोइ ॥ १ ॥

बाजी नीको नहिं चलै, प्रातसमय जो आहि ॥
कोखिन पुट्ठा माहिं लगु, मारै चाबुक ताहि ॥ २ ॥
ऐसो चाबुक मारई, जाय तुरी अकुलाइ ॥
भागै पूँछ उठाइकै, जलदी नाहिं ठहराइ ॥ ३ ॥
काँधी कारि पुस्तक करै, पूँछ दाबिकी लेइ ॥
तबलौं वाको मारिये, बदी छोंडि सो देइ ॥ ४ ॥
बिनजाने स्थानके, जे ताडन कहँ देहि ॥
तासों हय वैरहि गहै, जानि हिये महँ लेहि ॥ ५ ॥

अथ स्थानवर्णनम् ।

कोखि गलहरी कटिविषै, पाछिल पुट्ठा जानि ॥
कंध माहि अरु जानिये, ये स्थान बखानि ॥ १ ॥
तंग पाँजरै मारिये, दूनौ एडी जानि ॥
जोममरेजे बाँधिये, तौ अति मारु बखानि ॥ २ ॥
जो कदाचि धीमो चलै, येंड मारि तेहि देइ ॥
आसन मसकै जोरसों, जलद ताहि करिलेइ ॥ ३ ॥
मारो चाहै हाथसों, छपकातौ करिदेइ ॥
जस चाहै तस वाजिको, जल्द तुरत करिलेइ ॥ ४ ॥
बदीजौन हय करतहै, परत नाहिं सो तेज ॥
ता वाजीके कारणै, बाँधिलेत ममरेज ॥ ५ ॥
जाहि चलै अति जोरसों, दौराये जिय माहि ॥
ताडन कीजै तासुको, कोखिन पुट्ठन माहिं ॥ ६ ॥
कियो चहत जब फैल हय, शिरहि हलावति जाहि ॥
ताड़न कीजै कंधमहँ, शुद्ध तबै है जाहि ॥ ७ ॥
जब हरामजदकी करै, ताहि समयमें ताहि ॥
मारो चाहै ठौर तेहि, दोष नहीं सो आहि ॥ ८ ॥

अथ फेरन विधि।

दोहा—अब फेरन विधि अश्वकी, वरणौं जेती आइ॥
जाहिं जानि असवार सब, बाजी लेंइ बनाइ॥ १॥
प्रथमै बच्चा विधि कहौं, जैसो फेरोजाइ॥
ता पाछे सब ऋतुनको, फेरब देत बताइ॥ २॥
दोइ दाँत जब होइ हय, फेरौ तबते ताहि॥
बीतौ देखौ गातको, फेरन लायक आहि॥ ३॥
प्रथम रासिको डारिकै, राह देखावत ताहि॥
जब कायम भो राहपर, कावा फेरै वाहि॥ ४॥
रासिडारिकै दीजिये, ताको कावा आहि॥
ठीकहोइ दुहुँबागपर, याहित कावा ताहि॥ ५॥
जब कावापर ठीकभो, हलुक सवार चढाइ॥
मंदमंद तेहि राहपर, नितप्रति फेरत जाइ॥ ६॥
कावा फेरतके समय, मनुज एक बुलवाइ॥
ताहि पिछारी कीजिये, औगी मारति जाइ॥ ७॥
अरु कावापर फेरिये, हलुक सवार चढाइ॥
रासै डारै निज रहै, बाग सवार बढाइ॥ ८॥
जबै ठीक ह्वैजाइ वह, रासदेइ कढवाइ॥
मंदमंद मेहनति लिये, हय दुरुस्त ह्वैजाइ॥ ९॥

अन्यमत।

सवैया—जाँघै जमाय दुहूं घुटुवानलौं पेडुरी ढीली दुहूंकरिचालै॥
कानन मध्यम दृष्टि रहै थिरता करिकै कटि नेक नहालै॥
बाग बराबरि राखै सुजान सो धोख कियेपर चाबुक घालै॥
सोइ सवार सवारी सराहिये राखै बचाय खतानिको जालै॥

अथ वाहभूमि ।

श्लोक-शतहस्तादिकं भूम्यां सप्तहस्तावसानकम् ॥
भ्रामयेद्वाजिनं सादी सव्यासव्येन वाजिनम् ॥ १ ॥
मण्डलं चतुरस्रं वा गोमूत्रं वार्द्धचंद्रकम् ॥
नागपाशक्रमेणैव भ्रामयेत्कटपंचकम् ॥ २ ॥

दोहा-शतहस्ताधिक भूम्यमित, सप्तहस्त अवसानु ॥
भ्रमणकरै वाजी सुघर, सव्यासव्य प्रमानु ॥ १ ॥
मंडल तिमि चतुरस्रगति, गोमूत्राभानि बेर ॥
नागपाश चंद्रार्धविधि, पांचरीतिहि फेर ॥ २ ॥

चौपाई-काकर ठोकर साँकर ताले । ऊंच खालि तृण काष्ठ नघाले॥
समसोभूमि अश्व दौरावै । तजि कठोर जहँ धूरि देखावै ॥
वर्षाऋतुमें महिजल भारी । वगधर चढै सोहोइ अनारी ॥
शरदऋतुहिमें उष्णबिहाई । हिमऋतुमेंमितलोद बराई ॥

दोहा-अर्धमाघते चैतभरि, राति दिवस दौराय ॥
मेषरु वृष आषाढलौं,थाने पानि पिआय ॥ १ ॥
ऋतुबसंत ग्रीषम तलक, असवारी करि चाहि ॥
तौ याहीविधिते सुघर, करै जतन निबाहि ॥ २ ॥

चौपाई-निंबपत्र अरु लोनु मँगावै । दूनौ टका चारि भरिलावै ॥
याहि बनाय बाजि कहँ देई । बहुत भूंखबल रोग नहोई ॥
हरीघास ग्रीषममें पावै । घिव दानामें रांधि खवावै ॥
छाहीं सूखे हयको बाँधै । होय बली जो याविधि साधै ॥

दोहा-छोटे मोटे बृद्ध अरु, रुजी सुरापी सोय ॥
कुष्ठी तिमिर सवारहै, डारत है हय खोय ॥

आरोहण विधि ।

दोहा-अब आरोहणविधि कहौं, जाहित बाजी आहि ॥
शालहोत्र मत देखिकै, वर्णतहौं अब ताहि ॥ १ ॥

आरोहणमें जानिये, एक बागहै सार ॥
ताहि बिनाजाने अहै, वृथा सकल व्योहार ॥ २ ॥
गुणी पुरुष विन ज्यौं सभा, विन दिनेशदिन जानि ॥
बिना बागके ज्ञानत्यों, वृथा सकल गुणखानि ॥ ३ ॥
असवारीमें हय रहै, केवल बाग अधीन ॥
ताते प्रथमै बागको, या सधि वर्णन कीन ॥ ४ ॥

अथ बाग धरिबेकी विधि ।

दोहा–तुला समान गहे रहै, बागहिको हय जानि ॥
ना अतिलंबी राखिये, ना अति ऊँची मानि ॥ १ ॥
प्रथम कदम काढन विषे, अरु धावनमों जानि ॥
या विधिसों बागहि गहै, सो अबकहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ कदम काढन विधि ।

दोहा–सांझसमय असवार हो, कोश एक चलिजाइ ॥
दुलकी उखरन देइ नहिं, तहँते देइ घुमाइ ॥ १ ॥
मंदमंद गृहमाँझ लौं, आवे लीन्हें ताहि ॥
बागैं तंग नाहिं राखिये, ना अति ढीलि ताहि ॥ २ ॥
नितप्रति फेरै याहि विधि, कदम गाम ठहराइ ॥
दूगा महि कीन्हों चहै, ताकी या विधि आइ ॥ ३ ॥
बाग पकरि है तंग तेहि, अरु ऊँची कछु जानि ॥
जेरबंद ढीलो करै, याविधि ताकी मानी ॥ ४ ॥
मंदचलत जानै जबै, एडै देइ लगाइ ॥
आसन मसकत जाइ अरु, नहिं अति जोर कराइ ॥ ५ ॥
तुली बाग दुहुँ राखिये, दुलकी उखरि नजाय ॥
दौरनदीजै ताहि नहिं, कदम ठीक ह्वै जाय ॥ ६ ॥
जेरबंदको कीजिये, थोरा थोरा तंग ॥
सूरति प्यारी होतिहै, याविधि किये तुरंग ॥ ७ ॥

होइ तुरंगम जल्द अति, कूदन लागत सोइ ॥
याही विधिके करतही, सो जानौ सब कोइ ॥ ८ ॥
हाँको याही विधि तुरी, बाग रसाइनि माहि ॥
थोरी थोरी कीजिये, तंग ताहिको आहि ॥ ९ ॥
औ ऊँची नहिं पकरिये, तुली रहै तेहि बाग ॥
कायम दोनौं कदमपर, होत वाजिसूं भाग ॥ १० ॥
होत सही यह बातहै, देरक जानौ सोइ ॥
शालहोत्र मत देखिकै, वर्णतहैं सबकोइ ॥ ११ ॥
तंगबाग अतिही किये, याविधि फेरत जाइ ॥
तौ अविया कदमै चलै, पीठि हलाइ हलाइ ॥ १२ ॥

अथ लंगर डारिके कदमकी विधि।

चौपाई–दोई रस्सी लेइ बनाई। सूत मुजम्मा बाँधै भाई ॥
अश्वके गांठिन ऊपर बाँधै। यत समेत यहीविधि साधै ॥
ऊपर चाढिकै हाँकै कोई। अविया कदम होतिहै सोई ॥

अन्य विधि।

दोहा–अगिले पद दहिने विषे, पछिले बायें जानि ॥
पछिले दहिने पगाहिमें, अगिले बाम बखानि ॥ १ ॥
याही विधि सों बाँधियो, हयके गामचि माहि ॥
राशिनपर हय हाँकिये, कदम ठीक है जाहि ॥ २ ॥
राशिनकेरे मध्यमें, हय पीठीके माहि ॥
रस्सी एक लगाइकै, बाँधिदेउ सो ताहि ॥ ३ ॥
पाँयनमें अरझै नहीं, कदम चलत हय सोइ ॥
लंगर डारै घनपगाहि, होय कहै सब कोइ ॥ ४ ॥
कदम काढिबेकी कही, औरौ विधि बहु आइ ॥
ते अधीन असवार के, कहँ लौं वरणी जाइ ॥ ५ ॥

अथ कावा फेरन विधि ।

दोहा–प्रथमराशिको डारिकै, दीजै कुंडलि वाहि ॥
आदुरुस्त दुहुँ बाग फिरि, और जतनहै ताहि ॥ १ ॥
पीठीपर असवारह्वै, दुहूँबाग गहि लेइ ॥
बाग भीतरी हाथ यक, धरिके कावा देइ ॥ २ ॥
तुलीबाग दुहुँराखियै, कावा फेरन माहि ॥
उरझत ढीली बागहै, औरौ दोष लखाहि ॥ ३ ॥
ढीली बागै लेत नहुँ, मुँहके बल गिरिजाइ ॥
हयके गिरे सवार जो, सही चोटको खाइ ॥ ४ ॥
बाग बदलिये अश्वकी, बाहरको यह जानि ॥
भीतर बदलै बाग जो, उरझत हय यह मानि ॥ ५ ॥

अथ गस्तफेरन विधि ।

दोहा–पंद्रह धनुपनते कहो, तीस धनुष लगु जानि ॥
छातक फेरै बाजिको, गस्त ताहिको मानि ॥ १ ॥
बागै दोऊ राखिये, तुली तहाँहू जानि ॥
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥
फेरै जौनी बागपर, धरे रहै यक हाथ ॥
यहिविधि जो कोऊ करै, बाजि चलै मनसाथ ॥ ३ ॥

अथ धावन वर्णनम् ।

दोहा–दौरावै अतिजोरसों, सूधो लीकसमान ॥
तुली राखिये बागको, दुहू हाथमें जान ॥

धावनप्रमाण ।

दोहा–चारि हाथको जानियें, एक धनुष परमान ॥
धनुष अठारह होइ जो, कष्ट तासुको जान ॥ १ ॥

आठ कष्टको कहतहैं, एक मंत्र यह जानि ॥
आठमंत्र अरु धनुष शत, हयको धावन मानि ॥ २ ॥
एकसमानै दौरई, या परमानै सोइ ॥
अरु ढीलो परिजाइ नहिं, उत्तम बाजी होइ ॥ ३ ॥
एकमंत्र दौराइये, तुरी नितै प्रति जानि ॥
और अधिक दौराइवो, विना काज नहिं मानि ॥ ४ ॥

अथ जल्द करिवेकी विधि ।

दोहा—जल्द करन की विधि कहौं, जो फेरेते आहि ॥
औषधिविधि जल्दी करन, कहा दवाके माहि ॥ १ ॥
कदम कदम टहलाइये, वाजीको यह जानि ॥
ठौर२ पर कीजिये, रोज अचानक आनि ॥ २ ॥
मारै चाबुक वाजिके, जाते जाइ डेराइ ॥
याविधि कीजै जतनको, चमक आइ तेहि जाइ ॥ ३ ॥

अथ वाजीको ओछिनपर और लंबिनपर कुदावनविधि ।

दोहा—प्रथमहि सूरति बाँधिये, ताकी याविधि आहि ॥
रासिन डारि चलाइये, मंदमंद सो ताहि ॥ १ ॥
सूधो जब चलने लगै, तबै देइ झमकाइ ॥
झमकावनकीविधि कहौं, जाते कूदति आइ ॥ २ ॥
आपुहोइ दहिनी तरफ, बाजीके यह जानि ॥
रासी डारै तासुके, सो अब कहौं वखानि ॥ ३ ॥
हयकी छातीके विषे, तंग जहाँपर आहि ॥
जेरबंदको छोर तहँ, तंग रहति जा माहि ॥ ४ ॥
बाईओर लगाममें, बाँधि रासिको देइ ॥
जेरबंदके छोरमें, बाँधि रासिको लेइ ॥ ५ ॥
दहिनी तरफै लाइकै, बाँधि लगामै देइ ॥
दुहूँ तरफकी रासिको, हाँथमाहिं गहिलेइ ॥ ६ ॥

जेरबंदमें रासिजो, संग कीजिये ताहि ॥
दहिनी रासै हाथमें, तुरी चलावति जाहि ॥ ७ ॥
जहँपर झमकै नाहिं तुरी औगी मारै वाहि ॥
औगी लीन्हें एक नर, रहै पिछारी ताहि ॥ ८ ॥
चलन अगारी देइ नाहिं, अरु कूदन नाहिं देइ ॥
याविधि झमकैये तुरी, जानि तासुको लेइ ॥ ९ ॥
औगी लीन्हें जौन नर, पांषरराखै हाथ ॥
जाइबजावति ताहिसो, हयकी झमकनि साथ ॥ १० ॥
रासिकीजिये ढीलि कछु, दहिने बढ़वति जाहि ॥
ओछिन पर तब जानिये, कूदति बाजी आहि ॥ ११ ॥
ढीलीकीजै रासिको, दीजै बहुत बढ़ाइ ॥
तबतौ जानौ बाजि वहु, लंविनपरलै जाइ ॥ १२ ॥

अथ तुरी फेरैके महीना ।

दोहा—सावन और अषाढ पुनि, आश्विनि भादौं जानि ॥
आतिमेहनाति नाहिं लीजिये,इन महिननमो मानि॥ १ ॥
कार्तिक जेठहि मासमें, याविधि फेराति आहि ॥
बड़े प्रातमें फेरिये, घाम चढेमें नाहिं ॥ २ ॥
हठ करिकै जो फेरई, मर्म न जानत ताहि ॥
पित्त विकार जु रोगहै, बाजीके ह्वै जाहि ॥ ३ ॥
रहे मास जे षट अहैं, तिनमें दूषण नाहिं ॥
जैसी मेहनत चाहिये, तैसी लीजै ताहि ॥ ४ ॥

अथ मैजालिकी विधि ।

दोहा—मैजलि करि द्वैकोसपर, लीदि पेशाब कराइ ॥
पानी दीजै ताहिको, मूठिक घास खवाइ ॥ १ ॥

चहै तेतनी दूरिलगु, हयको लीन्हेजाहि ॥
बाजी ताको भरत नहिं, याविधि चढ़त जुआहि ॥ २ ॥
उतरै हयको फेरि जब, तब यह औषधि देइ ॥
टका एकभरि फटकरी, दूनि मिठाई लेइ ॥ ३ ॥
हयकोदेइ खवाइसो, टहलावै घरिचारि ॥
तब लै आवे थानपर, जीनहि धरै उतारि ॥ ४ ॥
अरग्गीरको राखिये, तुरी पीठि पर जानि ॥
कैजाकीजे तासुको, श्रीधर कहत बखानि ॥ ५ ॥
बाजीकी छाती विषे, मलवावै बहुबार ॥
की हत्थीकी घासते, कै हयको सुखसार ॥ ६ ॥

अथ रथलायक बाजीफेरैकी विधि ।

दोहा—प्रथम बाजिको फेरिये, रासिन पर हय जानि ॥
चलै ठीक पर अश्वजो, ता विधि कहौं बखानि ॥ १ ॥
कीजै कँड़रा लोहको, तापर ऊन मढ़ाइ ॥
तापर चाम मढ़ाइये, ताकी यह विधिआइ ॥ २ ॥
हयकी गरदनि माहिमें, देहु ताहि डरवाइ ॥
ताहि डारिकै फेरिये, जब वाको सहिजाइ ॥ ३ ॥
तामें दूनौ तरफ करि, रसरी दुइ बँधवाइ ॥
जबलौंरसरी नहिं सहै, तबलौं फेरति जाइ ॥ ४ ॥
फिरि उन रसरिन माहिमो, हलुक काठ बँधवाइ ॥
रसेरसे तेहि काठको, करति गरुव सो जाइ ॥ ५ ॥
हयके कांधे माहिमो, जब ढट्टा परिजाइ ॥
तब तेहि बांधे काठपर, देहु सवार चढ़ाइ ॥ ६ ॥
सो दुहुँ रासन हाथलै, नितप्रति फेरति जाइ ॥
याविधि हय फिरि जाइ जब, रथमें देहु लगाइ ॥ ७ ॥

शास्त्र चलावन जौन विधि, कही सवारी माहिं ॥
ग्रंथहोत विस्तार अति, यासोंवरणोनाहिं ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीफेरनविधिवर्णनोनाम
पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ अग्निपुराणोक्तअश्वशांति । शालहोत्रउवाच ।

श्लोक-अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्द्दिनीम् ॥
नित्यां नैमित्तिकीं काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरञ्च श्रियमुच्चैःश्रवाह्वयम् ॥
हयराजं समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥
द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत् ॥
अश्वयुक्शुक्लपक्षस्य पञ्चदश्याञ्च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत् ॥
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४ ॥
घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान्दिक्षु दद्यात्सवस्त्रकान् ॥
यवाज्यं जुहुयात् प्राच्यं यजेदश्वांश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु ॥
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैर्विष्णुं श्रियं यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माणं शङ्करं सोममादित्यञ्च तथाश्विनौ ॥
रेवन्तमुच्चैःश्रवसं दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुम्भैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत ॥
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान् देवातानां शतं शतम् ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥ ८ ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशांतिर्नाम नवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९० ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

शालहोत्रसंग्रह ।

अथ चिकित्साकाण्ड प्रारम्भः ।

दोहा—कहत चिकित्साकांड अब, शालहोत्र मत जानि ॥
विविध भाँतिके रोग जे, होहिं जासुते आनि ॥ १ ॥
धातुकोपते होतिहैं, रोग सकल विधि आनि ॥
वात पित्त कफरक्तकी, प्रकृति चारि विधि जानि ॥ २ ॥
तिनमें कोई विषमभा, धातुकोपसो जान ॥
ताते प्रथमहिं प्रकृतिको, कीन्हों इहाँ बखान ॥ ३ ॥

अथ वाजीप्रकृतिवर्णनम् ।

दोहा—प्रकृति तुरिनकी चारि विधि, प्रथम पित्तकी जानि ॥
दूजी कफकी जानियो, तीजी वात प्रमानि ॥ १ ॥
चौथी जानौ रक्तकी, तिनकी जो पहिचानि ॥
ताको अब वर्णन करौं, जानि लेहु गुणखानि ॥ २ ॥

अथ वाजीकी पित्तप्रकृति वर्णनम् ।

दोहा—पित्तीहोइ मिजाज जिहि, ताकी यह पहिचानि ॥
तेज चीजको खाइ बहु, क्रोधवंत अरु मानि ॥ १ ॥
दौरै अतिही दूरिलौं, और जल्द अतिहोइ ॥
रोमा ताके साफ बहु, और मुलायम जोइ ॥ २ ॥
जलदी करत अहारमो, क्षुधावंत अति जानि ॥
ऐसे लक्षण जाहि तनु, पित्त प्रकृति सो मानि ॥ ३ ॥

अथ कफप्रकृतिवाजी ।

दोहा—रोवाँ पतरे होंइ अति, और चमक बहु जोइ ॥
चाह करै घोड़ीन पर, और जल्द अति होइ ॥ १ ॥

दाना घासहि खाइकम, बहुत देरतक जानि ॥
ऐसो बाजी होइ जो, ताहि बलगमी मानि ॥ २ ॥

अथ वात प्रकृति वाजी ।

दोहा–सूखीदेही होइ सब, गर्दन सीधी जानि ॥
रँगै देखाई देइ बहु, मोटो रोम बखानि ॥ १ ॥
मोटा होइ शरीर जो, याविधि जानै सोइ ॥
करै अहारै देर महँ, कहत सयाने लोइ ॥ २ ॥
रोवाँ मैले ताहिके, अरु घुँघुआरे जानि ॥
दाना ताको कमपचै, मंदअग्नि अतिमानि ॥ ३ ॥
असवारी भारी नहीं, ताहि उठाई जाइ ॥
राह चले थकिजाइ बहु, खट्टी चीजै खाइ ॥ ४ ॥
ए लक्षण जामें मिलैं, वादी ताको जानि ॥
शालहोत्र मत मानिकै, श्रीधर कहो बखानि ॥ ५ ॥

अथ रक्तप्रकृति वाजी ।

दोहा–मीठी चीजै खाइ बहु, छोटे रोम लखाइ ॥
साफ तासुको बदनहै, पतरी खाल देखाइ ॥ १ ॥
मोटाहोइ शरीर बहु, अरु ढीलो नहिं होइ ॥
क्रोधवंत सो होइ नहिं, बहुत जल्द लखि सोइ ॥ २ ॥
दाना घासहि खाइ वहु, जलदीकरै अहार ॥
राह चलेते थकत नहिं, ऐसो तासु विचार ॥ ३ ॥
यह लक्षण जिहि बाजिको, रक्त प्रकृति तिहिजान ॥
यासम बाजी और नहिं, श्रीधर कहो बखान ॥ ४ ॥

अथ धातुवर्णनम् ।

दोहा–धातु चारि ए बाजितनु, तिनमें कोपै कोइ ॥
तिहि बाजीके जानिये, उत्पति रोगकि होइ ॥ १ ॥

धातुकोपको जाइकै, कीजै औषधि ताहि ॥
तबहीं जानौ ताहिको, रोग दूर ह्वै जाहि ॥ २ ॥
नब्ज देखिकै होतहै, धातुकोपको ज्ञान ॥
याहिते प्रथमहि नब्जको, कीन्हों यहाँ बखान ॥ ३ ॥
नब्ज वाजिकी होतिहै, आँखि वताने माहि ॥
ताहि देखि जान्यो परत, कोप धातु जो आहि ॥ ४ ॥
आँखिन ऊपर पलक जो, देखौ ताहि उठाइ ॥
ताहि बताना कहतहैं, कोवा लघु जो आइ ॥ ५ ॥

अथ नाड़िकावर्णनम् ।

दोहा–होइ गुलाबी रंग जो, अश्व बताना माहि ॥
तबहीं जानौ बाजिको, सब विधि नीको आहि ॥

अथ धातुकोप प्रथम पित्त ।

दोहा–जासु वताने माहि सों, रंग जर्द अतिहोइ ॥
कोप पित्तको जानियो, शालहोत्र कहि सोइ ॥ १ ॥
होइ बताने माहि सों, रंग सफेदी आइ ॥
तबतौ जानौ बाजितनु, शरदी कोपी जाइ ॥ २ ॥
वही सफेदी माहि जो, लघु छाले दरशाहि ॥
तबहीं जानौ अश्वतनु, कोप वातको आहि ॥ ३ ॥
ते छाले अस जानियो, कुटुका कुटुका होइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, वात कोपहै सोइ ॥ ४ ॥
रंगबताने माहिमो, कछुक सफेदी होइ ॥
तौन सफेदी होइ यों, चरबीके सम सोइ ॥ ५ ॥
कफ कोपेते जानियो, बाजीके तनुमाहि ॥
बलगम ताको कहतहैं, जानिलेहु लखिताहि ॥ ६ ॥

जरदी मायल होइ जो, कछुक सफेदी आइ ॥
तुरी बताने रंगमहँ, कफ अरु पित्त लखाइ ॥ ७ ॥
होइ बताने रँगमहँ, जरदी लाली आइ ॥
रक्तपित्तको कोपहै, जानिलेहु सुखपाइ ॥ ८ ॥

अथ खूनसे सफरा मिला ।

दोहा—अश्व बताने माहि मो, सुरखी अति दरशाइ ॥
कोप रक्तको जानियो, सो गरमीते आइ ॥ १ ॥
थोरी सुरखी होइ जो, अश्व बताने माहि ॥
तौ थोरी गरमी लखो, बाजी तनुमें आहि ॥ २ ॥
स्याही मायल लालजो, अश्वबताना होइ ॥
पित्त गिरतहै खूनपर, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
खूनजरतहै अश्वतनु, जानिलेहु मनमाहि ॥
शालहोत्र मत देखिकै, यामें बरणो ताहि ॥ ४ ॥
तुरी बताने रंग जो, जामुनके समहोइ ॥
बिलकुल जरिगा खूनहै, जानिलेहु जिय सोइ ॥ ५ ॥
जानौ ताहि असाध्यहै, औषधकरिये नाहि ॥
हठकारि औषध जो करै, होत असर नाहिं आहि ॥ ६ ॥

अथ चिकित्साविधि ।

दोहा—प्रथमहि यह लाजिम अहै, होइ बिमारी कोइ ॥
औषध ताकी कीजिये, सेहत जल्दीहोइ ॥ १ ॥
औषधदीजै ताहिको, लीजै समयविचारि ॥
गरमीऋतुमें गरमअति, नहिं दीजै निरधारि ॥ २ ॥
यहिप्रकारसों जानियो, शरदीऋतुमें शीत ॥
औषध ऐसि नदीजिये, जो होवै अति शीत ॥ ३ ॥
वादीको अधिकार जो, तुरी मिजाजहि माह ॥
तौ सब औषधमाहिमें, राखै तासु निगाह ॥ ४ ॥

सब बीमारी जे अहैं, कोई ऋतुमें होइ ॥
वादीकी तदबीर यह, चही जरूरौ सोइ ॥ ५ ॥
वादीकफको श्वेतरँग, जानिलेहु जिय सोइ ॥
शरदी हयकोहै जबै, श्वेत बताना होइ ॥ ६ ॥
गर्म खुश्क जे औषधी, दीजै हयको लाइ ॥
शालहोत्र यों कहतहैं, तुरत नीक ह्वैजाइ ॥ ७ ॥
सफराका रँग जरदहै, हयको सो अधिकाइ ॥
होइ बताना जरद तब, कहत मुनिनके राइ ॥ ८ ॥
होइ शरद तब औषधी, ताको दीजै लाइ ॥
पित्तकोपको नाशतब, बाजीतनु ह्वैजाइ ॥ ९ ॥
रक्त प्रकृतिमें होतहै, गरमीको अधिकार ॥
रंग तासुको लालहै, कीन्हों यह निरधार ॥१०॥
रक्तकोप जब होतहै, सुरुख वताना होइ ॥
रक्तप्रकृतिहै गर्मतर, श्रीधर वरणो सोइ ॥११॥
औषधदीजै ताहिको, शरद खुश्कको लाइ ॥
कोपरक्तको होइ जो, तुरतनीक ह्वैजाइ ॥१२॥

अथ बाजीअसाध्य परीक्षा ।

दोहा–गांधि देहमें भूमि सम, होइ बताना स्याह ॥
ताको कहत असाध्यहैं, शालहोत्र मुनिनाह ॥ १ ॥
याविधि जाके देहमें, लक्षण परैं लखाइ ॥
दोइमासके भीतरै, तुरी सही मरिजाइ ॥ २ ॥
जरदी मायल स्याह जो, तुरी वतानाहोइ ॥
जतनकरै सो बहुत विधि, मरत बाजिहै सोइ ॥ ३ ॥
कष्टसाध्य सो जानिये, ये लक्षण जहँ होइ ॥
तीनि मासके ऊपरै, मरत बाजिहै सोइ ॥ ४ ॥

अथ जीभके असाध्य लक्षण ।

दोहा—विंदुश्वेत जा बाजिके, जीभमाहिं परिजाइ ॥
ताको कहत असाध्यहैं, शालहोत्र मुनिराइ ॥ १ ॥
बड़ी जतनसों मास यक, जीवत बाजी नाहिं ॥
विन कीन्हें जो जतनके, जानिलेहु मनमाहिं ॥ २ ॥
ततवस्तु भोजन करै, खारी चीजै खाइ ॥
परेविंदुहैं जीभमें, तिनको दोष नआइ ॥ ३ ॥
पीताविंदु जो जीभमें, विनकारण परिजाइ ॥
दोइमासके भीतरै, अवशि बाजि मरिजाइ ॥ ४ ॥
जाहि तुरीकी जीभमें, हरितबिंदु परिजाइ ॥
तीनिमासके ऊपरै, बाजी जीवत नाइ ॥ ५ ॥
चित्रित विंदुक जीभमें, जा हयके ह्वैजाय ॥
चारिमासके भीतरै, सही बाजि मरिजाइ ॥ ६ ॥
जा बाजीके जीभमें, स्याहविंदु परिजाहिं ॥
चारिमासके ऊपरै, जीवत बाजी नाहिं ॥ ७ ॥
जाहि बताने माहिमें, पित्तदोष दरशाइ ॥
तीनिकोनके श्वेत जे, बिंदु जीभ परिजाइ ॥ ८ ॥
षटमहिनाके भीतरै, बाजी सो मरिजाइ ॥
कहत सयाने लोग सब, शालहोत्र मत आइ ॥ ९ ॥
चंपाके रँग विंदु जो, तुरी जीभ परिजाइ ॥
मास सातयें बाजिको, अवशि नाश ह्वैजाइ ॥१०॥
हरदीके रँग विंदु जो, बाजि जीभ परिजाइ ॥
दशयें महिना अवशिके, बाजी सो मरिजाइ ॥११॥
सुरुख विंदु जो बाजिके, जीभ माहिं ह्वैजाइ ॥
मास सातयें लागते, तासु नाश ह्वै आइ ॥१२॥

लाखी वर्णहिं विंदुसे, बाजि जीभ दरशाइ ॥
मास ग्यारहें जानियो, वाजी सो मरिजाइ ॥ १३ ॥
जाकी रसना माहिमें, हिमिसम विंदुक होइ ॥
एक सालके ऊपरै, नहिं जीवतहै सोइ ॥ १४ ॥
नितप्रतिबाढैश्वास जिहि,पुलकितअंगलखाइ॥
रसना ताको होइ जो, हिमि समान दरशाइ ॥ १५ ॥
षटमहिनाके भीतरै, सो बाजी मरिजाइ ॥
सो श्रीधर वर्णनकियो, शालहोत्र मतपाइ ॥ १६ ॥
दशन वसन अरु ग्रीवमें, गूंथीसी परिजाइ ॥
मूत्रहोइ युत रक्तके, सो बाजी मरिजाइ ॥ १७ ॥
शीतल जल पीवन चहै, शीतल छाहँसुहाय ॥
सबविधि पित्तविकारजो, तासु बदन दरशाय ॥ १८ ॥
सबचेष्टाहैं याहि विधि, श्वेत बताना होय ॥
ए लक्षण नहिं नीकहैं,जियत बाजि नहिं सोय॥ १९ ॥
पीडित बाजी वातसों, स्याह बताना होइ ॥
तीनि मासके ऊपरै,जियत बाजि नहिं सोइ ॥ २० ॥
पीडित बाजी पित्तसों, नेत्र जर्द हैजाय ॥
कष्टसाध्य तिहि जानिये,सतयें मास नशाइ ॥ २१ ॥
जा बाजीके होइ बहु, रंग बताना माहि ॥
घर्घराइ बहु श्वासते, जीवत बाजी नाहि ॥ २२ ॥
एक बताना लाल अति,नील वर्ण यकहोइ ॥
पीत वर्णहै देह सब, अरु सूखीसीजोइ ॥ २३ ॥
एकमासमें मरत सो, जानिलेउ तुम मीत ॥
कैसो अच्छी देइ जो, औषध करिकै प्रीत ॥ २४ ॥
जा बाजीकी देहमें, पित्तदोष अधिकाइ ॥

घर्घराइ गल श्वासते, वर्षाऋतुको पाइ ॥ २५ ॥
पक्षमरेसें अवशिकारि, सो बाजी मरिजाइ ॥
कोटि जतन कोऊ करै, नाहिन तासु उपाइ ॥ २६ ॥
जीभस्याह ह्वैजाइ जिहि, दशन स्याह ह्वैजाहि ॥
और बताने माहिमों, पित्तदोष दर्शाहि ॥ २७ ॥
आठरोजके भीतरै, सो बाजी मरिजाइ ॥
कवि श्रीधर वर्णनकियो, शालहोत्र मत पाइ ॥ २८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत चिकित्साकांडेबाजीप्रकृति वा नाडी-
परीक्षा वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ दूतपरीक्षावर्णनम् ।

रोगीबोलै वैद्यको, दूत गयो जो होइ ॥
करै परीक्षा ताहिकी, वैद्य विचक्षण जोइ ॥ १ ॥
चेष्टा भाषा वेष अरु, पुनि तारागणजानि ॥
बेला तिथि मन देहते, दूत परीक्षा मानि ॥ २ ॥
वैद्यहोइ जा थल विषे, सोऊ लेइ विचारि ॥
सूचक शुभ अरु अशुभके, लक्षण ये निरधारि ॥ ३ ॥
नारि नपुंसक कन्यका, और असुर आमानि ॥
स्यंदन खर आरूढको, किये होइ जो जानि ॥ ४ ॥
वस्त्र इतरहैं पाँडुते, मलिन आइकी होइ ॥
की सो जीरण वस्त्रहै, कीतौ फाटे जोइ ॥ ५ ॥
न्यून अधिक अँगदूतके, उद्धट चित की होइ ॥
विकृत जाके अंगहैं, रूप भयंकर जोइ ॥ ६ ॥
निष्ठुर रूक्ष अमंगलौ, बोलै वाणी आनि ॥
कितौ साथ नर होंइ बहु, निन्दित दूत बखानि ॥ ७ ॥

तिनुका खोटतिहोइकी, की कुछ काटति होइ ॥
कीनासा स्तन विषे, हाथ लगाये सोइ ॥ ८ ॥
सोरठा–रगरति कपरा होइ, नासा कच अरु रोम पर ॥
दूतअमंगल सोइ, कीतौ पोंछै हाथ निज ॥
दोहा–गोपनी फाँसी हाथमें, मीजति कपरा होइ ॥
पहिरे माला अरुणकी, तेल लगाये सोइ ॥ १ ॥
हृदय कपोल लिलाटमें, हाथ लगायेदेषि ॥
हाथधरेकी कानपर, दूत निषिद्ध विशेषि ॥ २ ॥
या कोउफल करमें लिये, चंदनअरुण लिलार॥
वस्तु असारक होइ कर, ऐसो दूत नकार॥ ३ ॥
कर्दमलाये अंगनिज, की कछु फेकति होइ ॥
माटी फोरत हाथसों, विक्रित रूपहि सोइ ॥ ४ ॥
सोरठा–भूमि लिखत सो होइ, हाथ चरणकी आँगुरिन ॥
कीतौ खोंटति सोइ, नखते नखको जानिये ॥
दोहा–चरण दबाये हाथ निज, की कुम्हड़ा लिये हाथ ॥
कीतौ पीडित रोगसों, दूत दोय यक साथ ॥ १ ॥
किये आचरण दुष्ट तनु, विक्रित तनै लखाहि ॥
दीरघ लेइ उसासकी, कीतौ रोवत आहि ॥ २ ॥
कीतौ दक्षिण मुखखड़ो, की करजोरे आनि ॥
एकचरणठाढो विकल, दूत अमंगल खानि ॥ ३ ॥
दंड लिये की हाथमें, शास्त्रहोइकी पानि ॥
मुनिनायक यतने कहे, निंदित दूत बखानि ॥ ४ ॥

अथ वैद्यस्थानवर्णनं ।

दोहा–खपरी पाथर भस्म औ, भूति हाड़ अरु आगि ॥
इनयुत स्थल वैद्य ढिग, आवै दूत अभागि ॥

अथ वैद्य दर्शन ।

चौपय्या छंद–दक्षिणदिशि मुखकीन्हेंहोई। तैल लगाये अशुची सोई
असनीरयुक्त अरु विकल अंग । कछुहोइपियारी वस्तु भंग ॥
देव पितरकृत कर्महोइ । की क्षौरकर्ममें उदित सोइ ॥
स्थान अशुचिसें वैद्य होइ । क्षितिशयन किये पुनि श्रमित सोइ ॥
की क्षौर कराति बरतकसान । भोजन विरचत ये अशुभ जान ॥
उत्पात समय सो प्राप्त होइ । सबकेशछुटे जो वैद्य सोइ ॥

दोहा–वैद्यहोइ या भांतिसों, दूतवैद्यढिगजाइ ॥
रोगी निश्चयकै मरै, नाहिन तासु उपाइ ॥

अथ वेलादूषित वर्णनम् ।

दोहा–तीनोंसंध्या अर्द्धनिशि, दूषित बेला जानि ॥
इनमें आवै दूत जो, होइ अमंगल खानि ॥

अथ तिथिदूषितवर्णन ।

दोहा–रिक्तातिथि षष्ठी सहित, और कही संक्रांति ॥
इनमें आवै दूत जो, नहींरोगकी शांति ॥

अथ नक्षत्रदूषित ।

दोहा–भरणी अश्लेषा बहुरि, मघा आर्द्रा मूल ॥
और पूर्वाकृत्तिका, ये नक्षत्र सम शूल ॥

अथ शुभदूतवर्णन ।

छन्द–रूपश्यामरो सुंदर होई । गौरस्वरूप मनोहर सोई ॥
शुक्लवस्त्र धारे सो आहि । येकहे दूत मुनिवर सराहि ॥

दोहा–दूतहोइ निज गोत्रको कीतौ अपनी जाति ॥
रोगीछूटै रोगसों, वैद्यहोइ यशख्याति ॥ १ ॥
कीतौ पैदर दूतह, कितौ किये गोजान ॥
कितौ होइ कालज्ञसो, कीतौ स्मृतिवान ॥ २ ॥
अलंकार तनमें लसै, सुंदर जाको रूप ॥

ललित वचन मुखते कहै, ऐसो दूत अनूप ॥ ३ ॥

छप्पय–दूत होइ स्वाधीन शास्त्रमें होइ विचक्षण ।
लोकरीतिमें चतुर वचन बोलै शुभ लक्षण ॥
निपुण दूत पुनि होइ अलंकार युत वस्त्र वर ।
लखिय दूत याभांति जानिये सब सिद्धि कर ॥
मुख पूरुब करि बोलै वचन वैद्य होइ अरु स्वस्तिचित ।
यह दूतपरीक्षा मुनिकही सो रोगीको होइ हित ॥

अथ वैद्य दरशन ।

दोहा–पूरुब दिशको मुख किये, बैठ वैद्य या भांति ॥
अस्थल होइ पवित्र पुनि, रोगहोइ सब शांति ॥ १ ॥
श्वेतवसन तांबूल मुख, पंकज करमें होइ ॥
पूर्वदिशास्थित भयो, दूत जानु शुभ सोइ ॥ २ ॥
बोलै गिरा प्रबीन अति, कीतौ वचन रसाल ॥
दूतहोइ या भांति जो, जाइ रोग ततकाल ॥ ३ ॥
फल अक्षत दधि द्रव्य युत, देख्यो वैद्य विचारि ॥
शुभवाणी मुख दूतकी, जाइ रोग सब झारि ॥ ४ ॥

अथ दूतमुख वर्ण परीक्षा ।

दोहा–दूत कहै मुखवर्णते, दूने करौ निशंक ॥
भाग लेहु पुनि तीनिको, जीवै रहै जु अंक ॥

अथ दूतपरीक्षाचक्रम् ।

६	३	२	४	७	६	४	३	१	२०	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	आ	अ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

दोहा–द्वादशरेखा ऊर्द्धकरि, षटरेखा सम जानि ॥
ता ऊपरकी पांतिमें, भरौ अंक ये आनि ॥ १ ॥

अंग रास पुनि पक्ष लिखि, वेद बार रस जानि ॥
युग गुण शशिकर रंध्र कहि, लिखौ अंक ये आनि ॥ २ ॥
अकारादिस्वर दीर्घ लघु, लिखौ दूसरी पांति ॥
कवर्गादि पुनि वर्ग सब, भरो चक्र या भांति ॥ ३ ॥
दूतनामके वर्ण स्वर, ता ऊपर जे अंक ॥
जोरि करौ यकतीर सब, जानिलेहु निरशंक ॥ ४ ॥
रोगीनामहि वर्ण स्वर, वही भाँति गनिलेहु ॥
जुदे जुदे करि दुहुँनको, भाग आठको देहु ॥ ५ ॥
रोगी नामहि अंक बढि, दूत नाम ते होइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, जीवै रोगी सोइ ॥ ६ ॥
रोगीनामहि अंक गनि, दूत नाम जे अंक ॥
ताते सम अरु हीन जो, रोगी मरै निशंक ॥ ७ ॥
दूतपरीक्षा वैद्यकरि, रोगीके गृहजाइ ॥
रोगीछूटै रोगसों, सुयशतासु अधिकाइ ॥ ८ ॥

अथ वैद्यचलैके समयको शकुन ।

दोहा–रीतोंघट आगे मिलै, की आमिष दृगदेषि ॥
विप्रमिलै जो तिलक युत, है शुभ शकुन विशेषि ॥ १ ॥
वेणु वीण अरु दुंदुभी, शंख भेरि सहनाइ ॥
मेघ सिंह गज धेनु कहि, शब्द इते सुखदाइ ॥ २ ॥
निज दाहिन जो लखिपरै, विषमकुरंग सुजान ॥
रोगीछूटै रोगसों, होइ वैद्य यशवान ॥ ३ ॥
चौपाई–मिलै जो आगे कन्या आई । पुत्रसहित युवती दरशाई ॥
फल अरु फूललिये कर सोई । देखिपरै अस पूरुष कोई ॥

अथ अशकुन ।

दोहा–मारग काटै अग्रह्वै, गिरगिटश्वानशृगाल ॥
देखिपरै जो गिद्ध पुनि, अशकुन अहै कराल ॥ १ ॥

सजल कुंभ या पतित कछु, वृक्षपात भुवि होइ ॥
और ज्वलित ग्रह देखिये, अशकुन जानौ सोइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतचिकित्साकांडेदूतपरीक्षाशुभाशुभवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ शिरामोक्षण फस्तखोलना ।

दोहा–प्रथम दवाईको करै, जो नहिं होइ अराम ॥
तबतौ लीजै फस्तको, ताके वरणौं ठाम ॥ १ ॥
सिरा एकहै जीभ तर, सो वह खोली जाइ ॥
दिलमें गरमी होइ जो, सो नीकी ह्वैजाइ ॥ २ ॥
पक्के पाव भरेते, ज्यादा खून नलेइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, ऐसे फस्तहि देइ ॥ ३ ॥

दूजीरग तालूकी ।

चौपाई–तालूकी रग वर्णौं भाई । दांततीरते सीठी ताई ॥
सीठी दोइ छोंडिकै जानौ । तिसरी सीठीकेतर मानौ ॥
नस्तर देइ शिरावहिकेरो । गुणिजनशालहोत्र मत हेरो ॥
ज्वर दीमाग जिगरको खोवै । रुधिर आधसेर पक्का लेवै ॥

तीसरी जगह फस्त लेनेकी विधि ।

चौपाई–ओंठनके भीतरमें देखौ । छाला ऐस परे औरेखौ ॥
तिहितेअश्व घासनहिं खाई । मुँहते पानी गिरतसदाई ॥
तेहिकी दवा यहै करवावै । दोनौंहाथसे ओठ उठावै ॥
ते छालनमें नस्तर लेई । ऊपर नमकचुपरि सो देई ॥
मलिकै नमक धोइफिरि डारै । होइ अराम अश्वनिरधारैं ॥

चौथीरग फस्त लेनेकी विधि ।

दोहा–आँखितरे रग एकहै, ऊपर पूजहिहोइ ॥
दुऔ तरफसो होतिहै, खोलतिहै रगसोइ ॥ १ ॥

गरमी होइ दिमागमें, अरु भौंरी जो होइ ॥
ताही रगको खोलिये, तुरतहि नीको जोइ ॥ २ ॥
लीजै खून छटाँकभरि, ज्यादा ना ह्वैजाइ ॥
कमती होइ तौ दोष नहिं, शालहोत्र मतआइ ॥ ३ ॥

छठीरग फस्त लेनेकी विधि ।

दोहा—नथुननमें रग होइ यक, सो वह खोलीजाइ ॥
जौनी बिधिसों खोलिये,सो अब कहौं उपाइ॥ १ ॥
धूजमालको दीजिये, प्रथमहि नथुना माहि ॥
नथुना पकरै हाथ यक, तामधि देखै ताहि ॥ २ ॥
खूब ध्यानकरि देखिये, जबहीं रग दरशाइ ॥
तामें नस्तर मारिये, शिरामोक्ष ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
जो अति असवारी विषे,हफफति बाजी होइ ॥
ताकी यह रग खोलिये, अती फायदा सोइ ॥ ४ ॥
खून तासुको लीजिये, आधपावपरमान ॥
ज्यादालीन्हें होतहै, अवगुण ताहि सुजान ॥ ५ ॥

अथ सतईरग फस्तलेनेकी विधि ।

दोहा—कानतरे रग एकहै, जहां कनगुदी आहि ॥
दोऊ तरफन होतिहै, ध्यानकिये दरशाहि ॥ १ ॥
खूननिकारै ताहिते, आधसेर यह जानि ॥
ताते निकसत खूनहै, गर्दनको यह मानि ॥ २ ॥
शिरके जितने रोगहैं, औरौ कहौं वखानि ॥
सूजनि गरके भीतरै, तिन्हैं फायदा जानि ॥ ३ ॥
खुश्कीहोइ दिमागमें, और रोग सबजाहि ॥
गर्दनकी सूजनि मिटै, सो जानौ मनमाहि ॥ ४ ॥

अथ अठईरग फस्तखोलनेकी विधि ।

दोहा–गर्दन मारग होतिहै, तरफ दुहुँनमें जानि ॥
फस्तखोलिये ताहिमें, बाजीको सुखदानि ॥ १ ॥
पीडित होइ खारिस्तिते, अरु बर्साती होइ ॥
ताकी यह रग खोलिये,अती फायदा सोइ ॥ २ ॥

नवइरग ।

दोहा–दूनौ सीननपर अहै, एक एक रगजानि ॥
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह मानि ॥ १ ॥
जाके सीनाबंद जो, बहुत दिननते होइ ॥
यह रग खोलै ताहिके, ताको गुणअतिजोइ॥ २ ॥

दशईरग ।

दोहा–दोनों अगिले पाँवमें, होत एक रग आइ ॥
परकी रग सो जानिये, सोऊ खोलीजाइ ॥ १ ॥
सब देहीमो रक्त जो, निकसत तासों जानि ॥
खून निकारै ताहिते, पक्को सेरहि मानि ॥ २ ॥

ग्यारहीं रग ।

दोहा–तंग तरे रग होतिहै, फस्त तहां लै लेइ ॥
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा देइ ॥ १ ॥
होइ बिमारी पीठिमें, औरौ कटिमें जानि ॥
सोवतमें बर्रातिहै, ताहि फाइदा मानि ॥ २ ॥
सपना देखै बहुतसो, औ उठि ठाढो होइ ॥
नींद परति नहिं ताहिको,सोऊ नीको जोइ॥ ३ ॥
याते खून निकारिये, पक्के पाव प्रमान ॥
ज्यादाहोने देइ नहिं,नहिं कमती सकजान ॥ ४ ॥

बारहींरग।

दोहा—पछिले दोऊ पाँइमें, गाँठिन ऊपर जानि॥
तहाँ होति है एक रग, पटरग ताहि बखानि॥ १॥
पछिले धरकोखूनजो, ताते निकसतआहि॥
खूनलीजिये सेरभरि, दोनौं पावन माहि॥ २॥

तेरहींरग।

दोहा—और एक रग होतिहै, चारिउ पायन माहि॥
बँधो सुजम्मा जाति जहँ, तुरी गामचिनमाहि॥ १॥
सो रगहै बारीख अति, जानिलेहु सुखदानि॥
खूननिकारै ताहिते, आधपाव यह जानि॥ २॥
जखमहोइ सुममाहिजो, रोग पेटमें होइ॥
कीगरुहाउट पेटमें, तौरग खोलैसोइ॥ ३॥
फस्तखोलना ताहिको, बहुत मुनासिब जान॥
शालहोत्र मुनिके मते, सो लीजै पहिचान॥ ४॥
पट्टीबाँधै ताहिमें, अति मजबूतहि सोइ॥
वह पट्टी खुलिजाइ जो, तौ न फायदा होइ॥ ५॥
ताते वाजिबहै सबै, पट्टीकी अंदाज॥
कियेरहै मजबूत तेहि, तीनिरोज लगु साज॥ ६॥
जो खुलिजाइ कदाचि वह, जारी होवै रक्त॥
शालहोत्र मत देखिकै, बाँधौ ताको सख्त॥ ७॥
सोरठा—तीनिरोज पश्चात, खोलैपट्टी पाँइकी॥
अश्व निरुज ह्वैजात, यह गति जानौ ताहिकी॥

अन्य रग।

दोहा—बाजीकी थेरी कहैं, अगिले सुममें होइ॥
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा सोइ॥ १॥

नालके भीतर होतहै, नालबंदको काम ॥
कफी वगैरह रोगजे, ते नाशैअभिराम ॥ २ ॥

अन्य रग ।

दोहा—पूँछ माहिं रग होतिहै, जरते आँगुर चारि ॥
तहँपर नस्तर मारिये, सिरामोक्ष निरधारि ॥ १ ॥
पूँछ हाथते पकरिकै, नापै आँगुर चारि ॥
तहँपर नस्तर मारिकै, काढै खून सुधारि ॥ २ ॥
खून निकारै ताहिते, पक्का आधासेर ॥
रसूबंद जो रोगहैं, ताहि फायदा ढेर ॥ ३ ॥

अथ शिरामोक्षणके मुख्यस्थान ।

दोहा—सीनेकी रग जानिये, और गरेकी मानि ॥
तालूकीरग होति जो, अरु नथुनाकी जानि ॥ १ ॥
अगिले पछिले पाँउमें, दोइ रगै जेहोंइ ॥
अंडकोशकी एक रग, अरु छाले मुहँजोइ ॥ २ ॥
आठ रगैं ये मुख्यहैं, सोमैं कहीबखानि ॥
अंडकोशकी होति रग, अंड पिछारी मानि ॥ ३ ॥
अंडकोश सूजैं जबै, की चढिजाँय सुजान ॥
तबै खोलना फस्त यह, बहुत मुनासिब मान ॥ ४ ॥
बाजीको बल जानिकै, और समय पहिचानि ॥
नाड़ीमोक्षण तब करै, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ फस्तलेनेको समय ।

दोहा—सावन आश्विन चैत्र पुनि, इनमहिननकोपाइ ॥
फस्तबाजिके लीजिये, रोग दूरि हैजाइ ॥ १ ॥
होइ महीना और जो, रोग बाजि तनु होइ ॥
बिनाफस्तसो जाइनाहिं, ताकी यहविधि जोइ ॥ २ ॥

गरमी की ऋतुहोइ जो, शरद बखतकोपाइ ॥
नाडीमोक्षणकीजिये, बाजीको सुखदाइ ॥ ३ ॥
वर्षामें जादिन विषे, बादर नाहीं होइ ॥
मोक्षणनाडीको करै, तुरतै नीको जोइ ॥ ४ ॥
जिन महिननमें शरदऋतु, अती शीतदरशाइ॥
धूपहोइ दुपहर विषे, खोली रग तब जाइ ॥ ५ ॥
प्रथमहि हय टहलाइये, गरमकछू जब होइ ॥
तबतौ खोलै फस्तको, तुरतै नीको जोइ ॥ ६ ॥
आश्विनसम कार्त्तिक अहै, चैत्रैसम बैशाख ।
अषाढसावन एक सम, शालहोत्र मतभाख ॥ ७ ॥
कवि श्रीधरचितचाउ करि, शालहोत्र मतजानि ॥
नाड़ीमोक्षण विधि कही, बाजीको सुखदानि ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतचिकित्साकांडे बाजीसिरामोक्षणवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चिकित्सावर्णनम् ।

दोहा–धातुकोपते होतहै, बाजी तनुमे रोग ॥
ताको कहहुँ निदान अब, अरु औषधी प्रयोग ॥ १ ॥
वात पित्त कफ रक्त जो, तिनमें कोपै कोइ ॥
बाजीके तनु माहिमें, रोगसु उत्पति होइ ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तके, दोष लेइ पहिचानि ॥
तबहीं औषधिको करै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
एकधातुको कोप कहुँ, कहूँ दोइको होइ ॥
कोपै धातुहि तीनि कहुँ, कहूँ विषमसब सोइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तपित्तके कोपको निदान वर्णनम् ।

दोहा–खजुरी तनुमेंहोइ कहुँ, अरु धाँसत हय होइ ॥
मुँहतेपानी चलतहै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ १ ॥
शीतल जल अतिही चहै, चाहै शीतल छाँह ॥
बहुभोजन पर मनरहै, शीतल वस्तुहि चाह ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

चौपाई–कुटकी एक टका भरि लीजे । लालि मिठाई तासम कीजै ॥
प्रातहि उठि नित ताहि खवावै । रोग घटै बहु भूँख बढावै ॥
दोहा–कही एक मौताज यह, जानिलेहु मनमाहि ॥
सात दिवस लगु दीजिये, रोग नाश ह्वैजाहि ॥

अथ पित्तकोपते असाध्य लक्षण ।

दोहा–मैलु कढै आँखिन विषे, बारबार हेहनाइ ॥
आँसू आवत जाहिं बहु, लेहु जाहि यहिभाइ ॥ १ ॥
होइ बताना स्याह यक, होइ एक अतिपीत ॥
ताकी औषधि नाहिं करो, जानिलेहु यह मीत ॥ २ ॥

अथ वातरक्तकोप वर्णनम् ।

दोहा–वातरक्तको कोप जब, बाजीके तनु होइ ॥
श्वास चलै अतिजोरसे, दोष वातको सोइ ॥ १ ॥
बारबार बैठै उठै, पौढै पाइ [illegible] बढाइ ॥
अंग मरोरै बार बहु, बार बार जमुहाइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

चौपाई–आधपाव त्रिफलाको लीजै । चीमेंसानि क पिंडी कीजै ॥
सो बाजीको देउ खवाई । सतयेंरोज नीक ह्वैजाई ॥
दोहा–आधपाव मौताज यक, सातरोज लगु देइ ॥
रोगघटै अरु बलबढै, नीको बाजी लेइ ॥ १ ॥

वातरक्तके दोपयें, ये लक्षण दरशाय ॥
काटै अपनी देहको, अति सरोष ह्वैजाइ ॥ २ ॥
एक वताना लाल अति, एक श्वेत दरशाइ ॥
जानौ ताहि असाध्यहै, जियत नहीं सो आइ ॥ ३ ॥

तिसकी दवा ।

चौपाई–मासाभरि अभ्रकरस लेहू । सोरहमासे अदरख देहू ॥
दुवौ मिलैकै देहु खवाई । नीक तीनिदिनमें ह्वै जाई ॥
दोहा–मासाभरि मौताज यक, हयको देहु खवाइ ॥
नीको वाजी होइ सो, चंडी जाहि सहाइ ॥

अथ श्लेष्मारक्तकोपवर्णनम् ।

दोहा–वाजी धाँसै अधोमुख, दाना घास न खाइ ॥
जल्द चलै नहिं राहमें, पावक घाम सुहाइ ॥ १ ॥
जानि परत नहिं ताहिको, चाबुक मारै कोइ ॥
नथुना ते पानी चलै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

दोहा–नाडीमोक्षणकीजिये, अगिले पाँयन माहि ॥
तब औषधको दीजिये, तुरी नीक ह्वैजाहि ॥
चौपाई–चारिटका भरि सोंठि मँगावै । तासम गुड़ लालै मिलवावै ॥
पिंडीदीजै ताहि खवाई । सतयें दिन नीको ह्वैजाई ॥
दोहा–चारिटका मौताज यक, हयको देहु खवाय ॥
यहिविधि कीजै सात दिन, जल्द नीक ह्वैजाइ ॥

अथ पित्तश्लेष्माको कोप ।

दोहा–येई लक्षण होंइ सब, औरौ कछु दरशाइ ॥
खीसै काढ़ै बार वहु, मुँह नीचे लटकाइ ॥

तिसकी दवा ।

चौपाई–यह औषध सब लेहु मँगाई । ताहि बराबरि सौंफ मिलाई॥
पिंडीकरि घोड़ाको दीजे । सात दिवसमें नीको लीजे

अन्य दवा ।

दोहा–सोंठि मिर्च गुड़ पीपरी, मोथा और मिलाइ ॥
जेठीमाई हींग लै, समभागहि तौलाइ ॥ १ ॥
दोइ टकाभारि लेइ सब, पिंडी एक बनाइ ॥
जानौ यह मौताजहै, प्रातहि देहु खवाइ ॥ २ ॥
याविधि दीजै सातदिन, शालहोत्र मत जानि ॥
रोगघटै अरु बल बढ़ै, होइ क्षुधा बहु आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई–सैंधव सोंठि बरोबारि लीजै । कूटि कपरछन ताको कीजै ॥
नासु तासुको बाजिहि दीजै । नीको होइ रोग सब छीजै ॥

अथ वातरक्तको कोप ।

दोहा–डोरा आँखिन माहिके, श्वेत लाल दरशाइ ॥
कोखी दोनौं ताहिकी, नितप्रति फूलति जाइ ॥ १ ॥
एक तीर ठहराइ नाहिं, नितप्रति बाढ़ै श्वास ॥
बारबार हेंहनाइ बहु, ये लक्षण करिखास ॥ २ ॥

तिसकी औषध ।

चौपाई–जीभ माहिं रग देहु खुलाई । ता पीछे घृत देहु खवाई ॥
घृतकी विधि सब आगे कही । टकादोइ मौताजहि लही॥

दोहा–सातदिवस लगु दीजिये, टका दोइ भरिलाइ ॥
रोगघटै अरु बलबढ़ै, क्षुधा बहुत अधिकाइ ॥

अथ वातपित्तको कोप ।

दोहा–लाल बताना एक है, एक श्वेत दरशाइ ॥
मुँहमें खजुरी होइ अरु, नितप्रति घांसति जाइ ॥ १ ॥

दाना घासहि खाइ नहिं, अरु हाँपति बहुआइ ॥
चौंकै बारंबार बहु, सो असाध्य दरशाइ ॥ २ ॥
ताकी औषध नाहिं करै, सही बाजि मरिजाहि ॥
वातपित्तको कोप यह, जानिलेहु मनमाहि ॥ ३ ॥
मुखमें कंडू होइ नहिं, उदर मध्य खजुआइ ॥
येई लक्षण होंइ सब, बाजीके तनुमाइ ॥ ४ ॥
कफको जानौ दोषतौ, सोउ साध्य नाहिं आइ ॥
ताकी औषध यह करै, सही नीक ह्वैजाइ ॥ ५ ॥
गुरच पीपरी हींग अरु, ककरासिंगी आनि ॥
अरु महुरेठी लीजिये, समकरि सबको सानि ॥ ६ ॥
यहि औषधको कीजिये, दोइ टकाभरि लाइ ॥
नउदिन कीजै याहि विधि, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ ७ ॥

अथ कफ पित्त वातरक्त कोप।

दोहा–वात पित्त कफ रक्त जहँ, चारिउ कोपे होइ ॥
सन्निपात तहँ जानिये, बिरले जीवत कोइ ॥ १ ॥
कहूँ अधिकहै धातु यक, दोइ अधिक कहुँ होइ ॥
कोपी धातुइ तीनि कहुँ, जानिलेउ जिय सोइ ॥ २ ॥

अथ रक्तदोष अधिक सन्निपात लक्षण।

दोहा–नेत्र माहिं आँसू चलैं, औ हफफाति हय होइ ॥
आँखीमूँदे सोरहै, चौंक लागि बहु जोइ ॥ १ ॥
बोलत नाहिन जोरसों, दाना घास नखाइ ॥
रक्त अधिक सनिपातके, ये लक्षण दरशाइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा।

दोहा–खून निकारै जीभसों, कीतौ पावन माहि ॥
दीजै दाना घास नहिं, पानी दीजै ताहि ॥ १ ॥

गरमीकी ऋतुहोइ जो, जल शीतल करिदेइ ॥
जाडेकी ऋतु माहिमें, उदक कूपको लेइ ॥ २ ॥
वच अरु कुटकी लीजिये, गाई मूत्र पकाइ ॥
दोइ टकाभरि दीजिये, बाजि नीक ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
औषधि लीजै भाग सम, नवदिनदेहु खवाइ ॥
भूँखबढ़ै अति ताहिको, सन्निपात मिटिजाइ ॥ ४ ॥

अन्य सन्निपात लक्षण ।

दोहा—कान दुऔ ठाढे रहैं, औ अति कांपति होइ ॥
बारबार खाँसति रहै, आँखीमूँदे सोइ ॥ १ ॥
परेरहैं झप्पान अरु, लार बहति अतिहोइ ॥
नाभि निकट सो जानियो, मल ताकेहै सोइ ॥ २ ॥

तिसकी दवा ।

दोहा—जीभ माहिं रग छेदिये, अरु लंघन करवाइ ॥
औषध दीजै ताहिको, रोगनीक ह्वैजाइ ॥ १ ॥
पित्तपापरा गुर्च वच, कुटकी और मँगाइ ॥
इनको कीजै भाग सम, कूपोदक सन खाइ ॥ २ ॥
दुइपल की मौताज यक, साँझ सकारे देइ ॥
नवदिन दीजै याहिविधि, तुरी नीक करिलेइ ॥ ३ ॥
जल दवेकी विधि कही, ताही विधिसे देइ ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, तुरी नीक सो लेइ ॥ ४ ॥

अथ सान्निपातते मंदाग्निहोइ ताकी दवा ।

चौपाई—सन्निपात नीको ह्वैजाई । मंदअग्नि ताके रहिजाई ॥
ताको यह औषध करवावै। ताहि क्षुधा अतिही सरसावै ॥
दोहा—सिरसा केरे फूल जो, बेत लेउ मँगवाइ ॥
दोइ टकाभरि भाँग सम, बाजिहि देउ खवाइ ॥ १ ॥

शाम सबेरे दीजिये, या औषध को लाइ ॥
दीजै ताको सातदिन, भूख बढ़ाति अति जाइ ॥ २ ॥
सान्निपात संक्षेपसों, दीन्हों इहाँ बताइ ॥
लक्षण युत अरु औषधी, कहे अगारी आइ ॥ ३ ॥
धातुकोप वर्णन कियो, शालहोत्र मत देषि ॥
अरु औषध श्रीधर कही, बाजिनको हित पेषि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकविकेशवदासकृतधातुकोपवर्णनो नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ आठौज्वर स्वरूप नाम लक्षण उत्पत्ति वर्णन ।

कुण्डलिया—आठौ ज्वरशिव कोपते प्रगट भये संसार ।
प्रथमाविभत्स त्रिशिराकापिल चौथेभस्मप्रहार॥
चौथे भस्म प्रहार त्रिपद पिंगाक्ष वखानौ ।
लंबोदर भैरौं बखानकै ईसब नाम प्रमानौ ॥
कहि धन्वंतर आत्र और अश्वनी सुखेनै ।
सफल जक्त को नाशकार प्राणनदुख देनै ॥

अथ विभत्सज्वर।देखो चित्र नम्बर १०५.

कवित्त—वैद्यशास्त्रमें विधान लिखे रूप रंग जान,
प्रगटो शिवकोपमान मानिये विश्वासै ॥
रुधिर भीज वसन जाल अतिबल बहु नेत्र लाल,
क्रोधीमहा मुंडमाल सबको मदनासै ॥
देही कृमि अक्ष तीन और अंगहै मलीन,
कज्जलसम अंग वरन नग्नरूप भासै ॥
नाश जक्त करनहार देहमें दुर्गंधधार,
पूषा द्विज नाशकार विभत्सज्वर प्रकाशै ॥

अथ त्रिशिरज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०६.

कवित्त–शंकरजू कोपकीन ज्वरको प्रगट कीन,
आँखीनव चरणतीन कामी बड़ भारीहै ॥
जाँघै साखू वृक्ष मानौ लाली लाली आँखी जानौ,
अतिक्रोधी सो बखानौ तीनि शीश धारी है ॥
रसना कपोल चाटतहै वैद्यशास्त्र भाषतहै,
नीलवरन भासतहै हाथ षट कारीहै ॥
असरूप कीन धारी स्वेदअक्ष अंतकारी,
मुनिवृन्द यों पुकारी ज्वरत्रिशिरनामधारीहै ॥

अथ कपिलज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०७.

कवित्त–गौरीपति लोकनाथ भूतनके वृन्दसाथ,
कोपे करि श्वास साथ या विध उपजायोहै ॥
ताके मुखते अगार गिरतेहैं बार बार,
भाषत अस ग्रंथसार वैद्यन फरमायोहै ॥
कामी बड़ मध्य गात लोचन मद चमचमात,
मेघन सम घुरघुरात वैद्यकमें गायो है ॥
तप्त ताँब तुल्य केश राखत ना हर्ष लेस,
भाषत अस देश देश कपिलज्वर छायोहै ॥

अथ भस्मप्रहारज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर १०८.

कवित्त–गिरिजापति कोपकीन श्वासते प्रगटकीन,
ग्रंथमें विधान कीन ऐसरूप धारीहै ॥
दाढैं विकराल सप्त जीभ लफलफातभस्म,
अस्त्रकर विशाल ताहि देखो भयकारीहै ॥
अट्टहास करिप्रकाश वारबार जृंभतास,
नीलरंग ताहि भास वैद्यकमें गायोहै ॥

तन ताँव बरन बार दाढि मुच्छ मुंडकेर,
नास ज्वर भस्मप्रहार यज्ञ भंग घायोहै॥

अथ त्रिपादज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १०९.

कवित्त–जब सती देह जारी मुनिवृंद यों विचारी,
शिव कोप कीन भारी तब याविधि ज्वर जायो है॥
चरण तीन नयन लाल भारी तनुहै विशाल,
सबके अंग करत ज्वाल दक्षयज्ञ आयोहै॥
दाढी भृगुकी उखारि श्वासलेत बारबार,
ऊर्द्धकान जाहि केर श्यामरूप गायो है॥
है त्रषा अस्त्रधारी रणमध्य नृत्यभारी,
त्रिपाद नामकारी जो वैद्यन सब गायोहै॥

अथ पिंगाक्षज्वर स्वरूप। देखो चित्र नम्बर ११०.

कवित्त–पंच मुखवहैं विशाल काटत जो भर्म जाल,
कीन कोपहै कराल श्वासन ज्वर जायो है॥
क्षीणअंग सूख मांस छोटी छोटी जाँघे जासु,
हैं कठोर बार तासु अग्निबाण धारीहै॥
है वदन बड़ाभारी दूजे भयानककारी,
रसना युगलधारी मुनि वैद्यकमें गायोहै॥
है तृषा बहुत वाके दुइ अक्ष पीत ताके,
पिंगाक्षनाम जाको नरसिंह ऐस धायोहै॥

अथ लंबोदर ज्वर स्वरूप। देखो चित्र नंबर १११.

कवित्त–है गरल कंठधारी संसाररक्षकारी,
तिन कोपकीन भारी तबऐसो ज्वर जायोहै॥
लंब बड़ा पेट जाहि बड़े बड़े कान ताहि,
रक्तवरण नेत्र वाहि वैद्यकमें गायोहै॥

रूपज्वाल रंगभास जम्हुहाइ और श्वास,
ताको बड़ीहै पिआस महाबली आयोहै ॥
लक्षण तिहिहैं असाध्य अंग अंग पीर बाँधि,
लंबोदर नाम कहौं क्रोधितह्वै धायोहै ॥

अथ भैरौंज्वर स्वरूप । देखो चित्र नंबर ११२.

कवित्त—नाम ध्यान शिव प्रवीन दक्षैचह नाशकीन,
श्वासते प्रगटकीन ऐसो ज्वर जायोहै ॥
रूप जैस रंगज्वाल और खोलि शीश बाल,
चमक भौंहकी कराल फाँसी व्याल हाथहै ॥
षटबाग अस्त्र कारी दूजे त्रिशूल धारी,
बलवान बडाभारी देह दूबरी बखान्योहै ॥
अंग सूख मांसनाहिं बड़ाभयकार वाहि,
लक्षणअसाध्य ताहि भैरौंनामराजाकहिगायोहै॥

अथ शांति विधि ।

कुंडलिया—जड़ चेतन पशु जीव जग ज्वर सबको दुखदेत ।
ताकी शांति विधान हित शिव पूजन करु हेत ॥
शिव पूजन करुहेत दूर्व अक्षत गो क्षीरै ।
परछि सकल विधि नीर सहसघटमें अनुसारै ॥
ग्यारह दिन करु यतन सकल देवनके स्वंभू ।
तुरतदेइ बरदान दयाके सागर शंभू ॥

पित्तकफवातज्वर वर्णनं ।

दोहा—पित्त और कफ वातज्वर, हयके उठै विकार ॥
औषध लंघन कहतहौं, शालहोत्र मत सार ॥

अथ पित्तज्वर लक्षण ।

दोहा—अरुणनेत्र धौंकी बजै, टापै पानी हेत ॥
पित्त वक्र सो जानिये, ज्वर निदान कहि देत ॥

सोरठा—लोचन रसना पीत, पीतमूत्र अरु लीदिलखि ॥
झुख तन तातो सीत, पित्तज्वर लक्षण निरखि ॥

दवा ।

चौपाई—नागेश्वर वाँसाको पाता । पाढी गुर्च समान जुखाता ॥
कुटकी हैरैं अरु मधु सानी । याको दिये पित्तकी हानी ॥

पुनः ।

चौपाई—काकजंघ अरु मिश्री लेहू । इलाची और शतावरि देहू ॥
सानि सहत सँग देउ खवाई । पित्तज्वरसो हयको जाई ॥

पुनः ।

चौपाई—मोथा पिपरी लेउ गिलोई । लौंग मिर्च जैफल पिसवाई ॥
अदरख पान सोंठि सम लेहू । सातदिवस यह औषध देहू ॥
नीको होइ व्याधि सब हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

पुनः ।

चौपाई—जौ सेतुआको दाना दीजै । सातदिवस मा नीको लीजै ॥

अथ पित्तसंनिपात लक्षण ।

सोरठा—अरुण पीत चख होय, रातो पीतो मूत्र पुनि ॥
धौंस श्वास सब होय, श्रमित होय जब होय निशि ॥

छंदद्रुपद—गंधारीफल सेर सेर यक मिश्री लीजै ।
गोघृतके सँगदेइ पित्तकी सन्नि हरीजै ॥

पुनः ।

छंदद्रुपद—मिश्री लीजै पावसेर आँबिलीपकि आधी ।
नासुदेइ तिहुँबेर नीर शीतलमें साधी ॥

पुनः ।

छंदद्रुपद—लै पिचमंद शतावरी तौलिकरि धरौ सेर भरि ।
करि दधि संग यकत्र नासु तिहि देइ नाल भरि ॥

पुनः ।

चौपाई–तेजपात नागेश्वर लेहू । बालावंशलोचनै देहू ॥
चंदनरक्त लेउ तालीसा । तीतुल धनियां सोंठी ईसा ॥
दाडिमसार और छड़ जानी । जीराश्वेत इलाची आनी ॥
पावडेढप्रति औषध कही । चौगुन गोघृत लीजै सही ॥
घृतहि संग दीजै पलसाता । शालहोत्र मत जानौ ताता ॥
औषध बनै तुरैको दीजै । पित्तसान्नि नाशै सुख लीजै ॥

अथ पित्तदोष नथुनाते रक्तचलै ।

चौपाई–जो घोड़ाका मूँड़ पिराई । रुधिर चलै नथुनाते आई ॥
पित्तदोष पहिचानौ ताही । औषध कीजै याविधि वाही ॥
औंरा औ खसखस मँगवावै । गऊ क्षीर सँग लेप करावै ॥
माथे लेप करै दिन साता । चेतन चंद कहै अस बाता ॥

पुनः ।

चौपाई--नासुदेइ त्रिफलाको नीरा । जैहै रोग मूँडकी पीरा ॥

पुनः ।

दोहा–जर सिरसई कि आनिकै, गाई दूध बटाय ॥
नासु अश्वको दीजिये, रक्तशूल मिटिजाय ॥

पुनः ।

दोहा–पात चँबेली लीजिये, गोघृत कल्क पचाय ॥
नासु अश्वको दीजिये, मस्तकशूल विहाय ॥ १ ॥
सोघृत मस्तकमें मलै, मलै कनपटी सोय ॥
दवाकरौ ततकालही, शूल दूरि सोहोय ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्तलक्षण ।

दोहा–घर्षकरै कंडू वपुष, चाहै जल अरु छाँह ॥
चरै न तृण सो जानिये, पित्तरक्तहै माँह ॥ १ ॥

यह लक्षण लखि तुरँगको, तुरतै लोहू लेय ॥
होय अरोगी तनु तबै, कुटकी औ गुड़ देय ॥ २ ॥
सोरठा—मिश्रीके सँग क्षीर, पियन अश्वको दीजिये ॥
निर्मलहोइ शरीर, दाहपित्त छूटै तुरत ॥ १ ॥
आधपाव परमान, खुरवारीके बीजलै ॥
अरु कुटकी गुड़सान, दीजै तुरत अरोगिकर॥ २ ॥

अथ पित्तरक्तको असाध्य लक्षण ।

चौपाई—रुधिर लिये पाछे हय देखो । पांडु वर्ण लोचन युग लेखो॥
ताखु मरण निश्चयकरि जाना । शालहोत्रके वचन प्रमाना ॥

अथ पित्तलक्षण वर्णनम् ।

दोहा—बारबार करि लीदिको, गात गिलदिइति होय ॥
लक्षणते पहिचानिये, पित्त जानिये सोय ॥ १ ॥
गोदधि लीजै सेर यक, चीनी शक्कर होय ॥
सालिममिश्री टंक दुइ, उज्वलजीरा सोय ॥ २ ॥
अश्वखानको दीजिये, पित्तदोष जिहि होय ॥
याते जाय विकार सब, जो पहिचानै कोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

छंदपद्धटिका—हय पित्तरक्त बाढै शरीर।खजुआय अंग बहु चहै नीर॥
अति शीतथान सो बाखु लहै । अतिशीतल भक्षण भक्षचहै ॥

दवा ।

छंदपद्धटिका-तहँ रुधिर अंगहय करौहीन।तब कुटकी औ गुड़दे प्रवीन॥
जो होय अंग बाजी निरोग । यह जानौ जनकहि सर्व लोग ॥

असाध्य लक्षण ।

छंद हरिगीतिका—हैहोय लक्षण प्रथमके पुनि पित्त शोणित सो मिलै।
अरु अश्व श्वास विमुञ्चई हेहनाय नैन सिलासिलै॥

अरु रक्त पित्त दिगंत दीसै साध्य लक्षणँह नहीं ।
यह शालहोत्र विचारि भाषत बाजिनहिं जीवै सही॥

पित्तकी दवा ।

चौपाई-श्वेत इलाची मूसरि श्यामा।काकजंघ मधु घृत अभिरामा॥
शक्करश्वेत भाग सम कीजै । पीसि दवा गुडके सँगदीजै ॥
पित्त सकल खातै हरिलेई । उनइस टंक खानको देई ॥

अथ कफज्वर लक्षण वर्णनम् ।

दोहा-तनुतातो व्याकुल श्रवत, नाक सिथिलता नैन ॥
अधर अधर मैलीनजल, यहै कफज्वर अैन ॥

पुनः ।

दोहा-तप्त शरीररु पेटगद, सोथ दृगन पर होय ॥
कफडारै कांपै वदन, घास खाय नहिं सोय ॥

दवा ।

चौपाई-पिपरी सैंधव घीउ मिलाई । वासुदेव घोड़ेको जाई ॥
ता पाछे यह काढा करै । अंगपीर घोड़ेकी हरै ॥

पुनः ।

चौपाई-वावभिरंग अंडजर लावै । सोंठि कचूर गुरच मिलवावै ॥
अष्ट विशेषी काढा देऊ । सातरोज सा नीको लेऊ ॥

पुनः ।

दोहा-भारी माथो होय अति, नेत्र चुवैं वहु नीर ॥
पीरो कफ मुखते झरै, बदन होय तिहि पीर ॥

दवा ।

चौपाई-रेवतचीनी गायक घीऊ । अग्नि मध्य परिपक्क करेऊ ॥
हाथ पाँव घोडेके रगरै । ता पाछे यह औषध करै ॥

पुनः।

चौपाई–सोंठि कटाई वावभिरंगा। पिपरामूल जवाइनि संगा॥
सैंधव सोंचर हींग मिलावै। औषध वजन बराबरि लावै॥
हींग सोहागा खील करावै। मासे चारि वजन मिलवावै॥
टंकतीनि भरि दीजै रोजा। मेटै अंगरोगको खोजा॥

पुनः।

चौपाई–दंतीजर भारंगी आनै। नागरमोथा कुटकी सानै॥
नीबछालि असगँध देउदारा। चीत मिर्च लीजो घुँघुँआरा॥
अष्टविशेषी काढा करै। सहत टंकभरि तामें धरै॥
आठदिना जो दीजौ भाई। सुःखहोय अरु रोग विहाई॥

पुनः।

चौपाई–मिर्चै जीरा सैंधव लोना। चीतरु चाब सोंठिलै तौना॥
वच अतीस अरु पिपरामूला। मधुसों सानि सबै सम तूला॥
वजन तीनि पल की नितदीनो। जो तुरंगहै गुणद प्रवीनो॥
कछुदिन याको सेवन कीजै। नितप्रति ताहि कफज्वर छीजै॥

पुनः।

चौपाई–भौंहनपर जो सोथ दिखावै। नासकटैया केर दिवावै॥
पीरोकफ पानी ढगढारै। तौ यह औषधिको अनुसारै॥
सोंठि सोहागा सोंचर लेहू। मिर्च पीपरी तामें देहू॥
वजन बराबरि सबको कीजै। सातरोज घोडेको दीजै॥

अथ वातज्वर लक्षण।

दोहा–श्रवत बारि मुख अंगजड़, ग्रीव मारि ऐंड़ाय॥
वातज्वर सो जानिये, लक्षण दिये बताय॥

चौपाई–पिपरी सोंठि पीपरामूलै। कूट जवाइनि वच सम तूलै॥
रहसनि लेउ अतीस समानै। सेर सेर कीहै परमानै॥

येक सेर मधुसों लैसानै । वजन कीजिये सुमति प्रमानै ॥
नकुलेश्वर यह रीति बखानी । सो करिहैं वातज्वर हानी ॥

अथ वात सन्निपात लक्षण ।

दोहा—रहै जरीसी जीभ व्रण, कप खेद मुख लार ॥
तप्तअंग सब अश्वको, वातसन्नि कहिसार ॥

दवा ।

दोहा—जौ मसुरीको राँधिकै, तासु कढाहै प्याय ॥
राखै गृह निर्वातमें, सेंकै अग्नि जराय ॥

पुनः ।

चौपाई—पिपरी जीरा पिपरामूल । हींग अतीस बच्चसम तूल ॥
लोन और सोनालीलाव । सेर सेर सब हींग जु पाव ॥
देहु पिंडकारि घृतसों सानी। यहिविधि हयकी जतनविधानी॥
नकुलेश्वर ऐसो उच्चरै । याते वातसन्निको हरै ॥

पुनः ।

चौपाई—चीत पीपरी मोथा गुरची । एरवरजर कुटकी औ मिरची॥
पावतीनिलै घृतिमो सानी । याते वात सन्निकी हानी ॥

पुनः ।

चौपाई—सोंचर हींग सैंधव जीरा । सोंठि पीपरी मिर्चै धीरा ॥
प्रतिप्रति तीसटंक लै आवै । लहसुनलै पल वीस मिलावै ॥
तुरतैसो कटुतेल मँगावै । सब औषध त्रयपाव कुटावै ॥
कपरछान करि तामें सानी । दीन्हेंवातसन्निकी हानी ॥

पुनः ।

दोहा—गजपीपरि पीपरि तगर, सोंठि कूट मंजीठ ॥
पिपरामूरि कचूर लै, देवदारु करु डीठ ॥ १ ॥

तीनि पाव यह सबैले, दीजै घृतसों सानि ॥
होय अश्वको देतही, वातसन्यकी हानि ॥ २ ॥

पुनः ।

चौपाई—सोथा कुरच इंद्रायनि लीजै । गोल कटैया सामिल कीजै ॥
दोहा—भाग बराबरि पीडिया, बाँधौ आटा सानि ॥
वात जाइ अरु बलकरै, घोडे देउ विधानि ॥

पुनः ।

सोरठा—लेहु राजिका जीर, चीता दधिसँग पीसिकै ॥
निर्मलकरै शरीर, अतीसार विषवातरस ॥

अथ वातसन्निपात ।

दोहा—मुखते जो पानी झरै, गंधिकरै बहु सोय ॥
हयको पग तरवा जरै, ज्वर संताप सुहोय ॥
चौपाई—केलाजरको नीर मँगावै । गूलरकी छालीलै आवै ॥
लेउ बहेरा तुचको खारा । तौलसेर दुइ करु निरधारा ॥
सब यकत्र करि दीजै तुरंगा । मुखकी गंधि हरै ज्वर भंगा ॥

अथ दूसरा वातज्वर लक्षण वा दवा ।

दोहा—चरत रहै हय घास जो, परैं ददोरा गात ॥
नकुल कहैं लक्षण निरखि, ताहि कहै ज्वरवात ॥
चौपाई—वच औ बीज पलाश मँगावै । छालि पलाश कुरैया लावै ॥
रंड सहींजन जरकी छाली । अँवरवेलि अरु सुंडी घाली ॥
सब समभाग टंक दश लीजै । ताको काढ़ा जलमें कीजै ॥
पानी तौल सेर दुइ देई । प्रातदिये हय नीको लेई ॥

अथ वात श्लेष्मज्वर लक्षण ।

दोहा—तानै तनु आलस भरो, खाँसै बारंबार ॥
वात श्लेष्मज्वर सुई, तासु करौ उपचार ॥

चौपाई–पोहकरमूल पीपरामूला । भारंगी पिपरी सम तूला ॥
रेगनि औ औरूसो लेहू । मधुसँग सकल सेर नित देहू ॥

अथ वातरक्तलक्षणम् ।

दोहा–मैथुन पर बहु मन करै, विना तुरंगिनि देषि ॥
माँसहोय हढ़ कोखिकर, वातरक्त सुविशेषि ॥ १ ॥
श्वास सरस जो जानिये, वातरक्तको कोप ॥
रुधिर ताहिको लीजिये, होय रोगको लोप ॥ २ ॥
नीबपात यक पाव घृत, सेरनीर महँ औटि ॥
लोहचन डारि खवाइये, देइरोगको लौटि ॥ ३ ॥

याहीमें असाध्यलक्षण ।

दोहा–नैन युगल मेचक बरन, श्वासकंडु अति तुंड ॥
तुरँगजाय यमसंदनको, जो उपचारक झुंड ॥

अथ वातसन्निपातज्वर ।

चौपाई–तप्त शरीर अश्वको होई । हींसै टापै चौंकै सोई ॥
श्वासप्रचण्ड चलै तिहि अंगा । सन्निदोष ज्वर ताके संगा ॥
बाउभिरँग घुघुवारी पोस्ता । जरअंडा कूढ़ेकी निस्ता ॥
अष्टविशेषी काढ़ा करै । वातसन्निज्वरको तब हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–गुल्म अंग जों वाके परै । ता पाछे यह औषधकरै ॥
सौंठि पीपरामूरि मँगावै । सहतखंड गुड संग मिलावै ॥
वजन बराबरि घोड़े देहू । गुल्म व्याधि ताके हरि लेहू ॥

अन्य ।

चौपाई–वही वातज्वरकी अनुसारै । सन्निपातज्वर औषधिकारै ॥
सोवा पालक लेउ अजीरा । सक्कर सहत औ किसिमिसि छीरा ॥
वजन बराबरि सबको लेहू । गऊदूधमें घोड़े देहू ॥
नाशैरोग व्याधि बहिजाई । जो घोड़ेको करो उपाई ॥

अथ वातरक्त लक्षण ।

छंद-वातरक्त अश्वके सो मानिये सबै प्रमान ।
श्वासदीर्घ छोड़ई सो जानिये सबै निदान ॥
बारबार पौढ़िजाय जानुको पसारि देइ ।
अंगअंग कोरि कोरि मोरि मोरि जंभुलेइ ॥
दोहा-ता बाजीको कहतिहौं, वरणिचिकित्सा चारु ॥
पहिले दै त्रिफलादिको, सैंधव करौ प्रचारु ॥
सोरठा-रक्तवातको दोष, ता वाजीके जानिये ॥
छूटै सुतनु सरोष, लालश्वेतदृग अंत इमि ॥
दोहा-ए सब लक्षण मैं कहौं, सो असाध्य हय जान ॥
मारो अम्बरदीजिये, वर्णत सुकवि निधान ॥
छन्दउपेन्द्रवज्रा-शरीरै सो जाके कफै पित्त बाढै ।
अद्धोंमुखी वाजि चालि सोक गाढ़ै ॥
नखातै अहारै चलैनाहिं नीके ।
चाहैं चमकि अति सो अश्वजीके ॥

अथ असाध्य वातरक्तलक्षण ।

चौपाई-लक्षण एक असाध्यक जानौ।हय दृग अंतुविन्दु युत मानौ॥
उदरमध्य कष्ट अतिहोई । सो षटमास जियै नहिंकोई ॥

दवा ।

छंदमालिनी-गुर्च सहित सोंठि पीपरी हींग मानौ ।
पुनि महुरेठी ककराशृंगी सो जानौ ॥
सब सम गहि लावौ भागकै तीनि देई ।
कफ रुधिर विकारौ होतिहैं दूरि तेई ॥

छंद हरिगीतिका--कफ वात पित्त त्रिदोष मिलिकै होतहै यक संगही ।
तहँ रक्तकोप करै तबै हय होतहै वातंगही ॥
अति चलत आँसू नैनते इमिघासको धकलागही ।
नहिं खुलत लोचन मंदभूखअनंदपाकरि पावही ॥

सोरठा–बोलै अति गंभीर, औ त्रिदोष प्रथमै कहे ॥
जानि लेउ मतिधीर, सन्निपातको रूप यह ॥

दवा ।

छंदमालिनी–रुधिर तुरत हीनो करै अंग माही ।
अशन कुछ नदीजै वाजिरोग जाही ॥
जिमि जिमि क्रमहीसों रोगही हानि होई ।
इमिइमि लघुदीजै भोजनै वाहि सोई ॥

दोहा–वात पित्त कफ दोष लखि, जैसे जो अधिकाय ॥
ऊपर शीतल मीसिरी, दीजै छानि पिआय ॥ १ ॥
कैसो बाजी दोष युत, होय वहुतकी थोर ॥
विनजल कबहुँ न राखिये, कहत ग्रंथ शिरमौर ॥ २ ॥

दवा ।

छंदचामर–मूत्रले मिलाय साथ कुटकीसों लाइये ।
पीसिकै वचै समेत अश्वको खवाइये ॥
सन्निपात नाशहोइ शालिहोत्र भाषही ।
भूंखहोय रोगजाय अंग अंग राखही ॥

चिकित्सा ।

छंदचर्चरी–छिरकासो कंदहि आदिदै त्रिफला सों दूनौ लीजिये ।
पुनि चारु चीतो डारिकै तिगुनो तहाँ करि दीजिये ॥
सब पीसिकै करि भाग तीनौं एक एक खवाइये ।
तहँ मन्दअग्नि मिटाय हयके सकल दोष नशाइये ॥

अथ श्लेष्माकमलज्वर लक्षण ।

दोहा—जलप्रवाह बह नासिका, ग्रुद्ध धीर दरशाय ॥
सोश्लेष्मा कमलज्वर, याहीं यतन विहाय ॥
चौपाई—देवदारु अरु केरा कंदा । धनियां और विलारूकंदा ॥
लैवकचंड यकत्र करावै । कूटि छानि घोड़े मुखनावै ॥
नीकहोइ तनु बहु सुखपाई । श्लेष्मा कोपज्वर जाई ॥

अथ शेषज्वर लक्षण ।

दोहा—अहि कैसी रसना कढै, पूँछ हनै हगनीर ॥
जलपैठे मुख कृमिपरैं, बहुदौरैं ज्वर पीर ॥
चौपाई—वेलके गूदक हड्डा लीजै । सेंवरमूल कटैया दीजै ॥
मूसरिकंद मिलै करु काढा । शेषज्वर जैहै बहु वाढा ॥

अथ कालज्वर लक्षण ।

दोहा—जासु तुरँगके वदनमें, फुटकापरि दरशात ॥
कालज्वर पहिचानिये, शालहोत्र विख्यात ॥ १ ॥
कछुक वेर जलमें सुमति, कीजै जलमें ठाढ ॥
यहिते कालज्वर नशै, कछुदिन करि मतिदाढ़॥ २ ॥

अथ रक्तश्लेष्मालक्षण ।

दोहा—चरै न तृण नासाश्रवै, खाँसै मुख अधराखि ॥
मनमलीन आतप चहै, श्लेष्मारक्त तिहिभाषि॥ १ ॥
शोणित लीजै ताहिको, दीजै हरैं सोंठि ॥
होय अरोगी अश्व जो, रुजकी करै अनेठि ॥ २ ॥

अथ याहीमें असाध्य लक्षण ।

चौपाई—खजुली उदर नैन रँग लाला । वीचमासषट तिहिको काला॥
मिश्री सैंधव सोंठि मँगावे । दश दश टंक सकल पिसवावै ॥
जलके साथ नासुदे रचै । ईश दयालु होय तौ बचै ॥

अथ सन्निपातप्राणहर ।

दोहा—सूजै अगिलापाँव जिहि, रक्त वर्णहै गात ॥
कंप अधिक तनु प्राणहर, सन्निपात सरसात ॥
चौपाई—सोंठि पीपरी मिरचै गोली। सौंफ जवाइनि समकरि तौली ॥
जलके साथ तुरैको देई । सन्निपातको नाश करेई ॥

अथ सान्निपात दूसरो ।

दोहा—अवशिचलै चौंकत तुरय, सूजै आगिल पाउ ॥
सन्निपात यह दूसरो, ताकी जतन बनाउ ॥
चौपाई—अजवाइनि अजमोद मँगावै । कुटकी सौंफ हींग मिलवावै ॥
लहसुनगोली मिर्च भरंगी । पित्तपापरा सरसौं रंगी ॥
कटसरइयाजर अंक मँगावै । रहसनि सब सम भाग पिसावै ॥
गोघृत संग देइ जो तुरँगै । होय अराम करै रुज भंगै ॥

पुनः ।

चौपाई—कुटकी मिर्च पीपरी जेती । अमिलतास सोंठी जोलेती ॥
दारुहरद मोथा मँगवावै । टंकपचीस सहत मिलवावै ॥
सकल दवा समभाग पिसावै । पिंड बनाय अश्वमुख नावै ॥

अथ रक्तसन्निलक्षण ।

दोहा—आलस निद्रा डारि श्रुति, कंप श्वास मुखलार ॥
सन्निरक्त बहुवेग जहँ, चरै न नेक अहार ॥
चौपाई—लोहू काढि उपास करावै । औटिनीर तब तुरै पियावै ॥
आँविलवेत सरवन अरु बेलै । तीनौंमिलै तुरै मुखमेलै ॥

सर्वज्वरको काढा ।

चौपाई—धनियाँ कुलफा बेला फूल । ऐलामेड़ीलै सम तूल ॥
सूखी लकरी नीवि मगाई । सबका काढा देउ चढाई ॥
अष्ट विशेषी काढा देई । सर्वज्वरको नाश करेई ॥

अथ दशमूलतैल सन्निपातज्वराधिकारे ।

दोहा–बेलछालि त्रयपावलै, सौना पड़री आनि ॥
खंभारी गुखुरा बड़ा, सरवन पिथवन जानि ॥ १ ॥
वनभाटा रनि लीजिये, यह दशमूल कि छालि ॥
तीनि तीनि पौवा वजन, कुचिलि कराही घालि ॥ २ ॥
तीससेर जलमें अवटि, चतुर्थांश करिलेहि ॥
सेरचारि तिलतेलको, यहिविधि सिद्धिकरेहि ॥ ३ ॥
पाव मजीठ जो भाग सम, लोध हरदि त्रिफलानि ॥
तज मोथाबाला सुगंध, वच तोला श्रुतिजानि ॥ ४ ॥
सब यकत्र करि पीसिले, देउ तेलमें डारि ॥
पचिजावै तब छानिकै, भरु भाजनमें धारि ॥ ५ ॥

अन्यमत ज्वराचिकित्सा ।

दोहा–तपहै चारिप्रकारका, सफरावी यक जानि ॥
शालहोत्र मुनि यों कहो, कफते दूसरि मानि ॥ १ ॥
रक्त दोषते तीसरो, चौथी बादी जानि ॥
औषधिअरु पहिचानिजो, सो अब कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ तप सफरावीलक्षण ।

दोहा–मध्यदिवस अधरातको, होत आइ तप जौन ॥
शीशझुकाये अरु रहै, सफरावी हय तौन ॥ १ ॥
जरदी मायल आँखिमों, सुरखी ताके होइ ॥
गर्मदेह अरु होति है, सफरावी तप सोइ ॥ २ ॥
धौंकी जाकी श्वासमें, पानीपै अतिचाह ॥
भोजन शीतल अतिचहै, शीतलछाँह उमाह ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–छालि केवरेकी सहित, जरकेलाकी लाइ ॥
धनियाँ औरौ कासनी, औरा छालि मँगाइ ॥ १ ॥

चारिचारि तोला सबै, औषधि लेहु पिसाइ ॥
पाँचसेर पानी विषे, तिनको देहु मिलाइ ॥ २ ॥
पानीकी मौताज यह, सो पक्की करिमान ॥
शालहोत्र मत देखिकै बरणीतौन सुजान ॥ ३ ॥
ताहि चुरावै अग्निपर, दोइ सेर रहिजाइ ॥
ठाढो करिकै ताहिको, हयको देहु पिआइ ॥ ४ ॥
तंगतरे अरु जीभमें, कीतौ तालू माहि ॥
फस्त लीजिये ताहिके, रोगनाशहोजाहि ॥ ५ ॥

अन्यदवा ।

दोहा–तोला एक मँगाइये, तौन सहतरा आनि ॥
ताते दूनी लीजिये, मेहदी पात सुजानि ॥ १ ॥
यवके आटा माहिमें, दोऊ पीसि मिलाइ ॥
पिंडी कीजै ताहिकी, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्यदवा ।

दोहा–मोथा पीपरि गुरचलै, मिर्च लौंग मँगवाइ ॥
अदरख जयफरु सोंठि पुनि, लीजै पान मिलाइ ॥ १ ॥
औषध तोले चारि सब, लीजै भाग समान ॥
सातदिवस लगुदीजिये नितप्रति हय परमान ॥ २ ॥
गरमीके दिन होंइ जो, यातौ गरममिजाज ॥
प्रथमै जो औषधि कही, सो दीजै सुखसाज ॥ ३ ॥

अथ बलगमीत१ लक्षण ।

दोहा–जाके होय कनार अरु, देह गर्म ह्वैजाय ॥
काँपै जाको बदन पुनि, ऐसी गति दरशाय ॥ १ ॥
रंग आँखिको सुरखयों, मिलो सफेदी सोइ ॥
भारी माथो अरु रहै, नेत्र चुवत जल होइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—सोंठि कूठ पीपरि सहित, पिपरामूरि मँगाइ ॥
अजवाइनि अजमोद अरु, मिरच स्याह मिलवाइ ॥ १ ॥
दुइ२ तोले औषधी, सबको लेहु पिसाय ॥
चारिसेर जल माहिकरि, लीजै तिन्हैं पकाइ ॥ २ ॥
जल आधो रहिजाय जब, लीजै ताहि उतारि ॥
बाँसपोर यक लीजिये, ताके मुखहि सुधारि ॥ ३ ॥
बाँसपोरमें ताहि भरि, आधा देइ पिआइ ॥
आधादीजै साँझको, औषधविधि यह आइ ॥ ४ ॥
रेजिसि जारी होइ जब, शालहोत्र मत जानि ॥
दीजै ताको नास तब, सो अब कहौं बखानि ॥ ५ ॥
बीजकटैया आनिकै, और कैफरा जानि ॥
वजन बरोबरि जानिये, पीसै कपरा छानि ॥ ६ ॥
रंडाकी चोंगलि विषे, भरै दवाई सोइ ॥
नथुनामें फूँकै सुई, तुरी नीक तब होइ ॥ ७ ॥
सोंठि कटैया लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥
जलमें घोरै ताहिको, पावएक गुड़ आनि ॥ ८ ॥
गर्म कीजिये अग्निपर, दीजै ताहि पिआइ ॥
याविधि दीजै तीनिदिन, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ९ ॥
पीपरि पिपरामूरिलै, सोचर सैंधव आनि ॥
हींग कटैया सोंठिलै, वाइभरंगी जानि ॥ १० ॥
लेहु कटैया भूँजिसो, सब काँटा जरि जाँइ ॥
टका तीनिभरि तौलिकरि, सबै इलाजै लाइ ॥ ११ ॥
हींग सोहागा लीजिये, मासे आठहि जानि ॥
और औषधी जो रहीं वजन बरोबरि आनि ॥ १२ ॥

सातदिवस यह औषधी, घोड़े दीजे रोज ॥
ताके अंगहि रोग जो, रहै नेक नहिं खोज ॥ १२ ॥

अन्यदवा ।

सोरठा–दंती जरको आनि, और भरंगी लीजिये ॥
नागरमोथा जानि, नीबछालि कुटकीसहित ॥
दोहा–देवदारु चीतो मिरच, असगँध औ घुघुवारि ॥
टंकटंक सब औषधी, भाग बरोबरि धारि ॥ १ ॥
सेरचारि जलमाहि करि, लीजै ताहि चुराइ ॥
अठयों हीसा जब रहै, लेहु ताहि सेरवाइ ॥ २ ॥
टंक एक भरि ताहिमें, दीजे सहत मिलाइ ॥
नितप्रति करि यह औषधी, घोडेहि देहु पिआइ ॥ ३ ॥
औषध दीजै सातदिन, रोग नीक ह्वै जाइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर दियो बताइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तते तपहोइ ताको लक्षण ।

दोहा–रंग बतानेको सुरुख, स्याही सायलहोइ ॥
दुहूँ कानके मध्यमें, गरम बहुतहै सोइ ॥ १ ॥
शिरडारे हय रहतसो, रक्तज्वरके माहि ॥
शालहोत्र मुनिके मते, लक्षण कहे सुआहि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–तारू नथुना जीभते, फस्त लीजियें ताहि ॥
तापाछे औषध करै, शालहोत्र मत याहि ॥

अन्य ।

दोहा–धनियाँ हर्र बहेर कहि, और सहतरा जानि ॥
दो दो तोले औषधी, दीजै हयको आनि ॥ १ ॥
घास हरी वहि दीजिये, दानादीजै नाहि ॥
देखि वताना आँखिको, औषध दीजै ताहि ॥ २ ॥

गरमी शरदी होइ जो, लीजै ताहि विचारि ॥
औषध दीजै ताहिको, मौसिमको निरधारि ॥ ३ ॥
अश्वमिजाजहि जानिकै, ता अनुसारहि जोय ॥
औषध दीजै ताहिको, वाजी नीको होय ॥ ४ ॥

अथ वादीतपलक्षण ।

दोहा–दर्दहोतिहै पेटमें, फूलि पेट जो जानि ॥
तनु प्रस्वेद अति ताहिके, रोज अधिक अधिकानि ॥ १ ॥
रातिब पावत होइ जो, मोटोहोइ शरीर ॥
होत ताहिको आनिकै, वादी तपकी पीर ॥ २ ॥
होइ विकार सुगिरि परै, फिरि उठि ठाढ़ो होइ ॥
बारबार गति ताहि यों, लेहु तुरीकी जोइ ॥ ३ ॥
रंग वतानेको सुरुख, स्याही लीन्हें होइ ॥
वातापित्तके दोष ते, यह तप हयके सोइ ॥ ४ ॥
औषध कीजै जल्दअति, जियत वाजितौ आइ ॥
देरहोइ औषध विषे, तुरी तबै मरिजाइ ॥ ५ ॥

ताको धूरा ।

दोहा–औंराफलको पीसिकै, तासम खैरु मिलाइ ॥
धूरा कीजै देह सब, सूखि पसीना जाइ ॥ १ ॥
घोड़ेकेरे पेटमें, गांठि परतिहै तौन ॥
हुकना कीये खुलै सो, जानिलेहु बुधिभौन ॥ २ ॥

तरकीब हुकनाकी ।

दोहा–चाऊबाँस मँगाइकै, पोड एक कटवाइ ॥
दोनौं तरफन ताहिको, कलम सदृश करवाइ ॥ १ ॥
नोकहोइ तामें नहीं, सो जानौ बुधिवान ॥
नाहींतौ गड़िजाइहै, अश्वगुदामेंच्वान ॥ २ ॥

तेललगावै गुदामें, डारै लीदि कढाइ ॥
सोंठि पीसि जल तेलमें, पोटरी लेइ बनाइ ॥ ३ ॥
घोडेकेरी गुदामें, पोटरी देइ धराइ ॥
फूँकि देइ फिरि ताहिको, गाँठिपरी खुलि जाइ ॥ ४ ॥
जबलगु होइ अराम नहिं, हुकना कीन्हें जाहि ॥
गरम दवा अति अश्व को, दीजै कबहूँ नाहि ॥ ५ ॥
फस्त खोलिये ताहिकी, तारू नथुना माहि ॥
उठिके ठाढो होइ जव, औ अराम दरशाहि ॥ ६ ॥
औषध दीजै ताहिको, लेहु क्षुधाकर जोइ ॥
दुइदिन दाना देइ नहिं, तुरी नीक सो होइ ॥ ७ ॥
देखि वताना ताहिको, औषध दीजै तात ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, तुरी नीक है जात ॥ ८ ॥

अथ श्लेष्माज्वर लक्षण ।

दोहा–तप्त होतिहै देह सब, आँवासे हगलाल ॥
कंपतहै सब देह अरु, होत अहै यह हाल ॥ १ ॥
कफ मुखते बहुते झरै, विकल वाजि अतिहोइ ॥
सफरा बलगम योगते, यह तप हयतनु होइ ॥ २ ॥

ताकी औषध ।

दोहा–पीपरि सैंधव घीवलै, समकारि लेउ मिलाइ ॥
नासु दीजिये अश्वको, रोग कमी ह्वैजाइ ॥

दवा खानेकी ।

सोरठा–वाइभरंग मँगाइ, सोंठि मिरच अरु रंड जर ।
तेलकचूर मिलाइ, औषध दीजै भाग सम ॥
दोहा–टकाटका भरि सबदवा, लेहुताहि बुधिवान ॥
एक खुराक दवा कही, सो लीजौ मनमान ॥ १ ॥

चारिसेर जलमध्यधरि, औषध लेउ पकाइ ॥
अष्ट विशेषी जब रहै, हयको देउ पिआइ ॥ २ ॥

अथ सर्व तपकी दवा ।

चौपाई–सोंठि चिरैता दोनौं लीजै । तोले आठ वजन तिहि कीजै ॥
येला तोला दुइ भरिलेहू । वाइभरंग तोलाभरि देहू ॥
नीब बुरादा तोला चारी । तासम कुलफाबीज सुडारी ॥
पाँच सेर जलमध्य पकावे । अठवोंहीसा जब रहि जावै ॥
दोहा–शीतल कीजे ताहि फिरि, औषध लेहु मिलाइ ॥
छानौ कपरा मध्यकारि, हयको देहु पिआइ ॥

अथ अन्य तप लक्षण ।

दोहा–मुखमें आवै वासुबहु, कान गरम ह्वै जाइ ॥
गुलफी ताकी देहमें होति सहीते आइ ॥

ताकी दवा ।

चौपाई–रंडाकी जर लेहु मँगाई । तासम खसखस देहु मिलाई ॥
अरु झिकवारिक बकला लीजै। जामुनि छालि तासुमें दीजै ॥
दोहा–वजन बराबरि औषधी, चारिटकाभरि जानि ॥
दोइसेर जलमाहि करि, ताहि चुरावै आनि ॥ १ ॥
सेर येक रहिजाइ जब, हयको देहु पिआइ ॥
याविधि दीजै तीनिदिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ त्रिदोष ज्वर सन्निपातलक्षण ।

दोहा–चौंकै हींसै टापई, तप्तदेह अतिहोइ ॥
श्वासचलै अतिजोरसे, सन्निपातज्वर सोइ ॥

ताकी दवा ।

दोहा–मोथा अरु अंजीरलै, पालकि मिश्री लाइ ॥
दुइदुइ तोला औषधी, गाई दूध मिलाइ ॥ १ ॥

सर्वदवनते चौगुनो, लीजै दूध मिलाइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, औषध देइ खवाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै पाँच दिन, रोग सकल मिटि जाइ ॥
केशव वरणो चाउ करि, शालहोत्र मत पाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लीजै बाइभिरंग अरु, पोस्ता युत झिकवार ॥
जोगिया रंड कि जर सहित, जलमें ताको डार ॥ १ ॥
पांचसेर जलमाहि करि, लीजै ताहि पकाइ ॥
अठओं हींसा जब रहै, हयको देहु पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–गुल्म तासुकी देहमें, जो कदाचि परिजाइ ॥
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥
सोंठि पीपरी मूढ़लै, गुड़के साथ मिलाइ ॥
खांड़ सहतसों सानिकै, हयको देहु खवाइ ॥ २ ॥
टकाटका भरि औषधी, सबैलेइ तौलाइ ॥
सन्निपातके लक्षणौ, प्रथमै [illegible] सुनाइ ॥ ३ ॥
वात पित्त कफ पित्तते, ज्वरकी [illegible]पाति होय ॥
कफरु वातते होइ नाहिं, जानिलेहु यह सोय ॥ ४ ॥

अथ ज्वरके पीछे पेशाब बंदहो या और तरहते बंदहो ताको लक्षण ॥

दोहा–बंदहोत पेशाब जब, तब यहगति दरशाइ ॥
लोटैपाँइ पसारिकै, फेरि खड़ा होजाइ ॥ १ ॥
कियोचहै पेशाबको, अरु पेशाब न होइ ॥
जानौ बंद पेशाबहै, ये लक्षण सबकोइ ॥ २ ॥

ताकी दवा ।

दोहा–दुइ तोलेभरि सोंठि लै, तीनि बतासा लाइ ॥
नींबूके रस माहिं करि, गोली एक बनाइ ॥ १ ॥

प्रथम तुरीकी गुदामें, रेड़ी तेल लगाइ ॥
फिरि गोली भीतर करै, अश्वनीक होजाइ ॥ २ ॥

अन्य।

चौपाई–मडुईकेर पिसानु मँगावे। तासम तामें सोंठि मिलावै ॥
दोहा–जलमें घोरै ताहिको, लीजै ताहि पकाइ ॥
वाजी पोतन माहिमें, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥
माजूफल औ सोंठिको, जलमें लेइ पिसाइ ॥
बाती एक बनाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥
प्रथमै पोतनके उपर, लेपदेइ करवाइ ॥
फिरि पेशाबके छेदमें, बातीदेइ धराइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–जो पेशाब खुलै नहीं, तौ हुकना करिदेइ ॥
ऊपर हुकना विधि कही, सोई विधि करि लेइ ॥

अन्य।

दोहा--पीपरि सोंठि पिसाइ कै, लेपै बाती माहि ॥
बाजीकेरे लिंगमें, बाती देहु धराहि ॥

अन्य।

दोहा–स्याह मिरच सोंचरु सहित, जलमें लेहु मिलाइ ॥
हयके दोनौं कानमें, दीजै ताहि डराइ ॥

अन्य।

दोहा–ककरी बीज पिसाइकै, मूरीलेहु कुटाइ ॥
अरु आँबिलीको मीसिकै, जलमें लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
डेढ़पाव ये औषधी, जलमें लेहु छनाइ ॥
नारि मध्यकरि ताहि कों, हयको देहु पिआय ॥ २ ॥

अन्य विधि ।

चौपाई–जो यतनी सब दवाकराहीं । खुलै पेशाब अश्वकी नाहीं ॥
तो घोड़ेको देउ गिराई । हाथ पाँइ सब उपर कराई ॥
आँगुर चारि नाभिके आगे । सीना तरफ लोहमे दागे ॥
पारा चारि यहि तर+हकीजे । तुरतै अश्वनीक सो लीजे ॥

अन्यविधि ।

दोहा–सबविधि औषध करिचुकै,अरु पेशाब नहिंहोइ ॥
जाते होइ पेशाब अब, कहत अहौं विधिसोइ ॥ १ ॥
गांठिनलौं जलमध्य सो, ठाढा कीजे ताहि ॥
एक घरी परमानमों, मूत्र तासु खुलिजाहि ॥ २ ॥

अथ मस्तकशूल लक्षण ।

दोहा–ज्वरमें और कनारमें, शिरमें पीड़ाहोइ ॥
ताकी औषध कहतहौं,शालहोत्र मतजोइ ॥ १ ॥
ज्वरके पाछे जाहिके, शिरमें पीड़ाहोइ ॥
रुधिर चलतहै नाकते, शिरमें पीड़ासोइ ॥ २ ॥

ताकी दवा ।

दोहा–औंरा औ खसखस विषै, कोकाफूल मिलाइ ॥
शिरपर सो लेपन करौ, तुरत दर्द मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला जलमें मीसिकै, लीजे ताको छानि ॥
नासु तासुको दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

और लक्षण शिरदर्दको ।

दोहा–मनमारे जो हयरहै, भौंहनहोइ असासु ॥
सूखिजात कफ ताहिको,औषधकीजै आसु ॥

अथ दवा ।

चौपाई—गोलिनदार कटैया लावै । ताको हयको नासु दिवावै ॥

दवा खानेकी ।

चौपाई—नासु दियेते जब कफ झरई । ताको तब यह औषध करई ॥
सोंठि मिरच पीपरिको लावै । तामै सोंचरलोनु मिलावै ॥

दोहा—और सोहागा डारिये, वजन बराबरि जानि ॥
दीजै दोपल औषधी, होइरोगकी हानि ॥

अन्य विधि शिरदर्दकी ।

सोरठा—शिरमेंहोइ अमासु, गर्दन डारे हयरहै ॥
दीजै ताको नासु, सहित कटाई तिर्कुटा ॥

औषध खानेकी ।

दोहा—कुटकी बायभिरंग अरु, पिपरामूरि मँगाइ ॥
सोंठि कूचूर सोहागा, वजन बरोबरि लाइ ॥ १ ॥
सबै औषधी दोइपल, भूँजै आटामाहि ॥
याविधि दीजै तीनिदिन, व्याधिदूरि ह्वैजाहि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्र० ज्वराधिकारवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ शूलनिदान चिकित्सावर्णनम् ।

दोहा—शूलहरन औषध कहौं, अलंकार पहिंचान ॥
याविधिसों जो देखिये, तैसो रोग निदान ॥

अथ मूत्रशूल । देखो घोड़ा नंबर ११३.

दोहा—भौंरी आवै अश्वको, पुहुमी लेइ सुगंध ॥
दोनौं पाँजर मारई, मूत्रशूल तिहि बंध ॥

दवा ।

दोहा—सैंधव पैसा चारि भरि, महुआ गुठुलू तेलु ॥
पावसेर तिहि दीजिये, रोगदूरि पर हेलु ॥

अन्य ।

दोहा–पाँचटकाभरि लीजिये, गजपीपरि अभिराम ॥
ताही सम मधु डारिये, संकटमोचन नाम ॥
सोरठा–लीजै सेर सवाय, तेल मेलिये तिलनको ॥
औषधदेउ खवाइ,तुरँग नीक ततकालही ॥

अन्य ।

चौपाई–जोघोड़ा छिन छिन तनिआवै । बंद पेशाब वहुत दुखपावै॥
मिर्चा अरुण नारजे घालै । करै पेशाव लहै सुखजालै ॥
की सोराकीबत्तीमेलै । तुर्त पेशावै हयकी खोलै ॥
दोहा–की पीसै कालीमिरच, बाती तासु बनाय ॥
लिंगमाँह घालौ सुघर, तुर्त पेशाब कराय ॥
चौपाई–झिकवारीको पात मँगावै । इंद्रजवा इंद्रारुनि लावै ॥
लै कंकोल मिर्च सम तूला । औटौ कूप तोय सुखमूला ॥
सातादिवस इमि हयको देवै । करै पेशाब बहुत सुखलेवै ॥
दोहा–पूँछ कि डंडी उलटिकै, गरम नीर कर भेइ ॥
करिहै तुर्त पेशाबको, बाजि परमसुख लेइ ॥

अन्य ।

चौपाई–घोडीके पिशाब थलमाही ।एक बतासा धरिये ताही ।।
बेरिपात मुख कूचिक धरिहै। घोडी तुर्त पेशाब सु करिहै ॥

अन्य ।

चौपाई–की साबुन पट भिजै लपेटै । बातीकरै रोगको मेटै ॥

अन्य ।

चौपाई–आधसेरकै तेल मँगावै । नासुदेइ तबहूँ सुखपावै ॥

अन्य।

चौपाई–जुआँ दोय इक कै श्रुतिडारै। करै पेशाब बहुत सुख सारै ॥

अन्य ।

चौपाई–जो याते नाहिंनीक दिखावै । तो राईको लेप बनावै ॥
लेपकरै अंडनके ऊपर । तुर्तं अश्व उदरको दुखहर ॥

अन्य ।

चौपाई–की दुइ लोटा पानी लावै । धार गुदाढिग ऊपर नावै ॥

अन्य ।

चौपाई–सीठी दीजै मुखते बनिकै । करै पेशाब उदरको तनिकै ॥

अन्य ।

दोहा–सोंठि बैतरा कूटिकै, गोली बनै सुजान ॥
तुरत अश्वको दीजिये, करै पेशाब निदान ॥ १ ॥
याहीमें जो डारिये, हर्रा तोला चारि ॥
तोला हींग फुलाइकै, दीजै तुरै विचारि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–तप्त उदक सिरकामिलै, विरिआ चौभारि लेहु ॥
करै पेशाब रु लीदिको, औषधकोफलयेहु ॥

अथ मूत्रवर्त्तक शूल । देखो घोड़ा नंबर ११४.

चौपाई–वमन रंग हरदीके करै । मुखतेलार अधिक गिरिपरै ॥
शीतल बदन हलावै शीशा । मूत्रशूलवर्त्तक अवनीशा ॥
सैंधवपीसि नैनमें डारै । मिरचन सहित नास अनुसारै ॥
टहलावै अरु कोखीमलै । औषधखान देइ तब खुलै ॥

अन्य ।

चौपाई–जर स्वाती गूगुर सम लीजै । पीसि दूधमों घोड़े दीजै ॥
नीकहोइ जो औषध करै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अथ लीदिबंद शूल । देखो घोड़ा नंबर ११५.

चौपाई–लीदिबंद घोड़ेकी जानौ । एकछटाँक तमाखू आनौ ॥
ताको लै मुख चीरि खवावै । लीदिकरै अतिही सुख पावै ॥

अन्य ।

चौपाई—दुइपैसाभरि सोंठि मँगावै । गुड़ पुरान तिहि दून मिलावै ॥
तोला एक भाँगको लीजै । मिलै खवाय कायजा कीजै ॥
जबलौं लीदि करै नहिं घोरा । तबलौं राखुकायजा जोरा॥
यह रंगीउस्ताद बखानै । याविधि हयकी जतन विधानै ॥

अन्य ।

चौपाई—सेर सवाय क्षीर महिषीको । आधसेर गुड़ लीजैनीको ॥
पावसेर घृत तामेंकीजै । अग्निपकाय नालिमें दीजै ॥
वाही समय लीदिको करिहै । सकल विकार पेटकी हरिहै ॥

अथ वायशूल । देखो घोड़ा नंबर ११६ । ११७.

दोहा—गिरै धरणि बहु दमकरै, नेत्रमूँदि रहिजाय ॥
वायशूल ताको कहैं, वाको करौ उपाय ॥
चौपाई-जो हय लोटि बगल निज झाँकै। छिनछिन काँखिकाँखिकैताकै
दोहा—यामें लक्षण जो सवै, अरु थोरेही पाय ॥
वायशूल तिहि जानिये, तुर्तं करौ उपाय ॥
चौपाई—खुरासानि बच कूट मँगावै । दंति छालि अरु सैंधव लावै ॥
हींग सोहागा समकरि लेहू । पषाणभेदलै तामें देहू ॥
सकल पीसि मैदा सो कीजै । माखन सानि अश्वको दीजै ॥
देतै सो नीको ह्वै जाई । वायशूलको नाश कराई ॥

अन्य ।

चौपाई—साँभरि औ सैंधव लैआवै । पलासवीज अजमोद मँगावै ॥
पाँच पाँच तोले सब लीजै । लहसुन दुइ तोला करि दीजै ॥
आधपाव गुड़ लेउ पुराना । दो तोला भरि हींग विधाना ॥
चारि चारि तोले करवावै । चनाके आटा संग खवावै ॥

दोहा–दूनौ पहर खवाइये, शाम सुवह बुधिवान ॥
वायशूल सब मेटिहै, मुनिके वचन प्रमान ॥

अन्य।

चौपाई–अरुण मिर्च दो तोले लीजे। पैसाभरि लहसुन करि दीजे ॥
पीसि कूटि घोड़े मुख नावै। बायशूलको खोजनशावै ॥

अन्य।

चौपाई–हाथीको यक लेंड जु लीजे। पीपर छालि तासु सम कीजै
ताहि पीसि पतरो करि छानै। अग्निचढ़ाय पकाय सुजानै॥
लेइ उतारि सुशीतल करै। नारीभे प्यावै दुखहरै ॥

अथ दुम मिरोरशूल। देखो घोडा नंबर ११८.

चौपाई–दुम मिरोरि घोड़ा लोटै सहि। खायो डाभ अटक अतरीकहि॥
सेरएक जो दूध मँगावै। ताको आधा घृत लैआवै॥
मिलै पिआय अश्वको दीजै। याते शूल हरै जो कीजै॥

अथ वायुभक्ष शूल। देखो घोड़ा नंबर ११९.

दोहा–जो घोड़ेको देखिये, फूलो उदर सेवाय ॥
पटकि पटकि लोटै धरणि, ताको जतन बताय ॥

चौपाई–हवाखात भूलो तिहि जानै। ताकी दवा तुरतही आनै ॥
तालूमें गुड़ देइ लगाई। ताते रोग नीक हो जाई ॥
गलिहै गुड़ तब बदन डुलावै। तब वहि हवा खान सुधिआवै

अन्य।

चौपाई–मासे पाँच सोहागा भूँजै। पावसेर जलमें तिहि दीजै ॥
बहुत गोज करिहै ताहीदिन। होइहै रोग दूरि ताहीछिन ॥

अन्य।

चौपाई–अँगुठा सरिस नीबिकी लकरी। छोटीलै दीजै मुख डुकरी॥
पहर एक दै ठाढ़ो राखै। मुख डुलाइ हय सुखको चाखै ॥

अथ अतावरिशूल । देखो घोडा नबर १२०.

चौपाई-लोटै अश्वअधिक बिनकारण।उठि फिरि गिरि लोटै दुखभारण
तौ तिहि अंडकोश झुकिदेखै । जो सूजनि कठोर अवरेखै॥
तौ परदा ओदर ठहराई । परदाफूटि अतरि बढ़िआई ॥
ताको तुरत आखता कीजै । अतरी प्रथम उदर भरिलीजै

अथ जीमार शूल । देखो घोडा नंबर १२१.

चौपाई-बैठे उठै अतिहि बेकारै । अतरी लेंडी अड़ी विचारै ॥
बकरीको कल्ला मँगवावै । चारोपाँव सहित पकवावै ॥
सुरुवाँ गाढ पकै दश सेरै । ताहि पिआइ करौ मति देरै ॥
की सुजान करमें घृत लीजै । गुदा हाथ डारै तिहि दीजै ॥
लेंडीटोय काढ़ि तिहि डारै । अश्वाका दुख सकल नेवारै ॥
ता हयको दीजै नहिं दानो । है जीमार शूल पहिचानो ॥
की कचूर यक पाव मँगावै । ताको कपरछान करवावै ॥
जबलौं साफ लीदि नहिं देषै । तबलोंही खवाय सुखरेषै ॥

अथ कुलिंज शूल । देखो घोड़ा नंबर १२२.

चौपाई-अठयों मर्ज कुलिंज कहै है । पोता उतरत चढत लखै है ॥
आधसेर घृत पय दुइसेरै । मोठ पिसान पाव भरि घोरै ॥
साँझ सबेरे हयको दीजै । पेट न चलैतौ नितही कीजै ॥
जो याते नहिं होवे नीको । चारौतरफ दागि करि ठीको ॥
लखिनेजेके आगे दागै । निरखि हथेली मित सुखपागै ॥

अथ वक्रशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२३.

चौपाई-बैठै उठै नाभिको टोवै । थोबरी दैकारि महिमें सोवै ॥
ताको वक्रशूल अनुमानै । सोंचर अर्कफूल दै भानै ॥
दोहा-स्याहमिर्च अंजीर फल, कारीजीर मँगाय ॥
दीजौ हयको तुरतही, आठौ शूल नशाय ॥

अथ मूर्त्तिवंतशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२४.

दोहा—आगे पगधरि भूमि महि, गिरै तुरँग दुखपाय ॥
मूर्त्तिवंतसो शूलहै, ताको जतन बताय ॥
चौपाई—गजपीपरि औ पीपरि लावै । दशदशटंक दुवौ पिसवावै ॥
पानी एकसेरमें दीजै । मूर्त्तिशूलको नाश करीजै ॥

अथ अस्तावर्त्तशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२५.

दोहा—ताकै छिन छिन कुक्ष हय, शोकग्रसो लखिजानु ॥
नकुल कहैं तिहि शूलको, अस्तावर्त्त वखानु ॥
चौपाई—महुली औ गँगेरुवा आनै । सातसातटंकै परमानै ॥
पलाश बीज नौटंकमँगावै । सोंठि टंक चारिक लै आवै ॥
दोहा—हींग टंक लै तीनिसो, कपरछान करवाय ॥
गोघृत सेर मिलायकै, नारी मध्य पिआय ॥

अथ वातशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२६.

दोहा—बैठै उठै तुरंग जो, रहै कराहत देखि ॥
वातशूल वाको कहै, ताहि जतन अवरेखि ॥

अन्य ।

दोहा—भूमि गिरै औ दमकरै, फिरि फिरि उठै मरोरि ॥
यह निदान दूजी तरह, लक्षण देखि वहोरि ॥
चौपाई—कूट पषाणभेद लैआवै । दतुनि वृक्षसहमूलमँगावै ॥
सैंधवआधसेरसोलीजै । काँजी ताहिबराबरि कीजै ॥
सकल पीसि घोड़ेको दीजै।सातरोजमेंनीको लीजै॥

अन्य ।

दोहा—त्रिकुटा हींग रु कैफरा, खाँड बराबरि लेउ ।
गंधीमासे चारि सो, मादिराके सँग देउ ।

सोरठा—करवावै परहेज, दाना पानी वातसों ॥
औषधहै यह तेज, गात देखिके दीजिये ॥

अन्य।

दोहा—पीपरि सोंठी रेणुका, बड़ीइलाची जानु ॥
वजन बराबरि दीजियो, ले मंदिरामें सानु ॥

अन्य।

दोहा—जो घोड़ा काँपै इफै, होंइ बताने लाल ॥
ताको दीजे नासु यह, रोग बहै ततकाल ॥
चौपाई—गोघृतको लैके निरदोषा। वेलापिसाय नासुदे पोषा ॥

अन्यमत।

दोहा—दुम झहरावै अंगतनि, जो हय बारंबार ॥
वातशूल ताको कहैं, कीजे यह उपचार ॥
चौपाई—लेउ बिजौराकेरि चनूरी। हींग पलास बीज यकठौरी ॥
देउ कचूर डारि तिहि माहीं। सकल दवा सम पीसौ ताही॥
गुड़ घृत साथ तुरँगको दीजे। वातशूल तुरते हरि लीजे ॥

अथ शुद्धवातशूल। देखो घोड़ा नम्बर १२७.

दोहा—पूँछ चलावै अंगतनि, यही परीक्षा देषि ॥
शुद्धवात तिहि नामहै, कहौं नकुल मतपेषि ॥
चौपाई—गुरघुल लेउ समूल मँगाई। गऊदूधसँगदेउ पिआई ॥
षोड़शदिन जो दवा खवावै। शुद्धवात नीको हो जावै ॥

अथ कंठवातशूल। देखो घोडा नंबर १२८.

दोहा—जो हयको मुख बोलिये, घेरैं घुररि घरेरि ॥
झूँकखाय कै गिरिपरै, चहूँओर भयहेरि ॥
चौपाई—चकचूनीकी जरको लीजे। गोपयसों नित प्राते दीजे ॥
वासर पाँच सात तिहि देई। रोग दोष सगरो हरिलेई ॥

अथ सिपिवातशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२९.

चौपाई–कारूरा जो जरद कराई । नीर न पियै जोर घटि जाई ॥
सिपीवातहै शूल निदाना । औषधकीजै चतुर सुजाना ॥
हरदी राई गुड़ सम लीजै । छिरकाके सँग हयको दीजै ॥
साँझ सकारे दोनौंबेरा । नीको होइ सु रुज तिहि केरा ॥

अथ अपरशूल । देखो घोड़ा नम्बर१३०.

दोहा–रदसों भूमिहि धरि तड़फि, फिरै रदन सुहालि ॥
थोबरी महिमें धरि रहै, शूल दुखित मन घालि ॥

चौपाई–गोघृतमें गंधी मिलवाई । अश्व अंग मर्दन करु भाई ॥
जबलगु तुरँग नीक नहिं होई।तबलगु अंग मलौ पुनि सोई ॥

अथ कृमिशूल । देखो घोड़ा नम्बर १३१.

दोहा–नैन बहैं काटै उदर, छिनछिन बहु अकुलाय ॥
सो कृमिशूल विचारिये, ताकी जतन कराय ॥

चौपाई–सोंठि कूट पिपरी मँगवावे । पलाश बीज मिरचे मिलवावै ॥
सकल पीसि सम भाग मिलावै। गुड़के साथ अश्वमुख नावै॥
आठरोजतक घोड़े दीजै । कृमीशूलको नाशकरीजै ॥

अन्यमत ।

दोहा–चरण गूँथि राखै धरणि, गिरै शोक करि घोर ॥
सो कृमिशूल कहावई, करै जतन यहि तौर ॥

चौपाई–इगुआकी जर हींग मँगावै । पलाशछालि भारंगी लावै ॥
अरु अजवाइनि देउ मिलाई । सर्व दवा समभाग पिसाई ॥
गुड़के साथ अश्वको दीजै । रोगजाइ जो औषध कीजै ॥

अन्यमत ।

दोहा–नेत्र चुअैं विविजाहिके, औ काँपै निजदेह ॥
पेटकटै औ भुँइपरैं, ताहि अलक्षणयेह ॥

चौपाई–डेढ़पाव त्रिकुटा मँगवावै । आधपाव वच ताहि मिलावै ॥
वीजपलाश पावअध लीजै । कूटिछानि मैदा धरिदीजै ॥
एक छटाँक प्रात नितदेहू । सातरोजमें नीको लेहू ॥

अथ सर्वकृमिशूल । देखो घोडा नंबर. १३२.

दोहा–काटि उदर अरु जीभको, धरिराखै रद माहि ॥
कहो सर्व कृमिशूलको, वैठो रहै सुचाहि ॥

चौपाई–रहसनिकी जर खोदि मँगावै । खुरासानि वचको लैआवै ॥
अजवाइनि पलाशके वीजा । छोटीकंटकारिजर लीजा ॥
सर्वदवा सम भाग पिसावै । गुड़के साथ अश्वमुख नावै ॥
तोला तीनि प्रमाण खवावै । पंद्रहदिनलौं नकुल बतावै ॥

अथ समवर्त्तशूल । देखो घोडा नंबर १३३.

दोहा–लोटै बहु चारौ चरण, राखै हृदय लगाय ॥
[illegible]र्त्तक शूलहै, जतन कियेते जाय ॥

चौपाई–सैंधव लहसुन हींग मँगावै । अजमोदा सम भाग पिसावै ॥
गुड़ गोतक्र मिलैके दीजै । समवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ वैवर्त्तशूल । देखो घोड़ा नंबर १३४.

दोहा–तानै देह तुरंग जो, बैठै उठै कराहि ॥
सो वैवर्त्तकशूलहै, जतन करै इमि चाहि ॥

चौपाई–कपरा लेउ पुरान मँगाई । वाकीभस्म करो मनलाई ॥
हींग मिलै पानीमें घोरै । घोड़ा पिये शूलको हरै ॥

अथ विभ्रमशूल । देखो घोड़ा नंबर १३५.

दोहा–भूंखजाइ अरु लटै बहु, चितवै चारौ ओर ॥
चलै मंद अकडोरहै, विभ्रमशूलै जोर ॥

चौपाई–दानाखाय न जलते नेहा । नितप्रति दूबरि होवै देहा ॥
टापै भ्रमै औ गिरि गिरि परै । ताकी औषध याविधि करै ॥

दवा।

चौपाई–प्रथम बदाम एकते देई। दशते आगे कम करिलेई॥

अन्य।

चौपाई–बहुरि मसाला याविधि करै। तामें रोग अश्वको हरै॥
हरदी राई गुड़ सम लेहू। कूटि छानि छिरका सँगदेहू॥
तप्तनीर पीवैको दीजै। सात दिवसमो नीको लीजै॥

अन्य।

चौपाई–हरदी हींग हर्र वैशाषी। सोंठि सोहागा खील सुभाषी॥
वजन बराबरि पीसो भाई। हींग सोहागा थोरा लाई॥
भूंखबढ़ै भ्रमशूलै नाशै। बल औ बीरज बहुत प्रकाशै॥

अन्य।

चौपाई–आधसेर विषखपरा लीजै। प्रातकाल घोड़ेको दीजै॥

अन्य।

चौपाई–मर्दन पाँयनमें कछु दीजै। विभ्रमशूल तुरत हरि लीजै॥
साँभरि हरदी औ अजवायन। तिलको तेल मिलै मलु पायन॥

अन्य।

चौपाई–घृत अरु तेलको मर्दन कीजै। याहूसों विभ्रम हरिलीजै॥

अन्य।

चौपाई–हर्रा हरदी सोंठि मँगावै। गुड़पुरान सम मिलै पिसावै॥
घोड़ाको नित प्रातैदीजै। सातरोजमो नीको लीजै॥

अथ सनदशूल। देखो घोड़ा नंबर १३६.

दोहा–धरणी गिरै तुरंग जो, सोवै चरण पसारि॥
वासुलेइ निज पेटकी, सनदशूल निरधारि॥ १॥
हींग अधेला एक भरि, लहसुनलै ढक दोय॥
सैंधव दमरी आठभरि, सेर मिठाई होय॥ २॥

गोदधि संग पिसायकै, औषधदेउ खवाय ॥
सातरोजतक दीजिये, सनदशूल मिटिजाय ॥ ३ ॥

अथ विंवशूल । देखो घोड़ा नंबर १३७.

दोहा–उठिबैठै बहु शीघ्रही, बहुत भाँति अलसाय ॥
विंवशूलहै नाम तिहि, तुरतै करौ उपाय ॥ १ ॥
हींग अधेला एक भरि, बच औ बाइभरंग ॥
भस्मकरा कै दीजिये, पानीकेरे संग ॥ २ ॥

अथ झलद शूल । देखो घोड़ा नंबर १३८.

दोहा–मुँहसे करै अवाज वहु, धरणीमो गिरिजाय ॥
झलदशूलहै नाम तिंहि, तुरतै करौ उपाय ॥
चौपाई–लटजीराके बीज मँगावै । पिपरी सैंधवआनि पिसावै ॥
पैसापैसा भरि सब लीजै । महुआ तेल आधसेरदीजै ॥
एकरोजकी यह मौताजा । करो तीनिदिन शूल सो भाजा ॥

अथ गजशूल । देखो घोड़ा नंबर १३९.

दोहा–रगरै नाभी तुरँग जो, भुँइलोटै भुँइजाय ॥
सोवै चरण पसारिकै, सो गजशूल कहाय ॥
चौपाई–वच औ कूट दुवौ पिसवावै । तातेजलके संग पियावै ॥
सातपाँच दिन दीजो भाई । सो गजशूल दूरि हो जाई ॥

अथ राकसशूल । देखो घोड़ा नम्बर १४०.

दोहा–उदरपीर जाके हवै, उठि गिरि पल छिन माहि ॥
हींसै टापै दृग अरुण, औषधकरौ सु ताहि ॥
चौपाई–पाकी अँबिलीको रसलेहू । सैंधवतेलु तिलनको देहू ॥
सिरसाको रस तासम करौ । एकतकरि नारीमें भरौ ॥
तीनिरोज घोड़ेको दीजै । हृष्टपुष्टतिहिनीको लीजै ॥

अथ शीलप्रवर्तीशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४१.

दोहा–सूखी छाती जो गिरै, अश्वधरणि बहुबार॥
शीलप्रवर्ती शूलहै, ताको यह उपचार॥
चौपाई–हींग सोंठि सैंधवसम लेहू। छिरका सानि दहीमों देहू॥
तातो नीर शूललखिदीजै। यह विचारनीको सुनि लीजै॥
लंघन करौ हानि नहिं होई। दाना ताहि न दीजै कोई॥

अथ श्रवंतशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४२.

दोहा–छींकै धाँसै बहुत जो, बदन मलीनो होय॥
शूलश्रवंत सु जानिये,महाकाठिन रुज सोय॥
चौपाई–स्याह मिरच महुरेठी लावै अरु पलाशके बीज मँगावै॥
अजवाइनिले दूनौ भाई। सकलदवा सम पीसौ जाई॥
पावसेर गोदूध मँगावै। हींग लेउ मखतूल बतावै॥
साँझ सकारे दीजै कोई। जायश्रवंतक शूल सु खोई॥

अथ क्षुधाव्रतशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४३.

दोहा--बैठे उठि लोटै बहुरि, मुखबोलै अकुलाय॥
घास नखावै अश्व सो, शूलक्षुधाव्रत आय॥
चौपाई–छालीमकरा और पलासा। बीजकरंज हींग बहुबासा॥
सैंधव समकारि देउ खवाई। उदरशूलको नाशकराई॥

अथ खंडशूल। देखो घोड़ा नंबर १४४.

दोहा–पेटफूलि काँपै अधिक, अरु गिरिपरै जुधाय॥
खंडशूलहै नाम तिहिं, दैवयोगते जाय॥ १॥
चारिउ पाँयन जाँघमें, पछना देइ दिवाय॥
यह उपाय: प्रथमै करै, पाछे औषध खाय॥ २॥
चौपाई–पाँचटंक हरैं लैआवै। बायभरंग बराबरि लावैं॥
पैसाभरि ले बीजपवाँरा। रोवनसीर अजवायनि डारा॥

निंबुकागजीकोरसु लावै। सकलपीसि औषध सनवावै ॥
चौदहदिन घोडेको दीजे। खंडशूल तुरतै हरिलीजै ॥

अथ सपंतशूल। देखो घोड़ा नंबर १४५.

दोहा–निशि वासर महि परिरहै, बोलै उदर बेहोस ॥
श्वासअधिकमुखतेचलै, तिहि यमलोक निवास ॥
चौपाई–केला मूलटंक दश लेऊ। पाँचटका केतकि जर देऊ ॥
सेंवरछाली अँवरा आनी। बीसटका दोऊ परमानी ॥
छा पैसाभरि भीतिको पारा। गोपय लीजैतिहि सम भारा ॥
थोरी आँच अग्निकी देवै। यहिविधिऔटि पागकरिलेवै ॥
मिश्री मेलि जो हयको देहू। शूलसपंत तुरत हरिलेहू ॥

अथ वातोदरशूल। देखो घोड़ा नंबर१४६.

दोहा–बैठि बैठि पुनि पुनि उठै, रहै चरणको तानि ॥
छिनमें करै कराहको, सो वातोदर जानि ॥
चौपाई–खुरासानि अजवायनि लावै। तामें बचको आनि मिलावै ॥
कुटकी कुरथी लीजै सोवा। सकलपीसिसम करैसमोवा ॥
टंक टंक दुइ प्रात खवावै। सातरोजमें नीको पावै ॥

अथ प्रवर्तीशूल। देखो घोड़ा नंबर १४७.

दोहा–हींसै टापै झुकै अति, बोलै बारंबार ॥
शूलप्रवर्ती जानिये,ताको यह उपचार ॥
चौपाई–वाउभिरंग हींग सम लेहू। नमदाराख जारि सम देहू ॥
बच औ सोंठि सोहागा लीजै। रेहूपानीमें सब दीजै ॥
नीको होय व्याधि बहिजाई। जो याविधिसों करै उपाई ॥

T।

दोहा–हींग अधेला एकभरि, लहसुनलै ढक दोय ॥
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाईहोय ॥ १ ॥

दधिगाईके साथही, पीसौ औषध सोय ॥
सातरोज लगु दीजिये, तुरँग अरामै होय ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—हींग अधेला एक भरि, बच औ वाउभरंग ॥
भस्मकरायक दीजिये, सीरे जलके संग ॥

अन्य।

चौपाई—तिलको तेल पाव यक आनी। ताहि बराबरि गोघृत जानी॥
घासेंबाँधिक देउ खवाई। तुरतै शूल नीक होजाई ॥

अन्य।

चौपाई—सोंठि रु हालिम एक पिसाई। गोघृतसंगै गूट बँधाई ॥
पहर सकारे देउ खवाई। खातै रोग नीक ह्वैजाई ॥

अथ मृगशूल।

दोहा—चहूँ ओर चितवत रहै, दाना घास नखाइ ॥
मृगेशूल सो जानियो, औरौ बल घटिजाइ ॥ १ ॥
खील सोहागा लीजिये, पैसाभरि मँगवाइ ॥
तासम लीजै हींगको, सोऊ खील कराइ ॥ २ ॥
सोंठि हर्र हरदी सहित, टकाटका भरिलाइ ॥
सबको लेउ मिलाइ करि, हयको देहु खवाय ॥ ३ ॥

अथ मुद्रितशूल।

दोहा—घूमति वाजी होइ जो, दमति वहुत पुनि सोइ ॥
सूँघै भूको बार बहु, मुद्रित कहिये सोइ ॥ १ ॥
सोंठि लीजिये दोइ पल, महुआतेल मिलाइ ॥
शूलव्याधि नाशैतुरत, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

कवर्त्तशूल।

दोहा—घरघराय बोलै तुरँग, गिरि गिरि परै नहोस ॥
साकवर्त्त सो शूलहै, करौ उपाय नरेस ॥

चौपाई–छेवटाकै जर सोंठि मिलाई । समकरि कपरछान पिसवाई ॥
दूध मिलाय अश्वको दीजै । साकवर्त्त शूलै हरिलीजै ॥

अथ सुखवर्त्तशूल ।

दोहा–बहु दाना खावै तुरँग, रहै पिआसो जौन ॥
पीतलार मुख स्वेद तनु, सुखवर्त्तकहै तौन ॥
चौपाई–सेहुडाकी जर सोंठि मँगावै । पिपरी तीनौं सम पिसवावै ॥
गोपय संग मिलायक दीजै । सुखवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ गलतरही शूल ।

दोहा–उदर जु ऐंठोई करै, तानै देह तुरंग ॥
गलतरही सो शूल गनि, यह औषध करि ढंग ॥
चौपाई–जीन पुरानेको लैआवै । ताको फूँकि भस्म करवावै ॥
पलाशवीज अरु हींग मँगावै । दानाको पानी धरवावै ॥
दवापीसि तिहि पानी घोरै । गेरह दिन खावै दुखहरै ॥

अथ सनदरतशूल ।

दोहा–श्वासलेय बहु अश्व जो, लोटि धरणि मों जाइ ॥
पाँजर मारै पीरसों, तिहि सनदरत कहाय ॥
चौपाई–अजवाइनि औ मुंडी आनै । पैसापैसा भरि परमानै ॥
पैसा पित्तपापरा डारी । कसेरुवा इक पाव निहारी ॥
गोघृत सेर मिलावै एका । तामें गुटिका करौ विवेका ॥
औषध घोड़े देउ खवाई । रामप्रताप नीक ह्वैजाई ॥

अथ टाटशूल ।

दोहा–झूलि पेट गिरि गिरि परै, रह पेशाव जो बंद ॥
टाटशूल ताको कहैं, यह औषध सुखकंद ॥
चौपाई–गदहपुरैना दंतीकी जर । पलाशछालि तिलतेल मिलैकर ॥
पीसि कूटि घोड़ाको दीजै । टाटशूलको नाश करीजै ॥

अथ पानिशूल ।

दोहा—जल पिआय दौराइये, जो हयको असवार ॥
पानिशूल तिहि ऊपजै, ताको यह उपचार ॥ १ ॥
पानीपियै जु धाइकै, जो दौरावै घोर ॥
पानिशूलतिहि ऊपजै, सो अति कीन्हेंजोर ॥ २ ॥
चौपाई—पीपरि सोंठि हींगको लीजै । सैंधवलोन भाग सम कीजै ॥
तीनिरोज घोड़ा जो पावै । पानिशूलको खोज नशावै ॥

अन्य ।

चौपाई—सोंठि मिर्च गजपीपरि लावै । सैंधव सोंचर लोन मँगावै ॥
वजन बराबरि करि पिसवावै । एक छटाँक प्रात सुखनावै ॥
आठरोज लग हयको दीजै । पानिशूलसगरोहरिलीजै ॥

अथ रसवंतशूल ।

दोहा—परोरहै बोलै उदर, कुरकुराय हय जौन ॥
शूलकही रसवंतसो, करै जतन रुजदौन ॥
चौपाई—जाँघ रुधिरकी फस्त खुलाई । तब औषध कीजै मनलाई ॥
अजवायनि अरु हींग मँगावै । वावभिरंग हरै लै आवै ॥
परवरकी जर सम सब कीजै । गोघृत रस कागजीको लीजै ॥
निंबु कागजी शक्कर लीजै । सकलमिलाय तुरंगहि दीजै ॥

अथ अजीर्ण शूल ।

दोहा—माथ पटाकि तानै वदन, करहै वहुत तुरंग ॥
शूल अजीरणकी परख, दवा किये रुज भंग ॥
चौपाई—सैंधव सोंचर लोन मँगावै । हींग तक्रमों मेल खवावै ॥
वहुतै कष्ट शूलते होई । खाये दवा अजीरण खोई ॥

अजीरण लक्षण ।

दोहा-अंग सकल काँपै बहुत, कहै अजीरण दोष ॥
नकुल मते तिहि जतन करु, रहै न उरमेंरोष ॥
चौपाई-हींग सुगंधबाला अरु सोंचर । लेउ अतीसभागसम सुंदर॥
चनाके आटा में तिहि दीजै । ताके पाछे औषध कीजै ॥
गोदधि जीरा मिलै खवावै । सकलअजीरणदोष नशावै ॥

अथ रुखवंत शूल ।

दोहा-पटकि पटकिपग धरतमहि, ताकी यह पहिचान ॥
होत शूल रुखवंतसो, कीजै जतन विधान ॥
चौपाई-सोंठि पीपरी बावभरंगा । मिर्च स्याह लहसुनसम संगा ॥
पीसि छानि गोघृत सँगखावै । रुखवंती सो शूल नशावै ॥

अथ गदशूल ।

दोहा-दमै तुरंगम बहुत जो, धरणीमों गिरिजाय ॥
गदशूलै तिहि जानियो, तुरतै करौ उपाय ॥
चौपाई-बच औ कूट पषाणमँगावै । अजेपाल सैंधव लै आवै ॥
दोकरा दोकराकी परमाना । चनाके आटा दीजै खाना॥

अथ वदशूल ।

दोहा-उदर श्वास जिहिके हवै, बैठै उठै बहोर ॥
अधिक पीर तिहि जानिये, वदै शूलहै जोर ॥
चौपाई-बच औ कूट पषाणमँगावै । पैसा पैसा भरि लैआवै ॥
ताते नीर सु देइ पिआई । सो बदशूल नीक होजाई ॥

अथ दहनशूल ।

दोहा-जिहि बाजीके पेटते, जरद झरतहै नीर ॥
दहनशूल तिहि जानियो, महारोग गंभीर ॥
चौपाई-असगँध सोंठि मिरचको लावै । गऊ दूधमें पीसि पिआवै ॥
सात पाँच दिनलौं जो दीजै । दहनशूल तुरतै हरिलीजै ॥

अथ आसनशूल ।

दोहा–श्वासलेइ बहु अश्व जो, लोटि धरणिमहँजाइ ॥
पाँजर रगरै पीरसों, आसनशूल कहाइ ॥
चौपाई–अजवाइनि औ मुंडी आनौ । पैसा दुइ दुइभरि परमानौ ॥
कालेश्वर दुइ तोला लावै । पावसेर हरदी पिसवावै ॥
गाईका घृत लै पल एका । तामें गुटिका करौ विवेका ॥
औषधघोड़े देउ खवाई । आसनशूल दूरि होजाई ॥

अथ ऊर्द्धशूल ।

दोहा–बैठै भुइ लोटै नहीं, अधिक पसीना जानि ॥
नैनमूँदि झुकि झुकि झुसै, ऊर्द्धशूल सो मानि ॥
चौपाई–मुख घोड़ेके पानी गिरै । सब लक्षण विचारि उरधैरै ॥
सोरठा–पिपरी पिपरामूर, बीज कसौंजी मिर्चलै ॥
सोंठिवैतरा मूढ़, गऊदुध सँग दीजिये ॥
चौपाई–तप्तनीर सीरो करि देई । दानाका तिहि नाउ न लेई ॥
भूँखबढ़ै मोटो हो गाता । रोगघटै जो दीजै प्राता ॥

अथ सन्निपातशूल ।

दोहा–काँपै बहु उछरै गिरै, बारंबार निदान ॥
सन्निपात तिहि शूलको, नाम कहौं पहिंचान ॥
चौपाई–अजवाइनि बच राई लीजै।पिपरी सम करि तामें दीजै॥
सौंफ सोहागा हींग मँगाई। छिरकाके सँग देउ खवाई ॥
ता छिरकामें डारो घीऊ । तातै शूल होइ निर्जीऊ ॥
आठदिनालौं औषधकीजै । सन्निपातशूलै हरिलीजै ॥

अथ शरदशूल ।

दोहा–कहली रहै तुरंग जो, सूक्षम करै अहार ॥
शरदशूल तिहि जानिये,ताको पुनि उपचार ॥

चौपाई--तिलको तेल पाव यक आनी। ताहि बराबरि गोघृत सानी॥
घासें बाँधिक देउ खवाई । तुरतै अश्व नीक ह्वैजाई ॥

अन्य ।

चौपाई--सोंठि रु हालिम एक पिसावै । गोघृत संगइ गूट बँधावै ॥
पहर सकारे देइ खवाई । शरदशूलको नाश कराई ॥

अथ सर्वशूलकी दवा ।

चौपाई--बच सुंडी गंधीको आनी। उभै जवाइनि लै खुरसानी ॥
मूल इँदोरानि कूट सनाई । चँदसुर हरदी गुरच मिलाई ॥
जैतिकि पाती वावभरंगा । वनभांटा मेलौ तिहि संगा ॥
पलाशपापरा सैंधव रारा । जेठीसंग पत्तरज भारा ॥
गोली बाँध सहतके संगा । साँझ सकारे देउ तुरंगा ॥
पाँच सात दिन ग्यारह रोज़ा । सर्वशूलको रहै न खोजा ॥

अथ धनाशूल ।

छन्दभुजंगप्रयात–भलो तक्र लैके सो हरैं मिलावै ।
तहाँ सोंचरै औ कपूरै मँगावै ॥
करै पिंड याको तुरीको खवावै ।
धनापित्तकी शूल ताको मिटावै ॥

दोहा–शूलकही पंचास यहि, नाम निदान सुजान ॥
जोकछु अब बाकीरही, आगे कहौं प्रमान ॥

अथ शूलकुरकुरी ।

चौपाई–हालै उदर नासिका फरकै । नैन नासिका ते जल ढरकै ॥
ताको प्रथम वतीसा दीजै । घृत अरु सोंठि वैतरा पीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–जो याते नाहिं छाँडै शूलै । पाछे देय सुराकर फूलै ॥
जल आगे पाछे हय फेरै । कहैं नकुल तिहिशूलक घेरै ॥

लक्षण वा दवा।

चौपाई–बैठै उठै घोड़ तनिआवै। ताकी दवा तुरत करवावै॥
हरें राई लोन पिसावै। चनाके आटा साथ खवावै॥
याहिते जो कुरकुरी न छूटै। तौ दूसरि औषधलै कूटै॥
हैंसिमूलको तुचा मँगावै। पातर पीसि नीरसँगप्यावै॥

अन्य।

चौपाई–कारीजीर जवायनि बुकनी। तामें डारु तमाखू थुकनी॥
घोड़ाको जो देउ खवाई। तुरत कुरकुरीखोज नशाई॥

अथ कुरकुरी कमखुराककी।

दोहा–जिहि घोड़ेको धरतिहै, सदा कुरकुरी मर्ज॥
कमखुराक होजातहै, जतन करौ नहिं हर्ज॥
चौपाई–कुटकी घुड़बच वाउभरंगा। हरदी भाँग करौ यक संगा॥
दुइ दुइ तोला की परमाना। आगे दवाक और विधाना॥
हींग सोहागा खील करावै। छा छा मासे सोंचर लावै॥
कारीजीर मिरचले गोली। चारिचारि तोला तिहि मेली॥
कपरछान कारि ताहिधरावै। दोतोला नित प्रात खवावै॥
भूँखबढ़ै अरु ताजा होई। उदरकुरकुरीको हरिलेई॥

अन्य।

दोहा–त्रिफला राइ कापरी, सोंठि जवायनि लेउ॥
सहिंजन छालि कुटाय सम, कछु जल बहु दधि सेउ॥१॥
मटुकामें भरि लीदि जहँ, गाड़िदेउ दिन सात॥
काढ़ि पावभरि देइ नित, सर्व कुरकुरी जात॥ २॥
जो शरदीकी ऋतु लखै, तामें दही नडारि॥
छिरका मिलै जु गाडिये, दिये उदर सुखकारि॥ ३॥

अथ कुरकुरीकी दवा ।

हरिगीतिकाछंद–घुँघुँवारि असगँध सेंवरै पुनि मास पिंडहि लेहु ।
मंजीठ इंद्रायानि फलहि सो लाय तामहँ देहु ॥
भाग सम कंकोल आनहु अग्निलेहु पचाइ ।
दुइ टकाभारि देहु बाजी वद्रशूल नशाइ ॥

दोहा–मिटै कुरकुरी वाजिकी, लघुशंका खुलिजाइ ॥
नकुलसते यह भाषिये, काढ़ा दियो बताय ॥

अन्य ।

सवैया–सोंचरलै अजवाइनि चारु भलीविधि हर्र विशाल मिलावै ॥
औ मधुवाही समान करौ फिरि कूपको लै जल माहि पचावै ॥
अष्टम अंशरहै जबहीं तबहीं सो जाय तुरीको खवावै ॥
रोगनशै अरु भूखबढै पुनि ता हय पवन समान चलावै ॥

अथ कुरकुरीका जुलाब ।

दोहा–मोथी कीतौ चनाके, बिरवा हरिअर होइ ॥
ते ससूच हय खाइ जो, गूंजा बैठाति सोइ ॥ १ ॥
सूखादाना नाजुकी, बेमौताज जु खाय ॥
अश्व विकल होजातहै, पेटफूलि तिहि जाय ॥ २ ॥

चौपाई–ताकी दवा जुलाब बतावा । आधसेर घृतलै धरवावा ॥
कीतौ रेंडीतेल मँगावै । आधसेर परमान करावै ॥
डेढसेर दूधै लै धरै । आधसेर गुड़ तामें करै ॥
यहसब अग्निचढ़ाइपकावै । सीर गरमकरि अश्वपिआवै ॥
बच्चाहोइ अश्व जो कोई । कीतौ अंगक छोटा होई ॥
गात देखिकै दवा कराई । दस्त ताहि बहु आवै भाई ॥
पटकै उदर अश्व खुलि जाई । रामकृपाते नीक दिखाई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतशूलवर्णनोनामषष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ पेटमें कीरा वा हिरुआ वा जोंक वगैरह परैकी दवा ।

छंदहरि०-फलसा सुखेकी मूल लै पुनि रेणुआनि मिलाइये ।
सहतलै सो कूपजलसों अग्नि मध्य पचाइये ॥
क्काथलै करि अंश अष्टम तुरत वाजिहि प्याइये ।
जोंक आदिक कीट नाशै नकुल मत समुझाइये ॥

अन्य ।

चौपाई-वीज बिजौरा चंदन लावै । सरसौं श्वेत उसीर मँगावै ॥
पुनर्नवा ब्रह्मदंडी लावै । क्काथ पकाइ सोंठि मिलवावै ॥

दोहा-सीरोकरि कटुतेल जो, तोलाचारि मिलाइ ॥
वाजि पिआवो जो सुघर, सर्व किरिमि बहिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा-सेंहुड दूध कपूरलै, धात्रीपत्रहि आनि ॥
कूपनीर सों पिंड करि, किरिमि उदरकी हानि ॥

अन्य ।

दोहा-जो घोड़ेके पेटमों, वहुत किरिमि ह्वै जाइ ॥
गिरै पेटारू पेटते, दाना घास नखाइ ॥

चौपाई-राई हरदी मिलै कैफरा । कूटिछानि बरतनमें धरा ॥
इकइस दिन दुइ पहर खवावै । आध पाव परमान बतावै ॥
देइ जुलाब अश्वको कोई । तासों किरिमि नाशसव होई ॥

जुलाब ।

दोहा-राई खारी तुल्यकरि, आधसेर दधि माहिं ॥
यह जुलाब हयको करै, उदरव्याधि नशिजाहि ॥

दवा ।

दोहा-मधुरेठी सम ताहिके, बावभरंग मँगाइ ॥
काढा औटिक दीजिये, कीरा उदर नशाइ ॥

जुलाब ।

दोहा–सज्जी लोध पिसाइकै, भाग बराबरि लेइ ॥
गऊ तक्र सम दीजिये, दस्त अधिक करिदेइ ॥

अन्य ।

दोहा–राई और विधारलै, खारी दही मिलाइ ॥
आधसेर मौताज कहि, भागसमान कराइ ॥
सोरठा–हयको देउ खवाइ, एकरोज फिरि बीचुदै ॥
दीजै फेरि देवाइ, तीनिबार यहिविधि करै ॥ १ ॥
दाना दीजै नाय, नरम घास तिहि दीजिये ॥
जब जुलाब ह्वैजाय, यहऔषध तब कीजिये ॥ २ ॥
दोहा–ईसबगोलै पावअध, तासम दही मिलाइ ॥
याविधिदीजै तीनिदिन, उदरव्याधि मिटिजाइ ॥

अन्य जुलाब पित्तरोगका ।

दोहा–अमिलतास अरु हर्र कहि, लीजै सोंठि मिलाइ ॥
बहुरि मिठाई पोटरी, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गर्मनीरसों रातिभरि, दीजै ताहि भिजाइ ॥
प्रातभयेमो मीजिकै, कपरासों छनवाइ ॥ २ ॥
नैनूलीजै एकपल, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
सेरएक मौताजकरि, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एकरोजको बीचुदै, फेरि दीजिये आनि ॥
याविधि दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥
गरमी तासु मिजाजमो, अतीहोइजो आनि ॥
खुश्की तातै होतिहै, या औषधको जानि ॥ ५ ॥

दवा ।

दोहा–अमिलतास लाभेर अरु, पाकी अँबिली आनि ॥
बड़ी हर्र अरु लीजिये, सेर एक सब जानि ॥ १ ॥

भिजवै पानी गरममों, ताको मीजि छनाय ॥
बिहिदानाको लेहु पुनि, ईसबगोल मगाय॥ २ ॥
दूनौ लीजै आठपल, तासु लबाब कढ़ाइ ॥
औषध माहि मिलाइकै, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक एक दिन बीचुदै, तीनिरोज दै याहि ॥
फिरि ठंढाई दीजिये, चारिरोज लगु ताहि ॥ ४ ॥

ठंढाई ।

दोहा—रेसा खतमी लाइकै, बिहिदाना मँगवाय ॥
तासु लबाब कढाइकै, दुइदुइ पल धरवाय ॥ १ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, चारिटकाभरि लाइ ॥
तिनको पीसि छनाइकै, लेहु लबाब मिलाइ ॥ २ ॥
सोरठा—दीजै ताहि पिआइ, पित्तदोष मिटिजातहै ॥
शालहोत्र मत आइ, सोलखिकै हम लिख्यो यहि ॥

अथ जुलाब कफदोषका ।

दोहा--सौंफ कूट पुनि हींगलै, टका टकाभरि जानि ॥
अमिलतास पुनि बीसपल, खारी दुइपल आनि ॥ १ ॥
गर्मनीरसों प्रथमही, अमिलतासु भिजवाइ ॥
सबै औषधी पीसिकै, तामहँ देउ मिलाइ ॥ २ ॥
हयको देउ पिआइ सो, तीनिरोजलौं ताहि ॥
एक एक दिन बीचदै, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, शक्कर मिलै खवाइ ॥
यह औषध दिन तीनिलै, हयको देउ दिवाइ ॥ ४ ॥

अथ पेटमें आँव पडनेका जुलाब ।

सोरठा—सिमिटि सिमिटि रहिजाइ, उठै मरोरा पेटमें ॥
आँवदोष सो आइ, दाना घासहि खाइकम ॥ १ ॥

दोहा–लै जमालगोटा दशहि, मीठेतेल जराइ ॥
आंटाभरता मध्यसो, हयको देउ खवाइ ॥
सोरठा--खूब पेट झारिजाय, सेरएक दधि दीजिये ॥
प्रातभये फिरि नाय,तिसरेदिन फिरि देउ हय॥
दोहा–याविधि दीजै तीनिदिन, पेट साफ ह्वैजाइ ॥
जौलौं रहै जुलाब दिन, दानानहीं देवाइ ॥

जुलाबमें दानादेनेकी विधि ।

सोरठा–मूंग महेला ताय, प्रथमहि थोरो दीजिये ॥
फेरि बढावति जाय,पावति जेतो होइ हय ॥

अथ जुलाब अजमाया हुआ बहुत अच्छा ।

चौपाई–लेउ सोहागा सज्जी भाई । तामेंडारु निसोदर आई ॥
तोले तोले सम पिसवावै । आधसेर पक्के जल लावै ॥
खुरासानि अजवायनि लीजै । आधपाव पक्के तिहि कीजै ॥
चारौ दवा नीरमें डारै । पावक मध्य पकाय सुधारै ॥
तीनौं दवा जवायनि स्वकिहै । तब छाहीमें सुखै धरीहै ॥
जौके आटा मध्य मिलावै । पैसाभरि नित प्रात खवावै ॥
आठरोज घोड़ाको दीजै । उदर सफाई बहुविधि कीजै ॥

दस्तबंदहोनेकी दवा ।

चौपाई–सेंबरकी जो रुई मँगावै, गोघृत साथ तुरै खिलवावै ॥
देतै दस्त बंद होजाई । सकल रोगको नाश कराई ॥

अन्य ।

चौपाई–एकछटाँक भाँग मँगवावै । गोदधि आधपाव लैआवै ॥
दोनौंमिलै तुरँगको दीजै । दस्तबंद ताही छिन लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–चावर लेउ पुरान मँगाई । भात पकाइ सिरो करवाई ॥
गोदधि ईसबगोल मँगावै । सकल फेंटि यक सम्र करवावै ॥
घोड़ेको जो देइ खवाई । तुरतै दस्त बंद ह्वैजाई ॥

अथ उदरव्याधि नाशन ।

दोहा–कालेसुर औ सोंठिलै, असगँध मिलै पिसाय ॥
काढ़ा दीजै भाग सम, उदरव्याधि बहिजाय ॥

अन्य ।

दोहा–राईखारी दहीसम, सेर आध जो देहु ॥
व्याधि उदरकी गिरिपरै, सकल रोगहरिलेहु ॥

अन्य ।

दोहा–भाँटा भरत कराइकै, दधिसों देहु खवाइ ॥
तीनि दिनामें अश्वको, सकलरोग बहिजाइ ॥

इति श्रीशालहोत्र०जुलाबवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ खारिस्ति खजुलीके लक्षण वा दवा ।

हा–देह होति खजुवाति जो, अति खरिस्ति जो होइ ॥
औषध कीजै ताहि यह, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
पहिले दोनौं पगनकी, लीजै रगै खुलाइ ॥
तापाछे औषधकरै, रोग ताहि बहिजाइ ॥ २ ॥

औषध ।

दोहा–वकुची तिल हरदी सहित, वीजपवाँरहि आनि ॥
मोथा और भेलावलै, तोले तीस बखानि ॥ १ ॥
पीसै सब बारीखकरि, दीजै दही मिलाइ ॥
एकदिवस भरि घाममें, दीजै ताहि धराइ ॥ २ ॥
घाममें हय बाँधिकै, दीज ताहि मलाइ ॥
फिरि धोवै जल शीतसों, तीनिरोजमें जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–तीनि पाव साबुन सहित, तासम मिर्चालाल ॥
सूखितमाखू ताहि सम, सबको पीसै हाल ॥ १ ॥

लीलाथोथा लीजिये, आधपाउ यहजानि ॥
सोराकलमी पाउ यक, सबको पीसै आनि ॥ २ ॥
दालि उरदकी लीजिये, तीनिसेर यह जान ॥
ताहि चौगुनो डारि जल, खूब पकावै आन ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिकै, लोहे बर्त्तन माहि ॥
घोटैलकरी नीबकी, दालि सहितमिलिजाहि ॥ ४ ॥
ताहि लगावै धूपमें, तीन दिवसलौं जानि ॥
शीतोदकसोधोइये, जाय रोग यह मानि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा-अरुई दधि खारी मिरच, पानमहेला नाय ॥
ताहि खवावै जून दुहुँ, कइउ रोगनशिजाय ॥

अन्य दवा लगानेकी ।

दोहा-पोस्ता और कसाँवजी, भूँजि अधजरी लेउ ॥
सेर एक दूनौंपिसै, कटुकतेल मधिघेउ ॥ १ ॥
फेटि लगावै तुरँग तन, मलौ घरी दुइ पूरि ॥
घामबाँधि दिन सातलौं, होइ खरिस्तीदूरि ॥ २ ॥

अन्य खानेकी दवा ।

चौपाई-गोघृत मैदा लेउ मँगाई । तोला तीनि तीनि तौलाई ॥
दालचीनि पैसाभरि लीजै । चोख बराबरि तामें दीजै ॥
गोली तोला करौ विधाना । दानासाथ दीजिये खाना ॥
सातरोज घोड़ेको दीजै । रोगजाय जो औषधकीजै ॥

दवा लगानेकी ।

दोहा-हरदी गंधक नैनियां, मैनसिला त्रै आनि ॥
सरसर दमरी वजन कारि, सेरतेल कटु जानि ॥ १ ॥

बूँकि दवाई तेलमें, पकै छानि तेहि लेइ ॥
मलै पहर यक अश्वतनु, पाँच दिवस करिदेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-पोहकरमूले सहत लै, मडुअ वकाइनि पात ॥
गूगुरस्याह जो वजनकरि, सरसर दमरी ख्यात ॥ १ ॥
सवासेर घृतमेंसकल, पीसि पकै ले छानि ॥
मलै तुरँगके गात नित, चूलुनसों परमानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-बदरीफलको हाथमलि, फेन उठैसो लेय ॥
खूब मलै खारिस्तमें, घोड़ा निर्मल होय ॥

अन्य ।

दोहा-मेडुआचूरन सेरयक, सज्जी आधी आनि ॥
फेंटि अनलपर सो पकै, मींजै बलसो जानि ॥

अन्य ।

दोहा-बटदल पीपर छालिको, जारि छार करिलेइ ॥
खारी अरु खारीनमक, रस अंजीरहि देइ ॥ १ ॥
माठामें सबको मिलै, लावै हयके अंग ॥
चुल्ली और खरिस्तको, करिहै तुरतै भंग ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-बचुकी गंधकमनसिलआनी। बाउभरंग ताहिमें सानी ॥
कूटिपीसिकै यक सम कीजै। पानीमें सब निशिभरिभीजै ॥
प्रातमथै लै सरष पतेलू। घोड़ेअंग सों मर्दनमेलू ॥
घटिका तीनि घाममें राषी। माटीमिल धोवै हरसाषी ॥
रोगघटै जो घीव पिआवै। फेरिखरिस्ति होन नहिंपावै ॥
गंधक मनसिलऔ हटतारू। तिलके तेलहि करु निरधारू ॥
सोई तेल अश्वके मलै। जाइ खरिस्ति होय अति भलै ॥

अन्य ।

चौपाई–साबुन चँदसुर गुड़ सम लीजै । तीनों वस्तु औट समकीजै॥
अश्वअंगमें ताहि मलावै । भोरभये घामें अन्हवावै ॥
शालहोत्र यह कहै उपाई । रोगखरस्ती दूरि कराई ॥

अन्य ।

दोहा–मुरदाशंखे तूतिया, रसकपूरको लेउ ॥
पैसापैसाभरि करौ, कपरछान करि देउ ॥ १ ॥
अजवायनि तीनौपाययक, घोड़बच पारसवाय ॥
पारा सेंदुरुफ लीजिये, दुइतोला तौलाइ ॥ २ ॥

चौपाई–गंधक बचुकीको लै आवै । आधपाव दूनौ तौलावै ॥
हटतार संखिया जहर मँगाई । पैसापैसाभरि तौलाई ॥
सकल दवा खल में पिसवावै।सर्षप तेल८२॥मध्य घोरवावै॥
घामें बाँधिअश्वतनु रगरै । ताके पाछे मृतिका घोरै ॥
एक पहरके पाछे मलै । भोरभये नहलावै भलै ॥
ताके भोर दवा मलवावै । याहि कर्मते रोग नशावै ॥
ऊँट श्वान वृष हय पशु भाई । सकल खारिस्ती नाश कराई ॥
सकल चिकित्सा जे खजुलीके। याहि समान नहिंऔर मतेके

अन्य ।

दोहा–नींबी गुठुलू तेललै, एक छटाँक प्रमान ॥
जौरोटी सँग दीजिये, यकइस दिवस विधान ॥ १ ॥
कोई होइ खारिस्तिजो, अश्वाके तनु माहि ॥
शालहोत्र मत जानियो, यहि सम दूजी नाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–गिरई मछरी लाइकै, पाँच सेर तौलाइ ॥
बतनाई दधि दीजिये, महिषी केर मिलाइ ॥

चौपाई—माटीके बरतनभरि धरिये । मोहराबंद ताहिको करिये ॥
यकइस दिन घूरें गडवावे । ताहिबइसयेंदिन निकरावै ॥
नित प्रतिकच्चेपाव खवावै । रोग खरिस्ती सब मिटि जावै॥

अन्य लगानेकी दवा ।

चौपाई—मछरी भूर पाँचसेर लावै । दशसेर महिषीतक्र मिलावै ॥
माटीके बरतन भरि धरिये । आठरोज लगु घूरे गड़िये ॥
दोहा—नवयें दिनते देहमें, मालिसि करौ सुजान ॥
जाइ खरिस्ती नीकहै, दवा करौ बुधिवान ॥

अन्य ।

चौपाई—बेल जंगली तोरि मँगावै । पानीडारि अग्निपक्कावै ॥
ताको गूदा लेउ कढाई । पानीडारि खूब घेपवाई ॥
माफिक सीराके करि लीजै । देह भरेमें मालिस कीजै ॥
देह सूखिजब जावै भाई । तब पिण्डोरमाटी पोतवाई ॥
तिसरे पहरदेइ अन्हवाई । पाँच सात दिन यहै कराई ॥

अन्य ।

चौपाई—दही भैंसिको लेउ मँगाई । पक्के आठसेर तौलाई ॥
भूरै मछरी फेरि मँगाई । तीनिपाव ताको तौलाई ॥
तितिली और करहुँआ लीजै । पाव पाव भरि वजन करीजै॥
मिरचालाल छटाँक मँगावै । धोई दालि पाव भरिलावै ॥
तोला एक तूतिया लावै । गंधक तोले तीनि मिलावै ॥
आधुपाव लै नीब कि पाती । पीसि दवा सब दही मिलाती ॥
सो सब बरतनमें भरिलीजै । गोबर माहिंगाडि तिहि दीजै॥
दोहा—दुइदिन तामें गाडिकै, तिसरे दिन खुदवाइ ॥
दवाअश्वकी देहमें, दुइघंटा मलवाइ ॥

चौपाई–धूपमाहिं बाँधौ तेहि भाई । घंटा भरि तक देह सुखाई ॥
घोरिपिडोरुदेह लगवावै । कूपके जलसे तेहि अन्हवावै ॥
तीनिरोज यहिभाँति करावै । तापाछे यह दवा खवावै ॥
दोहा–दुइदिन आगे ताहिको, दानावंद कराइ ॥
सातरोजतक दीजिये, खाजु नाश ह्वैजाइ ॥

अन्य खाइकी दवा ।

चौपाई–दही कि मूरनि लेउ बनाई । पावएक ताको तौलाई ॥
आँबाहरदी तोला तीनी । कूटौ ताको बहुत महीनी ॥
गिरई मछरीको लैआवै । एक छटाक वजन करवावै ॥
यवके आटा सानि खवाई । एक खुराक कही यह भाई ॥

अन्य ।

चौपाई–नीबीकी पाती लै आवै । कोपल दुइसेर वजन करावै ॥
ँगाई । दूनौ कूटिक देउ धराई ॥
माटीके बरतनमें धरै । ऊपरतक माठा तेहि भरै ॥
आठरोज घाममें घरवाई । नवयें दिन ते अश्वखवाई ॥
यव वा चनाके आटा दीजै । आधुपाव तेहि वजन करीजै ॥

अन्य लगानेकी दवा ।

चौपाई–तोले तीनि तमाखू लीजै । लालमिर्च ताके सम कीजै ॥
बीज वकैनाके लैआवै । पावसेर तिनको तौलावै ॥
दोहा–दारि उरदकी सेरुभरि, जलमें सबै मिलाइ ॥
ताहि चढावै अग्निपर, खूब पाकि जबजाइ ॥
सोरठा–लीजै ताहि उतारि, जब ठंढा होजाय बहु ॥
डारै तुरत निकारि, मिरच तमाखू ताहिते ॥
दोहा–खूबमलै फिरि हाथसों, लीजै ताहि छनाइ ॥
गूदी रंडा पाव अध, दहीसेरु मिलवाइ ॥ १ ॥

एकरोज धरि धूपमें, रोज दूसरे माहि ॥
मलै अश्वकी देहमें, बाँधै घामें ताहि ॥ २ ॥
फिरि धोवै जलशीतसों, श्रीधर वरणो आनि ॥
याविधि कीजै तीनिदिन, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा--दूध गाइको सेरु दुइ, पक्कीतौल मँगाइ ॥
लेहु फटकरी मिर्च अरु, तोले षट मँगवाइ ॥ १ ॥
ताहि मलै सब देहमें, पहर वीति जब जाइ ॥
धोवै पानी ठंढकरि, सातदिवस करवाइ ॥ २ ॥

अन्य बहुतदिनी खाजुकी दवा ।

दोहा-सेरएक लै तेल तिल, दीजै ताहि मलाय ॥
रोज रोज सब देहमें, तेल मलत सो जाय ॥ १ ॥
यकइस दिनलौं तेलसों, भीजिरहै सब देह ॥
मिटैखाजु सब बाजिकी, जानौ विन संदेह ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-मनुजमूत्र मँगवाइकै, दीजै ताहि लगाय ॥
औषध कीजै ताहि पर, खाजु दूरि होजाइ ॥
चौपाई-मडुईकेर पिसानु मँगावै । तीनिपाव ताको तौलावै ॥
सातटका भरि लोनु मिलावै । लेई ताकी आनि पकावै ॥
सो देहीमें देइ लगाई । भोरभये डारै अन्हवाई ॥
सात बार औषध यह करै । खाजुव्याधि घोड़ैकी हरै ॥

अन्य ।

चौपाई-षटमासे तूतिआ मँगावै । ताते दूनी मिरच मिलावै ॥
दोनौंको यकमांहिं पिसाई । गऊमूत्रमें ताहि मिलाई ॥

दोहा–वाहि लगावै देहमें, रोज दूसरे माहि ॥
माटीघोरि लगाइये, सूखिजबै सब जाहि ॥
चौपाई–शीतोदकसों ताको धोवै । खाजुव्याधि घोड़ेकी खोवै ॥
सातबेरयह औषधकीजै । खाजुव्याधि कबहूँ नहिं लीजै ॥

अन्य ।

दोहा–पावसेरलै लोनको, तोलाभरि हटतारु ॥
पावसेर घृत माहिसो, दुवौ पीसिकै डारु ॥
सोरठा–अग्नि पकावै ताहि, फेरि लगावै देहमें ॥
तीनिरोज लगु वाहि, बाँधौ ताको धूपमें ॥
दोहा–ठंढे जलसों धोइये, छिरका और शराब ॥
दोऊ मिलै लगाइये, बढै देहकी आब ॥

अन्य ।

चौपाई–गोदधि तेरहसेर मँगावै । करुवतेल दुइसेर मिलावै ॥
पाती नीबकेरि लैआवो । सेरएक तेहि अर्ककढावो ॥
दोहा–दालि उरदकी सेरभरि, ताको लेउ पकाइ ॥
यक बासनमें औषधी, दीजै सबै भराइ ॥ १ ॥
सोलै गाड़ै लीदिमें, दशयें दिन कढवाइ ॥
धरै ताहि लै धूपमें, रोजखवावति जाइ ॥ २ ॥
आटा भूँजे जवनको, पाउसेर सो जानि ॥
औषध लीजै ताहि सम, दीजै हयको आनि ॥ ३ ॥
चौपाई–तीनिरोज याविधिको कीजै । डेढ़पाव फिरि औषध दीजै ॥
बारहदिनलौं देहु खवाई । वहुत दिननकी खाजु नशाई ॥
दोहा–अग्निवायु नाशै तुरत, वरसाती मिटि जाइ ॥
शालहोत्र इमि उच्चरै, खाजु पुरानी जाइ ॥

अन्य ।

दोहा–हरदी मोथा कूट अरु, बरुन छालिको आनि ॥
बीज कसौंजीको वहुरि, यक यक पलसो जानि ॥
चौपाई–करुवातेल सेरुभरि लावै । सबै औषधी पीसि मिलावै ॥
घामें बाँधि देह लगवाई । तीनि दिवसमें खाजु नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई–गोहूँकेर पिसान मँगावै । तासम तामें लोनु मिलावै ॥
फिरि ताकी यक रोटी कीजै । जारि तासुको कैला कीजै ॥
दोहा–आधो कैला तैल तिल, तीनि रोज लगवाइ ॥
आधो बाकी जोरहै, जलमें लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
ताहि लगावै तीनिदिन, नदीकेर जल लाइ ॥
ताते धोवै वाजितनु, तुरतै खाजु नशाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–वरगद पाता जारिकै, ताकी भस्म कराइ ॥
लाल मिठाई दहीयुत, खारीलोन मँगाइ ॥ १ ॥
सेरसेर सब औषधी, जलसोंलेइ मिलाइ ॥
ताहि लगावै तीनिदिन, खाजु दूरि ह्वैजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–कुटकी सोंठि चिराइता, सैंधव सेंदुर आनि ॥
मोथा तिल हरदी सहित, और सोहागा जानि ॥ १ ॥
ताहि लगावै तीनिदिन, तिलकेतैल मिलाइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, तहूँ खाजु मिटिजाइ ॥ २ ॥

अन्य दवाखानेकी ।

दोहा–सर्व औषधी करिचुकै, खाजु नहीं जो जाइ ॥
ताकी औषध कहतहौं, दीजै ताहि खवाइ ॥

चौपाई–समुलखार धेलाभरि लावै । गूगुरु ताके सम मिलवावै ॥
तोलाचारि मिलावां लीजै । पाँचटकाभरि अदरखकीजै ॥
दोहा–सबै पिसावै एकमें, खूबमिही ह्वैजाइ ॥
आठ आठ मासे सबै, गोली लेहु बँधाइ ॥ १ ॥
बँगलापान पचासमें, गोली एक खवाइ ॥
दीजै दूनौ बेरमें, याहीविधिसों लाइ ॥ २ ॥

अथ अग्निवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–चटै परैं जो देहमें, खाल उधिलि तिहिजाहि ॥
अरु लोहू तिनते चलै, पुनि खाँसी अधिकाहि ॥

अन्य ।

दोहा–उधिलै खाल जु गातकी, पुहुमी रगरै घोर ॥
गूँथिनते लोहू चलै, अग्निवायुहै जोर ॥

अन्य ।

दोहा–खालबार जो अश्वके, उधिलि गये दरशाय ॥
अग्निवायु याहू कहो, रंगीमत सो आय ॥ १ ॥
आधसेर तंडुल पकै, नीबपत्रमें घालि ॥
आधसेर दधिमें सुई, काढि दीजिये डालि ॥ २ ॥
सीरोकारि करसों मसलि, देवै दिन चालीस ॥
ता ऊपर जलदेइ नहिं, अग्निवायु करिखीस ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–गोमाखन यक पावलै, नितप्रति दिन दे सात ॥
ता पाछे औषध करै, रोगदूरि होजात ५,

अन्य । शाई ॥

चौपाई–अहिकारेकी केंचुलिलावै । मासेचारि खरिल करवावै ॥
गोहूँकी रोटीमें सानै । घीके संग खाय मतिवानै ॥
प्रात सातादिन देउ खवाई । अग्निवायु नीकी हो जाई ॥

अन्य ।

चौपाई–अरुण मिरच पैसाभरि लेहू । मधु मथि लैं माटीमें देहू ॥
माटीआधपाव मुलतानी । तेलडारि करुयेमें सानी ॥
घामें बाँधि अश्वतनु मलै । भेंड़महीते धोवै भलै ॥
पोंछि सुखाय अंगको भाई । माष पकाय देइ मलवाई ॥

अन्य ।

चौपाई–कोकाफूल तालके लेहू । गोदधिबरतनमें लैभरहू ॥
सातरोज घूरेमो धरै । अठयें दिन सोबाहरकरै ॥
पावसेर घोड़ेको दीजै । तापाछेयह औषध कीजै ॥
महिषाको यक सींग जरावै । दूधभेंड़को लै मथवावै ॥
तीनि टकाभरि मनशिल लेहू । करि मैदा ताहीमें देहू ॥
तिलके तेलम मथै बनाई । घरी एक घामें धरवाई ॥
घामेंबाँधि दवा मलवावै । माटीपोति अश्वअन्हवावै ॥

अन्य ।

चौपाई–काई ताल केरि मँगवावै । सातरोज घोड़ा मुखनावै ॥

अन्य ।

सोरठा–कालेखरको आनि, लौंग तूतिया लीजिये ॥
नागकेसरिहि जानि, चारि चारि रत्ती सबै ॥
दोहा–हरदी पैसाभरि बहुरि, हयको देहु खवाइ ॥
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–नैनू लैकै पाँचपल, नितप्रति देहु खवाइ ॥
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ ॥ १ ॥
लालमिरच अरु सहतको, टका एक भरि जानि ॥
पीसै करुये तेलमें, यह विधि लीजै मानि ॥ २ ॥

ताहि लगावै देहमें, जानिलेहु यह चित्त ॥
माठा लीजै मेषको, तासों धोवै नित्त ॥ ३ ॥
उरद उसेवै नीरमें, तिनको खूबमिलाइ ॥
वा औषध को पोंछिकै, तापर देह लगाइ ॥ ४ ॥
या विधि कीजै बीसदिन, अग्नि वायुनाशिजाइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं दवा बताइ ॥ ५ ॥

अथ दाद छिछिला अग्निवायु ।

दोहा—चारौ गंधक लीजिये, अरु हरदी हटतार ॥
बावभिरंग समान करि, बचुकी दूनी डार ॥ १ ॥
पारा सम अरु चोष तिमि, चौगुन लै कटुतेलु ॥
पहर अढाई लोहसे, खालिभाजनमें मेलु ॥ २ ॥
सोइ लगावै अंग मलि, तीनि पहर रविघाम ॥
मलिपिंडोर चौथे पहर, धोय प्रातके याम ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—लै बासी पानी तुरै, धोयदेइ दिनसात ॥
की हुक्काको जलसरो, धोवै नितप्रति प्रात ॥

अन्य ।

दोहा—गोदधि अरु बारूदलै, फेटि मलै यह अंग ॥
बाँधि तीनि दिन धूपमें, करि खरिस्तिकोभंग ॥

अन्य ।

दोहा—कीभड़भड़ा (हुक्का)सराँइको,पानीलै मतिमान॥
मलै अंग दो तीनिदिन, नशै खरिस्ति निदान ॥

अन्य ।

दोहा—की साबुन लै आठभरि, ताको आधो लोन ॥
कूटि बाँधि पटमें तिन्हैं, करै जतन रुज दौन ॥ १ ॥

बासी पानीमें रगरि, धोय तुरय दिन तीन ॥
बुद्धिधीर यहि रीतिको, करिखरिस्तिको हीन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–की पीपरि बारीखलै, पीसि तेल रलिदेय ॥
बाँधिधूप सोंखै जबै, पोति मृत्तिका सोय ॥

अथ वादखोराखाजु ।

दोहा–बार गिरैं खजुली उठै, खालचीकनी होय ॥
कह्यो वादखोरा नकुल, दुष्टरक्त ते सोय ॥ १ ॥
सवासेर गोमूत्रलै, लोह कराही माहि ॥
जरो आध लखिये जबै, पीछे जतन कराहि ॥ २ ॥
मिर्च तूतिया लीजिये, दशभरि चतुर सुजान ॥
सुमिलखार सिंदूर सम, पीसि महीन प्रमान ॥ ३ ॥
आधपाव कटुतेलमें, सकल दवा लै घेल ॥
वाही लोंहड़ीमें सुघर, वस्तु पाँचहू मेल ॥ ४ ॥
सबको फेटि उतारिले, यकइस रोज लगाय ॥
खाजुबादखोराप्रगट, देहै तुरत नशाय ॥ ५ ॥

अथ गजचर्मलक्षण वा दवा ।

दोहा–रोवाँ जाके गिरिपरैं, हुचकी आवति होइ ॥
जानौ सो गजचर्महै, शालहोत्रमत जोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना सोंठि पुनि, हर्र मिर्चको जानि ॥
दुइ दुइ पल सब लीजिये, देवदारु सो आनि ॥ २ ॥
चारिसेर जल आनिकै, लीजै ताहि पकाइ ॥
सेर एक जल जब रहै, ताको मींजि छनाइ ॥ ३ ॥
बीज कसौंजी लीजिये, पैसाभरि तौलाइ ॥

काढ़ादीजै तीसदिन, शालहोत्र मत आइ ॥
जेती औषध खाजुकी, तिन्हैं लगावत जाइ ॥ ६ ॥

अथ बरसातलिक्षण वा दवा ।

दोहा–पैरगामची तर उपर, नैननीच दरशात ॥
फूटिबहै बरसातमें, बरसाती विख्यात ॥

अन्य ।

दोहा–उधिलै खाल जु अंग कहुँ, लाली बहु दरशाय ॥
बारहु माससें देखिये, सो बरसाती आय ॥

चौपाई–बरसातीक मोमसों मलै । मलत मलत जब लोहू चलै ॥
सर्षपतेल मोम लै आवै । अरु बारूदहि आनि मँगावै ॥
स्यँदरूफ सहत सबै मिलवाई । अग्निमध्य मा लेउ पकाई ॥
...म करै हरै बरसाती । सात दिवस लागै दिन राती ॥

अन्य ।

चौपाई–छोटी माई आनि पिसावै । तिहिसम मसुरि पिसान मँगावै ॥
ताकी टिकिया करौ बनाई । बरसाती ऊपर बँधवाई ॥
तीनिदिनासो बाँधीरहै । चौथेदिवस छोरिकै लहै ॥
निंबुकागजीके रस धोवै । लाली हरै नीकहै जावै ॥
तीनिरोज फिरि टिकिया बाँधै । क्रमयाहीसे औषधसाधै ॥

अन्य ।

चौपाई–तिल्लीको पीनाले आवै । गऊतक्रमें ताहि घुरावै ॥
तीनिदिना सो भीजा करै । तापाछे लेपनको करै ॥
साँझ और लागै परभाती । बरहेंदिवस जाय बरसाती ॥

अन्य ।

दोहा–लैसज्जी अरु मैनाशिल, सम कारि सुंमिलक्षार ॥
खलमें मदिरा युत खलै, चौबिस पहर विचार ॥ १ ॥

पैसा भरि नित दीजिये, यकइस दिवस प्रमान ॥
वरसातीको नाशिहै, याही जतन निदान ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–मासाचारि प्रमाण बुध, लेउ सोहागा भूनि ॥
बूँकितासु दुइ भाग करु, डारि श्रवण दुहुँ गूनि ॥ १ ॥
ताके ऊपर कागजी, निंबूकरै दुफाल ॥
दुहूँश्रवणमें गारिदे, करिहै रुजको काल ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–निंबूरसमें रगरिकै, देइ सिंघारा लाय ॥
कईबेर लावै सुघर, वरसाती मिटि जाय ॥

अन्यमत लक्षण ।

दोहा–हाथ पाँइ मुहँ माहिमें, चट जाके परि जाँइ ॥
पाकैं उधिलैं वे बहुरि, गांठीसी दरशाइ ॥ १ ॥
वीतिजाइ वरसाति जब, सूखिसबै वै जांइ ॥
फिरि आवै बरसाति जब, वैसे फिरि ह्वैजांइ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–मासाभरि हटतारलै, लीलाथोथा डारि ॥
इन तीनोंको समकरो, स्याहलोन निरधारि ॥ १ ॥
समुदफारको लीजिये, रतीचारि मँगवाइ ॥
सूखोसबको पीसिये, अति बारीख कराइ ॥ २ ॥
पाती लैकै नीबकी, जलमें लेउ मिलेइ ॥
कपराभे जल छानिकै, धोय चटै सब देइ ॥ ३ ॥
यह औषध सब चटनपर, खूब मलै सो जानि ॥
नमदा धरिकै ताहिपर, बाँधै कपरा आनि ॥ ४ ॥

बाँधो राखै दोइ दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥
चटको देखै ध्यान करि, छूटि जरै जब जाइ ॥ ५ ॥
फिरि धोवै जल गर्मकरि, तापर करै निगाह ॥
छूटै जर चहुँ तरफते, होइजाइ अरु स्याह ॥ ६ ॥
याविधि की चट होइ नाहिं, यही औषधीलाइ ॥
दीजै ताहि बँधाइ फिरि, वाही विधि करवाइ ॥ ७ ॥
धाननकेरो भातुलै, टिकिया तासु बँधाइ ॥
तीनिरोजके बादिमें, ताको खोलै आइ ॥ ८ ॥
वरसाती जरसों मिटै घोड़ा चंगाहोय ॥
श्रीधर कह्यो विचारिकै, शालहोत्र मत जोय ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा—गोदधि तेरह सेरलै, दशपल सेरसौंतेल ॥
नीबपात लै सेरभरि, उरद सेरभरि मेल ॥ १ ॥
गाड़ै ताको भूमिमें, करि जब वासनमाहि ॥
सातरोज राखै तबै, जाइ निकारै ताहि ॥ २ ॥
पाउपाउ भरि दीजिये, तीनिरोज लगु जानि ॥
फिरि दीजै विवि पाउ भरि, चालिसदिन लौंमानि ॥ ३ ॥
भूँजे चना पिसानमें, औषध हयको देउ ॥
कवि श्रीधर यों कहतहै, वाजी नीको लेउ ॥ ४ ॥

अन्य ।

सोरठा—कपरा लेउ तहाइ, बरसातीकी गाँठिपर ॥
ताको देउ बँधाइ, छिन छिन डारै नीरको ॥
दोहा—दुइ महिना यहि विधि करै, बरसाती मिटिजाइ ॥
शालहोत्र यह कहतहैं, नीकी विधि यह आइ ॥

अन्य ।

दोहा–झींगामछरी गुड़ सहित, साँभरि लोन वखानि ॥
आधपाव मौताजयक, तीनौंको सम जानि ॥ १ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ॥
चालिस दिनके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–छालि जवासा दोइ पल, छाहीं माहिं सुखाइ ॥
आधपाव नैनू सहित, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
डेढ़ पहर दिनके चढ़े, जलको देइ पिआइ ॥
तापाछे यह औषधी, दीजै आनि खवाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–नरके शिरको हाड़लै, आधपाव पिसवाइ ॥
अर्कपात मँगवाइकै, तिनको लेउ जराइ ॥
चौपाई–तोलाभरि हटतारु मँगावै । तासमलुहचन आनि मिलावै ॥
तोलाभरि गुड़को फिरि लीजै । सबकोपीसियकट्ठा कीजै ॥
दोहा–डेढ़सेर लै प्याजको, ताको अर्क मिलाइ ॥
कर्षमात्र गोलीकरै, फिरि औषध पिसवाइ ॥ १ ॥
गोली एक नहार मुख, हयको दीजै आनि ॥
दाना दीजै ताहि नहिं, नाहारीको जानि ॥ २ ॥
पानी पाहिले देइ करि, मध्य दिवसमें ताहि ॥
गोली दूसरि दीजिये, शालहोत्र मत याहि ॥ ३ ॥
दोइघरी कैजाकरै, पाछे देइ उतारि ॥
यहिविधि कीजै तीनि दिन, श्रीधर कह्योविचारि ॥ ४ ॥
बीस दिवस अरु तीनिते, दिन चाळिसलौं जानि ॥
जलपिआइकै दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ५ ॥

रोगघटै अरु बलबढ़ै, क्षुधा तासु अधिकाइ ॥
औषध याहि समानकी, और नहीं दरशाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—वरसाती पर मोमको, मलै देरतक आनि ॥
मलत मलत लोहू चलै, मलत तहाँ लगुजानि ॥

मलहम ।

दोहा—करूतेल आगी धरै, थोरा मोम मिलाइ ॥
चंदन अरु बारूदलै, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
घोटै ताको देरतक, एक माहि मिलिजाइ ॥
वरसातीके जखमपर, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजीखिरिस्तिवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८

अथ नेत्ररोगलक्षण वा दवा ।

मुञ्जारोग ।

दोहा—किरिमिहोत यक नेत्रमें, कचसमान सो मानि ॥
श्वेतरंग ललिये बहुरि, मुञ्जा ताको जानि ॥
चौपाई—सो आंखीमें दौरा करै । ताके दौरे माडा परै ॥
एक खालके नीचे जानौ । मुञ्जारोग कठिन अनुमानौ ॥

दवा ।

चौपाई—पीपरि सैंधव सहत मिलाई । पथरचटाके रंग पिसाई ॥
वजन बराबरि सबको करै । अंजनदै दृग मूंदा करै ॥
सातरोजलौं औषध कीजै । कीरामरै सफेदी छीजै ॥

अन्य ।

छंदअरिल्ल—अर्क दूध फटकरी सु या विधि आनिये ।
गोहूँ मैदासानि पिंड यक बाँधिये ॥
अग्नि मध्य में राखि भस्म करि लीजिये ।
पीसि नेत्रमें अंजि किरिमिको छीजिये ॥

अन्य ।

दोहा–मानुषकी खुपरी तनक, अग्नि मध्यदे जारि ॥
खील फिटकरी मिलै सम, सुरमा करौ विचारि ॥ १ ॥
अजयदूधमें सानिकै, अंजन दीजै नेत्र ॥
फूली मुज्जा काटिहै, साँची मानौ मित्र ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–सैंधव कदली फल सुपक, मेलि जु पट्टो देय ॥
तीनि दिवसयाविधि करै, मिटै रोग सुख लेय ॥

अन्य ।

दोहा–अर्कक्षीर गोबर महिष, ताको अर्कनिचोय ॥
पीतरिके खोरवा विषे, पैसासों घसि लेय ॥ १ ॥
अंजन करिदे नैनमें, साँझ भोर यहि रीत ॥
ता ऊपर हलुवा बनै, मैदा गोघृत मीत ॥ २ ॥
खाँड़मोलि तामें धरै, नैन उपर सुखदानि ॥
फिरि घृत लावै ताहि पर, जो कछु माड़ा जानि ॥ ३ ॥
तौ सेंदुर भरि दीजिये, तामें जतन समेत ॥
नाशै मुज्जा नैनको, कहै नकुल सुखहेत ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–दूध पिवा शिशुको सुघर, विष्टालेइ मँगाय ॥
चारिबेर दृगमाँ भरै, मुज्जा नैन विहाय ॥

अन्य ।

दोहा–लेंड़ीलै खरगोसकी, जलमें लेउ पिसाइ ॥
सो लै बाँधै आँखिपर, मुज्जातौ मरिजाइ ॥

अथ मुज्जा फूली और माड़ाकी दवा ।

दोहा–चूरी लीजै काँचकी, सैंधवलोन मिलाइ ।
पीसै अति बारीककरि, सुरमा जब ह्वैजाइ ॥ १ ॥

सो लै डारै आँखिमें, दूरि सफेदी होइ ॥
मुञ्जा अरु फूली नशै, कहत सयाने लोइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–विष्ठकबूतरको लै आवो । लोन लहौरी ताहि मिलावो ॥
मासे डेढ दुहुँनकोलीजै । रत्तीभरि गंधी पुनि दीजै ॥

दोहा–पिसवावै बारीख करि, धरिकै छूंछी माहि ॥
फूँकिदेइ सो आँखिमो, पाँच रोजमें जाहि ॥

अन्य ।

दोहा–सिरसा खिन्नी बीजकी, गूदी लेउ कढाइ ॥
साबुन गेरू लौंग पुनि, सैंधव सेंदुरु लाइ ॥ १ ॥
नींबूकेरे अर्कमें, पीसै अति बारीक ॥
अंजन दीन्हें होतहै, फूलीवालो नीक ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–पीपरि पीसै खरिलमें, एक दिवस भरि आनि ॥
अंजन दीन्हें होतिहै, माडा फूली हानि ॥

अन्य ।

चौपाई–समुदफेन अरु सोरा लीजै । फूल गुलाब ताहिमें दीजै ॥
सँगबसरी मिलि सम पिसवावै । खूब महीन खरिल करवावै ॥

दोहा–अंजन दीजै आँखिमो, माड़ासो कटिजाइ ॥
सातरोज औषधकरै, नेत्रज्योति सरसाइ ॥

अन्य ।

दोहा–सोरा चंदन फटकरी, सिरसाबीज मँगाइ ॥
मिर्च कपूर शर्करा, साबुन देउ मिलाइ ॥ १ ॥
सबको पीसै एकमें, अंजन ताको देइ ॥
सात दिवस औषधकरै, फूलीको हरिलेइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–अर्क दूध औ फटकरी, लेउ धतूर मिलाइ ॥
सो लै आगीमेंधरै, दीजैखूब जराइ ॥ १ ॥
सुरमा करिकै ताहिको, दीजै आँखीमाहि ॥
दूरि सफेदी होतिहै, अरु मुञ्ना मरिजहि ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–अमिलतासकी छालिलै, चंदनरक्त मिलाइ ॥
पीसि ताहि गोली करै, छाहींमाहिं सुखाइ ॥ १ ॥
रगरि पान रसमें बटी, यकइस रोज लगाय ॥
तुरँगनैन फूली मिटै, याही यतन बनाय ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–जेठीमधु चंदन अरुण, घसि अदरखरसमाहि ॥
नैनादिये फूली कटै, कइउरोग नशिजाहि ॥

अन्य।

चौपाई–लोधु फटकरी मुरदाशंक। हरदी जीरा यक यक टंक ॥
अफीम चनाभरि मिरचै चारि। उरद बराबरि थोथा डारि ॥
सिरस छालि रस अंजन कीजै। सकल विकार नैनकी छीजै ॥
मुञ्जा फूली औंर नखूना। माड़ा धुंध आदि कृतहूना ॥

अन्य।

दोहा–जोफूली दृगमें परै, कीजै जतन उताल ॥
कइउ रोज सेंदुर तहाँ, फूँकि देइ भरि नाल ॥ १ ॥
की बरतन चीनी सुघर, पीसि भरै तेहि नैन ॥
नशिजैहै फूली तुरत, लहै बाजि बर चैन ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–की सीठी रगरै सुघर, डारै नैन लगाय ॥
काहे रगी वस्तादि यह, फूली नैन बिहाय ॥

अन्य ।

दोहा-कीसोरा गेरू मिलै, घालि नालमें फूँकि ॥
कइउरोज याको करै, उपर तमाखू थूँकि ॥

अन्य ।

चौपाई-काँचक चूरन आटा जोंडी । अर्कदूधमें भिजै समंडी ॥
गोलाकरिकै ताहि सुखावै । अग्नि जारिकै भस्म पिसावै ॥
चुटकी चूरण नैनन धरै । सातरोजमें फूली हरै ॥

अन्य ।

चौपाई-सोनासाखी वंदनु लीजै । रक्तफटकरी तामें दीजै ॥
सिरसबीज अरु चीनी लेई । लेउ कचूर मिर्चको सोई ॥
मैदाकरि अंजन दृगभरै । नीकहोइ अरु फूली हरै ॥

अन्य ।

चौपाई-रसउत अरुण फटकरी लीजै । सहत संगघ सिअंजनकीजै ॥

अथ नाखूना ।

दोहा-जहां सफेदी नेत्रमें, तहँ नखूनाहोइ ॥
छूराभेतेहि काटिये, डारि सेराई सोइ ॥

चौपाई-लै अस्तूरा साफ उतारी । गुज्मा फूट बहै नहिं वारी ॥
हरदी सोंठि सहत घृत सानी । ताहि बाँधु ऊपरते आनी ॥
शीत वातते देउ बचाई । नीकोहोइ नखूनाभाई ॥

अन्य ।

चौपाई-मिर्च दक्षिणी वंदन लेहू । खील सोहागा तामें देहू ॥
गूगुर वजन बराबरि मेलै । सैंधवलौन फटकरी खीलै ॥
सर्पपतेल में खरिल कराई । नाखूनामें देउ लगाई ॥

अन्य ।

दोहा-नींबछालि नरमूत्रमें, रगरि सु अंजन देय ॥
कटै नखूना नैनको, बाजि अधिक सुखलेय ॥

अथ नेत्रचोटकी दवा।

दोहा–बासीपानी लोन लै, दोनौं मुखमें डारि॥
कूंचि नैनमें फूँकिदे, तुरत चोट दुखहारि॥

अन्य।

चौपाई–गोघृत मैदा डारि मिठाई। आँबाहरदी लेउ पिसाई॥
दोहा–घुँघुँवारीके नीरसँग, अग्निमध्य पकवाइ॥
हलुवा करि बाँधौ सुघर, नैन चोट बहिजाय॥

अथ नेत्रबँभनी।

दोहा–पलकरोम गिरिजात सब, बहु किचपिचा दिखाय॥
आँखिनमें पानी बहै, कछु लाली दरशाय॥
चौपाई–पटसनजरकी राखकरावै। साँभरि टका तीनि भरिलावै॥
दोउ शिरमध्य बीच लगवावै। चारिघरी पीछे अन्हवावै॥
सनभव मुर्दाशंख मिलाई। सहत संग मथिदेइ लगाई॥
सातदिना करिहै जो कोई। बँभनी बेलि जाय सब खोई॥

अथ रतौंधीकी दवा।

दोहा–रंचक मिरच कपूर लै, घृतमें सानै ताहि॥
घिसि अंजन नैनन करै, मिटै रतौंधी वाहि॥

अन्य।

दोहा–साबुन मिर्च मँगायकै, लीदि रंगसों सानि॥
घोड़े हग अंजन करै, मिटै रतौंधी आनि॥

अथ आँखिमें ढरका बहै ताकी दवा।

चौपाई–सरसौं पीपरि मूल अरंडा। गोलाबाँधि करौ जिमि अंडा॥
ताको अर्क निचोइसु लीजै। ताहि मध्य औषध यह दीजै॥
हाहूवेर व गेरू लाई। कँदयलकली सहित पिसवाई॥
सबका अर्क यकत्र निकारै। साँझ भोर हग छींटा मारै॥
नीकहोय सब ढरका बंदा। शालहोत्र भाषै सुखकंदा॥

अन्य ।

चौपाई–चंदन सौंफ तगर जो लावै । अजैपुत्र पेशाव मँगावै ॥
रस इनका सब लेइ निकारी । तामधि सहत घीउ सो डारी॥
भरै नेत्र सो जतन कराई । ढरका रोग नीक ह्वैजाई ॥

अन्य ।

दोहा–बच दतूनि गुड़ घृत मिलै, खाय तुरी मतिवान ॥
बहिबो नैनन नीरको, रोकिहै कहौंप्रमान ॥

अथ नेत्रमाड़ाकी दवा ।

दोहा–मानुषकी खपरोइया, अति महीन करि बूँकि ॥
माड़ा तुरत नशाइहै, देइ नाल भरि फूँकि ॥

नेत्र सफेदीकी दवा ।

चौपाई–पिपरी सैंधव सहत मिलाई । विषखोपराके अर्क सनाई ॥
अंजनदै मूँदौ हग ताही । जाय सफेदी तुरतै वाही ॥

अथ लोटरोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–ऊपर सूजहि आँखितर, जखमहोतिहै आनि ॥
लोट तासुको नामहै, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
काँचेकी थारी विषे, दीजै पारा डारि ॥
पैसा भरे रगरिये, रस नींबूको गारि ॥ २ ॥
सोरठा–मिलि पारा नहिंजाहि, तौलौं रगरति जाइये ॥
जब कजरी ह्वैजाइ, लावै हयके जखमपर ॥
चौपाई--एक रोजमें औषध भाई । दफा पाँच अरु सात लगाई ॥
जबतक जखम न नीक देखावै । तबतकदवायही करवावै ॥

इतिश्रीशालहोत्रसंग्रहकेशर्वसिंहकृतेनेत्ररोगचिकित्सावर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९

अथ वातव्याधि । झोला अकरव वायु ।

चौपाई--मानुष दग्ध होय जहँ भाई । यक हथ माटी डारु खोदाई॥
तानीचेकी माटी लीजै । घोरि कराह औटनो कीज ॥

धरै उतारि जु शीतल होई । तेल ऊपर छहरै जमि सोई ॥
वाही तेलके लेउ उतारी । सीसामें करि धरै विचारी ॥
घोडेके तनु मालिसि करै । कछुक खवाय रोगको हरै ॥
वातव्याधि सकल मिटिजाई । मानुष तैल मलै जोभाई ॥

अन्य ।

चौपाई—सेरचारि भैंसीकी गोबरी । सैंधव सज्जी और फटकरी ॥
टका टका भरि तीनौं मेलै । बेंबडरकी माटी तिहिघैलै ॥
एकैमें सब गरम करावै । लेपै अंग बयारि न पावै ॥
तेल मालकाँगनि को लीजै । याहीमेंसो सामिल कीजै ॥
गेरह दिन सो कीजौ भाई । याहीते झोला मिटि जाई ॥

अन्य ।

चौपाई—अजमोदा अरु कूट मँगावै । नागरमोथा हरदी लावै ॥
बारह बारह भरि सब लीजै । गुर्च सोहागा टकाभरीजै ॥
टका एकभरि खारी लीजै । बेसन के सँग घोड़े दीजै ॥
सातरोज घोड़े मुखधरै । अश्वाको झोला सब हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—सुरमा नासु देउ बुधवाना । गर्मनीर करवावै पाना ॥
चनाके सतुआसानिखवावै । एकजून पानीको पावै ॥
घोड़ा राखु बयारि नलागै । याहूते सब झोला भागै ॥

अन्य ।

चौपाई—सेर एक गूगुर मँगवावै । पाँचसेर गोदूधै लावै ॥
गूगुरदूधै मेलि पकावै । कम्मरके छन्ना छनवावै ॥
चनाके आटा सेर पिसावैं । वही दूध हेलुवा बनवावै ॥
हेलुआकी गोली बनवावै । तोला चारि चारि करवावै ॥
साँझ सकारे यक यक दीजै । बहुत भाँति टहलावा कीजै ॥

अथ प्रबल वायु लक्षण ।

चौपाई–झाऊपत्र तमाल मँगावै । पुहकरमूल लोध लैआवै ॥
गुड़ गोदूध मिलाय करीजै । पिंडबनाय अश्वको दीजै ॥
याते रोग दूरि होजाई । प्रबल वायुको करौ उपाई ॥

अन्य ।

चौपाई–हरदी अरु जैफल मँगवावै । सम करिदिये बहुत सुखपावै ॥

अथ अग्नि वायु लक्षण दवा ।

दोहा–चिनगारी सम छिटिकि अँग, निज तनुकाटैजौन ॥
शालहोत्र ऐसी कहै, अग्नि वायुहै तौन ॥

चौपाई–तेलीको कोल्हू मँगवावै । यंत्र पताल तेल कढ़वावै ॥
तिल्लीको समतेल मिलावै । अश्वअंग मालिसि करवावै ॥
याही तेल खानको दीजै । चौदह दिनमो नीक करीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–सर्षप लेउ पीत मँगवाई । दशसेर पक्के ले तौलाई ॥
पीसि कूटि गोदधिमों सारै । दिन उंचास तुरीसुखधारै ॥

अन्य ।

चौपाई–श्यामा तिलकोतेल मँगावै । सेंदुरुफ मिलै अंग मलवावै ॥
मंडलभारिकी साधन कीजै । रोगजाय सब दुःख हरीजै ॥

अथ हिरण वायु लक्षण ।

दोहा–अधर रदन काटै अपन, माँस नोचि निज खाय ॥
हिरणवायु ताको कहै, खफकी सो दरशाय ॥ १ ॥
जो कोऊ आगे परै, ताको काटै दौर ॥
अवशि जानियो मृत्युयहि, प्राणहरन करु गौर ॥ २ ॥

चौपाई–पहर दुइक तीनिकमें मरै । बहुतै दवा उताहिल करै ॥
सोरहभाग कपूर मँगावै । ताहि पीसि लुगदी मुखनावै ॥

अन्य।

चौपाई–सूकरको बच्चा मँगवावै। घोड़ाके आगू बँधवावै॥
बच्चा चिघैर हल्ला करै। हिरण वायु घोड़की हरै॥

अन्य।

चौपाई–दूनो तरफ कानके ऊपर। जहाँ कनपटी कहिये तेहि पर॥
गुल दागि दीज बुधशाना। हिरण वायुको खोज नशाना॥

अथ ओढाकरन वायु लक्षण वा दवा।

दोहा–सूजिजाइ जेहि अश्वको, कर पद गर्दन नैन॥
वायुनाम ओढा करन, शालहोत्र कह बैन॥

चौपाई–लौकाकी जर सुंडी आनै। वचुकी सोंठि हींग परमानै॥
सैंधव सोवा वाइभरंगा। पलाशपापरा घृतके संगा॥
औषध समकरि एक मिलाई। आठरोज तक देउ खवाई॥

अन्य।

चौपाई–अंड सँभारू पात मँगावै। श्याम धतूरा ताहि मिलावै॥
हाँडीमध्य पकाइक सेंकै। ओढाकरन वायुको छेकै॥

अन्य।

चौपाई–अश्वअंगमा होय अमासू। पूरुव लक्षण खाय न घासू॥
उचकै चौंकि धरणि पर गिरै। ताकी औषध या विधिकरै॥
प्रथम सहिंजन हींग मँगावै। अजवायनि कंचनारिपु लावै॥
वायभरंग सोंठि औ सरसों। चूरा करौ अंगमा करसों॥

अन्य।

चौपाई–सोंठि जवायनि वायभरंगा। वजन बराबरि करि यक संगा॥
अष्ट विशेषी काढा करै। सातरोज मा रोगैहरै॥

अथ टनक वायु लक्षण वा दवा।

दोहा–टनकै घोड़ा पाँउमें, टनक वायु तेहि जानु॥
ताकी औषध कीजिये, रोग जाय परमानु॥

चौपाई–गूगुल पैसाभरि मँगवावै । ताहि पकाय अश्वमुख नावै ॥
यकइस दिनलौं देउ खवाई । टनक वायु दूरी हो जाई ॥

अन्य ।

चौपाई–अंडा लेउ टिटिहिरीके पट । देउ अश्व नित जाइ रोग हट॥

अथ कपोत वायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–खाये सूजें अश्वके, जानो ताहि कपोत ॥
तासी औषध कीजिये, रोग अरामी होत ॥

चौपाई–रेंडा बेंगन मूल मँगावै । छालि बेरा जरकी लावै ॥
वच त्रिकुटा अरु लौका लेई । घृतके साथ खानको देई ॥
तिलको तेल कपोत लगावै । महुआ पाता सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौपाई–काराजीरी गरू लहू । सोंठि कचूर ताहिमें देहू ॥
गोबरके रस खरिल करावै । छिरकाके रस अग्निपकावै ॥
गरम होइ तव लेप करावै । मिटै कपोतवायु सुखपावै ॥

अन्य ।

चौपाई–सुमन पलाश क्फारा देवै । बाँधौ ताहि कपोतेखोवै ॥

अन्य ।

चौपाई–हाड मनुष्य शीशको लावै । पुंगीफल छोटे मँगवावै ॥
कँदयल मूल तुचाको लीजै सकल पीसिकै लेप करीजै ॥

अन्य ।

दोहा–अमिली औ कचनारको, नींब पत्र समलेउ ॥
बासन मध्य पकायकै, सेंक कपोतै देउ ॥

चौपाई–कारीजीर पीसि पानी में । चुपरि कपोत देइ तेहि गरमें ॥

अथ कंपवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा—काँपै अंग तुरंगको, दाना घास न खाय ॥
कंपवायु तेहि जानिये, जतन कियेते जाय ॥
चौपाई—धीर कपूर खाँडलै सानै । दूध मिलाइ पिंड मुख भानै ॥
कंपवायु वाजीकी जाई । शालहोत्र यह भाषै भाई ॥

अथ मुखवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा—मुख सूजै जेहि अश्वको, रुज मुख ताको नाम ॥
ताकी औषध कीजिये जो हय होय अराम ॥
चौपाई—जवाखार अजवायनि लीजै । हरदी सर्षप सम करि दीजै ॥
सैंधव मिलै पीसि सब लेहू । अँबिली रसमें गरम करेहू ॥
अश्व वदन पर लेप करावै । ताके ऊपर पट बँधवावै ॥

अन्य ।

चौपाई—जो मुख सूज अश्वको देषै । वातविकार तासु अवरेषै ॥
जवाखार अजवाइनि राई । सर्षप हरदी सौंफ मिलाई ॥
लहसुन मेलि वजन सम करौ । जलसों पीसि अग्निमें धरौ ॥
गरमगरम सेंकौ मनलाई । औषध करौ रोग बहिजाई ॥
सोरठा—होय वदन पर सूझ, जा तुरंगको देखिये ॥
ताको जतन समूझ, लोनवफारा दै प्रथम ॥ १ ॥
राई हरदी सोंठि, जवाषार कुटकी गनौ ॥
और सोहागा घोटि, समकरि सकल खवाइये ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—मोथ इलाची आनि, अमिलतासु धनियाँ सु सबु ॥
सम करिकै तेहि सानु, हयको रुजनाशक भणित ॥

अन्य ।

चौपाई–भुज छाती सूजै जो आनन । दाना घास नहीं मनभानन ॥
मिर्चे कसौंजी अदरख पानै । चारौ करौ एक परमानै ॥
दीन्हें जहरवातको हरै । दूजी औषध नाहक करै ॥

अन्य ।

चौपाई–अर्धमास पर दीजै ग्रासै । जहरवातको नाहीं त्रासै ॥
दोहा–बारह दिवस असाध्य गनि, तेरहदिन गतसाध्य ॥
पक्ष पक्ष ऐसी दवा, दिये न करति उपाध्य ॥

अथ गिलिमवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–जेहि घोडेके वदन पर, गिलटी परिगइ होय ॥
रुधिर चलै तेहि गिरहते, गिलमवायुहै सोय ॥
चौपाई–पहिले घृत अरु तेल लगावै । पात सँभाल्हू केर मँगावै ॥
सेंकै गुलफ तेलके संगा । गिलमवायुको होई भंगा ॥

अथ गुल्मवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा--जगह जगह परिजातहैं, गुल्म सकल तनुमाहि ॥
गोलाकृति स्थूल बहु, गुल्मवायु कहि ताहि ॥
छंद झूलना–वंशलोजन वरिअरा अरु अवलकै पुनि लेहु ।
निंबूविजौरा तासुको रस लाय यामें देहु ॥
पिंड चारि खवाय वाजी गुल्म नाशित होय ।
शालहोत्र विचारिकै यह कह्यो ग्रंथ विलोय ॥

अथकर्णवायु लक्षण दवा ।

दोहा–फूटै अश्वके कनसरी, धार छुटै दुहुँ ओर ॥
की लोहू पानी गिरै, कर्णवायुहै जोर ॥
चौपाई--सौंफ धना जीरा मँगवाई । सोंठि सहित लीजो पिसवाई ॥
भाल अश्वके लेपन कीजै । औरौ नासु उपरते दीजै ॥

लेंड़ी ऊँट केरि मँगवावे । अर्क निकारि ताहि छनवावै ॥
गोघृत सम करि देहु मिलाई । दमरीभारि सैंधव पिसवाई॥
नासुदेउ घोड़ेको जबहीं । शोणित बंद होयगो तबहीं ॥
सोरठा--ऊँटकुमारे वारि, अग्निजारिकै सेंकदे ॥
औषधकरौ विचारि, रोग हरै संशय नहीं ॥
चौपाई–सेंकदेय हरदी औ पाना । तापाछे लेपन करि आना ॥
सोंठि सोहागा पिपरी लावै । कूटि पीसि लेपन करवावै ॥

अन्य ।

चौपाई–शोणित चुवै कर्णते जाके । की आमास होय ज्वर ताके ॥
झारै शिर काँपै सब गाता । ताहि जानियो रुज करि घाता ॥
ताकी औषध सुनौ निदाना । तिल हरदीमे सेंकै काना ॥

अन्य ।

चौपाई–लहसुन हरदी हींग मिलाई । अर्क पातके बीच धराई ॥
करि कपरौटी दीजे आगी । काचो रहै जरै नहिं लागी ॥
ताहि कूटिकै अर्क निकारी । घीव सहत तेहि दीजो डारी ॥
थोरी थोरी श्रवणनभरै । कर्णवायु अश्वाकी हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–जो आमास होय अधिकाई । तौ नस्तर दीजै लगवाई ॥
सैंधव सज्जी साबुन आनी । सो लीजै पानीमें छानी ॥
ताको पानी श्रवणन भरै । सेंककरै पीरा सब हरै ॥

अथ रक्तवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा--जा हयकी दिशि आगिली, चलै न येकौ पाँउ ॥
पाछिल धरणीको रहै, रक्तवायु तेहि नाँउ ॥
चौपाई--खुरासानि बच दूनौं आनै । औंराके दल रसमें सानै ॥

अन्य लक्षण रोगकी पहिंचानका ।

दोहा--श्वासचलै बहु दम करै, कछुक देर थँभिजाइ ॥
दूसर लक्षण जानियो, रक्तवायुसो आइ ॥

चौपाई--मानुषका जिमिलकवा बाई । ऐसे तुरी रोग हो जाई ॥
महाकाठिनहैं रोग विशाला । याकी दवाकरौ ततकाला ॥
पैसा पैसा भरि पिसवावै । सेंवरछालि टंक दश लावै ॥
लहसुनकी गाँठी सम करौ । पीसि छानि मैदा सम धरौ ॥
गोघृतके सँग दश दिन दीजै । औरो घृत तनुमर्दन कीजै ॥
ईटसेंक ऊपरते देहू । पवन बंद मा राखै वोहू ॥
या विधि दवा करौ मनलाई । रक्तवायुको खोजनशाई ॥

अन्य ।

चौपाई--देउ बतीसा चूरण याही । मानुषकी खोपरी जेहि माहीं ॥
तोला तोलाकी परमाना । शाम सुबह दिन बहुत विधाना ॥

अन्य ।

चौपाई--सेर एक गोमूत्र मँगावै । दुइ तोला गूगुर मिलवावै ॥
औटी करिकै प्रात पियावै । गेरहदिन याही विधि पावै ॥

अन्य ।

चौपाई--वृषभ अस्थिको तैलबनाई । लेउ पताल यंत्र निकराई ॥
तीन तेलकी मालिस करै । सकल देहमें सो अनुसरै ॥
तैल लगाइ बफारा दीजै। ताकी दवा सवै लखिलीजै ॥
पात धतूर बकैना लावै । और सँभालू तामें नावै ॥
रहसानि अंबर बेलि मँगावै । रनिकी पाती ताहि मिलावै ॥
जोगिआ अंडकेपात मँगाई । सातौ दवा बराबरि लाई ॥
माटीके बर्तन उसनावै । सकल अंगमें वाफ देवावै ॥
पाँच सात दिन या विधि कीजै।बहुत दाइँ निशि बासर दीजै
पवन बंदमें राखै भाई । सकल वायुको नाश कराई ॥

दोहा–सकलवायुको नाशिहै, कह्यो बफारा तौन ॥
शालहोत्र यह मत कहैं, ग्रंथसारमें जौन ॥

अथ अर्द्धंगवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–पाछिल धर जा बाजिको, पकरे बाई होइ ॥
ताहि कहत अर्द्धंगहैं, सकल सयानें लोइ ॥

प्रसारिनीतैल ।

दोहा–रहसनिगंध पसारिनी, गदहपुरैना जानि ॥
वच्छुकी जर सहिजन सहित, दोइ दोइ पल मानि ॥ १ ॥
अजवायनि कनयर जरहि, आठ आठ पललेइ ॥
अरसी सर्षप सेर दश, मिलै सबनको देइ ॥ २ ॥
सब औषध यक संग करि, लीजै तैल पेराइ ॥
तेल कराही माहिकारि , दीजैअग्नि चढाइ ॥ ३ ॥
सैंधवलीजै पाँच पल, ताको लेउ पिसाइ ॥
माठा लीजै तैल सम, दोऊ देउ पचाइ ॥ ४ ॥
शुद्धतैल होजाय जब, लीज तबै छनाइ ॥
ताहि लगावै अश्वके, छाहींमें बँधवाइ ॥ ५ ॥
दाना दीजै मूंगको, सेर एक यह जानि ॥
पानी दीजै कूपको, मध्य दिवसमें आनि ॥ ६ ॥
सोरठा–दीजै तैल पिआइ, टका एक भरि प्रथमही ॥
दीजै फेरि लगाय, तीस रोजमें जानिये ॥ १ ॥
दोहा– आधे धरकी वायु पुनि,और कब्जियत जाय ॥
जोकोई या विधि करै, सगरी वायु नशाय ॥ २ ॥

अथ कहानवायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–बेर बेर बैठै उठै, नितप्रति यह गति होइ ॥
असवारीमें ताहिके, ऊर्द्धश्वास चलै सोइ ॥ १ ॥

शिलाजीत गुखुरू सहित, गोघृत लेउ मँगाइ ॥
यक यक औषध दोइ पल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
कही एक सौताज यह, दीजै दाना माहि ॥
औषध दीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ भस्मकवायु लक्षण वा दवा।

दोहा—कीतौ बाई कोखिमों, कीतौ दहिनी जानि ॥
अथवा देहीं सब विषे, सूजानि तामें आनि ॥ १ ॥
देह छुये करकस परै, सूजनि बाढ़ति जाइ ॥
गुदा माहि पानी चलै, जूड़े कान लखाइ ॥ २ ॥
दानाघासहि खाइ बहु, अति जल पीवत होइ ॥
जानौ ताहि असाध्यहै, मरै सही हय सोइ ॥ ३ ॥
कहे भेलावाँ पाँच पल, तिनको लेउ मँगाइ ॥
दशपल तिलके तेलमों, लीजै खूबचुराइ ॥ ४ ॥
पैसा साढ़े तीनि भरि, ताहि पिसावै आइ ॥
दानाघास न दीजिये, पांच दिवस लौं ताइ ॥ ५ ॥
कूटि चिरैता कैफरा, दोइ दोइ पल लाइ ॥
गऊके सूत्र पिसाइकै, लीजै तप्त कराइ ॥ ६ ॥
मर्दनकीजै पीठि पर, पांच दिवस लगु जानि ॥
पानी दीजै स्वलप तेहि, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥
लंघन करिबेकी शकति, जा घोडेके होइ ॥
औषधकीजै ताहिकी, जियत तुरीहै सोइ ॥ ८ ॥

अथ कुमकुम वायुरोग लक्षण वा दवा।

दोहा—गाँठिनमें गाँठी परै, औ गाँठी फिरि जाइ ॥
जानौ कुमकुम रोगहै, ताको कहौं उपाइ॥ १ ॥

माजूफल औ कैफरा, धायके फूल मँगाइ ॥
सबको भाग समान लै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
दोइ टकाभरि औषधी, गोघृत लेउमिलाइ ॥
औषध दीजै बीस दिन, रोग तासुको जाइ ॥ ३ ॥

अन्य कुमकुम रोगके लक्षण।

दोहा—सोजा जाके फिरि गये, की गांठी दरशाइ ॥
सोऊ कुमकुम रोगहै, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि नाल बँधाइकै, सूधो सुम करि देइ ॥
ता पाछे पट्टी कहौं, बाँधि तासुके देइ ॥ २ ॥

पट्टीविधि।

दोहा—प्रथम पातलै रंडके, दीजै तिन्हैं बँधाय ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, डारै फेरि खुलाइ ॥ १ ॥
भीतर बाहर पाँउके, डारै बार मुँडाइ ॥
पछनादेकै ताहिपर, पट्टी देउ बँधाइ ॥ २ ॥
आँबाहरदी दोइ पल, कुचिला दोनों आनि ॥
यलुआ लीजै एक पल, ताको जलमों सानि ॥ ३ ॥
चौपाई—पट्टी ऊपर ताहि लगावै । सो पट्टी लै पगहि बँधावै ॥
तीनि दिवसलौं बाँधो राखै । शालहोत्र मुनि ऐसो भाखै ॥
दोहा—खोलै चौथे रोजमों, पाकिगयो जो होइ ॥
यह औषध लगवाइकै, बाँधै पट्टी सोइ ॥ १ ॥
समुदखार हटतारु अरु, लीलाथोथा आनि ॥
लै जमालगोटा बहुरि, और निसोदर जानि ॥ २ ॥
अर्क दूध मँगवाइकै, तामें लेउ पिसाइ ॥
पछना ऊपर पग विषे, दीजै ताहि लगाय ॥ ३ ॥
दोइ पहर बाँधो रहै, डारै फेरि खुलाइ ॥
जलमों नीब उसेइकै, ऊपर देउ लगाइ ॥ ४ ॥

नीब धरत तौलौं रहै, खूब साफ होजाइ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक होजाइ ॥ ५
सोजा सूधो होइ अरु, कुमकुम रोग नशाइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ६

अन्य ।

दोहा–एलुवा और अफीम लै, रेवतचीनी आनि ॥
हरदी मातुषमूत्रमो, ताहि पकावै सानि ॥ १ ॥
पट्टी ऊपर लाइसो, दीजै ताहि बँधाइ ॥
औषध वही सबै करै, प्रथमहि कही जु आइ ॥ २ ॥
थूहर और मदारको, लीजै दूध कढाइ ॥
फाहा तासु बनाइकै, दीजै ताहि बँधाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै तीनिदिन, तासु जतन यह आइ ॥
धोवै ताहि शराबते, खूब साफ ह्वैजाइ ॥ ४ ॥
मदिरा चून मिलाइकै, रोज लगावत जाय ॥
जखम सूखि जब जाइगो, पग सूधो ह्वैजाय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–अजवाइनि गुड़ चोकरा, गोहूँकेर मँगाय ॥
थोरा पानी डारिकै, लीजै गरम कराय ॥ १ ॥
सो लै बाँधै पग विषे, पछनादैकरि ताहि ॥
या विधि बाँधै चारि दिन, पाकि यहीते जाहि ॥ २ ॥
पाती नीब पिसाइकै, तामें सहत मिलाइ ॥
ताहि लगावै जखमपर, साफ तही ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक जब होइ ॥
धरणी परसे शुद्धहो, कहतसयानेलोइ ॥ ४ ॥
पग कदाचि टेढो रहै, ताको कहौं उपाय ॥
ताहि लगावै पग विषे, खपचै बाँधत जाय ॥ ५ ॥

चौपाई—मोम मस्तगी तैल कढावै । दोइ घरी लौं ताहि बँधावै ॥
ताके ऊपर देउ लगाई । मास एक में रोग नशाई ॥
दोहा—नितप्रति यांही विधि करै, शालहोत्र कहि ताहि ॥
धरणी परशै शुद्ध पग, रोग तहीं बहि जाहि ॥

अन्य ।

दोहा—दालचिनी अरु जाइफल, मोम मस्तगी आनि ॥
मैदा लकरी एलुआ, गरीं कही बखानि ॥ १ ॥
पात सँभालूके सहित, नींबपात अरु आनि ॥
पात बकैना रंडके, अरु अनारके जानि ॥ २ ॥
सेर दोइ तिल तैललै, दुइ दुइ पल सब पात ॥
दीजै अग्नि चढाय सो, होइ खूब जब तात ॥ ३ ॥
एक एक पाती सबै, तामें लेइ जराइ ॥
फेरि उतारै अग्नि ते, लीजै ताहि छनाइ ॥ ४ ॥
अंडा मुरगीके बहुरि, सोतौ लीजै चारि ॥
जरदी तिनकी दूरिकरि, दीजै तामें डारि ॥ ५ ॥
एक एक पल औषधी, जलमें लेहु पिसाइ ॥
सबै मिलावै तैलमें, दीजै अग्निचढाइ ॥ ६ ॥
खूब लाल ह्वैजाइ जब, लेउ तबै उतराइ ॥
ताहि लगावै पग विषे, खपचै देउ बँधाइ ॥ ७ ॥
मुड्डा टेढो जासुको, दुवौ पगन ह्वैजाइ ॥
औषध कीजै एककी, जब नीको दरशाइ ॥ ८ ॥
दुसरे मुड्डा माहिमो, औषध देउ लगाय ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वैजाय ॥ ९ ॥

अथ एकअंग वायुलक्षण वा दवा ।

सोरठा—पाँइआगिले माँहि, कीतौ पछिले पाँइमें ॥
लंगरो तैहै

जोतौ बरम लखाइ, रक्त तहांते काढिये ॥
तब औषध करु ताहि,बाजी होत अरामहै ॥ २ ॥
दोहा–रहसानि गुखुरू गुर्चलै, गदापुरैना जानि ॥
लीजै जोगिआरंड जर, ताकी बकली आनि ॥ १ ॥
देवदारु पुनि लीजिये, पाँच पाँच पल आनि ॥
अँबिलतास पुनि सोंठि लै,अरुहड़ जुरी बखानि॥ २ ॥
बकलीझाँडीकी जरहि, कुटकी वायभरंग ॥
सरवन पिथवन बेलकी, लेइ जरैं यक संग ॥ ३ ॥
दुवौ कटैआ लीजिये, अरु बहेर सुखदानि ॥
डेढ डेढ पल औषधी, पृथक् पृथक् जिय जानि ॥ ४ ॥
सब औषध यकठाँव करि, दोइ भाग करि ताहि ॥
ताकी विधिअबकहत हौं, समुझिलेहु जिय माहि ॥ ५ ॥
चौपाई–सातभाग आधेके कीजै । एक भाग तामेंको लीजै ॥
चारिसेर जल तामें डारै । आगीके ऊपर लैधारै ॥
दोहा–आध सेर बाकीरहै, लीजै तबै उतारि ॥
हयको देहु पिआइ सो, श्रीधर कहो विचारि ॥ १ ॥
प्रातसमय यह दीजिये, सात दिवस लौं जानि ॥
भाग जौन आधो रहै, ताको कहौं बखानि ॥ २ ॥
चौपाई–सात भाग ताहूके कीजै । मोठ महेला संगहि दीजै ॥
मध्य दिवसमें देहु खवाई । सतयें दिन नीको होजाई ॥
दोहा–आमवात जाके अहै, रुधिर श्रवत की जोइ ॥
चक्रवात कीतौ भई, तीनौं नीके होइं ॥

अन्य ।

दोहा–रहसानि मौढ़ी सोंठि लै, असगँध देशी आनि ॥
पुनि अमलोनिया जर सहित,दशदशपल सबजानि ॥ १ ॥

पंद्रहपल अरु लीजिये,गुड़ पुरान मँगवाइ॥
गोघृत लीजै पांच पल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
दशदिन दोनों वखत में, दीजै ताहि खवाइ॥
निश्चय जानौ बात यह, बाइ छतीसउ जाइ ॥ ३ ॥

अन्य वातभेद ।

दोहा–सूजनि चारिउ चरणसें, बनीरहति जो होइ ॥
फेरेते वह कस परै, वातभेदहै सोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना पीसि पुनि, वच बकुची खंभारि ॥
देवदारु रहसनि सहित, सोंठि बहेरा डारि ॥ २ ॥
सरफोंका असगँध सहित, पिपरामूल मँगाइ॥
दुइ दुइ पलकी वजन करि, सबको लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
बीसभाग ताको करौ, चारिसेर जल माहि ॥
काढा करिकै तासुको, हयको दीजै ताहि ॥ ४ ॥
याविधि दीजै बीसदिन, शालहोत्र मत मानि ॥
सूजनि उतरै चरणकी, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ लकवा बाईके लक्षण वा दवा ।

दोहा–लकवा मारत जाहिको, मुख टेढो ह्वैजाइ ॥
टेढ़ीगर्दन होति है, एकतरफको आइ ॥ १ ॥
मुश्किलसो वह खातहै, दाना घासहि जानि ॥
जहाँ पवन नाहें लागई, बाँधै हयको आनि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि पीपरामूल लै, अरु अजमोद मँगाइ ॥
पीपरि कुटकी कैफरा, अरु अजवाइनि लाइ ॥ १ ॥
हरदी गूगुर लीजिये, और भेलाउँ मँगाइ ॥
खुरासानि अजवाइनी, काराजीरी लाइ ॥ २ ॥

कालेश्वर बच कूट चिउ, अरु बंडार मिलाइ ॥
भाग बराबरि आनि सो, इनको लेउ कुटाइ ॥ ३ ॥
चौपाई--दश तोले सब औषध लीजै।दाना पाछे हयकोदीजै॥
दोहा--दाना दीजै मोठको, अग्निमाहि पकवाइ ॥
पानी दीजै गर्मकरि, जब ठंढ़ो ह्वैजाइ ॥ १ ॥
जबतक होइ अराम नहिं, यही दवा करवाइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताइ ॥ २ ॥

अन्य तेल ।

दोहा-लेउ सँभालू रेंड अरु, अर्क बकैना आनि ॥
थूहरकी छीमी कही, और धतूरो जानि ॥
चौपाई-इनके सबके पात मँगावो । करुयेतेलहि आनि जरावो ॥
सेंकि सेंकि गर्दन पर मलई । पहर एकमें पीड़ा हरई ॥

अन्य ।

दोहा-इंद्रायनिके बीजलै, और मुसव्वर आनि ॥
और मस्तगी लीजिये, अक्करकरहा जानि ॥ १ ॥
अंबरूहिदी तगरु लै, भाग समान मँगाइ ॥
औषधतोलेदोइ भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
सहत पाउ भरि लीजिये, तासँग देउखवाइ ॥
याविधि कीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-वायभरंगी कूटलै, और मुसव्बर लाइ ॥
डारै हयके कानमें, तिलको तैल जराइ ॥

अन्य ।

दोहा-कुटकी हर्र बहेरलै, शिलाजीत गुड आनि ॥
हरदी साबुन सोंठि पुनि, हरदीदारु बखानि ॥ १ ॥

बकली खूसेकी बहुरि, बीस टकाभरि जानि ॥
सबको भाग समानले, आठसेर जल आनि ॥ २ ॥
चौपाई–सब औषध अधकचरा कीजै। जल मिलाइ परिपक्ककरीजै॥
चौथाहींसा जल रहिजावै। तब उतारि मलि छानि धरावै॥
ताकेहींसा तीनि करीजे। तीनि रोज नित प्रातहि दीजै॥
याविधि चौदह दिन लगु करिये।तापीछे विधि यहअनुसरिये
पाव एक मेथी मँगवावै। सेठिसेरभरि मिलै पकावै॥
दोहा–काढा प्याइकै दीजिये, यही सहेला रोज॥
पानी औटा दीजिये, रोगकरहै न खोज॥

अथ वातगुर्ग लक्षण।

दोहा–गर्दन कन्धो जासुको, सूखि तुरीको जाइ॥
चमड़ा चपके हाड़सो, वातगुर्ग सो आइ॥ १॥
सूखाते ताकी पीठि फिरि, पीड़ा अति अधिकाइ॥
सूखब ताको होइ कम, यह औषध करवाइ॥ २॥
रंडतेल तिलतेल सम, दोऊ लेउ मिलाइ॥
तामें थोरा डारिये, मैनाशिलहिको लाइ॥ ३॥
सूखेपर मलिदेइ सो, रंडपात सेंकवाइ॥
बाँधै ऊपर ताहिके, शालहोत्र मत आइ॥ ४॥
चौपाई–एक जगह जो सूजनि आवै। होइ अराम अश्व सुखपावै॥
जो अराम नहिंदेइ दिखाई। तौ ताको चीरौ गिरवाई॥
चारोपाँइ उपरकरि बाँधै। ता ऊपर फिरि यह विधि साधै॥
सूखिखाल जहँ देइ देखाई। ताके पाँजर देउ चिराई॥
आँगुर भरि तहँ घाउ करावै। रंडाकी चोंगलि बनवावै॥
तेहि लगाइ करि फूँकै वाही। घाउमें हवा बहुत भरिजाही॥
खाल पकरि चुटकी भे लेहू। भीतर हवा भरै तेहि देहू॥

देउ दबाइ हाथते वाही । चमड़ा हड्डी छाड़ै जाही ॥
दफा एक दुइ तीनि करीजै । तेहिके उपर और विधि कीजै ॥
मिला मैनशिलतेल मँगाई । ऊपर लिखा जौनहै भाई ॥
जखम माहिं सो तेल भरीजै । सूखीजगह दाबि करि दीजै ॥
टाँका घाउम देव देवाई । फिरि घोडेको ठाढ कराई ॥
काठ तिपाई यक बनवाई । पेटतरे सो देउ गड़ाई ॥
घोड़ा फिरि बैठै नहिं पावै । सोई जतन स्वामि करवावै ॥
जखम पास सूजतिहै ताके । निकै पीबु चीरिये वाके ॥
फिरि तापर मलहमलगवावै । होइ अराम अश्व सुख पावै ॥
फेरि बताना देखैतेहिको । देइ मसाला वाजिव वहिको ॥

अथ ऊर्द्धवायुलक्षण वा दवा ।

दोहा–अंडकोश यक तरफको, ऊपरको चढिजाइ ॥
अंड चढौ जेहि तरफको पावतौन लँगराइ ॥ १ ॥
नीबपात उसवायकै, देइ बफारा ताहि ॥
करै लँगोटा वस्त्रको, बाँधै भरता वाहि ॥ २ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–यह औषध करि पाँचादिन, जो अराम नहिं होइ ॥
ताकी औषध कहतहौं, जानि लेहु अब सोइ ॥ १ ॥
अंड एक चाढिजाय सबु, नहीं देखाँईदेइ ॥
औषध कीजै ताहि की, ताते नीको होइ ॥ २ ॥
यह बीमारी कठिनहै, अंड चढा रहि जाइ ॥
पाँवसूखि तेहि जातहै, ताजुब नहिं मरिजाइ ॥ ३ ॥
पीपरि तोले एक लै, ताको लेउ कुटाइ ॥
ताते दुगुनी सोंठिलै, तामें देउ मिलाइ ॥ ४ ॥

तीनिसेर गोदुग्धलै, औषध लेउ मिलाय ॥
पहर एक दिन बीतरै, ताको देउ पिआय ॥ ६ ॥
चौपाई–पक्कीतोल दूधकी कही । सातरोज हय दीजै सही ॥
यक खुराक सौताज बताई । यतनी रोज दीजिये भाई ॥

अन्य ।

दोहा–पैरपिछारी माहिकी, पट रग देउ खुलाय ॥
खून निकारै ताहिते, बाजि नीक ह्वै जाय ॥ १ ॥
नीबपात मँगवाइकै, देइ बफारा वाहि ॥
बाँधै भर्त्ता नीबको, फिरि हुकना करु ताहि ॥ २ ॥

दवा हुकना ।

दोहा–अजवायनि अजमोदलै, हरदी सोंठि मँगाइ ॥
बायसिंगहि लाइ पुनि, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
औषध तोले बीस भरि, सातसेर जल माहि ॥
ताहि चुरावै अग्नि पर, तीनिसेर रहि जाहि ॥ २ ॥
फेरि उतारै अग्निते, खूब मलाय छनाय ॥
आधपाव तिल तैल लै, सो तेहि माहि मिलाय ॥ ३ ॥
हुकना कीजै वहीसे, और मसाला देय ॥
शालहोत्र मत जानिकै, देखि वताना लेइ ॥ ४ ॥

अथ बलगम वायु लक्षण वा दवा ।

दोहा–पाछिल धर काँपत अहै, वात भई यह लोय ॥
बैठै सो मुश्किल किये, उठिकै ठाढो होइ ॥ १ ॥
पैर हुओ लरखरतिहैं, राह चलतमो आनि ॥
ये लक्षणहैं जाहिमें, बात बलगमी जानि ॥ २ ॥
चौपाई–खुरासानि अजवाइनि कही। सोंठि जवाइनि पीपरि लही॥
काराजीरि भेलावाँ लावै । सबै दवा यकमाहि मिलावै॥

दोहा—हरदी दोनौं कैफरा, अरु कालेश्वर आनि ॥
घोड़वच अरु बंडार कहि, भाग बराबरि जानि ॥ १ ॥
कूटै अति बारीख करि, सबको लेउ मिलाइ ॥
पैसाभारि लै शाम को, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दानादीजै मोठको, अग्नि माहि पकवाइ ॥
मेथी लीजै पाउभारि, सोऊ लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
तैल जौन लकवा विषे, कहो अहै सुखदाइ ॥
हयके पाछिले अंगमें, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
हुकना कीजै ताहिको, दवा लेउ मँगवाइ ॥
ऊर्द्धवायुमें जो कही, सोइ दवाई आइ ॥ ५ ॥
ऐसे घरमें राखिये, नहीं पवन छुइजाइ ॥
गरुई झूल मँगाइ करि, दीजै ताहि उढाइ ॥ ६ ॥

अथ गठिया वायु लक्षण वा दवा ।

दोहा—अगिले पछिले पाँवकी, गाँठीफूलि जु जाहि ॥
लंग करतिहै तासु पग, गँठिया जानौ ताहि ॥ १ ॥
कुचिला पैसा एक भरि, तिनको लेउ भुँजाइ ॥
गोली चना प्रमाणकी, ताको लेउ बनाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे साँझ को, गोली एक खवाइ ॥
यहिविधि दीजै नित्त प्रति, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

अथ धडकावायु लक्षण वा दवा ।

दोहा—बहुत चलतहै बाजि जो, की अति दौरोहोइ ॥
बात दबावति आनि तब, धड़का कहिये सोइ ॥ १ ॥
धड़काकी पहिचानि यह, सुस्त बदन है जाहि ॥
दिलमारे हफफाति बहुत, सीनाहालति आहि ॥ २ ॥

औषध कीजै जल्द तेहि, नाहिन यह गति होइ ॥
करै सवारी ताहि जब, ऐसिय गति तब सोइ ॥ ३ ॥
ताजा लोहू छागको, सेर एकसो जानि ॥
मिर्चैंपीसै टकाभरि, मिलवै तामें आनि ॥ ४ ॥
पाँचरोज यहि तरहसे, हयको देउ पिआइ ॥
लीजैसोंठि छटाँकभरि, दूनो गुड़हिं मिलाइ ॥ ५ ॥
हयको देउ खवाइ सो, तुरत नीक ह्वैजाइ ॥
खोलै ताके फस्त जो, तुरी सही मरिजाइ ॥ ६ ॥

अथ जहरवात लक्षण वा दवा ।

दोहा—हाथ पाँइ गर्दन सहित, सूजै हयकी आइ ॥
चौहर जाकी नहिं चलै, खाइ घास नाजाइ ॥ १ ॥
सूजि विथारि पानी बहै, लखि लबाबके तौर ॥
सो जलके लागे बढ़ै, जहरवात करि गौर ॥ २ ॥
हरदी पिपरामूल अरु, कुटकी सोंठि मँगाइ ॥
भाँग भेलावाँ मिर्चयुत, सबै समान कराइ ॥ ३ ॥
औषध तोले षट सबै, सबको लेउ पिसाय ॥
दाना पाछे ताहिको, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—घमिरा पात मँगाइये, अंबरबेलि मँगाइ ॥
लेउ सँभालूपात अरु, पात धतूरा लाइ ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, जलमें लेउ पकाइ ॥
सहत सहत हय पीठिपर, ताकोदेउ धराइ ॥ २ ॥
चारिघरी लगु सेंकिये, याहीविधि सों जानि ॥
खुलति देह तब बाजिकी, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जरलौकाकी लीजिये, बकली तासु मँगाय ॥
निरगुंडी औ हींगलै, वच अरु सोंठि मिलाय ॥ १ ॥
लै पलाश पीपरि सहित, सैंधव वाइभरंग ॥
चारि चारि मासे सबै, जानौ सहित उमंग ॥ २ ॥
सेरएक लै गाइघिउ, औषध सबै मिलाय ॥
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वैजाय ॥ ३ ॥
सेंकनकी विधि जो कही, सेंक वहीविधि देइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, बाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अन्य जहरवात लक्षण ।

दोहा–बलगमते जो होतहै, जहरवात तनु आइ ॥
तासु वताने माहिं सो, रंग श्वेत दरशाइ ॥ १ ॥
बीरबहूटी एकपर, गुड़ लीजै लपटाय ॥
याविधि दीजै तीनि दिन, जहरवात मिटिजाय ॥ २ ॥

अन्य जहरवात लक्षण ।

दोहा– रंग बतानेको जरद, सूजनि करीं होय ॥
प्रथमहि औषधि जो कही, देतै नीको होइ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–अंड सूजि जाके गये, देखि वताना तासु ॥
प्रथम जौन औषध कही, ताको दीजै आसु ॥ १ ॥
तिलको तैल मँगाइकै, ताको देउ लगाय ॥
रूस पातलै जोसकरि, तिनको देउ बँधाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–दुहूँ रानमें जौन रग, तिनते खून कढाइ ॥
तापाछे यह औषधी, ताको देउ खवाइ ॥ १ ॥

लोन लहौरी घृतसहित, तोले डेढ मँगाय ॥
ते दोनौं मिलवाइकै, दीजै लेप कराय ॥ २ ॥
महुआपात मँगाइकै, तिनका लेउ उसेइ ॥
बाजीके वैजात्रिषे, बाँधि रोज सो देइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा—सूजनि सब पोतन विषे, जा बाजीके होइ ॥
खील सोहागा दीजिये, अदरखके रससोइ ॥
चौपाई—मासे तीनि सोहागा लीजे। सानिक अदरखके रसदीजै ॥

अन्य।

दोहा—भाठीकी जर सोंठि अरु, पीपरि मिर्च मँगाइ ॥
वकली गूलरि वच सहित, रिंगिनिकी जर लाइ ॥ १ ॥
चारि चारि मासे सबै, औषधलेउ मँगाइ ॥
वकली लीजै रेंडजर, मासे दुइ मिलवाइ ॥ २ ॥
सेर एकलै गाइघृत, औषध ताहि मिलाय ॥
रोज तीनिमें औषधी, हयको देउ खवाय ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—काराजीरी लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ ॥
अरु कचूर मँगवाइकै, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गोबरके रस माहि मो, लीजै खरिल कराइ ॥
छिरकामो सो तप्त करि, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
कद अरु मौसम देखिकै, या औषधको देइ ॥
चंडीके परतापते, बाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—टेसूफूल मँगाइकै, जलमेंलेउ पकाइ ॥
सोबाँधै दिन सातलौं, तुरी नीक ह्वैजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—मिर्च पान अदरख सहित, बीज कसौंजी लाइ ॥
दोइ टकाभरि लीजिये, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
जहरवात विष बेलि अरु, दूरिसही ह्वैजाय ॥
शालहोत्र मुनिनाहको, मतो गूढ़ यह आय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—राई पीपरि मिर्चलै, टका टका भरि लाइ ॥
हींग सोहागा लीजिये, और अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
लौंग अकरकरहा सहित, इनको लेउ मँगाइ ॥
पैसा पैसा भरि कही, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
सोंठि पीपरामूललै, कर्ष कर्ष भरि लेउ ॥
छालि सहींजन कूटिकै, ताहूको रस देउ ॥ ३ ॥
लघु अँवरा परमानकी, गोली लेउ बनाय ॥
प्रातसाँझ यक यक कही, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥
जहरवात नाशै सही, मंदअग्नि मिटिजाइ ॥
भोजनपर अति रुचि बढै, शालहोत्र मत आइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण वा दवा ।

दोहा—स्वाथ होइ जो देहमें, औ गर्दनमें जानि ॥
जकरिजाय जो वाजिकी, जहरवात सो मानि ॥ १ ॥
हींग सोंठि अजमोद लै, काराजीरी आनि ॥
भाग बरोबरि कीजिये, अजवायनि अरु जानि ॥ २ ॥
जलसों पीसै औषधी, लीजै तप्त कराइ ॥
स्वाथहोय जहँ अंगमें, दीजै लेप कराइ ॥ ३ ॥
स्वाथ सकल मिटि जाइ जब, तबकी यह विधि आहि ॥
रुधिर काढिये ताहिको, छातीकी रगमाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–वातरोगहै जाहि तनु, जहरवातअरुहोइ ॥
औषध ताकी कहतहौं, शालहोत्र मतजोइ ॥ १ ॥
मेथी लीजै सेर यक, तासम हर्र बखानि ॥
पात बकैना लेउ पुनि, सेर अढ़ाई आनि ॥ २ ॥
सज्जी लीजै सेरभरि, सबको लेउ पिसाइ ॥
भेड़ी मूत मिलाइकै, दीजै तेहि गड़वाइ ॥ ३ ॥
गाड़ै ताको सात दिन, लीजै फिरि निकसाइ ॥
पैसाभरि तेहि अश्वको, दीजै ताहि खवाइ ॥ ४ ॥
मंदआग्नि अरु बाइ पुनि, जहरवात हरिजाइ ॥
औषधदीजै सात दिन, हरिबल देत बढ़ाइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण वा दवा ।

दोहा–वरमपेट तर होइ जो, जहरवात सो आइ ॥
सबक कहतिहैं ताहिको, सो हयको दुखदाइ ॥ १ ॥
छाती अरु गर्दन विषे, तहाँ वरम जो होइ ॥
सबकी औषध एकहै, शालहोत्र मत सोइ ॥ २ ॥
जौलौंथोरी वरम है, बाजीके तनु माहि ॥
तौलौं यह औषधकरै, शालहोत्र मत आहि ॥ ३ ॥
गोबर लीजै महिषको, महिषीमूत्र मिलाइ ॥
डारै खारीलोन अरु, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लेप कीजिये ताहिको, वरम दूरि ह्वैजाइ ॥
वरम नहीं यासोंमिटै, अरु इजादि दरशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–काराजीरी पीसि जल, लीजै तप्त कराइ ॥
लेप कीजिये ताहिको, वरम दूरि ह्वैजाइ ॥

अन्य।

दोहा–भरता बाँधै नीबको, वरम नरम ह्वैजाय ॥
पछना दैके ताहि पर, दीजै जहर गिराइ ॥ १ ॥
भरता बाँधत जाइ फिरि, जखम साफ दरशाइ ॥
तब तापर मलहम धरै, जखम नीक ह्वैजाइ ॥ २ ॥
काराजीरी सोंठि अरु, नितहि खवावत जाइ ॥
तौलौं दीजै औषधी, जब नीको दरशाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–हरदी सज्जी लोनको, समकरि लेउ पिसाइ ॥
पछना दैके वरम पर, हयको देहु मलाइ ॥ १ ॥
पात रंडके गरम करि, ऊपर देउ बँधाइ ॥
जहर सकल गिरिजाइ जब, बाँधै नीब पिसाइ ॥ २ ॥
जखम साफ ह्वैजाइ जब, मलहम देउ लगाय ॥
शालहोत्र इमि उच्चरै, तुरी नीक ह्वैजाय ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–सहिंजन छालि मँगाइकै, लीजै ताहि कुटाइ ॥
यकइस दिन लगु दीजिये, एक टका भरि लाइ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा–जहर वातहै जाहि तनु, भूँख तासु घटिजाइ ॥
ताकी औषध जो अहै, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
सेर येक भरि लीजिये, पाँचो लोन मँगाय ॥
काराजीरी सेर भरि, दोऊ लेउ कुटाय ॥ २ ॥
सोंठि मिर्च पीपरि सहित, कालेश्वर अरु लाय ॥
हरदी अजवाइनि सहित, पिपरामूल मँगाय ॥ ३ ॥

वायभरंगहि लेउ पुनि, सेरु सेरु सब आनि ॥
हींग सहितलहसुनबहुरि, सातटकाभरि जानि ॥ ४ ॥
टका दोइ भरि लीजिये, एक खुराक बखानि ॥
शालहोत्र इमि उच्चरै, होइरोगकी हानि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–सिरसापात मँगाइकै, लीजै रॉंगु कढाइ ॥
फाहा ताको बाँधिये, तीनि दिवस सुखदाइ ॥ १ ॥
लीलाथोथा मेलिकै, फेरि देउ बँधवाइ ॥
षट दिनके पर्यंतमें, सूजनि सब पचिजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी साँभरि लोनलै, हरदी देउ मिलाइ ॥
औषध पैसा दोइ भरि, भागसमान कराइ ॥ १ ॥
औषधदीजे सात दिन,यतनी यतनी आनि॥
पात धतूर बँधाइये, एक दिवस यह जानि ॥ २ ॥
अरु पाती अंजीरकी, तेऊ लेउ मँगाइ ॥
सो बाँधे लै तीनि दिन,सूजनि सब मिटिजाइ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण वा दवा ।

दोहा–जहरवात जाको गहै, शरदी गरमी होइ ॥
आगे ताको है कहो, लक्षण लीजो जोइ ॥ १ ॥
काराजीरी तूतिया, वायभरंग मँगाइ ॥
लेउ सोहागा मिर्च अरु, मेथी कुटकीलाइ ॥ २ ॥
छालि सहींजनकी सहित,पाँचौलोन बखानि ॥
लीजै जंगीहर्र पुनि, लहसुन हालिम आनि ॥ ३ ॥
गूगुरपिपरामूरि अरु, पुनि अजवाइनि जानि ॥
लेउ मैनफल सोंठि पुनि, वच अरु हरदी मानि ॥ ४ ॥

चौपाई–मुर्दाशंख लेउ मँगवाई। सुमिलखार तामें मिलवाई॥
नागकेसरीको पुनि लीजै। वजनबराबरि सबको कीजै॥
दोहा–खुसियारी यक होतिहै, तृण ऊपर सो जानि॥
सहित चिरैता लीजिये, श्रीधर कहो बखानि॥ १॥
पैसा पैसा भरि सबै, औषधलेउ मँगाय॥
पाँचटकाभरि पीपरी, तासेंदेउ मिलाइ॥ २॥
लेउ धतूरे फल बहुरि, टका चारिभरि आनि॥
पाँचपसेरी लीजिये, मेषमूत्र यह जानि॥ ३॥
यक बरतनमें सो भरो, औषध सबै मिलाइ॥
सो चढ़वावै अग्निपर, लीजै ताहि चुराइ॥ ४॥
मूत्र सबै जरिजाइ जब, दीजै अग्नि बुझाइ॥
औषध ठंढी होइ जब, लीजै ताहि पिसाइ॥ ५॥
दुइ दुइ पलकी बाँधिये, यक यक गोली जानि॥
साँझ सकारे दीजिये, यक यक गोली आनि॥ ६॥
रोगघटै अरु बल बढ़ै, क्षुधा तासु अधिकाइ॥
औषधदीजै सात दिन, जहरवात मिटिजाइ॥ ७॥

अन्य लक्षण वा दवा।

दोहा–कर्णमूलके भीतरै,जाके सूजनि होइ॥
जहरवात तेहि जानिये, शालहोत्र मत सोइ॥
चौपाई–तोला एक मुसब्बर लीजै। पोस्तासुत मासेभरि दीजै॥
आँबाहरदि रजनि पुनि लेहू। छा छा मासे दोऊ देहू॥
दोहा–जलमें ताको पीसिकै, सीर गरम करवाइ॥
सोलै हयके कानपर, दीजै ताहि लगाइ॥

अन्य।

दोहा–सैंधव साबुन लीजिये, छिरका काटि मँगाइ॥
ताकी पोटरी बाँधिकै, दीज कान सेंकाइ॥ १॥

पाकि जाइ आमास जो, दीजै ताको फारि ॥
होत बिमारी कठिनसो, औषधकरै विचारि ॥ २ ॥

अथ शरदी वा गरमीते जहरवात होइ उन दोनौंकी दवा।

दोहा—ईसबंद पीपरि मिरच, हर्दी वाइभरंग ॥
अजवायनि घोड़बच बहुरि, काराजीरी संग ॥ १ ॥
सज्जी कुटकी सोंठि पुनि, राई गूगुर आन ॥
खील सोहागाकी बहुरि, पिपरामूल बखान ॥ २ ॥
सोरठा—साँभरि सोंचर आनि, चारि चारि तोले सबै ॥
सेर सेर पै जानि, लहसुन और पिआजु पुनि ॥
दोहा—नीब बकैना सहिजना, और कसौंजी जानि ॥
पाती लीजै सबनकी, चारि चारि पल आनि ॥ १ ॥
सबको कूटै एकसो, जलमेंलेइ पकाय ॥
गोली ताकी बाँधिये , फेरि शराब मिलाय ॥ २ ॥
तीनि तीनि पलकी सबै, गोली बँधै ताहि ॥
ताहि खवावै नित्यप्रति, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
लेउ पिसान मसूरको, सेर येक कहि ताहि ॥
ताहि शराब मिलाइये, रोज खवावति जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण वा दवा।

दोहा—जाकी सब देहीविषे, गूँथीसी परिजाय ॥
गूँथिनते लोहू चलै, जहरवात सोआय ॥
सोरठा—नीबूके रस माहिं, तजहि मिलावै आनिकै ॥
ताको लेप कराय, औषध दीजै खानको ॥
दोहा—सैंधव अजवाइनि सहित, वायभरंग मँगाय ॥
पाँच पाँच तोले सबै, तिनको लेउ पिसाय ॥ १ ॥
गोघृत पैसा पाँच भरि, तामें देउ मिलाइ ॥
यह औषध दिन सातमें, दीजै सकल खवाइ ॥ २ ॥

अन्य लक्षण वा दवा ।

दोहा—सूजनि ह्वैकै प्रथमही, फूटि फेरि जो जाइ ॥
जखम नीक सो होइ नहिं, बाजी अति दुबराइ ॥ १ ॥
काराजीरी मिर्च पुनि, अरु बंडार मँगाय ॥
जीरा लेउ सफेद पुनि, कुटकी सौंफ मिलाइ ॥ २ ॥
अरु घोड़बचकोलीजिये, भाग बरोबरि आन ॥
तीनिसेर साढ़े सबै, एती औषध जान ॥ ३ ॥
खुरासान अजवाइनी, सज्जी बाइभरंग ॥
पाव पाव सब लीजिये, औरौ कूट प्रसंग ॥ ४ ॥
सबको पीसि मिलाइकै, शालहोत्र मत जानि ॥
साँझ सकारे दीजिये, एक एक पल आनि ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण वा दवा ।

दोहा—चौहैं जाकी नहिं चलैं, जहरवात सो आहि ॥
या कछु सूजनि होतिहै, जानि लेहु मनमाहि ॥ १ ॥
हर्र चिरैता सोंठिलै, कुटकी पीपरि आनि ॥
रेवतचीनी लेउ पुनि, नागरमोथा जानि ॥ २ ॥
गूदी लीजै बेलकी, अरु अजमोद मँगाइ ॥
सेर येक जल डारिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—आधाजल जरिजाय, ताहि उतारि मिलाइये ॥
ताको लेहु छनाय, कबि श्रीधर यह जानिये ॥ १ ॥
वंशलोचनहि लाइ, टका एक भरि तौलिकै ॥
तामें देउ मिलाइ, ताहि पिआवै बाजिको ॥ २ ॥
लीजै चना भुँजाइ, दाना दीजै ताहिको ॥
फेरत नितप्रति जाइ, दुहूँ बखतमो दीजिये ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—घुँगिचना पिसातुलै, तासम मिरच मिलाय ॥
दीजै हयको पाव भरि, तहँ चौंह खुलिजाय ॥

अन्य खूनते जहरवातके लक्षण ।

चौपाई—अस्सवारी हयको वहु परै । की अति बोझा तापर धरै ॥
की गरमीकी मौसम होई । जहरवात बाजीके जोई ॥

दोहा—खूनहि सूजनि खातिहै, होसु रहै नहिं ताहि ॥
हफफै अरु गिरि गिरिपरै, जहरवातसो आहि ॥ १ ॥
खाली ताको फेरिये, जब ठंढो ह्वै जाय ॥
शीतोदक सों धोइकै, शीतल नीर पिआय ॥ २ ॥
साँभरि लोनु मिलाइकै, यवके आटा माहि ॥
आधपाव मौताज करि, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
फिरि ताको कैजा करै, जलसों छिरकत जाइ ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, याही जतन कराइ ॥ ४ ॥

सोरठा—बीति घरी भरि जाइ, कैजा खोलै ताहिकी ॥
हरीदूबको लाइ, ताहि खवावै बाजिको ॥ १ ॥
तुरी मिजाजहि माहि, जानै गर्मी बहुतहै ॥
रंगबताने काहि, सुर्खहोइ अति तासुको ॥ २ ॥

दोहा—होइ नितप्रति सुस्तसो, भूँखरहै नहिं ताहि ॥
यहिविधि ताकी औषधी, शालहोत्रमत आहि ॥

अन्य ।

दोहा—ताकी तारू जीभमो, दीजै फस्त खुलाइ ॥
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥

दवा ।

दोहा—हर्र बहेरा आँवरा, और सहतरा आनि ॥
सौंफ सहित सब लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥

सोरठा—यवको आटा लाइ, सबको पीसि मिलाइकै ॥
हयको देउ खवाय, पानीके सम जानिये ॥

अन्य लक्षण ।

सोरठा—खून सूखतो जाइ, खबरि तासुकी लेइ नहिं ॥
खून तासु ह्वैजाइ, पानीके सम जानिये ॥
दोहा—वरम होतिहै ताहिते, बाजीके तनुमाहि ॥
जोतौ सूजनि होइ नहिं, तौ यह गति ह्वै जाहि ॥ १ ॥
पेटु तासु फूलारहै, सुस्ती अति सरसाइ ॥
औरौ मन मारे रहै, भूँख तासु घटि जाइ ॥ २ ॥
जीरा काला सहतरा, अरु अजमोद मँगाय ॥
पात कसौंजी सौंफ पुनि, एक एक पललाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—सबको पीसि मिलाय, दानापाछे साँझको ॥
हयको देउ खवाय, दाना आधो दीजिये ॥ १ ॥
अधिक रोग दरशाहि, फस्त तासुकीखोलिये ॥
जीभहि तारू माहि, तंग तरेकी रग विषे ॥ २ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा—जहरवात ज्यादाभये, खून जर्द परिजाइ ॥
जमत पेट तर आइकै, तुरी रोज दुबराइ ॥ १ ॥
कोई हयकी देहमें, छालासे परिजाँय ॥
कछुक दिननके बादि फिरि, पाकि सहीतेजाँय ॥ २ ॥
मोथा हर्दीके सहित, विषखोपरा जर आनि ॥
जीरा लेउ सफेद पुनि, औ महुरेठी जानि ॥ ३ ॥
डेढ डेढ तोले सबै, यवके आटा माहि ॥
ताहि खवावै सात दिन, जहरवात मिटि जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा—पेटु जासु फूलो रहै, दाना घास नखाय ॥
शालहोत्र मत जानिकै ताको कहौं उपाय ॥
सोरठा—दागै ताको आनि, तोंदी आगे जानियो ॥
आँगुर चारि बखानि, बीच दीजिये नाभिसो॥
दोहा—सेंदुर दूध सहारको, तिलको तेल मँगाइ ॥
एक एक मासे सबै, तापर देउ मलाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होतिहै, तीनि रोज लगु जानि ॥
फिरि वह कमती परतिहै, ता विधि कहौं बखानि ॥ २ ॥
सोरठा—पछना देउ देवाइ, चारौ तरफन दागके ॥
मुनिवर दियो बताय, पै नस्तर बारीखसो ॥

दवा खानेकी ।

दोहा—स्याहजीर पुनि कूटलै, दुइ दुइ तोले जानि ॥
एकमास पुनि ताहिको, रोज खवावो आनि ॥ १ ॥
नीब सँभारू पातको, देइ बफारा ताहि ॥
मलहम ताहि लगाइये, पीबु जबै बहिजाहि ॥ २ ॥

अन्य लेप ।

चौपाई—रेहू हरदी कनिक मँगावै । लोनु आँबिली सम पिसवावै ॥
पानी घोरि गर्म करवावै । तीनि दाँइसो लेप लगावै ॥
ताके पीछे मलहम करै । याते जहरवात सब हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—लीलाथोथा अरु कामीला । आधपाव लै दूनौं तोला ॥
हरदी पीत रार मँगवाई । सेर सेरकी वजन कराई ॥
दुइसेर तिलको तेल मँगावै । ताहि बराबरि साबुन लावै ॥
पीसि छानिकै मलहम करै । पावकमध्य पकाकै धरै ॥
घायन ऊपर याको चुपरै । तुरतै जहरवातको हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–काराजीरी औ बंडारा । लेप करौ रुज जैहै मारा ॥
यासम और लेप नहिं होई । सूजनि वरम जाइ सब खोई ॥

अन्य ।

चौपाई–मिर्च कसौंजी अदरख पाना । चारौ करौ एक परमाना ॥
सातरोज घोड़े मुख धरै । जहरवात विषवेली हरै ॥

अन्य ।

दोहा–सेंदुरुफ सोंठि शंखिया, वीरबहूटी आनु ॥
जवाषार माजूफलै, समुदषार सो जानु ॥
चौपाई–लेउ करनफल देउ मिलाई । अदरखरसमें पीसिबनाई ॥
तीनि तीनि मासे सबलीजै । गोली मासे यक यक कीजै ॥
यक गोली नित प्रात खवावै । जहरवातको खोज नशावै ॥

अथ जहररोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–मुखते बहु लारै गिरै, दृगन नीर अधिकार ॥
जहर रोग सो जानियो, शालहोत्र मत सार ॥
सोरठा–पिपरी राई सोंठि, हरदी मिरच मिलाय सम ॥
रोग डारिहै खोंटि, पिंडीकरि दीजै तुरय ॥

बफारा ।

सोरठा–दलअंडाको आनि, और खिरहरीको लियो ॥
अरु अहरा परमानि, याहीतें सेंकौ सुघर ॥

अन्य ।

चौपाई–सुमिलपार सेंदुरुफ लैआवै । अकरकारा औ मिर्च मँगावै ॥
मुर्दाशंख पापरी खारा । तोला चारि चारि सब डारा ॥
दुइतोला तृतिया प्रमाना । पीसि छानि अदरखरस साना ॥
ताकी गोली करौ विधाना । रती चारि भरिहै परमाना ॥
याते रोग जहरको खोई । बुधजन जतन करै जो कोई ॥

अन्य ।

चौपाई–तोला भरि पारा मँगवावै । गुड़ पुरान दुइ तोला लावै ॥
रहसनि अजवाइनिको लीजै । दुइ दुइ तोला वजन करीजै ॥
पीसि छानि गोली पटकरै । तीनिरोज मुखमेंसो धरै ॥

अन्य ।

चौपाई–रेंडी स्याह सिर्च पिसवावै । बातीकरि इंद्री चलवावै ॥

अन्य ।

चौपाई–जवाखार अरु रेवतचीनी । धेला धेला भरि करि लीनी ॥
चीनी आधपावमें घोरै । हयको देय सकल दुखहरै ॥

अन्य ।

चौपाई–नागोरीकोसाग मँगावे । चीनी मिलै अश्व मुखनावै ॥
खुलै पेशाब रोगको हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अन्य ।

चौपाई–नागोरी असगँध लै आवै । टुकराभरि घृत माहि सनावै ॥
याकेदियेजहर हरिजावै । शालहोत्र यह वचन सुनावै ॥

अथ जहरदौरा रोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–मुख सूजै गिलटी परै, देहभरेमें जानु ॥
कोई कोई तुरँगके, छाला परै सो मानु ॥
चौपाई–बहुत कठिन रुज याको जानौ । दवाकरौ जलदी उधवानौ ॥
सेर एक दल तूत मँगावै । एक छटांक मिरच मिलवावै ॥
दोहा–चनाके आटामें मिलै, पिंड बनाय खवाय ॥
तीनि चारि दिन दीजिये, तुरी नीक ह्वैजाय ॥
चौपाई–जो तोरई बंडार कहावै । मुख सूजनि पर पीसि लगावै ॥

दोहा–जौन बतीसा लिखाह, मानुष खुपरी वाल ॥
तौन मसाला दीजिये, तुरी नीक ह्वै हाल ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतअनेकवातव्याधि वर्णनोनामद शमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ चाँदनी मारनेकी विधि ।

दोहा–करते हयके माथलौं, हनै चपेटा जानि ॥
आँखिपलटि जावै जबै, करै मर्ज पहिचानि ॥

चौपाई–रोग चाँदनी लक्षण भाषौ । जो निदान मनमें गुणिराखौ ॥
मारै हयको आकसमातै । देर न लागै दाना खातै ॥
घाव अंगमें जाके होई । हनै चाँदनी ताको सोई ॥
प्रथम रोग मस्तकमें आवै । अंग अंगमें फिरि घुसि जावै ॥
हाथ पाँइ नाहिं झुकै झुकाई । और पूँछ लकुटी होजाई ॥
उदर कठोर बहुत ह्वैजावै । अँगुरी नाहीं गड़ै गड़ावै ॥
ठाढरहै महिमें नाहिं परै । दाना घास सबै परिहरै ॥
पांच सात दिन ठाढो रहै । ता पाछे हय मृत्युइ गहै ॥

दवा ।

चौपाई–महिषी गोबर लै ढक एका । गुड़पुरान लै दून विवेका ॥
चनाके आटा संग खवाई । रोग चांदनी दूरि कराई ॥

अन्य ।

चौपाई–मेथी तीनि टकाभरि लीजै । समकरि लहसुन तामें दीजै ॥
पिपरी मिरच सोंठि अरु पाना । छालि सहींजनकी सम आना ॥
कंज मैनफर समयक करौ । पैसाभरि गोली अनुसरौ ॥
प्रात सांझ घोड़ेको दीजै । रोगघटै जो औषध कीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–श्याम चर्म अजयाको लावै । घोडाके मुख टाप बँधावै ॥

अन्य ।

चौपाई–लहसुन हींग सोहागा आनी । काराजीरी औ अजवानी ॥
पिपरी मिर्चैं सोंठि भरंगी । सज्जी सोंचर सैंधव संगी ॥
सिंघजराव भस्म करिलेहू । तब औषधके माहीं देहू ॥

अन्य ।

चौपाई–मूल जवासा औ लै खूसा । पातकटैया और अतीसा ॥
विषखपरा औ अदरख पाना । गोली करु औरा परमाना॥
भुने चनाके आटा देहू । यक दुइ पहर बंद करि लेहू ॥
पानीतत्त अधिक करवाई । शीतल करिकै देउ पिआई ॥

अन्य ।

चौपाई–अर्कधतूर सेंहुड़ा जारी । अजवाइनि हरदी लै डारी ॥
घोड़ेका यह देउ खवाई । जाइ चाँदनी रोग नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई–अर्कधतूर सेंहुड़ा जारी । आँवाराख छानिकैधारी ॥
सब यकत्र करि अंग मलावै । बंद जगहमें ताहि बँधावै ॥

अन्य ।

दोहा–जबलौं मुख बगरो रहै, तब यह दवा बनाय ॥
एक मुर्गलै मारिये, बनवै यही उपाय ॥ १ ॥
चोंच चरण तिहि काटिकै, धुरवै जलमें तासु ॥
काढ़ितिन्हैं कूटै बहुत, सहित अस्थि अरु मासु ॥ २ ॥
मिलै महेला सेर दो, या सब लै यकसेर॥
आध पाव कालीमिरच, मिलै तुरँग मुख गेर ॥ ३ ॥
दिन चालिस शामौ सुबह, देइ गरम जल प्याय ॥
लै तुरंग बाँधै तहाँ, जहँ कहुँ पवन न जाय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–कीतौ मारे कागको, चरण चोंच लैलेइ ॥
गोहूँमें की साषमें, पकै तुरँगको देइ ॥

अन्य ।

दोहा–जारी खोपरी मनुजकी, ले छटाँक परमान ॥
और कमीला आठ भरि, इता मिलावाँ मान ॥ १ ॥
आधपाव गूग्गुरु मिलै, कालेतिल पकपाव ॥
डारि सोहागा टंक षट, सबलै बटी बनाव ॥ २ ॥
वजन अश्वको दीजिये, एक छटाँक प्रमान ॥
पवन नलागै अंगमें, बचै तु भाग्य अमान ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जो रद बैठावै तुरँग, ताको यही उपाय ॥
तौ त्रियको ऋतुवसन जो, लीजै बहुत मँगाय ॥ १ ॥
नीरसेर दशमें चुरै, पट वाहीमें डारि ॥
आधो जरिजावै तबै, लीजै ताहि उतारि ॥ २ ॥
नासु दीजिये अश्वको, पाँच दिवस यहि रीति ॥
दानापानी बंद करि, बचिहै अश्व प्रतीति ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई–पल्ली एक पकरि लै आवै । पूँछ मूँड ताको कटवावै ॥
देह समूची आटा सानी । घोड़ा खाय नीक सो जानी ॥
दोहा–औषध कीजै जो कही, लाग न आवै कोय ॥
दधिसुत रविसुतको हनै, बहुरि नवीनो होय ॥
मंत्र–चंडी चंडी तू परचंडी आवत चोट करै नवखंडी ॥ हयराखु हियाराखु थून्हि बड़ेरा राखु दोहाई हनुमत वीरकी अगस्त्य मुनिकी फटस्वाहा ॥

चौपाई—यहै मंत्र दिन तीनि जु झारै । होइ अलप तबहू ना मारै ॥

अन्यमत लक्षण वा दवा ।

दोहा—हवा एकहै वात सर, हयको पकरत आइ ॥
ताके दोइ प्रकारहैं, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
अगिले धरमें होइ जो, ताहि चाँदनी जानि ॥
पछिले धरमें होइ सो, वात कैसरा मानि ॥ २ ॥
होति आइहै बाइ वह, हयकी देही माहिं ॥
अंग सिथिल हैजाताहै, ये लक्षण दरशाहिं ॥ ३ ॥
चाँदनि मारै जाहिको, बंदतासु मुख होइ ॥
दानाघास न खाइ सो, ऐसे लक्षण जोइ ॥ ४ ॥
रंग वतानेको जरद, स्याही लीन्हें होइ ॥
दूनों वाइन माँझमें, लेइ वताना जोइ ॥ ५ ॥
दूनौंकी ये औषधैं, हैं जानौ सो ताहि ॥
है असाध्य यह जानियो, दवा तुरत करु वाहि ॥ ६ ॥
बाँधै बंद मकानमें, हवा जहाँ नाहिंजाय ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ ७ ॥

दवा ।

दोहा—नमक लहौरी लाइकै, ताको लेउ पिसाइ ॥
डारै हयकी आँखिमें, कपरा देइ बँधाइ ॥ १ ॥
खुलन आँखि नाहिं पावई, अस पोषित करिदेइ ॥
तापीछे यह औषधी, सो वहि हयको देइ ॥ २ ॥

दवा खानेकी ।

दोहा—तैलरंडको लीजिये, पाव एक मँगवाइ ॥
ताते दूनो तैलतिल, दोऊदेउ पिआइ ॥

अन्य ।

चौपाई—अजवाइनि अजमोद मँगावै । सोंठि पीपरामूल मिलावै ॥
कुटकी हरदि भेलावाँ लेई । और कैफरा तामें देई ॥
खुरासानि अजवाइनि लीजै । अरु घुरसारी तामें दीजै ॥
कालेश्वर घोडबच लैआवै । औरौ हरदी दारु मिलावै ॥

दोहा—देवदारु गुग्गुल सहित, काराजीरी आनि ॥
असगँध अरु पीपरि कहौं, आँबाहरदी जानि ॥ १ ॥
रंडतेलमें सानिये, अरु कपरा छनवाय ॥
आधपाउ मौताजयक, हयको देउ खवाय ॥ २ ॥
यहि विधि दीजै सात दिन, रोग दूरि हो जाइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ३ ॥

चौपाई—मेथी पक्के दुइ सेर लावै । ताहि महेला खूब पकावै ॥
पानी लेउ गरम करवाई । ठंढा करिकै देउ पिआई ॥

अन्य ।

दोहा—नागौरी असगँध सहित, अरु अजवाइनि जानि ॥
ईसबंद अजमोदलै, कुटकी सोंठि बखानि ॥ १ ॥
मेथी सोवा बीजलै, हरदी गूगुर आनि ॥
काराजीरी लेइ पुनि, भाग बरोबरि जानि ॥ २ ॥
सबै औषधी लीजिये, अधअधपाव कराइ ॥
भूँजो आटा मोठको, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
औषधि पैसा पाँच भरि, हयको देउ खवाइ ॥
देउ दवाई अश्वको, साँझ समयमें लाइ ॥ ४ ॥
दाना दीजै ताहिको, अग्निमाहिं पकवाय ॥
पानी दीजै गर्मकरि, शालहोत्र मत आय ॥ ५ ॥

अन्य ।

चौपाई—नकछिकनी तोलाभरि लीजै । दमरी भरि हरदी तिहि दीजै ॥
अंडा मुरगीकेर मँगावै । तामें औषध दुऔ मिलावै ॥
दोहा—भूँजो आटा मोठको, तामें देइ मिलाइ ॥
पानी पीछे अश्व को, याको देउ खवाइ ॥ १ ॥
जबतक नीको होइ नहिं, दिये औषधी जाइ ॥
वात कैसरा कठिनहै, मृत्यु समान लखाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—मेथी लहसुन पीपरी, मिरच सोंठि अरु पान ॥
छालि सहींजनकी कही, कंज मैनफल आन ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, कूटै कपरा छानि ॥
सातटकाभरि औषधी, गोली चौदह जानि ॥ २ ॥
साँझ सबेरै दीजिये, यक यक गोली आनि ॥
भूँखबढै अति ताहिकी, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि पीपरि मिरच, काराजीरी आनि ॥
सैंधव सोंचरु हींग पुनि, सोंठि सोहागा जानि ॥ १ ॥
अदरख पान जवास जर, विषखोपरा मँगवाय ॥
महिषी शृंग जरायकै, दीजै ताहि मिलाइ ॥ २ ॥
कूटै अति बारीख करि, गोली लेइ बँधाइ ॥
अँवरासम गोली करै, भाग समान कराइ ॥ ३ ॥
चौपाई—भूँजो आटा यवको लावै । गोली तामैं एक मिलावै ॥
शाम सबेरे देइ खवाई । यक यक गोली ताहि बताई ॥
दोहा—जहाँ वायु नहिं लागई, बाँधै हयको लाय ॥
गर्म नीर करवाइकै, तिहि सो देउ पिआय ॥

अन्य ।

दोहा–टाट कि चमड़ा सुर्गको, बाँधै आँखिन माहि ॥
कीतौ जंबू खाललै, करु अँधियारी ताहि ॥

अथ जोखाम कनारैके लक्षण वा दवा ।

दोहा–नाक बहै हफ्फै अधिक, दाना घास नखाय ॥
सो तुरंगको जानिये, रोग कनार बताय ॥
चौपाई–जाहि कनार होइ अति बिगरो । दुखदेवै अश्वाकोसगरो ॥
याही ते कुब्बक अनुसारै । याविधि औषध ताहि विचारै ॥

नासु ।

चौपाई–भटकटायफलको लै आवै । अजैदूधमो मलि छनखावै ॥
वाही दूध क दीजै नासू । साँझ सकारे दुइ दिन तासू ॥
श्लेष्मा जब सब झरिपरै । तव खानेकी औषधकरै ॥

दवा खानेकी ।

चौपाई–हरदी सैंधव साँभरि आनै । टका टका भरि तीनौं जानै ॥
चारि टका भरि अदरख लावै । पावसेर गुड़आनि मिलावै ॥
सकल पीसि बासन औटावै । क्वाथ बनाय अश्वमुखवावै ॥
सातरोज लगु देउ खवाई । सकल कनार दूरि होजाई ॥
अजमाई यह औषध जानौ। याते अधिक और नहिं मानौ॥

अन्य ।

छंदतोमर–सैंधव सो पीपरि सारु । बंडार गुरच विचारु ॥
चारों कि गोली बाँधु। हयरोग ऊपर साधु ॥
जब मिटै अंगनि रोग । तब दीजियो यहि भोग ॥
पुनि देउ प्रात विचारि । मुनि यों कहैं निरधारि ॥
दोहा–मोराशिखाहै औषधी, कै सैंधवके योग ॥
नासुदेइ प्रातै समय, मिटै कनारी रोग ॥

अन्य।

छंदनराच–पटोलमूल पीसिकै सो खांडमें मिलाइये।
महूष मेलिकै प्रमाण नार वार लाइये॥
सबैटका प्रमाणलै सो नासु बाजि दीजिये।
समै सरद पाइकै कनार ताहि छीजिये॥

अन्य।

सोरठा–गुरच हरद औ तार, गूदी बेल मँगाइए॥
करौ नासु निरधार, हयको दीजै शिशिर ऋतु॥

अन्य।

दोहा–तेलमिलै गोमूत्रसों, दीजै अग्नि पचाय॥
अर्ध भाग वाको रहै, नास देउ सुख पाय॥

अन्य।

छंदचंचरी–भाँति भांतिन बाजिके जब पाइये सुखरोगको।
चिरचिरा गोमूत्रको लै अजै मूत्र सँयोगको॥
तीनि वस्तु मिलाइकै सुठि नासु दीजै बाजिको।
मतो ग्रंथ विचारि मुनिवर कह्यो तुरकी ताजिको॥

पिंड।

छंदचंचरी–सौंफ मिर्च मिलाइकै चकचूनिहै सुखदानिकै।
सहत सहित शतावरी सम सजो पिंड मिलाइकै॥
पिंडयुक्त सु होय बाजी देहु ताहि पिआइकै।
अंग अँग सब रोग नाशै कहत मुनि चितलाइकै॥

अन्य।

छंद–कंकोल केतकी मिलाय दाख खांड़लै समान।
महुरेठी पीपरी मिलाय पिंडिका करौ प्रमान॥
देहु बाजिको सो खाय पुष्ट होय चारु अंग।
शालहोत्र देखिकै विचारि देत व्याधि भंग॥

छंदपद्धरी–करि भाग युक्तहु त्रै मिलाय ।
पुनि डारि पिंड वाजी खवाय ॥
अतिअबल बाजिके बलनिधान ।
मुनिमत विलोकि औषै सुजान ॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–दधिवस्त्र बाँधे सहतौ मिलाय ।
सो पिंडदेहु वाजी खवाय ॥
अति वृद्ध होय सो तुरी ज्वान ।
कबहूँ न होय सो सदनितान ॥

अन्य ।

छंद भुजंगप्रयात–भली कूटकी मध्य सौंफै मिलावै ।
धिड़ंगै हिलै शुद्ध चीतो मँगावै ॥
नशै आलसै बाजि वेगै बढावै ।
कहो चारुसो पिंड याको खवावै ॥

अन्य ।

छंदहरिगीतिका–बात कफ बाजी कनारै ताहि यह औषधकरौ ।
लेउ लहसुन नागकेसरि मूल पीपरि सम धरौ ॥
गुर्च लैकै सम मिलावहु पीसि करुये तेलसों ।
नासु याको देहु बाजिहि मिटै रोगन जेलसों ॥

अन्य ।

दोहा–की कैफराको पीसिकै, नासु नालभरि देय ॥
सकल बुखार निकारिहै, यहिविधि करि सुखलेय ॥

अन्य ।

दोहा–की अतीस यकभरि अवटि, पैमें धूप सुखाय ॥
ता आधो सैंधव मिलै, जैफल आधो नाय ॥ १ ॥

पीसि छानि सब एक करि, धरि राखै बनवाय ॥
साँझ सकारे दोरती, नासु दिये सुख पाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–श्रुति तोलाघृत सम सहत, कछु कैफर तिहि डारि॥
आधो आधो दुहुन पुट, नासु दिये दुख हारि ॥

अन्य ।

चौपाई–कुटकी कैफर पिपरामूरी । सोंठि जवायनिकै सम तूरी ॥
बाउभिरंग मैनफल हरदी । कंटकारिफल एकै मरदी ॥
अकरकरा गुड़ चौगुन करै । खासी शीत कनारै हरै ॥

अन्यमत कनारकी दवा ।

दोहा–रेजिस होइ दिमागमें, आवत नथुना माहि ॥
नथुनाते पानी झरै, की गाढ़ो कफ आहि ॥ १ ॥
श्वेतहोइ की तौन कफ, केवल शरदी आइ ॥
देखि बताना लीजिये, सोउ श्वेत दरशाइ ॥ २ ॥
बाजि कनारो होइ जो, बिगरत औषध जाइ ॥
ताते रोग अनेक जेहि, होत बाजि तनु आइ ॥ ३ ॥
होइ कनारो अश्व जो, देखि बताना लेइ ॥
रंग जानिकै ताहिको, तब औषधि को देइ ॥ ४ ॥
होइ बताने माहि जो, सफराको रँग आइ ॥
गरम औषधी जे अहैं, वजन कमी करवाय ॥ ५ ॥
रंग बताना देखिये, वात पित्त कफ रक्त ॥
खुला देखाई देइ जो, करौ हिफाजति सक्त ॥ ६ ॥

अन्य मसाला ।

दोहा–पीपरि पिपरामूल अरु, स्याह मिर्च मँगवाइ ॥
और लेइ अजमोदको, सोंठि सहित मिलवाय ॥ १ ॥

अजवाइनि लीजै दुवौ, वजन बरोबरि आनि ॥
चारि चारि तोले सबै, औषध लीजै जानि ॥ २ ॥
लेइ भेलावाँटकाभारि, ते सब लेहु कुटाइ ॥
वीज धतूरे लीजिये, तोला एक मँगाइ ॥ ३ ॥
तेऊ लीजै कूटि करि, कपर्छान करवाय ॥
सब औषध यकठा करै, ताकी विधि यह आय॥ ४ ॥
दीजै ताको साँझको, दाना पीछे लाय ॥
औषध तोले चारि सो, हयको देउ खवाय ॥ ५ ॥
या विधि कीजै आठ दिन,हयको औषध आनि॥
क्षुधाबढै अति तासुको, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अन्य नासु ।

दोहा-सूखि तमाखू छानिकै, और कैफरा छानि ॥
ये दोनौं यकठा करै, भाग बरावरि आनि ॥ १ ॥
रंडकि छूछी माहिधरि, हयके नथुना माहि ॥
फूंकिदेइ अतिजोर सों, सब रोजासि झारिजाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-लाले मिर्च पावभरि लीजै । तासम लहसुन तामें कीजै ॥
तीनि पाउ तिल लेउ मँगाई । हींगटकाभरि खील कराई ॥
दोहा-बाँधौ गोली पंचदश, अदरखके रससानि ॥
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ १ ॥
मोठके आटा साथमें, हयको देउ खवाय ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, अश्वनीक ह्वैजाय ॥ २ ॥

अन्य थोरी शरदी होइ ताकी दवा ।

दोहा-हालिम हरदी सोंठिलै, स्याहमिर्च अरु लाइ ॥
तीनि टकाभरि तौलिकर, गुड़के साथ मिलाइ ॥ १ ॥

बाजिहि दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वैजाय ॥
थोरी शरदी होइ जो, ताकी औषध आय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—जाहि कनारे साहिसो, सफरा अति अधिकाइ ॥
ताके बलगम गिरतहै, जरदी मायल आइ ॥ १ ॥
साँकलेतमें ताहिके, नथुनां बोलत आहि ॥
तौ गरमी अति जानियो, शालहोत्र मत माहि ॥ २ ॥
वरम होतिहै नाकपर, ता: हयके कछु आइ ॥
गर्मी है अति ताहिके, खाइ घास नहिंजाइ ॥ ३ ॥
तासु वताना देखिये, जो सफरा दरशाइ ॥
दीजै औषध गरम नहिं, ता बाजीको लाइ ॥ ४ ॥
शिर सें निकसत खूनुहै, जौन सिराते आइ ॥
ताही रगको खोलिये, नीको हय ह्वैजाइ ॥ ५ ॥

चौपाई—डेढ़पाउ भटकैटआलेहू। कुचिला तासम तामहँ देहू ॥
मूजाको रस लेउ कढ़ाई । तामहँ औषध देउ भिजाई ॥

दोहा—कपरामें करि ताहिको, रसको लेहु निकारि ॥
ताके हींसा कीजियो, तीनि तीनि निरधारि ॥ १ ॥
घोड़ाको गिरवाइके, नथुना ऊपर कराइ ॥
औषध हींसा एकले, तामें देउ डराइ ॥ २ ॥
एक घरीके बाद सो, करौ खरहरा ताहि ॥
याहीविधि करवाइये, तीनि दिवस लग वाहि ॥ ३ ॥
वरम होइ नथुना विषे, ताको देउ दगाइ ॥
वरम भरेपर कीजिये, लंबा दाग बनाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—अदरख पैसा पाँचभरि, लीजै ताहि भुँजाइ ॥
अरु पैसाभरि हींगको, लेउ खील करवाइ ॥ १ ॥

तिनकी पिंडी येक करि, हयको देउ खवाइ ॥
या विधि कीजे सात दिन, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ २ ॥

अथ नथुनाका रोग ।

दोहा–बाजी नथुना माहिसों, बढि आवतहै मासु ॥
देत देखाई बाहरै, औरौ होत अमासु ॥ १ ॥
छालाके सम होतहै, सो जानौ तुम मीत ॥
श्वासबंद करि देतहै, याकी यहहै रीत ॥ २ ॥
पैसाभरि जंगाल अरु, हींग फटकरी लाइ ॥
कूपोदकसों पीसिकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
तीनों औषध भाग सम, कहो आइ सुखपाइ ॥
ताको कीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–लीलाथोथा फटकरी, अरु हरतार मँगाय ॥
और निसोदर लीजिए, सम भागहि करवाय ॥ १ ॥
सूखी औषध पीसि सब, दीजै ताहि लगाय ॥
मासु बढ़ो जो नाकमो, दूरि तौन ह्वैजाय ॥ २ ॥

अथ कुब्बकके लक्षण वा दवा ।

दोहा–जा हयके रुकिजातहै, रोग कनार गँभीर ॥
तासों कुब्बक होतहै, दवा करौ मतिधीर ॥

नासु ।

चौपाई–जा बाजीके कुब्बक होई । अदरख सोंठि मिलावै सोई ॥
सैंधव लाय सकल सम कीजै । गऊ सूत्रमें नासु करीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–जो निकसै कुब्बकको जोरा । ताकी औषधकरौ निवेरा ॥
लेउ सरगवौनिविके पाता । डारु सँभारू तामें भ्राता ॥

ऐउ बकायन छाँडिस लीजै । सबके दल सम भाग करीजै ॥
हाँड़ी मध्य मेलि औटावै । ताहि वफारा कुव्वक लावै ॥
लैकदेयकै पाछे बाँधे । तीनि बखत याहीविधि साधे ॥
की बैठे की फूटि बहाई । याविधि दवा करौ मनलाई ॥
जब फूटै विधि यहै करावै । याही पानी से धुलवावै ॥
जब लग घाव साफ नहिं पावै । तबलग दवा यहै करवावै ॥
पीछेते मलहमको चुपरै । पीड़ा धरै पीर सबहरै ॥

अन्य ।

चौपाई—फाँसी आगे कुव्वक निकसै । ताहि वफारादै सुखदरशै ॥
नीबबकायन छुंडी बाँसा । याहि बफारा ते रुजनासा ॥

अन्य ।

दोहा—रेंडीतेल मँगाइकै, थोरमें चुपराय ॥
की बैठे की फूटि वहि, करौ जतन यह आय ॥

अथ कनारका मसाला ।

चौपाई—मेथी साँभरि नमक मँगावै । टका टका भरि लै तौलावै ॥
राई जीन बनरसी साई । आँबा हरदी ताहि मिलाई ॥
अजवाइनि करु तोला तोला।एकछटाँक पिआजहि मेला॥
लेउ कटैया गोल फलनकी । आधपाउ तौलाइ वजनकी ॥
सकल पीसि यक पिंड बनावै । चनाकेआटा सानिखवावै ॥
एक खुराक लिखी यह जानौ । पांच सात दिनलौंकरियानौ॥

अथ चषकी बीमारी लक्षण वा दवा ।

दोहा—बाजी गलफर माहिमें, वक्ष जहाँ पर आइ ॥
लगत दहाना आहि जो, फूलि कछू सो जाइ ॥ १ ॥
लीजै साँभरि लोनकी, दो पुटरी करवाइ ॥
कछीमें घिउ डारिकै, दीजै आगि धराइ ॥ २ ॥

तामें पोटरी गरमकरि, सेंकि वक्षको देइ ॥
या विधि सेंकै पांच दिन, नीको वाजी लेइ ॥ ३ ॥
घरी तीनि अरु चारितक, सेंकि खूब तिहि देइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, वक्ष नीक तिहि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–गुड़ अरु चून मिलाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥
सात दिनाके भीतरें, वक्ष नीक ह्वैजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–हरदीपीसिक लीजिये, और मुसव्वर लाइ ॥
दुवौ बरोबरि लीजिये, देहु अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
मानुषमूत्र पकाइ कै, लेप वक्ष करवाय ॥
सात दिवस तक कीजिये, रोग नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बाँसक डंडा लाइकै, बाँधै मुक्ता माहि ॥
घोड़ाकी पेशाबमें, वक्ष धुवावै ताहि ॥ १ ॥
समुद्रखार हरताललै, और निसोदरु लाइ ॥
सूखापीसै ताहिको, चप पर देइ लगाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै दुहुँ वखत, दुइदिन लग यहजानि ॥
लेप लगावै ताहि पर, सो अब देत वखानि ॥ ३ ॥
भात माहि घिउ डारिकै, मलिकै देइं लगाइ ॥
चपके ऊपर वाछमो, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
छूरातेज मँगायकै, दीजै ताहि चिराइ ॥
फेरि लगावै यह दवा, जाते रोग नशाइ ॥ ५ ॥

अथ मुख आवा होय ताकी दवा ।

दोहा–जा बाजीकी जीभमें, छालेसे परिजाय ॥
ताकी औषध यह करै, रोग दूरि ह्वैजाय ॥ १ ॥

तारूकी रग खोलिये, और जीभ रग जानि ॥
ता पीछे यह औषधी, कीजै ताकी आनि ॥ २ ॥
चौपाई–वडी इलाची लेउ मँगाई । तासम दुधिआ खैरु मिलाई ॥
ताको पीसि मिही अति कीजै।कहौं तासु विधि सो सुनि लीजै
दोहा–डारै वाजी जीभ पर, मुख भीतरसो जानि ॥
घरी एकके बाद फिरि, जूडो पानी आनि ॥ १ ॥
ताको छींटा मारिये, जीभ और मुख माहि ॥
याविधि कीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

दवा खानेकी ।

चौपाई–मेंहदीपात लेउ मँगवाई । धनियां हर्रहि देउ मिलाई ॥
दुइ दुइ तोले औषध लीजै । प्रातसमय घोडेको दीजै ॥
तीनिदिवस तिहि देउ खवाई । रामकृपा ते नीक देखाई ॥

अथ जीभपर मेझुकी होनेके लक्षण वा दवा ।

दोहा–जो मेझुकी हय ऊपजै, जीभ मध्य सो जानु ॥
दाना चारा खाय कम, लक्षणतन अनुमानु ॥
चौपाई–चनाकि भूसी भस्म करावै । छानीकेर करहुआँ लावै ॥
मिर्च गोल हरदी सम लीजै।सकल पीसि मेझुकी मलि दीजै
तीनिरोज औषध जो करै । मेझुकी रोग अश्वको हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–माँजारि माँस व्यालको लावै । जो वरजातिया सर्प कहावै॥
मासे तीनि तीनि नित दीजै । सातादिनासो नीको लीजै ॥

अथ कालवंद रोग जीभ सूखै ।

दोहा–जेहि घोडेके जीभ पर, खुश्की बहुत देखाय ॥
तुचा जीभ सूखी रहै, कालवंद सो आय ॥
चौपाई--सैंधव मिर्च दोउ सम लीजै । कुकुरौंधे रस खरिल करीजै ॥
गोलीकरि मलै मुख तासू । ताके पीछे लेप प्रकासू ॥

अन्य ।

सोरठा--पिपरी पिपरामूरि, सोंठि कुलींजन वचहिलै ॥
सबको कीजै चूर, कटुक तेलमें खरिल करि ॥
चौपाई–मलहमकरि सो ताको लीजै । लेपनकरि कपरामें दीजै ॥
बाँधै गरे अश्वके कोई । जो सेंकै सो नीको होई ॥

अन्यमत ।

दोहा–लीजै सैंधव लोनु सम, स्याहमिर्च मिलवाइ ॥
कुकुरौंधा रस ताहिमें, देहु खरिल करवाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै ताहिकी, दिना तीनि लगु देइ ॥
यक यक गोली दीजिये, तुरीनीक करिलेइ ॥ २ ॥
टका टकाभरि वजनकी, गोली लेइ बनाय ॥
शालहोत्रमुनिके मते, हयको देइ खवाय ॥ ३ ॥

अथ तालूकी बीमारी ।

दोहा–जाके तालू माहिसो, वर्मेहोइ कछु आइ ॥
दाना खायो जाइ नहिं, कीतो थोरा खाइ ॥ १ ॥
तालूमें नस होतिहै, ताको देइ छेदाय ॥
खून निकारै ताहिते, अश्वनीक ह्वैजाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–तालू आवै जाहिके, ताको देइ दगाय ॥
हरदी नमक बुकाइकै, दे तापर चुपराय ॥

अन्य विधि तालूरोग ।

दोहा–दोऊ ओंठन भीतरै, कीतौ तालू माहि ॥
छाला जाके परतहैं, दाना घास नखाहि ॥ १ ॥
सब छालन पर लाइकै, नस्तरदेइ लगाय ॥
साँभरिलोन मलाइ फिरि, जलसे देइ धुवाय ॥ २ ॥

अन्य तालूमें दाँत जामें तिसकी दवा।

चौपाई–तालू मध्य दाँत जो होई। काम लास भाषे सब कोई॥
दाँत तोरिके औषध कीजै। घोड़े घास खाइ ना दीजै॥
कडुआ हरदी सैंधवलीजे। गोघृत मिरच सहत सम कीजे॥
रदन तोरिकै अश्व खवावै। यह औषध तापरमलवावै॥

अथ मुँहमें छाला परें तिसकी दवा।

दोहा–मुखमें छाला परैं अरु, लार न आवति होइ॥
श्यामहोइ मुख माहि अरु, जानिलेहु जिय सोइ॥ १॥
सैंधव साँभरि लोन अरु, सोंचर लेउ मँगाइ॥
औषध कीजै तीनि दिन, छाला सबमिटिजाइ॥ २॥
छाला जो मुखमें परैं, लार बहति अतिहोय॥
घास न खाई जाइ जो, यही दवा करु सोय॥ ३॥

अथ मुखपाकै वा छालापरैं तिसकी दवा।

चौपाई–छाला परैं पकै मुख जासू। लार बहै बहु आवै वासू॥
श्यामरंग कफ गिरै बनाई। घासै बहुत अश्व अकुलाई॥
रस कुकुरौंध निचोकरि लीजै। सैंधवसाँभरि मिरचैदीजै॥
सकल पीसि छाला पर मलै। नीकहोय तुरँगै मुख खुलै॥

अथ सब मुख सूजिजाय ताकी दवा।

दोहा–जवाखार हरदी सहित, सरसों सौंफ मँगाय॥
कूपोदकसों पीसिकै, देउ अग्नि धरवाय॥ १॥
जाय दवाई पाकि जब, तबै बफारा देइ॥
वहीदवाई काढिकै, लेप ताहि करिलेइ॥ २॥
पाँच सात दिन याहि विधि, करै दवा जो कोय॥
घोड़ा होय अराम तिहि, जाइ रोग सब खोय॥ ३॥

अथ अस्तीककी बीमारी ।

दोहा–जाहि तुरी मुख माहिमें, खून जु जारीहोइ ॥
तिहि अस्तीका कहतिहैं, सकल सयाने लोइ ॥ १ ॥
प्रथमहि तारू माहिमें, रगको देउ खुलाइ ॥
पाछेते औषधकरौ, तुरी नीक ह्वैजाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–आँरा हर्र बहेरले, तिनको लेउ कुटाइ ॥
यवके आटा मध्य करि, दीजे ताहि खवाइ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–फूटे नथुना बाजिको, लोहू जारी होइ ॥
तेहि अस्तीका कहतिहैं, जे जानतिहैं कोइ ॥ १ ॥
केलाकी जर काटिकै, पानी ले निकराइ ॥
गऊदूध मिलवाइकै, नथुना देउ भराइ ॥ २ ॥
अरु आँराको पीसिकै, शिरपर देउ धराइ ॥
खीरा ककरी बीजलै, पीसिके देउ सुँघाइ ॥ ३ ॥
दोनौं विधि अस्तीककी, जो वरणी अभिराम ॥
यही दवा करवाइये, दोनौं होंइ अराम ॥ ४ ॥

अथ अन्य विधि मुखरोग ।

चौपाई–कल्ला उपर वरम जो होई । की मुख ऊपर सूजे सोई ॥
आँखितरेकी हड्डी जोई । फूलिजाति बाजीकी सोई ॥
दोहा–आँखितरे जो रग अहै, अरु शिर पाछे जोइ ॥
तिनमें खोलै एक रग, तुरंत नीको होय ॥

अन्य मुखरोग ।

दोहा–नथुना बाँसा जासुको, सूजि कछू सो जाइ ॥
साँसलेत अति जोरसों, शीश उठाइ उठाइ ॥ १ ॥

अर्द्धस्नानहै भूमिसें, अरु पिआस अधिकाइ ॥
औंरा हर्र बहेरकी, बकली लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
जौ नारी जीरा सहित, स्याह मिर्च अरु जानि ॥
टका टकाभरि औषधी, वजन बरोबरि आनि ॥ ३ ॥
षटपल लीजै खाँड़ अरु, कूपोदकपलचारि ॥
सबै औषधी पीसिकै, मिलवै तिन्हैं सुधारि ॥ ४ ॥
यकदिनकी मौताज यह, कही सु लीजै जान ॥
सातरोज तक कीजिये, याही तरह विधान ॥ ५ ॥

अथ घिन्नीरोग ।

दोहा–लीदि वासु मुखते कढै, कीरा परैं जु लीदि ॥
तृण नचरै अति दुःख भरो, घिन्नीरोगसो निंदि ॥ १ ॥
हरदी सैंधव नीवदल, पुरससूत्र अज केर ॥
सानि अश्वको दीजिये, रोग हरत नहिं देर ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला त्रिकुटा सैंधवै, मात्रा सम करि लेहु ॥
काढा मदिरा संग करु, रुज नाशक इमि देहु ॥

अथ सतपुरा रोग ।

दोहा–दाढ़ीपर बढ़िजातहै, हाड़ गुल्मके तौर ॥
सतपूरा ताको कहैं, दवाकरौ करि गौर ॥ १ ॥
मछरी हरदी भातको, उसिनै सबन मिलाय ॥
तीनि दिवस बाँधै गरम, जब कोमल परिजाय ॥ २ ॥
तब सेंदुर भरि दीजिये, फूटि वहै अवरेषि ॥
तासो हाड़ निकासिकै, मलहम करै विशेषि ॥ ३ ॥

अथ नाकडा रोग नाकका ।

दोहा–रोग नाकड़ा होतहै, बाँसा अंदर छेद ॥
पीब चलै तामें अधिक, जानिलेउ यह भेद ॥

चौपाई—पक्षीनाम महोप कहावै । ताको चरण दुओ कटवावै ॥
पानी डारि शिलापर रगरै । ताको लै कपरापर चुपरै ॥
वाकी बाती लेउ बनाई । छेदभीतरे मो धरवाई ॥
कड़रोजलगु या विधि करै । छेदबंद तब ऊपर चुपरै ॥

अथ खामूसे आवेके लक्षण ।

दोहा—नथुनाके दोनों तरफ, हड्डी कीलै जौन ॥
ताहि खमूस बखानिये, जानिलेउ बुध तौन ॥ १ ॥
बाढ फैलै सूज जो, रोग खमूस बखानि ॥
ताहि चिकित्सा कीजिये, रोग मिटै सुखदानि ॥ २ ॥

दवा कालादितैलविधि वर्णनम् ।

दोहा—पलगीदरले सेरसर, मन यक वारि चढाय ॥
आँच खूब करिकै पचै, पाँचसेर रहिजाइ ॥ १ ॥
तब उतारि लीजै सुघर, चारिसेर तिल तेल ॥
भरि कराह धरु आँचपर, चारि सेर दधि मेल ॥ २ ॥
जबदधि पचिजावै लखै, काढा पलै पचाय ॥
सेर एक दशमूलले, चारिसेर जल नाय ॥ ३ ॥
भिन्न कढ़ा यक सेर करि, तेल माह दे पाचि ॥
छानि धरै वहि तेलको, लैकलकइसो जाचि ॥ ४ ॥
काँजीमें तिहि पीसिकै, अपर औषधी आनि ॥
चीत सोंठि अजवाइनी, विषमारासो जानि ॥ ५ ॥
सोरठा—मेथी वायसरंग, कूट कैफरा लीजिये ॥
बन अजवायिनि संग, बनमेथी सम वजन करि ॥
दोहा—लै मजीठ यक पाव तज, आधपाव मित लाय ॥
तब फिरि तेल चढ़ाइकै, कंजीबाँटि भुजाय ॥ १ ॥

दधिमें बाँटि मजीठलै, पाछे तासु पचाय ॥
सिद्धतेल तब जानिये, ताको गुणयहि भाय ॥ २ ॥
झोला पच्छाघात अरु, अकड बाय दुखदाय ॥
झनकवाय कमरी सहित, मरदन करत विहाय ॥ ३ ॥

अन्य।

सोरठा–चारिसेर तिल तेल, उतनोई काँजी पचै ॥
तापर सज्जी मेल, सोंठि बनस्तर मूल कुट ॥ १ ॥
लाही हरदि मजीठ, लै प्रतिवस्तुपलेकमित ॥
जलमें बाँटि जुईठ, भूँजि तेलमें सिद्ध करि ॥ २ ॥
ताको लीजै छानि, भरि भाजन धरु जतन करि ॥
गुण पूर्ववत बखानि, शालहोत्र मुनि प्रमित मित ॥ ३ ॥

अथ वृषास्थितैल बहुत रोगन पर।

दोहा–तेल कहो वृष अस्थिमैं, ताको सुनौ सुजान ॥
कइउरोग यहिते नशैं, ताको करौं बखान ॥ १ ॥
अग्निवाव अरु शूलहर, छाती बंद सितांग ॥
सन्निपात सब बात हर, सुखी होय बहु अंग ॥ २ ॥
चौपाई–वृषभ अस्थि मन एक कुटावै। तेल पताल यंत्र निकरावै ॥
अश्वअंग दिन सात मलावै। इते रोग सब दूरि करावै ॥

अथ कर्णपीरकी दवा।

सोरठा–सरवानि सोंठि मिलाय, ब्रह्मदंडि कुकुरौंध युत ॥
हरदी दारु जोलाय, हरदि सुपारी मैनसिल ॥ १ ॥
दुइ दुइ मासा लेइ, कूपनीरसों औटि सब ॥
अष्टभाग करि देइ, तीनि दिवस खावै सुघर ॥ २ ॥

अन्य।

सोरठा–मसुरी कमल मँगाय, केसरि पात लजारुको ॥
हर्रा तुचा मिलाय, भेला चौमासा सकल ॥ १ ॥

सेर एक जल माहि, अष्टभाग करि दीजिये ॥
कर्णपीर नाशिजाय, जो बुध जन यहरीतिकरि ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—ले फटकरी मँगाय, बूँकि कानमें डारिदे ॥
तापै देहि गिराय, अर्क कागजी निंबुको ॥

अन्य कानपाकेकी दवा ।

दोहा—कर्णपके जेहि अश्वको, पीब बहै श्रुतिमाह ॥
ताकी औषध कहतहौं, शुद्ध धीर निरवाह ॥

चौपाई—जवाषार सैंधव अरु सोंचर । सज्जी वच सम भाग परस्पर॥
चेंचपत्रमिलि सकल पकावै । सेंकै वाही अर्क डरावै ॥

अन्यमत ।

दोहा—जाके दोनौं कानते, खूनश्रवत जोहोइ ॥
जानौ वायु प्रसंगहै, शिर झारतिहै सोइ ॥ १ ॥
काँपै वदन जु अश्वको, ताकी यह विधि साधि ॥
तिल औ हरदी कानको, सेंकै पोटरी बाँधि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई—लहसुन हरदी पीसै भाई । सेंकै कान नीकह्वैजाई ॥

अन्य ।

दोहा—अर्कपात मँगवाइकै, ओदे बसन बँधाइ ॥
अग्निमध्यधरि दीजिये, खूब पाकि जब जाइ ॥ १ ॥
काढ़ै ताको अग्निते, अर्कलेइ निकराइ ॥
तुरी कानमें डारिये, गोघृत ताहि मिलाइ ॥ २ ॥

अथ कछुईकी बीमारी ।

दोहा—कर्णमूलके पासमें, गर्दन ऊपर जानि ॥
तहँ सूजनि जो होतिहै, कछुई ताको मानि ॥

चौपाई–दोनौं तर्फन सूजनि होई । कीतौ एकै तरफसुजोई ॥
ताको कछुई नाम बखानौ । शालहोत्र मतहै यह जानौ ॥

दवा ।

दोहा–शिर गर्दनके जोरपर, कही कनगुदी माहि ॥
जहाँ शिरा जो होतिहै, प्रथमहि खोलै ताहि ॥ १ ॥
गर्दभ लीदि मँगाइकै, खारी लोनु मँगाइ ॥
मानुषमूत मिलाइकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥
लेपनकीजै ताहिको, कछुई ऊपर आनि ॥
रंडपातको बाँधिये, ऊपरते यह जानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई–जो अराम नाहिं याते होई । लोह तप्त करि दागै सोई ॥

अन्य ।

दोहा–प्रथमहि दागै ताहिको, परीतेलकी आनि ॥
औषधदीजै ताहिको, सो फिरि कहौं बखानि ॥ १ ॥
लीजै जर करवीरकी, हरदी लहसुन आनि ॥
काराजीरी मिर्चलै, वजन बराबरि जानि ॥ २ ॥
सब औषध दशटंकलै, कूटि सहतमें सानि ॥
छा गोली तेहि बाँधिये, प्रात खवावै आनि ॥ ३ ॥
दाना पीछे दीजिये, गोली एक खवाय ॥
गऊमूत्र लै पावभरि, ऊपर देइ पिआय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–जाइ कदाचित पाकिजो, तौ यह औषधआहि ॥
कहत अहौं अब ताहिको, समुझि लेउ मनमाहि ॥
चौपाई–कछुआको खपटा लैआवै । औरत शिरके बार मँगावै ॥
ते दोनौंको लेउ जराई । रंडतेलमें खरिल कराई ॥
सो वह जखम उपर लगवावै । कछुई रोग नीक ह्वैजावै ॥

अन्यमत।

दोहा—मेझुका बाँधे चीरिकै, रोग करै सब नासु॥
बहुत बढ़ै कछुहीयजो, चीरि दवा करि तासु॥

अन्य।

दोहा—पाकी अँबलीको पना, तामें नमक मिलाय॥
लेप घावपर कीजिये, कछुई रोग बिलाय॥
चौपाई—लै हटतार तावकी तोला। मासे चारि लीजिये कुचिला॥
अँबिली पनासंगसो पीसै। बारमूँडि कछुई पर लेसै॥
ऊपर आँबिली और लेसावै। तापर रेंडपात बँधवावै॥

अथ हसना रोग।

दोहा—दाढ़ पिछारी होतहै, सूजनि लंबी आइ॥
ताको हसना कहतहैं, शालहोत्र मत पाइ॥ १॥
जो कछुईकी दवाहै, सोई यहिकी आइ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, हसनारोग नशाइ॥ २॥

अन्य।

चौपाई—ईटपुरानी तत्त करावै। ताके सेंके रुज बहि जावै॥

अथ बोगमाकी बीमारी।

दोहा—दुहुँ दाढ़नके बीचमें, कुब्बकके तर जानि॥
हलक ऊपरै होतहै, निकसत बाहर आनि॥ १॥
कुब्बकके छा अंगुरै, आगे यह रुजहोइ॥
तरे ताहिके होतहै, बोगमा कहिये सोइ॥ २॥
पानी पीवत नाहिं अरु, दाना घास नखाइ॥
जा बाजीके कंठमें, होत बोगमा आइ॥ ३॥
चौपाई—कुब्बकमें कनार हो जाई। पानी नाहीं छोड़त भाई॥
बोगमा रोग फूटि जब जावै। हलकके भीतर छेद देखावै॥

दवा ।

दोहा—काराजीरी सोंठिलै, कुचिला मिर्च मँगाइ ॥
कालेश्वर अरु तज सहित, समकरि लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
थोरी रेहू डारिकै, जलसों लेइ मिलाइ ॥
तत कीजिये अग्निपर, दीजैलेप कराइ ॥ २ ॥
चौपाई—लेप कियेते रोग न जाई । तौ पाकैकी दवा कराई॥

दवा ।

चौपाई—अजवाइनि अरु राई लावै । काराजीरी ताहि मिलावै ॥
सोंठि सहित अजमोद मँगावै । जलसों पीसि लेप करावै ॥
दोहा—तातो कीजै अग्नि पर, दीजै ताहि लगाइ ॥
अत्ती कीजै नीबको, देउ ताहि बँधवाइ ॥ १ ॥
रंडपात बहु सेंकिकै, तिनसों देहु बँधाइ ॥
सात दिवसमें सेंकिकै, फूटि वेगि सो जाइ ॥ २ ॥
नीब कि पाती लोनुलै, पीसिक देइ लगाय ॥
जख्म साफ ह्वै जाइ जब, तब मलहम चुपराय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जवाखार अरु सोंठिलै, तिन सों देइ बँधाइ ॥
सातरोजमें पाकिकै, फूटि वेगमा जाइ ॥ १ ॥
नीब कसौंजी पातलै, औ अजवाइनि लाइ ॥
भाग बराबरि कीजिये, सबै औषधी आइ ॥ २ ॥
औषधि तोले चारि भरि, मोठ सेहला माहि ॥
हयको दीजै साँझको, रोग नीक हो जाहि ॥ ३ ॥
यह बीमारी कठिनहै, जानिलेउ मनलाइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै वा करौ हरुगा ॥ ४ ॥

अथ मुँहते लार बहुत गिराकरै तिसकी दवा ।

दोहा–स्याह धतूरे माहि की, वोडीयक मँगवाइ ॥
दानासो करि साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत मुखरोगवर्णनोनाम एकादशोऽध्यायः ११

अथ पैररोग लक्षण वा दवा ।

छप्पय–पैरं पाछिले मध्य गिरह भीतर हड्डा कहि ।
अस्थि नुकीलो होत लखौ चपठा चपठा लहि ॥
वहीठौर रगमाँह गुल्म कोमल सुतरा भनि ।
सूजनि अगिले मध्यगिरह जानुआं रोग आनि ॥
पद अगिले नाली बढ़ै बैर हड्डि कहि वैरसारि ।
लखि सूजिआगिले सुम उपर सोइ चकावारि पकत भरि॥

पुनः ।

छप्पय–पैर पाछिले भौंह सूजि पाके पुस्तक मित ।
वैसै पुस्तक ऊर्द्ध होय गाना कहिये हित ॥
झरत पूतरी माह रसा कछुही जु विकाशित ।
वैजा पछिली नली मुरुग अंडन सम भासित ॥
कहि छाला सुम भीतर प्रगट पीलपाँव सूजन भनै ।
मसवृद्धि गनै पल बाढ़तौ, पैररोग ग्यारह गनै ॥

अथ हड्डारोग लक्षण । देखो घोडा नम्बर १४८.

दोहा–पैर पाछिले गाँठिमें, भितरी ऊँचो जौन ॥
ताहीमें हड्डा प्रगट, जानौ रुजको भौन ॥

चौपाई–अस्थि नुकीलो देखौ भाई । चपठा चपठा सो दरशाई ॥
हड्डा कहो रोगको नामा । दवाकिये ते होइ अरामा ॥

दोहा–हरिअरि लकरी नीबिकी, हड्डा सेंकै जाहि ॥
शोणित गिरै बिकारते, पछना दीजै ताहि ॥ १ ॥

दंती गोटा निंबुरस, और निसोदर लेइ ॥
सैंधव मिलि लेपन करै, आस्थि बढै नहिं सोइ ॥ २ ॥
ऊपर कपरा बाँधिकै, लकरी नींब सेंकाय ॥
दिना सात उठि प्रात करि, रोग नीक ह्वैजाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई—सोवा सागुनि सोदर लावै । नकछिकनी सैंधव पिसवावै ॥
निंबूके रस मध्य सनावै । हड्डा ऊपर ताहि बँधावै ॥
दिन ग्यारह लग औषध करै । हड्डारोग अश्वको हरै ॥

अन्य ।

सोरठा—चारौ पद्दे दागि, जो जानौ यह रोगहै ॥
चेतन चंद प्रमान, औषध कीजौ मास षट ॥
चौपाई—मानुषकी खुपरी लैआवै । तत्त अग्नि में ताहि जरावै ॥
महिषा मेष शृंग जरवाई । सकल दवा सम भाग पिसाई ॥
त्रिकुटा त्रिफला सज्जी राई । भूँजि सोहागा खील कराई ॥
कालेश्वर अरु काराजीरी । अजवायनि हरदी बहु पीरी ॥
गुड़सँग गोली या विधि बाँधै । टंक टंक भरि सो अवराधै ॥
उपजत रोग औषधैकरै । अस्थि रोग घोड़ेको हरै ॥

अन्य ।

चौपाई—चूनाकली भँडामें भरै । कपरौटी करि पावक धरै ॥
जब परिपक्क होई लखि लेइ । पीसि लेप हड्डा करु सोई ॥

अन्य ।

चौपाई—वड का मूरा को ले आवै । भेंड़ कि लेंडी बहुसुलगावै ॥
तामें मूरा भरत करावै । गरम बाँधि दुइ घरी रखावै ॥
जबलगु हड्डा गलै न भाई । तबलगु दवाकरौ मनलाई ॥

अन्य ।

चौपाई—मेषकेर गुरदा दोउ लावै । चीरि तवापर गरम करावै ॥
हड्डा ऊपर जो बँधवावै । नीकहोइ सब सोक नशावै ॥

दोहा—हड्डा मोतरा जानुवा, वैजा पुस्तक जाय ॥
यंते रोग नाशक दवा, करौ सुघरमनलाय ॥

अन्य दवा खानेकी ।

चौपाई—गोल मिरच अरु पिपरामूला । लीलातंत लीजियो कुचिला ॥
कालेश्वर मौरेठी लावै । इंद्रजवा भेलावँ मँगावै ॥
समुद्रफेन पालाशपापरा । ढाई ढाई भरि सम धरा ॥
मालकाँगनी मेथी लीजै । डेढ़डेढ़ भरि वजन करीजै ॥
कराजीरी हालिम हरदी । जहरतेलिया मुंडी मरदी ॥
जंगीहर्र कुलींजन लीजै । सवासवा तोला सब कीजै ॥
राईलेउ बनरसी भाई । गेरह तोले भरि तौलाई ॥
मोथा अदरख हींगमँगावै । मानुषकी खुपरी लैआवै ॥
कारे तिल वैआदा लीजै । और कलौंजी तामें दीजै ॥
सातौ दवा बराबरि लाई । पैसा नौ नौ भरि तौलाई ॥
छालि अंकजरकी मँगवावै । रंडफूल तिहि माहि पिसावै ॥
गुडपुरान लै गुरच नीबकी । वजन सवाये सेर सेरकी ॥
सजी सोहागा गूगुर साबुन । तोले सात सात तेहि लावन ॥
गेरहसेर नीबके पाता । सकल पीसि करु यकतक भ्राता ॥
ताकी गोली करौ विधाना । दश दश दमरी भरि परमाना ॥
चौदहरोज खवावै कोई । रोगजाय सुख तुरँगै होई ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जि सोहागा तूतिया, जवाषार सम लेहु ॥
पीसि निसोद्र मोम युत, टिकरी तासु करेहु ॥ १ ॥
निंबूरसते धोयकै, गरम तनकु करवाय ॥
तीनि दिवस तिहि राखिकै, डारहु ताहि छुडाय ॥ २ ॥

पंद्रहदिन यहिविधि करै, नीबपत्र फिरि लाय ॥
हडा चकाबरि मोतरा, कछुही घाव जुजाय ॥ ३ ॥
हड्डाके थलसें लखै, चपटा हाड उसार ॥
तासु दवा नहिं कीजिये, सो नहिं अवगुण कार ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा—सज्जी मुर्दाशंख पुनि, और निसोदर आनि ॥
गुंजा गुंजा भरि सबै, औ हरतारु बखानि ॥ १ ॥
लावै हड्डा नोकपर, दूध मदार मिलाइ ॥
नमदा धरिकै ताहिपर, कपरा देहु बँधाइ ॥ २ ॥
ऊपर सुतरी बाँधिये, सो मजबूत कराइ ॥
बीते बारह पहरके, दीजै आनि खुलाइ ॥ ३ ॥
पाती नीब पिसाइकै, रोज लगावति जाइ ॥
रहै बचाये चोटको, तौ हड्डा मिटिजाइ ॥ ४ ॥
शालहोत्रमुनि यों कहैं, नीकी विधि यह आइ ॥
औषधि करिये चावसों, अश्व सुखी होजाय ॥ ५ ॥

अन्य।

चौपाई—ताजी जीभ हुड़ार कि लावै। ताऊपर हरतारु लगावै ॥
सो हड्डापर देइ बँधाई। चौथे दिवस देउ खुलवाई ॥
दोहा—खुश्की फेरि लगाइये, जौलौं नीक नहोइ ॥
औषध याहि समानकी, और नहीं है कोइ ॥

अथ मोतरा रोग। देखो घोड़ा नंबर १४९.

दोहा—हड्डाके ढिग जोनि रग, तामें गुल्म जुहोय ॥
कोमल नरम निहारिये, मोतरा जानौ सोय ॥
चौपाई—कुचिला टुकराभरि पिसवावै। सम हरताल तावको लावै ॥
अर्कदूधमें दोनौं रगरै। मोतरा पर पछनादै चुपरै ॥
ऊपर रंड पात सो बाँधै। सातरोज याहीविधि साधै ॥

अन्य ।

दोहा—रंडक कोइला पाव यक, गोघृत अर्ध मिलाय ॥
चालिसदिन नित दीजिये, रोग दूरि होजाय ॥

अन्य ।

चौपाई—कंचनरिपुकी खील करावै । यकइस दिन तोला नितपावै॥

अन्य बछेराके मोतरा रोगकी दवा ।

चौपाई—अँविलवेत लै तोला चारी । गुड़ थोरा दे तामें डारी ॥
दानाके पीछ परमाने । यहरंगी उस्ताद बखानै ॥

अन्यमत ।

दोहा—रगै पिछारी पाँडकी, तरफ भीतरी माहि ॥
आवत बलगम ताहिमें, सूजि तासुते जाहि ॥ १ ॥
फिरि वहु बलगम सूखिकै,जमति नसनमो आइ॥
ताते पग लँगरा परै, चला नहीं फिरिजाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा--मिर्चस्याह हरदी सहित,पाव पाव ये आनि ॥
मानुषखुपरी राख पुनि,वहौ पावभरि जानि ॥ १ ॥
खील सोहागाकी बहुरि, तोला आठ मँगाय ॥
सज्जी तोला चारि पुनि, सोऊ लेउ मिलाय ॥ २ ॥
औषधतोले चारि भरि, मोठ महेला माहिं ॥
पहर एक दिन भीतरै, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
औषध पीछे पहर भरि, पानीदेउ पिआइ ॥
याविधि कीजै तीस दिन, रोग नाश होजाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—पसुरी लैकै ऊँटकी, ताको लेउ पिसाइ ॥
ताकी पोटरी बाँधिकै, मोतरादेउ सेंकाइ ॥ १ ॥

फिरि जलसों सो सानिकै, ताको गर्म कराइ ॥
सोतरापर सो बाँधिये, मुनिवर दियो बताइ ॥ २ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाय ॥
शालहोत्र मत देखिकै, कीजै यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—समुदफार हरतार पुनि, रत्ती दुइ भरि आनि ॥
लीलाथोथ लिसोढ़रै, दुइ दुइ रत्ती जानि ॥ १ ॥
लै जमालगोटा बहुरि, दाना एक मँगाइ ॥
सबको पीसै एकसें, दूध माहिं मिलवाइ ॥ २ ॥
रग ऊपर लै ताहिको, दीजै आनि लगाय ॥
नींबपात भरताकरै, तापर देइ बँधाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—खोलै चौथे रोज, बाँधो राखै तीनि दिन ॥
रहै न गदको खोज, मलहम फेरि लगाइये ॥

अन्य ।

दोहा—लै अजवाइनि तीस पल, चूकु लेउ पल सात ॥
तासम सोंचर लोनलै, और सोहागा तात ॥ १ ॥
सबै औषधी एकसो, जलसें लेउ पकाइ ॥
औषध लैके दोइपल, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ॥
तीसरोजके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा—आँबाहरदी लाइ, खील सोहागा चौकिया ॥
नासपाल मँगवाइ, आधा आधा पाव सब ॥
दोहा—राई कही बनारसी, सेर एक भरि लाइ ॥
तासम चना पिसानु अरु, सबको पीसि मिलाइ ॥ १ ॥

औषध पैसा एक भरि, साठि दिवस लगु देइ ॥
दुपहरको जलके प्रथम, वाजी नीको लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–पाँचसेर थूहर लैआवै । जारि तासुको राख करावै ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । आधपाउ दोनौंको कीजै ॥
दोहा–कुचिला तोला दोइ पुनि, सबको पीसि मिलाइ ॥
औषध पैसा दोइभरि, तासम घीउ मिलाइ ॥ १ ॥
याविधि दीजै चारिदिन, शालहोत्र मत मानि ॥
फिरि पैसाभरि औषधी, पैसा भरि घिउ जानि ॥ २ ॥
दानै प्रथमहि साँझको, या औषधको देइ
दूरि होतहै मोतरा, क्षुधा अधिक पुनि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–केवल कफके जोरते, जौन मोतरा होइ ॥
मोटी रग अतिहीपरै, अरु झलकतिकछु सोइ॥ १ ॥
लोध्र दोइ पल पीसिकै, पोटरी बाँधै दोइ ॥
गाइ घीवको गर्मकरि, सेंकाति नीको होइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–दश जमाल गोटा लैआवै । बकली तिनकी दूरि करावै ॥
निंबु कागजी रसहि कढाई । तामें तिनको देइ भिजाई ॥
दोहा–चालिस दिन भीजाति रहै, लीजै फेरि सुखाइ ॥
चना दालि भरि काढिकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥
वरम होतिहै ताहिपर, सही बात यह आइ ॥ २ ॥
पुनि मुलतानी मृत्तिका, जलसों देइ लगाय ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ ३ ॥

सोरठा—जौलौं वरस न जाय, तौलौं रोज लगाइये ॥
नीकी विधि यह आय, धोवति नितजलसों रहै ॥

अन्य ।

दोहा—रूपामापी आनिये, सोनामापी जानि ॥
नींबूके रस माहिसों, दोऊ फूँकै आनि ॥ १ ॥
अर्क दूधमें सानिसो, चना बरोबरि लेइ ॥
पछना दैकै ताहि पर, बाँधि तासुको देइ ॥ २ ॥
अजयामूत्र भिगोइकै, सातदिवस यह जानि ॥
सतयें दिन फिरि खोलिये, शालहोत्र मत मानि॥ ३ ॥
मलहम फेरि लगाइये, जौलौं नीक नहोइ ॥
श्रीधर यह वर्णन कियो, शालहोत्र मत जोइ ॥ ४ ॥

अन्य मोतरा लक्षण ।

दोहा—पछिलो पग यक जासुको, जो मोटा ह्वैजाय ॥
मोतरा जानहु ताहिको, कठिन रोग वह आय ॥ १ ॥
बाढति सूजनि जातहै, होत वहै गंभीर ॥
वाजी लँगरा होतहै, करत अधिकहै पीर ॥ २ ॥
अगिले पगमें होइ जो, फीलपाँउ सो आहि ॥
एक औषधी दुहुँनकी, शालहोत्र मत माहि ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा—रगै मूसरा माहि जो, तिनको खून कढ़ाइ ॥
भरता बाँधै नीबको, तहूं रोग मिटिजाय ॥
सोरठा—नरके केश मँगाइ, तौलौ तोले चारि भरि ॥
तिनको देउ जराय, शारँगधर मुनि यों कहो॥
दोहा—हरदी कुटकी मिर्च पुनि, खीलसोहागा आनि ॥
चारि चारि तोले सबै, पावसेर गुड़ जानि ॥

चौपाई-टका टकाभरि गोली कीजै । सांझ सबेरे यकयक दीजै ॥
वटिका दुइ कैजा फिरि करई । सकल पीर बाजीकी हरई ॥

अन्य ।

सोरठा-जो नहिं नीको होइ, दीजै ताको दागि फिरि ॥
शालहोत्र कहि सोइ, या समऔषध और नहिं ॥

अन्य ।

चौपाई-सुमिलषार दुइ मासे लावै । तासम सीपी चून मिलावै ॥
फिरि पछना गँभीर पर दीजै । याकोमालि औरो कछु कीजै ॥

दोहा-फिरि तेजाब लगाइये, दीजै ताहि बँधाइ ॥
बाँधो राखै एक दिन, डारै फेरि खुलाइ ॥ १ ॥
अंबरबेलि पटोल जर, सम करि दोनौं लेइ ॥
भर्त्ता करिकै तासुको, बाँधि रोज सो देइ ॥ २ ॥

सोरठा- पाकि खूब जब जाइ, सलहम फेरि लगाइये ॥
जौलौं सूखि नजाइ, दूरिहोत गंभीरहै ॥

अथ बैजा सोतराके लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नंबर १५०.

दोहा-पाछिल पदकी नलिनमें, वैजारोग बखानि ॥
मुरगीके अंडान सम, जानौ रोग प्रमानि ॥ १ ॥
भेढ़ा कोहनी लीजिये, दिल गुरदा दोउ काढ़ि ॥
ताहि चीरि तातो करै, गरम धरै रुज डाढ़ि ॥ २ ॥
जब प्रस्वेद वामें कढ़ै, वैजा बाँधौ ताहि ॥
दश दिन लौं यहि कीजिये, मिटै रोग सुख चाहि ॥ ३ ॥

चौपाई-अंडा पुहकरमूल मँगावै । ककरीबीज जवासा लावै ॥
धनियाँ बच अरु सेवति फूला ॥ मिरचगोल अरु ले कंकोला ॥
घृत सँग तुरँगै देउ खवाई । बैजा सूज सकल मिटि जाई ॥
याहीको लेपन करवावै । रोगजाय सब दुःख मिटावै

अथ गजपैर यानी फीलपाँवके लक्षण वा दवा। देखो घोड़ा नंबर १५१.

दोहा–गजपद रुज लक्षण कहौं, दिन दिन मोटो होइ॥
सूजिजाइ यक चरण तिहि, जानिलेउ बुध सोइ॥ १॥
प्रथम कुसुमको फूललै, पीसिगरम करवाय॥
तीनि दिवस धरि नरम लखि, जाँय नीक ह्वै पाँय॥ २॥

अन्य।

दोहा–पलाशबीज गोमूत्र सँग, पीसि गरम करवाय॥
सातरोज लगु बाँधिये, गजपदसो मिटिजाय॥
सोरठा–जो उतरै सुममाहि, सुमिलषार भरि चीरिकै॥
पाकि जु रुज बहिजाय, ताजाअंबर लेपि घसि॥

मलहम।

सोरठा–मोम जु तोलाचारि, पाव एक घृत लीजिये॥
श्रुति तोला मितकारि, पीसि निंब टिकरी बनै॥ १॥
घृत अरु मोम मिलाइ, नींब टीकरी घेलि कलि॥
लीजे ताहि कढ़ाय, तोला सेंदुर मेलि फिरि॥ २॥
सिद्धभये तेहि जानि, बनै तासु फाहा सुघर॥
लाय करै छत हानि, शुद्ध धीर यहिविधि करै॥ ३॥

अथ जानुआ रोग लक्षण वा दवा। देखो घोड़ा नंबर १५२.

दोहा–आगिल पदके मध्यमें, गाँठि सूजि जो जाय॥
ताहि जानुआ कहतिहैं, याको करौ उपाय॥
चौपाई–पहिले पछना जनुआ देई। ता पीछे औषध करु सोई॥
सुमिलषार सैंधव मँगवावै। लीलाथोथा सज्जी लावै॥
सकल पीसि लेपन करवावै। अर्कपातको सेंकि बँधावै॥

अन्य।

चौपाई–रसकपूर आफीम मँगावै। तोला तोला भरि लैआवै॥
नौ मासे हरतार तबकी। चूनाके पानीमें खलकी॥

घुटनाके कच सब मुँडवावै नस्तरमे पछना दिलवावै ॥
मलिकै दवा रंडदल बाँधौ । सातरोज लगु याही नाधौ ॥

अन्य ।

चौपाई—घुघुवारी दल लेउ चीरिकै । सैंधव हरदी डारु पीसिकै ॥
गरम कराय रोगपर बाँधै । यकइस दिन लौं औषध साधै ॥

अन्य दवा खानेकी ।

चौपाई—मानुष खुपरी बावभरंगा । तोला चारि चारि यक संगा ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । दुइ दुइ तोलावजनकरीजै ॥
खुरासान कुचिला मँगवावै । तोला पाँच पाँच मेलवावै ॥
गुड़ पुरान कालेश्वर लीजै । लीलातंत मेलावाँ दीजै ॥
आठ आठ तोले लैकरौ । पीसि छानि गोली करि धरौ ॥

अन्यमत ।

दोहा—अगिली गाँठिन जोर तर, होत जानुआ आइ ॥
गूँथी दारि समानकी, प्रथमहि सो दरशाइ ॥
सोरठा—गूंथी बाढति जाइ, सो वह अस्थि समानकी ॥
तब बाजी लँगराइ, औषधकीजै प्रथमही ॥ १ ॥
दीजै बार बनाइ, ग्रंथी ऊपर जे अहैं ॥
पछना देउ देवाइ, ता ऊपर श्रीधर कहो ॥ २ ॥
चौपाई—फेरि कागजी निबू लावै । हरै रोग सब सुख उपजावै ॥
दोहा—रोटी कीजै उरदकी, सेंकि तरफ यक लेइ ॥
जौन तरफ काची अहै, बाँधि ताहि पर देइ ॥
सोरठा—खोलै तिसरे रोज, तीनिबार यहि विधि करै ॥
रहै न रोगहि खोज, कवि श्रीधर यों कहतिहैं ॥

अन्य ।

चौपाई—मासा एक शंखिया लावै । ताहि खूब बारीख पिसावै ॥
रेंडी गूदी दोइ टकाभरि । ताकोपीसै खूब मिही करि ॥

दोहा–दुवौ मिलावै एकसें, पोटरी दोइ बनाइ ॥
रेंडतेलधरि अग्नि पर, ताको गरम कराइ ॥ १ ॥
फेरि जानुवा सेंकिये, दोइ घरी लघु जानि ॥
अर्क पात फिरि गरम करि, तिनको बाँधै आनि ॥ २ ॥
नमदा धरिकै ताहि पर, कपरा देउ बँधाइ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥ ३ ॥
सोरठा–ग्रंथि बैठि जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये ॥
नीकी विधि यह आइ, होइ जानुआं दूरि तब ॥

अन्य।

दोहा–मानुष खपरी जारिकै, हींग सोहागा लाइ ॥
खील कीजिये दुहुँनको, तीनिहु लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
औषध मासे चारि यह, गुड़में लेउ मिलाइ ॥
एक मास लघु दीजिये, रोज रोज यह लाइ ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–चींटा माटी आनिकै, सेंदुर ताहि मिलाइ ॥
सुमिलषार सज्जी सहित, और तूतिया लाइ ॥ १ ॥
जवाषार पुनि लीजिये, सबको पीसि मिलाइ ॥
मलहम करिकै ताहिको, रुजपर देइ लगाइ ॥ २ ॥
चौपाई–औषध मासे षट लैआवै। पछना देकै ताहि लगावै ॥
बाँधै अर्कपात सेंकवाई। चौथे वासर देउ खुलाई ॥
दोहा–मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक ह्वैजाइ ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, कीजै यही उपाइ ॥

अन्य।

दोहा–सुमिलषार अरु सिंगिया, मासे डेढ़ मँगाइ ॥
तासम सेंदुर ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ ॥ १ ॥

पछना देकै ताहिपर, दीजै ताहि लगाइ ॥
याको बासर तीनिलौं, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥
चौपाई–फिरि सीपीको चूना लावै । तिलके तेलहि ताहि मिलावै ॥
रोजरोज फिरि ताहि लगावै। जखम तासुको जब भरिआवै॥
दोहा--खुश्की फेरि लगाइये, जखम सूखि जब जाइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, रोग नाश ह्वैजाइ ॥

अथ बेरहड्डी । देखो घोड़ा नंबर १५३.

दोहा--आगिल करनालीविषे, अस्थिबेर सम होइ ॥
ताहीसों लँगराइहै, बेरहड्डि कहि सोइ ॥ १ ॥
लीलाथोथा पीसिकै, निंबूरसहि मिलाय ॥
ऊपर वाके लेपिये, हड्डी सो बहिजाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–अजैपुत्रके अस्थिको, गूदा लेइ निकारि ॥
हड्डी ऊपर बाँधिये, औषध कहौं विचारि ॥

अन्य ।

चौपाई--माटीको खपटा लैआवै । ताही मध्य अफीम लगावै ॥
अग्नि सेंकिकै हड्डी बाँधै । सातदिनालौं सो आराधै ॥
निश्चय सो तुरतै बहिजाई । जो याविधिसों करै उपाई ॥

अन्य ।

चौपाई--मासे एक अफीम मँगावै । ताको दून बतासा लावै ॥
दूनों मिलइक टिक्किआ करै । माटीके ठिकरा पर धरै ॥
ठिकरा गरम लेउ करवाई । मरजके ऊपर देउ बँधाई ॥
जबलगु हड्डी नीकि न होई । तबलग ठिकरा बाँधौ सोई ॥

अन्य ।

चौपाई–खाली मिश्री कूटि बँधावै । याहूसों अच्छा ह्वैजावै ॥

अन्य ।

चौपाई–वकरी गुरदा गरम बँधावै । बेरहड्डिको नाश करावै ॥

अन्य ।

चौपाई--नमक घोरि पानीसें चुपरै । हड्डी बैठिजाय जो करै ॥

अन्य ।

चौपाई--थूहर भूँजिक साबुन डारै । गेरह पहर बाँधिकै छोरै ॥

अन्य ।

चौपाई–ऊँट कि पसुरी गरम करावै । वाहीमे हड्डी सेंकवावै ॥
अच्छाहोय वार नहिं जामें । करौ दवा जो आवै मनमें ॥

अन्य ।

चौपाई–माटीको यक ढेला लीजै । अग्नि पकाय सेंक करि दीजै ॥

अन्य ।

चौपाई--उरदको आटा गोला करै । ताके बीचहि मिश्री धरै ॥
ताको अग्नि मध्य पकवावै । आधा फोरि गरम बँधवावै ॥
बहु करी करि बाँधौ याही । जबलग हड्डी गलै न जाही ॥

अन्य ।

चौपाई–यक मोटी ठिकरी लैआवै । पावकमें बहु तप्त करावै ॥
तेहि ठिकरी पर मिश्री डारै । चुरि जावै कछु गरम विचारै ॥
हड्डीपर बाँधौ कसि बुधजन । कई रोजमें गलिहै रुज तन ॥

अन्य ।

दोहा–सेंहुड़ पहुँचा लाइकै, आधा लीजै फारि ॥
धरै ताहि लै अग्नि पर, लोनु लहौरी डारि ॥ १ ॥
खूब गरम ह्वै जाइ जब, दीजै ताहि बँधाइ ॥
याविधिकीजै सात दिन, रोग व्याधि मिटिजाइ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–पट्टालेहु कुमारिको, एक तरफको ताहि ॥
बकला तासु उतारिकै, यह औषध लगवाहि ॥ १ ॥
ताहि अग्नि पर गरम करि, दीजै आनि बँधाइ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, तीनि बेर करवाइ ॥ २ ॥

अथ जेरवाइ पैर रोग लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५४.

दोहा–पिछले पदकी नलिनमें, मध्य भीतरी ओर ॥
उन्नत अस्थि विलोकिये, जेरवाइ रुज घोर ॥ १ ॥
एकनलीमें होइ जो, अश्व बहुत लँगराय ॥
दुवौ नलिनमें होइ जो, चलत घसीटै पाँय ॥ २ ॥

सोरठा–चरण होइ कमजोर, जो हयके रुज ऊपजै ॥
कीजै दवा बहोर, शालहोत्र मत समुझिकै ॥

तेजाब हड्डीकाटैका ।

चौपाई–जहर शंखिया कुचिला लीजै । दंती गोटा तामें दीजै ॥
और अफीम लेउ मँगवाई । कारे तिलको देउ मिलाई ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै । अर्कदूधमें लेप करावै ॥
जबलगु हड्डी कटै न भाई । साँझ भोर लेपन करवाई ॥
उन्नत अस्थि जबै बहिजाई ।तब यह दवा करौ मनलाई ॥

दवा घाउ सूखैकी दवा ।

दोहा–लैकै रूमीमस्तगी, सिंहजराव मँगाइ ॥
सूखै पीसै भाग सम, रुजपर दे उरोइ ॥ १ ॥
घाव सूखिजावै जबै, करौ जतन कछु और ॥
करौ दवा ऐसी सुघर, बार जमैं वहि ठौर ॥ २ ॥

बार जामैकी दवा ।

चौपाई–साबुन औ लिलबरी मँगावै । अजै दूध घिसि लेप करावै ॥
साँझ भोर यक मास प्रमाना । बार जमैं जो करौ विधाना॥

अथ चकावरि रोग लक्षण वा. दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५५.

दोहा–आगिल कर सुमके उपर, अर्धगामची ओर ॥
पिलपिलाइ सूजनि पकै, कहौं चकावरि ठौर ॥

चौपाई–रुज ऊपरके बार मुँडावै । नस्तरसे पछना दिलवावै ॥
रुधिर बहुत तिहि डारु निकारी । पीछे दवा करो रुजहारी॥
अर्कमूलकी लीजो छाली । मानुषमूत्र मेलु तिहि घाली ॥
सातरोज लगु याही बाँधै । सूजै पाँउ और विधि नाधै ॥

अन्य ।

चौपाई–खील फटकरीकी लेआवै । सरका मोम मिलाय लगावै ॥
कईरोज लगु याको कीजै । रोग चकावरि पुस्तक छीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–मोटकड़ा सीसेको डारै । ताके बोझ सूध पग धारै ॥

अन्य ।

चौपाई–समुदफेन वचको मँगवावै । लीलाथोथा कुचिला लावै ॥
लौंग निसोदर और अफीमा।समकरि पीसि पकाइ अनलसा
पछनादै औषध बँधवावै । रोग चकावरि दूरि करावै ॥

अन्यमत ।

दोहा–अगिले पगकी गामची, होत ताहिके माँहिं ॥
हाडफोरि गूंथी कढै, कहै चकावरि ताहि ॥ १ ॥
जलदी औषध कीजिये, नाहित लँगरा होइ ॥
फुरियाके सम होइ जब, नीकहोइ नहिं सोइ ॥ २ ॥
रुधिर हथेरी माहिसो, ताको देइ कढ़ाइ ॥
फिरि यह औषध लाइकै, रोज बँधावति जाइ ॥ ३ ॥
रेवाचीनी एलुआ, तोले आठ बखानि ॥
मासेचारि अफीम पुनि, हरदी दूनी जानि ॥ ४ ॥

सबको पीसै एकमें, थोरी औषधलेइ ॥
चुरवै मानुष मूत्रमें, लेप तासु करिदेइ ॥ ५ ॥
बटके पाता आनिकै, तापर घीउ लगाइ ॥
फिरि आगीपर सेंकिये, तापर देहु बँधाइ ॥ ६ ॥
पुस्तक और चकावरी, सातरोजमें जाय ॥
यासों नीको होइ नहिं, ताको कहौं उपाय ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा--बार चकावरि ऊपरै, तिनको देउ मुँड़ाइ ॥
दूधअर्कको तीनिदिन, रोज लगावति जाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होइ जब, दहीतोरको लाइ ॥
अथवा गुड़के सरबतहि, दीजै ताहि छँड़ाइ ॥ २ ॥
सोरठ--दीजै फेरि दगाइ, पुस्तक और चकावरी ॥
और मूसली जाइ, शालहोत्र प्रणकरि कहै ॥

अथ पुस्तक रोग लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५६.

दोहा--सुमके ऊपर त्वचा जहँ, पाकि पिलपिला होय ॥
फूटि बहै सूजै वहुत, है पुस्तक रुज सोय ॥
चौपाई--अगिले पाँय चकावरि जानौ ।पछिले पद पुस्तक अनुमानौ ॥

अन्यमत ।

दोहा--पछिले पगकी गामची, पुस्तक तहँ पर होइ ॥
जैसि चकावरि होतिहै, ता सम जानौ सोइ ॥ १ ॥
कुचिला लीजै चारि पल, तिनको लेउ पिसाइ ॥
आँबाहरदी दोइ पल, तामें देहु मिलाइ ॥ २ ॥
मासे सात अफीम लै, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
अदरखके रस माहिसों, लीजै ताहि पकाइ ॥ ३ ॥

सोरठा—लेप तासु करि देइ, स्त्रावि फटकरी बाँधिये ॥
पुस्तक नाशै सोइ, मिटत मूसली है सही ॥

अथ गानारोग लक्षण वा दवा। देखो घोड़ा नम्बर १५७.

दोहा—पुस्तकके ऊपर लखै, गाना ताहि बखानि ॥
दवा नकछु ताकी कहौं, दुखद नकछु तेहि जानि॥

सुमफटेके लक्षण वा दवा ॥ देखो घोड़ा नंबर१५८.

सोरठा—हयको सुम फटिजाइ, जोतौ दोइप्रकारसों ॥
खड़ी लीक परिजाइ, लीक बेंडि की परतिहै ॥

दोहा—सुम जाको फटि गयोहै, सो लँगरा होजाहि ॥
औषध ताकी कहतहौं, शालहोत्र मत माहि ॥ १ ॥
मोम गरमकै लीजिये, तोलाभरि यह जानि ॥
सिंदुरु मासे चारि भरि, ताहि मिलावै आनि ॥ २ ॥
फटो जहाँ पर सुम अहै, तामें देउ भराय ॥
लोहततकरि ताहिमें, दीजै गुलन देवाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै थानपर, दिन नवयेंलगुजानि ॥
सुमनीको ह्वैजातहै, होइ पीरकी हानि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—कुचिला मासे चारिभरि, ताको लेउ पिसाइ ॥
तासम गूदी रंडकी, सोऊ लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
मासे एक अफीम पुनि, भगरा रांगु मँगाइ ॥
सबको करिये एकमें, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥

सोरठा—सुमफाटो जहँ होइ, भरि ताको तहँ दीजिये ॥
जौलौं नीक नहोइ, ताहि भरत नितप्रति रहै ॥

अथ सुम भीतर छालापरैं तिसके लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नंबर१५९.

दोहा—नीबपातको आनिकै, देइ बफारा ताहि ॥
बहै फूटि छाला चरण, मिटैरोग सुख चाहि ॥

चौपाई-जोयाहूते नीक नहोई । अष्टादली बफारा देई ॥
ताहि बफाराको कसि बाँधै । कईरोज लगु तेहि अवराधै ॥

अथ छीवालरोग लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नंबर १६०.

दोहा-होत अहै मोजा विषे, गंज समान देखाइ ॥
निकसत ताते पीबुहै, तुरी बहुत लँगराइ ॥
सोरठा-दारि उरदकी लाइ, नीबपात पुनि ताहि सम ॥
दोऊ लेउ मँगाइ, सो बाँधै लै ताहिपर ॥
दोहा-बीते बारह पहरके, दीजै ताहि खुलाइ ॥
फिरि यह औषध बाँधिये, ताहि तूतिया लाइ ॥ १ ॥
खोलै बारह पहरमो, पाति हुरहुरा लाइ ॥
छीवा ऊपर बाँधिये, थोरो लोनु मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि दिवस यह औषधी, रोज लगावत जाइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, रोग नाश हैजाइ ॥ ३ ॥

अथ मसवृद्धि रोग लक्षण वा दवा। देखो घोड़ा नंबर १६१.

दोहा-मांस बढै अति पैरमें, नकिआ बहुत देखाय ॥
शालहोत्र मुनिके मते, रोग कठिन यह आय ॥ १ ॥
आनि सँभारू पातको, और बकायन पात ॥
आँबपात सम पीसिकै, ताहि पिआवै प्रात ॥ २ ॥
कईरोज लगु दीजिये, याते जो न बिहाय ॥
तौ दागै करि सुघरई, पलकी, वृद्धि नशाय ॥ ३ ॥
चौपाई-मांसवृद्धि घोड़ाके देखै । अमिष बहुत बाढत औरेखै ॥
कीरापरैं नीक नहिं जानै । लक्षण ताहि निदान बखानै ॥
अजैपाल अरु लीलाथोथा । सुमिलषार औ सज्जी सोथा ॥
नीबीपातकि टिकिया करै । करुये तेल मध्य सो चुरै ॥
टिकिया काढि औषधी नाई । नीबीके सोंटा घुटवाई ॥
लेपनकरै खोलि रगदीजै । हरैरोग नीको करि लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—तुधिया कत्था और फटकरी । पैसा पैसाभरि सम करी ॥
जहर शंखिया तोला लीजै । तोला डुइक निसोदर दीजै ॥
एकै सा सब खरिल करावै । मांसवृद्धि जल सँग चुपरावै ॥
जबलगु मांसवृद्धि ना गिरै । तबलग यही औषधी करै ॥

अथ कफगीरा रोग लक्षण वा दवा । देखो घोड़ा नंबर १६२.

दोहा—जो पल बढ़ि आवै लखै, पुतरीमाँह तुरंग ॥
कफगीरा ताको कहैं, करै दवा लखि ढंग ॥ १ ॥
चूना अरु हटतारको, पीसि लेप करि देहि ॥
बाँधि टाटसों डुइ बखत, मिटै रोग सुख लेहि ॥२ ॥

अन्य ।

दोहा—मांस पूतरीको बढ़ै, नरम बहुत सरिजाय ॥
नीकहोय फिरि ऊछरै, कफगीरासो आय ॥
चौपाई--कुटकी मिर्च सोंठि औ पिपरी । सोंचरनमक पीसिसब धरी॥
पाव पाव सब ले तौलाई । दो तोला भरि हींग मिलाई ॥
बारह दिवस अश्वको दीजे । कफगीरा ताको हरि लीजे ॥

अन्यमत ।

दोहा--सुमके भीतर जासुके, अती नर्म होजाइ ॥
कीतो मांस समान सो, सुमके भीतर आइ ॥ १ ॥
फेरि बरोबरि होइकरि, बैठिजाइ सुम आइ ॥
आवत ताते पीबुहै, हयते चलो नजाय ॥ २ ॥
छाती जाकी बंदहै, ताहि रोग यह होइ ॥
कसरि तासुकी ना मिटै, दवाकरै किन कोइ॥ ३ ॥
असवारी लायक तुरी, औषध कीन्हें होइ ॥
यासों औषध कीजिये, शालहोत्र मत जोइ ॥ ४ ॥

दवा ।

दोहा–तोले एक अफीमलै, तासम हींग मिलाइ ॥
लेहु सोहागा दुहुँनसम, तासम गूगुरु लाइ ॥ १ ॥
छा तोलेभरि फटकरी, हालिम तोले सात ॥
पाव एक भरि लीजिये, साबुन हरदी तात ॥ २ ॥
आधपाव कुटकी बहुरि, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
नर शिरके पुनि बारलै, तोले चारि जराइ ॥ ३ ॥
काराजीरी लीजिये, तोले चारि पिसाइ ॥
यवको लेहु पिसान पुनि, सेर एक मँगवाइ ॥ ४ ॥
प्रथमहिं हींग अफीमको, जलमें लेहु घुराइ ॥
सबै औषधी पीसिकै, तामेंदेहु मिलाइ ॥ ५ ॥
गोली बाँधौ पंचदश, ताहि पिसानु मिलाय ॥
एक एक दोनों बखत, ताहि खवावत जाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा–चारि टकाभरि मोमको, लेउ ताहि पघिलाइ ॥
सेंदुर पैसा दोइ भरि, तामें लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
बाँधे हयके पाँइ में, टिकिया तासु कराइ ॥
चारिउ पाँवन होइ जो, चौगुन लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
सोरठा–जौलौं नीक नहोय, तौलौं नितप्रति बाँधिये ॥
शालहोत्र कहि सोइ, बाजी नीको होतहै ॥

अन्य ।

दोहा–चर्बी तोले एकभरि, बकरा दिलकी लाइ ॥
एक एक तोले बहुरि, रार मोम मँगवाइ ॥ १ ॥
लेउ भेलावाँ पाउभरि, गर्री दो पल आनि ॥
पिस्ता और ककूँदनी, दुइ दुइ तोले जानि ॥ २ ॥

ताको तेल कढाइये, यंत्र पतालहि माहि ॥
ताहि लगावै बाजि सुम, तुरी नीक ह्वैजाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–अँबिली पाती स्याह तिल, पाउ एक सो आनि ॥
लेइ बिरोजा डेढ पल, ताके सम गुरु जानि ॥ १ ॥
तोले शरि जंगाल पुनि, सबको पीसि पकाइ ॥
बाँधै हयके सुम विषै, टिकिया तासु बनाइ ॥ २ ॥
सोरठा–खोलै तिसरे रोज, तीनि दफा औषध करै ॥
रहै न गदको खोज, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

अथ मधुपंकजरस रोग लक्षण वा दवा। देखो घोड़ा नम्बर १६३.

दोहा–बंद बंद जेहि अश्वके, गांठी परि परि जाइ ॥
मधु पंकजहै नाम रस, आतुर करौ उपाइ ॥
चौपाई–रसकी गिरहैं सब चिरवावै । तेहिके ऊपर औषध लावैं ॥
बाँबी केरि मृत्तिका आनै । और सँभारू पाती जानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । मधुपंकजरस तुरतै हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–राईपात मिठाई लावै । घोड़ेको उठि प्रात खवावै ॥

अन्यमत ।

दोहा–जाके सब गांठिन विषै, बरस होतिहै आनि ॥
बरस नरम सो होतिहै, मधुपंकज रस जानि ॥ १ ॥
प्रथमै ताको चीरिकै, पानी देइ बहाइ ॥
ता पाछे औषध कहौं, ताको कीजै लाइ ॥ २ ॥
पातसँभारूके सहित, अरु असगँधके पात ॥
माटी बाँबीकी बहुरि, पाकी अँबिली तात ॥ ३ ॥
जलमें सबै पकाइये, तासों देइ धुवाय ॥
वही औषधी मींजिकै, तापरदेउ बँधाय ॥ ४ ॥

सोरठा—जखम साफ जब होय, मलहम फेरि लगाइये ॥
सूखिजाय जब सोय, बाजी नीको होतहै ॥ ९ ॥

अन्य ।

सोरठा—हरे रंडके पात, तोला एक सु लीजिये ॥
सो दीजे दिन सात, तासम गुड़हि मिलाइके ॥

पंकज पानरस ।

दोहा—गूंथीसी जाके परैं, चारिउ पाँवन आनि ॥
तिन गूँथिनते रस बहै, पंकजरस सो जानि ॥ १ ॥
जवाखार सज्जी सहित, दुइ दुइ तोले आनि ॥
अमिलीजलमो घोरिकै, ताहि मिलावै जानि ॥ २ ॥
गूंथिनपर ताको मलै, तीनिरोज यह मानि ॥
तापाछे औषध कहौं, ताहि खवावो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि सैंधव सहित, लहसुन सोंठि बखानि॥
बाघिनि हनीं दूध पुनि, बाइभरंगहि जानि ॥ १ ॥
तीनि तीनि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ ॥
पलबतीस गुड ताहि मैं, दीजै आनि मिलाइ ॥ २ ॥
यह औषध दिन सात मैं, दीजै सबै खवाइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, पंकजरस मिटिजाइ ॥ ३ ॥

अन्यमत ।

दोहा—कर अरु चरण तुरंग के, रस उतरै लँगराय ॥
गुलफौ पाँयन माहवै, पंकज पान कहाय ॥ १ ॥
गुलफिनते लोहू चलै, कछुक सूज पुनि होय ॥
ग्रंथिनमा कीरा परैं, यह लक्षण लख सोइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–रसकी गिरहैं कोरिकै, करै सफेदी दूरि ॥
जवाखार सज्जी मिलै, अँबिलि भरै भरि पूरि ॥

अन्य ।

दोहा–दूध लसोढे आनिकै, सैंध जवायनि लेय ॥
लहसुन सोंठि भरंगि गुड़, संगखाइकोदेय ॥
चौपाई–रसकी गिरहैं साफ करावै । तापाछे औषध लगवावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै । और संभाळूपातीजानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । पंकजपानिअश्वको हरै ॥

अन्य ।

दोहा–वाजीकेरे चरणकी, दीजै फस्त खुलाय ॥
पाछे करै इलाजको, रोगनीक होजाय ॥

दवा ।

दोहा–पाती नीब पवाँर जर, दूध लसोढे लेइ ॥
खँदसुर सुरभी घीउ सँग, खान तुरीको देइ ॥
चौपाई–ऊसरकेरि मृत्तिका लावै । निंबूरससासो घुरवावै ॥
लेपन करै गातमें जोई । तुरत नीक हय याते होई ॥

अन्य ।

चौपाई–सैंधव वाइभरंग मँगावै । अजवाइनि हालिम पिसवावै ॥
गोघृत दूध लसोहर सानै । ग्यारह दिन खावै परमानै ॥
पछना ग्रंथि विचारिक देई । पानपिसाइ गरम करि लेई ॥
ग्रंथिन ऊपर ताहि बँधावै । सातदिवस मा नीको पावै ॥

अन्य ।

चौपाई–ककई पातीको रस लीजै । गुड़घृतके सँग खानाहिदीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—हरदी सोंठि सोहागा लीजै । अश्वलुसन पर लेपन कीजै ॥
सर्षप तेल पीसिकै रगरै । सो रस रोग वेगहीं हरै ॥
दोहा—रस उतरैहै पूतरी, दवा नकरु दिन बीस ॥
छिरकि नमक खारी तहाँ, अधिक बहे सुखदीस ॥ १ ॥
हरदी चून मिलाइ सम, खतमें खूब लगाय ॥
तीनिदिवस लावै सुघर, रुकै रसा सुखपाय ॥ २ ॥

अथ थामरतिलै रस ।

दोहा—सुम पाकैं जिहि अश्वके, आमिष गलिगलिजाय ॥
तातो पानी चलतहै, थामरतिलै कहाय ॥
चौपाई—चँदसुर लोहचन लेउ पिसाई । तिलके तलमेलि मलु भाई॥
घायक ऊपर लेपन करै । रँडकेपाता गरमें धरै ॥
टापूसेंकै पात बँधावै । आतुर घाव नीक ह्वैजावै ॥

अन्य ।

चौपाई—दूध लसोहर सैंधव लीजै । गुड़के संग खानको दीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—छोटी हर्र खैरु औ लुहचन । लेउ टंक सत्ताइस बुधजन ॥
अरुण रंड़के पातमँगावै । सकल पीसि रुजपर बँधवावै ॥
ईंट ताति करि सेंकै जबही । सात रोजमें नीकोलेही ॥

अथ तलथमरस लक्षण वा दवा ।

दोहा—सुमके भीतर जाहिके, दधिके सम ह्वैजाय ॥
जरदनीर तासों चलै, तलथमरससो आय ॥ १ ॥
चँदसुरु लोहचन लीजिये, षट तोले मँगवाइ ॥
तिलको तेल मँगाइये, लीजै खरिल कराइ ॥ २ ॥
सोरठा—ताको लेप कराइ, ईंट गरम करि सेंकिये ॥
रंडपात बँधवाइ, याविधि कीजै तीनिदिन ॥

अथ गतिभंगरस लक्षण वा दवा।

दोहा–कर औ चरण सूजि वहु, चलै नपावै थोर ॥
गतिभंगी तिहि नाम रस, बडो रोगहै जोर ॥ १ ॥
अश्वपाँय चौबंदिकर, दीजै रगैखुलाय ॥
पाछे करै इलाजको, रोग नीक ह्वैजाय ॥ २ ॥
लीजै पात पवाँर जर, दूध लसोहर लेइ ॥
चँदसुर गोघृत संगलै, खान तुरीको देइ ॥ ३ ॥

अन्य।

सोरठा–आँब नीबकी छाल, पानी लीजै हरको ॥
बीसि टंक सो घाल, लहसुन लीजै टंक षट ॥
चौपाई–ज्वंडीकी जर आनौ भाई। पाँचटंक लीजै तौलाई ॥
पीसि छानि गोघृत सँगदीजै। गतिभंगीरसको हरि लीजै ॥
मुनि वासर तिहिदीजै खाना। औषध कीजै चतुर सुजाना॥

अथ कचरस लक्षण वा दवा।

दोहा–अंग हलावै जो तुरँग, करै फरहरी देषि॥
यह लक्षण भाषैं नकुल, कचरस सो अवरेषि॥
चौपाई–असगँध सोंठि बराबरि लीजै। कचरसरोग तुरँगको छीजै ॥

अन्य।

चौपाई–पित्तपापरा हींग जुपिपरी। मिरचै स्याह करौ यक ठौरी ॥
आठ आठ टंकै परमाना । कपरछान करि गोघृत साना॥
घोडेको जो देइ खवाई। कचरस हरै बिथा सब जाई ॥

अथ अन्यमत कई तरहके रस लक्षण वा दवा।

दोहा–रस उतरै जिहि सुमनगो, प्रगट बहत नाहिं होइ॥
ततरहैं सुम रैनि दिन, गुप्तरहै रस सोइ॥

दवा ।

सोरठा-सीपी चून मँगाइ, भाँटामो भरि दीजिये ॥
फिरि कपरा लपटाइ, माटी तापर लाइये ॥
दोहा-गाड़ि देइ सो अग्निमों, पाकि खूब जब जाइ ॥
चून निकारै ताहिते, ताकी यह विधि आइ ॥ १ ॥
सुमके भीतर ताहिको, भरत रोज सो जाइ ॥
सही जानियो बात यह, रस ताको बहि जाइ ॥ २ ॥

प्रगटरस ।

सोरठा-सुमकी पुतरी माहिं, बहै आनि रस जाहिको ॥
प्रगट जानियो ताहि, प्रथम देह बहिजान सो ॥
दोहा-औषध खुश्की की अहै, तिनको देउ भराइ ॥
तासों नीको होइ नहिं, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
लीलाथोथा खदिर पुनि, सूखै पीसै आनि ॥
सुमके भीतर लाइकै, भरै ताहिको जानि ॥ २ ॥
नहिं असवारीको करै, जलसों देइ बचाइ ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, कीजै यही उपाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा--बहत होइ रसु जाहि, बीते जाके बहुत दिन ॥
सुम नाकिस ह्वैजाइ, तरफ भीतरी जानियो ॥
दोहा-कुचिलागूदी रेंडकी, मासे आठ प्रमान ॥
मासे चारि अफीम पुनि, तामें देउ सुजान ॥ १ ॥
सुम नाकिस ह्वै गयो जो, दीजै ताहि भराइ ॥
गद्दी कपराकी करै, तापर देइ बँधाइ ॥ २ ॥
आठ पहरके बादिसो, दीजै ताहि खुलाइ ॥
नितप्रति बाँधै औषधी, जौलौं सूखि न जाइ ॥ ३ ॥

सोरठा—सुम जाको फटिजाय, चुवै आनि रस ताहि ते ॥
ताको यहै उपाय, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

सर्वरस दूरिकारिवेकी दवा ।

चौपाई—हरदी चौंतिस पलभरि लीजै । काराजीरी तासम कीजै ॥
आठकर्ष कुटकी लै आवै । सोऊ तामें आनि मिलावै ॥
दोहा—दिन इकइसलौं बाजिको, ताहि खवावै आनि ॥
साँझ सबेरे दीजिये, दो दो पल सो जानि ॥

अथ परसगीध लक्षण ।

दोहा—प्रथमहितौ रस उतरिकै, सुम भीतर गलिजाइ ॥
परसगीध सो जानियो, दोष रसहिको आइ ॥

दवा ।

चौपाई—पहुँचा सेहुँडको लै आवै । सोरह अंगुर ताहि नपावै ॥
भीतर ताको खाली करै । खारीलोनु ताहिमों भरै ॥
दोहा—तापर गोबरु लेसिकै, डारै ताहि सुखाइ ॥
अग्नि माहि सो डारिकै, ताको देउ जराय ॥
सोरठा—खूब राख ह्वैजाइ, लीजै ताको काढि सब ॥
तामें देउ मिलाइ, वाइभरंगी तीसपल ॥
दोहा—चौदह गोली तासुकी, जलसों लेहु बँधाइ ॥
धूपमाहि धरि ताहिको, डारै खूब सुखाइ ॥ १ ॥
आधी गोली साँझको, आधी भोरहि आनि ॥
दीजै चौदह रोज लगि, शालहोत्र मत मानि ॥ २ ॥
कही लगावन औषधी, जेती रससो आइ ॥
तिन्हैं लगावै नित्यप्रति, और बँधावति जाइ ॥ ३ ॥

अथ पाँयनका गंभीररोग ।

दोहा—पाकै अरु फूटै बहै, आमिष काढो सो जानु ॥
पीब चलै बहु छिद्र हैं, ताहि गँभीर बखानु ॥

चौपाई–सुमिलषार सज्जी औ चूना । जवाषार सबते ले दूना ॥
रँडके पाता संग बँधावे । रोग गँभीर दूरि ह्वैजावे ॥

अन्य ।

दोहा–पान एकसै लीजिये, आधापल सिंदूर ॥
ग्यारह दिनलौं खानदे, जाय रोग गंभीर ॥

अथ सुम येंडी खुश्कीते फाटैं ताकी दवा ।

दोहा--जा तुरंगके सुम वहुत, खुश्कीते फटिजाँय ॥
ताकी औषध कीजिये, रोग दूरि ह्वै जाय ॥
चौपाई–अरसी अरु गो दूध मँगावे । चमराकी थैली बनवावे ॥
खीर पका इक थैली भरै । ताके भीतर सुमको धरै ॥
साँझ सकारे याविधि कीजे । रोगहरै सुख बहुत करीजे ॥

अन्य ।

चौपाई–गूगुर रार मोम गुड़ लेहू । लोध लाख सैंधव सम देहू ॥
पिपरी डारि सकल पिसवावे । गोघृतअरुतिल तेल मिलावे॥
अग्नि पकाय टापमें भरै । नीको होय रोग रस हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–नैनू रार औ संदुरुफ आनै । लोध मिलै मलहम सोठानै ॥
तरवा लेपताहि करवावै । रँडके पाता सेंकि बँधावै ॥

अथ पैरमें मोचजाय तिसकी दवा ।

दोहा–जो घोड़ाके हाथ पद, मोचजाय तिहि हेरि ॥
तौ लेंड़ी भेड़ीनकी, अरु पेशाब तहँ गेरि ॥ १ ॥
पतरी करि धरि अग्निपर, पकै सो बाती भेइ ॥
धूप खड़ोकरि चुपरि तिहि, तीनि दिवस सुखलेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–सर्षप तेल अफीमको, गेरू पीसि मिलाय ॥
पदपर सेंक जु दीजिये, तुरतै मोच विहाय ॥

अन्य ।

चौपाई-लेउ सहोर चिरकुआ छाली । खारी नमक ताहिमें घाली ॥
अग्नि पकाय बफारा दीजै । ताहि घोय मालिसि करिदीजै ॥
सात पाँच दिन औषध कीजै । सोच जाय तुरँगै सुख लीजै ॥

अन्य ।

दोहा-जो घोड़ाके सुंममें, चढिकर मेष लगाय ॥
कीकंकर की ठीकरी, गड़े लंग ह्वैजाय ॥ १ ॥
गर्म करै यक ईटको, पट गद्दी बनवाय ॥
तापर हयको पद धरै, तक्रा नमक डराय ॥ २ ॥
थोरो थोरो छोडिये, जाहि बफारा होय ॥
सकल मोच मिटिजाइहै, नकुल कहैं मत सोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-मैदालकरी लोध्र पुनि, हालिम हर्दी आनि ॥
नरकचूर अरु तज सहित, पुहकर मूल बखानि ॥ १ ॥
सबै औषधी भाग सम, सबके सम गुरु लाइ ॥
जलसों सबको पीसिकै, लीजै गरम कराइ ॥ २ ॥
सोरठा-मोच जहांपर होइ, दीजै लेपु लगाय तहँ ॥
बारह दिनलौं सोइ, बाजी नीको होतहै ॥

अन्य ।

दोहा-सज्जी हालिम सोंठि पुनि, मैदा लकरी आनि ॥
एक एक तोले सबै, येती औषधजानि ॥ १ ॥
बीज कटाईके बहुरि, तोले पाँच मँगाइ ॥
गऊमूतमो पीसिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
सोरठा-मोच जहांपर होइ, होतिअहै सूजानि तहाँ ॥
लेप लगावै जोइ, बारह दिनलौं ताहि पर ॥

अन्य ।

दोहा—राई अजवाइनि सहित, मैदा लकरी आनि ॥
सबको भाग समानले, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आंबा हरदी सबनते, दूनी लेउ मँगाइ ॥
औषध पैसा चारिभरि, दूध माहि पकवाइ ॥ २ ॥
छाती जाकी बंदहै, मोच गईकी आइ ॥
लेपलगावै सात दिन, तुरी नीक ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

अथ पैर भारिजाय तिसकी दवा ।

दोहा—जो रगहै कर चरणकी, नली माँह पै सोय ॥
अति मोटी परिजातहै, तुरँग लंग तब होय ॥
चौपाई—यक हाँड़ीमें जलको भरै । पातपलाश ताहिमें धरै ॥
आधपाव षारी तिहि डारै । अग्निपकाय अरध जल जारै ॥
दल निकारि रुजपै कसि साधै । ताके ऊपर कपरा बाँधै ॥
मूँज रसीसे दृढ कसवावै । तिहि ऊपर सो पानी नावै ॥
तीनि दिवसमो नीकोलेई । यह औषध जानौ बुध सोई ॥
दोहा—त्रय विंशति रुज चरणके, वरणे चेतनचंद ॥
लखि निदान औषध करै, कटैं दुःखके फंद ॥

अथ जो चोटते कहींका मांस फटिजाइ अथवा सुमभीतर फटिजाइ तिसकी दवा ।

दोहा—मांसु जासु भीतरफटो, दरद दबाये होइ ॥
दरददबाये होइ नहिं, मोच जानियो सोइ ॥
सोरठा—मैदालकरी आनि, हालिम हर्दी लेउ अरु ॥
दुइ दुइ तोले जानि, दुइपैसाभरि तेल तिल ॥
दोहा—स्याहतिलनकी पुनि खरी, पाउसेर सो लाइ ॥
मुर्गी अंडा तीनिलै, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥

सबको पीसि पकाइ जल, दीजै ताहि लगाइ ॥
रंडपात धरि ताहिपर, दीजै ताहि बँधाइ ॥ २ ॥
औषधकीजै सातदिन, फटो मांस जुरिजाइ ॥
नितप्रति नई बँधाइकै, रोजलगावति जाइ ॥ ३ ॥

अथ नस फाटिगई होय तिसकी दवा ।

दोहा–सेंदुर तिलके तेलसो, लीजै खूब मिलाइ ॥
फटी जहाँ पर नस अहै, दीजै खूब मलाइ ॥ १ ॥
पात सँभारू आनिकै, कीकसरखके पात ॥
गरम कराइ बँधाइये, सातरोजलौं तात ॥ २ ॥

अथ नसफार वा मोच दोनोंकी दवा ।

दोहा–भेडीके घी माहिसों, पारी लोनु मिलाइ ॥
ताहि मलै दिन सातलौं, नसकी पीर नशाइ ॥

लक्षण ।

सोरठा–बाजी मोजा माहि, मोच गई सब नसनसो ॥
कहत अहैं पै ताहि, असवारी मो होत सो ॥ १ ॥
ऊँचे नीचे माहि, दौरत बाजी जोरसों ॥
पै तबहीं ह्वैजाहि, बाजीके घुट्टन विषे ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–बकरा गुरदा माहिकी, चर्बी लेहु मँगाइ ॥
आंबाहरदी तिल सहित, तोले तोले लाइ ॥ १ ॥
मुर्गी अंडा माहिकी, जरदी लेउ कढाइ ॥
यलुआ मासे षट सहित, सबको पीसि मिलाइ ॥ २ ॥
चरबी करछा माहि करि, दीजै अग्निचढाइ ॥
सो दुइ पोटरी बाँधिकै, तामें गरम कराइ ॥ ३ ॥
दोइघरी लौं ताहिको, दीजै खूब सेंकाइ ॥
ताको लेप बनाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥

बरगदपाता गरम करि, तापै देउ बँधाइ ॥
याविधि कीजै सात दिन, हयकी पीर नशाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—सेंहुड पहुँचा आनिकै, तिहिको लेउ पकाइ ॥
ताकी गूदी काढिकै, हरदी देउ मिलाइ ॥
सोरठा—वरम जहाँपर होय, बारह दिन बाँधै तहां ॥
नितप्रति औषध सोय, बाजी नीको होतहै ॥

अन्य ।

दोहा—यलुआ चून अफीमको, तोला तोला आनि ॥
लालमिठाई तज सहित, दुइ दुइ तोला जानि ॥ १ ॥
विष्ठ कबूतरको सहित, मैदा लकरी सोइ ॥
दोनों तोले आठभरि, गेरू तोले दोइ ॥ २ ॥
औषध पैसा दोइ भरि नरके मूत पकाइ ॥
हयके ऊपर ताहिको, दीजै आनि लगाइ ॥ ३ ॥
ढांक पात फिरि जोस करि, तापरदेउ बँधाइ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरिखुलाइ ॥ ४ ॥
तीनिदफा यहि विधि करै, पैनीको ह्वै जाइ ॥
शालहोत्र मत जानियो, श्रीधर वरणो आय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—कत्था नरके मूत में, लीजै गरम कराइ ॥
पैके ऊपर ताहिको, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥
मूत्र ताहि पर डारिकै, ताहि भिजावति जाइ ॥
औषध चौदह दिनकरै, मोच ताहि मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—तिल अरु साबुन मिलैकै, सज्जी ताहि मिलाइ ॥
जलमें सबको पीसिकै, लीजै गरम कराइ ॥ १ ॥

लेप कीजिये सात दिन, ऊपर बरगद पात ॥
सोतौ बाँधै गरम करि, तुरी नीक ह्वैजात ॥ २ ॥

बहुत दिनकी पैहो ताकी दवा।

दोहा—सबै औषधी करि चुकै, पैको घाउ नजाइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, ताको करै उपाइ ॥ १ ॥
पाव सेर हालिम विषे, जव पिसान मँगवाइ ॥
रोटी तासु बनाइये, एक तरफ पकवाइ ॥ २ ॥
नास पाल सज्जी सहित, आँबाहर्दी आनि ॥
बहुरि सोहागा लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ३ ॥
पुनि जमालगोटा बहुरि, मूदी तासु कढ़ाइ ॥
छामासे सो तौलिकै, दीजै ताहि मिलाइ ॥ ४ ॥
सबको पीसै एकसो, अति बारीख कराइ ॥
रोटी काचीकी तरफ, दीजै ताहि लगाइ ॥ ५ ॥
बाँधै पै ऊपर यही, कपरासों यह जानि ॥
तीनिरोजके बाद फिरि, खोलै ताको आनि ॥ ६ ॥
सोरठा--पाकि खूब जब जाइ, फिरि याही विधिसों करै ॥
शालहोत्र मत पाइ, कीजै औषध ताहिकी ॥
दोहा—धोवैं ताहि पेशाबसों, खूब पाकि जबजाइ ॥
यह औषध मँगवाइकै, तापर देहु लगाइ ॥

दवा।

सोरठा--हर्दी सिंहजराउ, माई औरौ फटकरी ॥
दुइ दुइ तोले लाउ, सबको पीसि मिलाइये ॥
दोहा--रोज लगावै ताहिको, जौलौं सूखिनजाइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, तुरी नीक ह्वैजाइ ॥

अन्य पुरानीपैकी दवा ।

दोहा--बहुत दिननकी होइ पै, जखम ताहि परिजाइ ॥
निकसत जाते पीबुहै, ताको कहौं उपाइ ॥
सोरठा-सज्जी लेउ मँगाइ, बहुरि सोहागा लीजिये ॥
और निसोदर लाइ, भाग बरोबरि सबनको ॥ १ ॥
जलमें लेउ पिसाइ, ताहि लगावो जखम पर ॥
नीबपात उसवाइ, ताके ऊपर बाँधिये ॥ २ ॥
खूब साफ ह्वैजाय, नीब लगावो ताहिपर ॥
मलहम देउ लगाइ, जखम सूखि तब जातहै ॥ ३ ॥

अन्य लेप सर्व चोटका ।

दोहा--लेउ कटैयाके फलन, मोथा ताहि मिलाइ ॥
यवके आटासंगमो, लीजे ताहि पिसाइ ॥
सोरठा-लेउ तासु पकवाइ, ताहि लगावै वाजिके ॥
तुरी नीक ह्वैजाइ, लेप कीजिये याहि विधि ॥
दोहा-जाके अगिले धर विषे, चोट कहूँपर होइ ॥
मदऊते अरु पग विषे, लेप लगावै सोइ ॥ १ ॥
हयको बाँधे धूपमें, लीजे लेप सुखाय ॥
या विधि कीजे पाँच दिन, टहलावत नित जाय॥ २ ॥

अन्य मोजा वा गांठिमो चोटहोइ तिसकी विधि ।

सोरठा--थोरे तिल पिसवाइ, बकराचरबीमाहिमो ॥
लीजे ताहि पकाइ, खूब सुरुख ह्वैजाइ जब ॥
दोहा-गाढ़े कपरा माहिमों, दीजे ताहि लगाइ ॥
सो वाजीकी गांठिमें, दीजे आनि बँधाइ ॥ १ ॥
सुतरीसों मजबूतकै, ताहि बँधावै आनि ॥
नितप्रति यह औषधकरै, सातरोज लगु जानि ॥ २ ॥

अन्य पलीता पराली लंग ।

दोहा-रेंडतैल लै पाइभरि, खूब निखालिस होइ ॥
सेर एक तिल तैल पुनि, ताहि मिलावै सोइ ॥ १ ॥
ताहि कराही माहिकरि, दीजै अग्नि चढाइ ॥
बीज हुरहुराके सहित, मालकाँगनी लाइ ॥ २ ॥
पावसेर लै दुहुँनको, जलसों लेउ पिसाइ ॥
तैल माहि सो डारिकै, दीजै ताहि पचाइ ॥ ३ ॥
आँबाहरदी लेउ पुनि, गेरू सैंधव आनि ॥
लीजै खरी अफीम अरु, दुइदुइ तोले जानि ॥ ४ ॥
इनको जलमें पीसिकै, देउ तैलमों डारि ॥
आँचखाइ थोरी जबै, लीजै ताहि उतारि ॥ ५ ॥

सोरठा-जब ठंढो ह्वैजाइ, फेरि चढ़ावै अग्निपर ॥
लीजै खूब पकाइ, धरि राखै तब ताहिको ॥ १ ॥
लंग जहांपर होइ, तहां लगावै ताहिको ॥
कंडा आगी लाइ,नितप्रति सेंकै वह जगह ॥ २ ॥

दोहा-नवदिन कीजै याहि विधि, वरम तहाँ ह्वैजात ॥
बाँबी माटी गरम करि,तहाँ लगावै तात ॥ १ ॥
फिरि टहलावै वाजिको, लंग तहाँ मिटिजाहि ॥
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर वरणो याहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-बकरा गुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ॥
मेर वरदको हाड़लै, लीजै गूद कढ़ाइ ॥ १ ॥
आँबा हर्दी येलुआ, गर्री लेउ पुराानि ॥
चँदसुर लोधु मँगाइकै, छा छा तोले जानि ॥ २ ॥

चौबिस तोले तिल बहुरि, सबको पीसि मिलाइ ॥
पोटरी कीजै तासुकी, दुइ मजबूत बनाइ ॥ ३ ॥
नित पोटरिनते सेंकिये, चोट जहाँ पर होइ ॥
तीनिरोज या विधि करै, चर्बी रोज मिलोइ ॥ ४ ॥
सेंकि चुकै जब तीनि दिन, ताको लेप बनाइ ॥
लंगहोइ जिहि अंगमो, दीजै तहाँ लगाइ ॥ ५ ॥

अथ अन्यमत शरदी गर्मीते भरिजाइ देंह ऐंठै भूख न लागे तिसको उपचार ।

चौपाई—लहसुन काराजीरी लीजै । मिरचा अरुण भागसम कीजै ॥
दुइ तोलाभरि गोली करै । सातरोज घोड़े मुखधरै ॥
तीनि दिवस फिरि ताहि नदीजै। इकइस दिन यहि क्रमतेकीजै

अन्य भरिबेकी वा बतास चोटकी दवा ।

दोहा—आपामार्ग बकायना, मुंडीपत्र कचूर ॥
अमरलतासम लैभरै, घटमें जलकरि पूर ॥ १ ॥
औटि तासु जलतुरै अँग, मलै खूब करिजान ॥
शरदी गरमी श्रमभरो, मिटै तुरतही मान ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—लहसुन हरदी हैसि तुच, मेथी सोवा कूटि ॥
अरु अँगरैला मेलिदे, हरत बात सब खूटि ॥

अथ झिटका, चोट, मोच, गुखुरू डोलै, कूल उतरैकी दवा ।

चौपाई—झिटका चोट मोच जिहि लागै ।वाकी दवा करौ दुखभागै॥
षोडश मुर्गी अंड मँगावै । तोला एक अफीम मिलावै ॥
आधसेर शूकर वश लीजै । सर्षपतैल आधसेर कीजै ॥
आधपावलै आँबाहरदी । पीसि महीन करौ बहुगरदी ॥
गेरू एक छटांक पिसावै । सकल मिलाय घेपि धरवावै ॥
मालिस खूबकरै बहु रगरै । कंडा भेंड सेंक फिरि करै ॥

साँझ भोर दुहुँबेर लगावै । सूजे चोट नीक तिहि भावै ॥
पंद्रहदिन याही विधि करै । तनुकी चोट सकल विधि हरै॥

अन्य ।

चौपाई–कामूनी अरु गेरू लावै । तोले पाँच पाँच तौलावै ॥
तोला एक अफीमै लीजै । सर्षपतेल आधसेर कीजै ॥
कपरछान सब दवा करावै । तेल मिलाइ ताहि धरवावै ॥
वासैं बाँधि क मालिस करै । अश्वरोग सगरे परिहरै ॥

अन्य ।

चौपाई–रेंड़ी गूदी सोंठि मँगावै । साँभरि नमक औरु लै आवै ॥
टका टका भरि सब तौलावै । भैंसी दही सेरइक लावै ॥
पीसि दवा सब दही मिलावै । दशादिन घूरेमें गड़वावै ॥
फिरि घूरेते लेइ निकारी । मालिस करै अश्वरुजहारी ॥

अन्य बफारा ।

चौपाई–नीब सँभारू आँबिली लावै । सन सहिजन सब पात मँगावै॥
बिरवा भटकटाइको लावै । कोदौं केर पयार मँगावै ॥
छालि सहोरेकी मँगवावै । बांबी दिमक कि माटी लावै ॥
रेहु खारी नमक मँगावै । तैलयंत्रकी माटीलावै ॥
पाव पाव सब लै तौलाई । हाँडीमें फिरि ताहि भराई ॥
पानीभरि मोहरा मुँदवावै । अग्नि चढ़ाइ ताहि पकवावै ॥
देइ बफारा ताको भाई । वाही जलसे खूबधुवाई ॥
वाही दवा फेरि सब बाँधै । आठ रोज याही विधि साधै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतपादरोगचिकित्सावर्णनोनाम
द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ प्रमेहरोग लक्षण वा दवा ।

दोहा--बाजी जो दुर्बलरहै, जिहि नित होय प्रमेह ॥
मन्मथ झर ताको कहैं, याके लक्षण येह ॥ १ ॥
लाख टकाभरि आनिये, टकाचारि भरि रार ॥
पाँचसेर गोदूधमें, प्रातै देय अहार ॥ २ ॥

अन्यमत ।

चौपाई--जो नित धातु गिरै हयकेरे । जलदी दवा कहौं मैं टेरे ॥
नागबेलिकी जो जर लावै । कदलीजर सम भाग करावै ॥
तवाशीर सुरमा औ चीनी । वेनवरगूदी सम करि लेनी ॥
गऊक्षीर दुइसेर मँगाई । सातादिना सो देउ खवाई ॥
नाशैरोग पुष्ट तनु होई । ओषधि करै जो या विधि कोई ॥

अन्य ।

दोहा--त्रिफला दीजे खाँडसों, सात दिवस उठि प्रात ॥
धातुदोष नाशै सकल, नकुलग्रंथकी बात ॥

अन्य ।

दोहा--राईशक्करसेरभरि, दूनौ देउ खवाइ ॥
धातुबंद होजातहै, जो यह करै उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा-मूरीबीज अनारके, टका एक भरि लेय ॥
आठरोज लग दीजिये, धातुबंद करिदेय ॥

अन्य ।

दोहा-दिउल चनाके टंक दश, गुलरी दूध भिगोय ॥
प्रात अश्वको दीजिये, धातुबंद सो होय ॥

अथ रक्तप्रमेह लक्षण वा दवा ।

दोहा-रक्तचलै पेशाब सँग, रोग कठिनहै ताहि ॥
रक्तप्रमेह बखानिये, दवा न देर कराहि ॥ १ ॥

गऊ दूध दुइ सेरलै, सुंखौली जर आनि ॥
तीनि टकाभरि दीजिये,रोगहरै तिहि जानि ॥ २ ॥

अथ मन राहिबेको लक्षण वा दवा।

चौपाई–निशिवासर अरु आठौ यामा। हयकी प्रीति तुरीके कामा ॥
दोहा–मन्मथजाग्यो प्रीतिते, अश्वाके उर आय ॥
निशि वासर आठौ पहर, घोडीसों मन लाय ॥
चौपाई–समुदफेन औ पीपरि आनै। दशैटंक दूनौं परमानै ॥
हींग टकाभरि तामें सानौ। तीनौं औषध पीसि बखानौ ॥
टंक पाँच शक्कर सो लीजै। सकल सानि गोघृतमें दीजै ॥
घोडे सात दिवस दै प्राता। मन्मथ तुरत रहैतिहि गाता ॥

अथ मूत्रकृच्छ्ररक्तप्रमेहकी दवा।

दोहा–सोंचर हरदी पीपरै, इंद्रायनफल लेउ ॥
मूत्रकृच्छ्र हयको हरै, पिंड परम विधि देउ ॥

अन्य।

सोरठा–सैंधव युत जंभीर, पिंड मिलायक दीजिये ॥
मूतै रक्त अधीर, होत दिये है परम सुख ॥

अथ मूत्रप्रमेह बार बार मूतै।

चौपाई–मूत्र अधिक घोड़ाके गिरै। ताकी औषध याविधि करै ॥
करुआ तोंबी टका चारि भरि। हींग अधेला एकताहिधरि॥
गोके दूधहि संग मिलाई। धारा मूत्र बंद ह्वैजाई ॥

अन्य।

चौपाई–साँभरि गुड़ तोला बसु दीजै। अधिक मूत्रपर साधनकीजै॥
गेरहदिन सो देय खवाई। रोगनीक होई सुख पाई ॥

अन्य।

चौपाई–पोस्ता साँभरि बबुर किपाती। दुइ दुइ टंक लेउ यहि भाँती॥
यवके आटा प्रात खवाई। मूत्रधारको बंद कराई ॥

पैसाभरि दतूनि को तेला । गदहपुरनवाकी जर मेला ॥
दुइ पैसाभरि दीजे प्राता । मूत्रबंदहै औषधखाता ॥

अथ घोडा बहुत मूते तिसकी दवा ।

दोहा–मेथी अरु सोवाहिलै, आधपाव परमान ॥
दाना साथ खिलाइये, मूते कम यह जान ॥

अन्य लोहूमूतै तिसकी दवा ।

दोहा–लोहूमूतै जो तुरँग, ताकी यह पहिचान ॥
पतरा गरमी सो लखै, गाढ जु बादी जान ॥ १ ॥
पाँच दिवस ताकी दवा, करै नजियघबराय ॥
छठयें दिन यह जतन करु, रोग दूरि ह्वैजाय ॥२ ॥
शक्कर भूर जु दोइ भरि, मैदा दुगुन मिलाय ॥
जलमें घोरि पिआइये, तुरत तुरै सुखपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जो गाढा हय खून लखु, तोला मिरच मँगाय ॥
ता आधी मिश्रीमिलै, आटा सानि खवाय ॥ १ ॥
याको दै जल दीजिये, जबलौं नीक नहोय ॥
नितही नितहयसुख लहै, करै जतन जो कोय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जमुनी छाली सेर यक, वतनै गूलरि छालि ॥
काढा करि दानाहि सँग, आधपाव मित घालि ॥ १ ॥
तीनि दिवस यहि रीतिसों, दीजै जतन बनाय ॥
युद्धधीर भाष्यो प्रमित, रक्तमूत्र नाशिजाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जेठीमधु जव चोकरा, असगँध अरु अँवराहि ॥
पीसि पिआवै नीरसों, रुधिरसूत्र नाशिजाहि ॥

अन्य बहुतमूतै तिसकी दवा।

दोहा—घोड़ा जो मूतै बहुत, ताको यही उपाय॥
पूस माघके मासमें, तिल गुड़ देइ खवाय॥

अन्यमत रक्तमूतैकी दवा।

दोहा—लेउ पिसाउ सिंघारको, आधपाव यह जानि॥
शक्कर लीजै पावभरि, दोनौं लीजै सानि॥ १॥
सैंधवतोला एक भरि, दोऊ लेउ मिलाइ॥
ताहि खवावै वाजिको, दीजै नीर पिआइ॥ २॥

अन्य।

दोहा—जो गर्मीते वाजिको, मूत्ररक्तको होइ॥
औषध ताकी कहतहौं, शालहोत्र मत जोइ॥ १॥
लेउ कतीरा एक पल, शक्कर दूनि मिलाइ॥
सो घोड़ोको दीजिये, रक्तमूत्र नाशिजाइ॥ २॥

अन्य गर्मी वा बादीकी पहिंचान।

दोहा—कोखीमारै हटिरहै, अरु कोखी चढिजाय॥
बादी ताको जानिये, शालहोत्र मत आय॥ १॥
खून जासु पेशाबमें, स्याही लीन्हें होय॥
अरु कछु गाढ़ा सो गिरै, केवल गर्मी सोय॥ २॥
विलखो खून पेशाबसो, अरु लक्षासों होइ॥
जानौ बात विकारसो, और बताना जोइ॥ ३॥
बूँद नहोइ पेशाबजो, अतिहि दरद तिहि होय॥
करत पेशाबहि विकलहै, पथरी जानो सोइ॥ ४॥

दवा।

दोहा—सुरवारी मूरी बहुरि, दोनों बीज मँगाइ॥
दोनों तोले चारिभरि, जलमें लेउ पिसाइ॥ १॥

दिन यकइसलौं ताहिको, रोजपिआवति जाइ ॥
पथरी हयकी गिरिपरै, जो यह करै उपाइ ॥ २ ॥

अन्य खूनमूतैकी दवा ।

दोहा–जाहि करेजे माहिमो, पहुँचत गरमी आइ ॥
मूतत बाजी खूनजो, शालहोत्र कहि ताइ ॥ १ ॥
औंरा तोले चारिलै, जलमें लेउ भिजाइ ॥
चारि टकाभरि लीजिये, भूँजे यव पिसवाइ ॥ २ ॥
औंरा लीजै जल सहित, आटा माहिं सनाइ ॥
हयको देउ नहार मुख, रोग सबै बहिजाइ ॥ ३ ॥
गर्मीके महिना विषे, यहि औषधको देइ ॥
औषध दीजै सात दिन, रोग बाजि हरिलेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–सोरहमासे फटकरी, जलसों देउ पिआइ ॥
औषधकीजै सातदिन, रोग नाश ह्वैजाइ ॥

अन्य ।

सोरठा–गेंदापात मँगाइ, जानौ तोले चारि भरि ॥
शीतलचीनीलाइ, तोलाभरि मौताजकरि ॥
दोहा–पत्थर सिंहजराउको, तोला डेढ़ मँगाइ ॥
सोरा मासे षट सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥
सोरठा–औषधदेउ खवाइ, पाछे पानी दीजिये ॥
रोग नाश ह्वैजाय, सातरोजके मध्यमें ॥

अन्य ।

दोहा–स्याहमिर्च मँगवाइये, षटतोला भरि जानि ॥
पीसि सिंघारे लीजिये, पावयेक यह मानि ॥ १ ॥

दुइ दुइ तोले लीजिये, सौंफ करारिको डारि ॥
सोंचरु तोले एक भरि, मिश्री तोले चारि ॥ २ ॥
सबको पीसि मिलाइये, यवके आटा माहि ॥
हयको दीजै सात दिन, रोगनाश ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ सलसल बोलिया रोगकी दवा वा लक्षण ।

दोहा–खुलिकै होइ पेशाब नाहिं, अरु बूँदनते होइ ॥
मानौ सलसल बोलिया, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
अंडा लीजै मुर्गको, छिलका ताहि छिलाइ ॥
पैसा भरि तादादकरि, घीमें लेउ भुँजाइ ॥ २ ॥
दाना पीछे साँझको, दीजै ताहि खवाइ ॥
याविधि कीजै सातदिन, रोगनाश ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–यव पिसानलै सेरुभरि, अजयामूत मिलाइ ॥
ताहि भिजावो एक दिन, लीजै छाँह सुखाइ ॥ १ ॥
दूधमदार मँगाइकै, दीजै तामें डारि ॥
फिरि सुखवावै छाँहमें, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
तासम तामें स्याह तिल, तिन्हैं मिलावै आनि ॥
कूटै अति बारीख करि, शालहोत्र मत जानि ॥ ३ ॥
नितप्रति दीजै बाजिको, दोइ टका भरि ताहि ॥
औषध दीजै सातदिन, रोगनाशह्वैजाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

चौपाई–तोले चारि चिन्हारू लावै । दुइमासेगंधी मिलवावै ॥
यह औषधलै हयको दीजै । सातदिवस महँ नीको लीजै ॥

अन्य ।

दोहा–तोलाभरिले मोचरस, सात दिवस लगु जानि ॥
आधसेर शक्कर सहित, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥

देखिबताना तासुको, औ मौसम पहिंचानि ॥
जौन मुनासिब औषधी, हयको दीजै आनि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–टकाचारि भरि लीजिये,त्रिफला ताहि कुटाय ॥
सेर एक शक्कर सहित, हयको देउ खवाय ॥

अथ जरिआन रोग ।

दोहा–मनी मूत्रके सँग गिरै, कर्क तासुके होइ ॥
होत दूबरो जाइ अरु, जरिआनोहै सोइ ॥ १ ॥
भूँजो आटा सोठको, और चनेको जानि ॥
पाव पाव पक्के दुऔ, तिनको लीजे छानि ॥ २ ॥
गूदी कदुवा बीजकी, पक्के पाव मँगाइ ॥
गोंद बबूरहि तज सहित, बीजवंद अरु लाइ ॥ ३ ॥
केलाकी जर लेउ पुनि, इनको भाग समान ॥
चारि चारि तोले करो, इनको जानु प्रमान ॥ ४ ॥
आध सेर शक्कर कही, पक्की तौल प्रमानि ॥
पाँचसेर गोदूधलै, तौल सुपक्की जानि ॥ ५ ॥
खोवा करिकै दूधको, लीजै ताहि भुँजाइ ॥
औषध सब शक्कर सहित, तामें देउ मिलाइ ॥ ६ ॥
दीजे हयको आठ पल, प्रात साँझको आनि ॥
शालहोत्र मुनि यों कहो, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा–केलाकी जर एक पल, मौसम गर्मी माहि ॥
हयको दीजे तीनि दिन, रोगदूरि ह्वै जाहि ॥

अन्य ।

दोहा–रार लीजिये सेरु भरि, तासम खाँड़ मिलाइ ॥
हयको दीजै सात दिन, बीजबंद ह्वैजाइ ॥

अथ सुजाकरोग लक्षण वा दवा ।

दोहा—लिंग अगारी अश्वके, तहँ सुरखी कछुहोइ ॥
तुरी करै पेशाब जब, जरनि दरद तब होइ ॥ १ ॥
करै पेशाब रसेरसे, सूखत वाजी जाइ ॥
ऐसे लक्षण जब मिलैं, तब प्रमेह दरशाइ ॥ २ ॥

चौपाई—खीरा ककरी बीज सँगावै । गुखुरू और ताहि मिलवावै ॥
बहुरि कतीरा लेउ सँगाई । दश तोले सबको तौलाई ॥

दोहा—औषध तोले दश सबै, भागसमाने तासु ॥
हयको देउ नहार सुख, होइ रोगको नासु ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, श्रीधर कहो बखानि ॥
अथवा दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अथ बंदपेशावकी दवा ।

दोहा—सोराकलमी लीजिये, टका तीनि भरि जानि ॥
गोदधिमें करि दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य ।

दोहा—माठाके जलमाहिमें, लेउ कपूर मिलाइ ॥
कपराकी बाती करै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
सोई बाती लिंगके, छेद माहिं धरिदेइ ॥
होय मूत्र तिहि अश्वको, रोग सकल हरिलेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—पाकी अँबिली पाउ भरि, जलमें लेइ मिलाइ ॥
कपरामें सो छानिकै, हयको देउ पिआइ ॥

अन्य ।

दोहा—हयको लै ठाढो करै, घाम गड़रिया माहिं ॥
सूंघै ताकी भूमिको, त त्र लेजाहिं ॥

अन्य।

दोहा–साबुन मिरचैस्याहलै, विष्ठ गरगवा आनि ॥
लै बाती ऊपर धरै, कूपोदक सों सानि ॥ १ ॥
छिद्र पेशाबहि माहिमें, बाती देइ धराइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, तुरत मूत्र खुलिजाइ ॥ २ ॥

अन्य।

चौपाई–ककरी खीरा बीज मँगावै। पीसि नीरमें ताहि पिआवै ॥
घास गडरियाके लै जाई। सूँघत मूत्र वाइ खुलिजाई ॥

अन्य।

चौपाई–मिर्च दक्षिणी साबुन लोनू। गरगौआकी विष्ठा तौनू ॥
बाती भिजै नरामें कीजै। छूटै मूत्र रोग हरिलीजै ॥

अन्य।

चौपाई–पिपरी सोंठि दुवौ पिसवावै। लिंगमध्य बाती चलवावै ॥
छूटै मूत्रधार अधिकारा। मेटै वाको सकल विकारा ॥

अन्य।

चौपाई–मिर्च कपूर साबुनै आनी। खरिल करौ पानीमें सानी ॥
बातीकरौ लिंगमें कोई। बहुत पेशाब करै हय सोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतअश्वमूत्राधिकारवर्णनोनामत्रयो-
दशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ घाव लागेकी दवा।

दोहा–कुचिला और भेलावको, लहसुन सेंदुर धूप ॥
एकै एक छटाँकलै, मिर्चा अरुणैरूप ॥ १ ॥
लेउ तूतिआ पीसिकै, दुइ तोला परमान ॥
तेल लीजिये सेर यक, मलहम करौ विधान ॥ २ ॥

चौपाई—तेल कराही तरे करावै । नीबपात रस पाव मिलावै ॥
कुचिला लहसुन मिर्च मेलावा । डारु समूचै तेलबनावा ॥
पकिजावै वह देखो जबै । पीसि दवा मिलवावै सबै ॥
देखै दवा तेलमें जली । ताहि कराहीमें तब खली ॥
या मलहम को नित्त लगावै । सूखैघाव नीक होजावै॥

अन्य दवा खानेकी ।

दोहा—जवाखार सैंधव जुमधु, बाउबिरंग मिलाय ॥
टुकरा टुकरा भरि सबै, पीसि दिये सुखपाय ॥

अथ घाव धोवैकी विधि ।

दोहा—जो धोवा छतको चहै, तौ दल नींब मँगाय ॥
सो जलमें परिपक्क करि, धोय यही सो जाय ॥ १ ॥
की धोवै गोमूत्र सों, कृमि न तहाँ परि जाँय ॥
जो कदापि कृमि देखिये, तौ करि यही उपाय ॥ २ ॥

अथ कीरानाशन दवा ।

दोहा—सुरती और मुलीसको, कूटि लीजिये छानि ॥
भरि माटी सो लेपिदे, मरि झरिहैं कीरानि ॥

अथ घावते लोहू बंद न होय तिसकी दवा ।

दोहा—मकरीको जारा तहाँ, बाँधिदेइ मतिवान ॥
कीकंचनरिपु बूँकि तहँ, डारि रुधिर रुकि जान ॥

अन्य ।

चौपाई—लैआवैं दंवुल अखवैना । कुंदुर संग जराय तलैना ॥
लै रूमीमस्तगी मिलावै । सकल दवा सम भाग पिसावै ॥
छतके ऊपर देउ लगाई । शोणित बंदहोइ सो भाई ॥

अन्य घाव सूखैकी दवा ।

दोहा—जो जलदीमें घावको, चहै सुखाय प्रवीन ॥
तौ गदहाकी लीदिको, सुखै पिसाय महीन ॥ १ ॥

लाय दीजिये घावपर, जैहै सूखि तुरंत ॥
की पुरान जूताहिको, पीसि भरै गुणवंत ॥ २ ॥
की सबजीको पीसि भरि, देहै यहौ सुखाय ॥
की पसुरीलै ऊँटकी, भरिये ताहि जलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लेउ फटकरी खीलकरि, और सुफेदा मानि ॥
लीजै सिंधजराव पुनि, तीनौंको सम जानि ॥ १ ॥
सबको सूखो पीसिकै, दीजै आनि लगाइ ॥
भरिआयो जो साफहै, जखम सूखि सो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–वस्त्र पुरानो स्याह जो, ताको देउ जराइ ॥
ताहि लगावे घावपर, जलदी जखम सुखाय ॥

अथ जखममें मांस बढिआवै तिसकी दवा ।

दोहा–एलुवालेउ निसोदरहि, षटमासे मँगवाइ ॥
सेंदुर मासे पाँचभरि, तीनों लेउ पिसाइ ॥
सोरठा–ताको लेउ मँगाइ, मांस बढिगयो होइ जहँ ॥
वीरा एक पिसाइ, तापर दीजै बाँधिसो ॥

अन्य ।

दोहा–सीपचून सज्जी सहित, लीलाथोथा आनि ॥
पुनि हर्दीकी राखलै, चारौंको सम जानि ॥ १ ॥
सूखो याको पीसिकै, दीजै जहां लगाय ॥
मांस फटत मुरदारहै, जखम अधिक परिजाइ ॥ २ ॥

अन्य मलहम ।

दोहा–तिलको तेल छटांक भरि, डारि कराही माहि ॥
लेउ विरोजा दोइ पल, डारि तेलमें ताहि ॥ १ ॥

तब कीजिये अग्निपर, देउ बिरोजा जारि ॥
काढि बिरोजा डारिये, लीजै तेल उतारि ॥ २ ॥
एक कर्ष जंगाल लै, ताको लेउ पिसाइ ॥
ताते आधा मोमलै, तामेंलेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
फेरि गरम थोरा करहु, राखो ताहि धराइ ॥
फाहा तासु बनाइकै, दीजै रोज लगाइ ॥ ४ ॥
कटत माँसु सुरदारहै, पूरि जखम सो जाइ ॥
जखम जौन बिगरो अहै, ताको मलहम आइ ॥ ५ ॥

अन्य मलहम वर्मका ।

दोहा—बकरा मुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ॥
सो तोले भरि तौलिकै, मोम तासु सम लाइ॥ १ ॥
लेउ सफेदा डेढ पल, पुनि सेंदुर पल चारि ॥
फूल गुलाबहि फटकरी, नौ नौ मासे डारि ॥ २ ॥
चंदन लीजै श्वेत पुनि, दुइ तोले मँगवाइ ॥
पृथक पृथक सब औषधी, जलमें लेउ पिसाइ ॥ ३ ॥
दोइ सेर तिल तेलमें, चर्बी मोम मिलाइ ॥
मंद आँच पर ताहिको, दीजै आनि धराइ ॥ ४ ॥
चर्बी मोम दुओ जबै, तेल माहि मिलिजाइ ॥
एक एक करि औषधी, लीजै सबै पचाइ ॥ ५ ॥
स्याही पकरै तेल जब, लीजै तबै उतारि ॥
ताहि लगावै वर्मपर, सातरोज लगु टारि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—जा बाजीकी जानुमें, वर्म होइ जो आइ ॥
बकला छोलि पिआजको, तापर देउ बँधाइ ॥

अन्य वरमकी दवा ।

दोहा–आँबाहर्दी तिल सहित, तोला आठ बखानि ॥
अजवाइनि मेथी सहित, मैदा लकरी जानि ॥
सोरठा–तज अरु साबुन लाइ, तीनि तीनिमासे सबै ॥
सबको लेउ पिसाइ, तोला भरि तिल तैललै ॥
दोहा–सबै औषधी तैलमो, हेलुवालेउ पकाइ ॥
याही औषधते वरम, बहुत बार सेंकवाइ ॥ १ ॥
फिरि थोरा जल डारिकै, हेलुआ लेइ पकाइ ॥
लेपु कीजिये वरम पर, तुरत नीक ह्वैजाइ ॥ २ ॥

अथ तंगते छाती में जखम होइ तिसकी दवा ।

दोहा–जाकी हड्डी कटिगई, लीलबरी सो लाइ ॥
छाती जाकी अतिकटी, मलहम देउ लगाइ ॥ १ ॥
थैली कपरा की सियै, अजया चरबी लाइ ॥
थैली तामें बोरिकै, तंग माहि पहिराइ ॥ २ ॥
जीनकसै तातंगते, कवि श्रीधर यह जानि ॥
छाती पोढी परतहै, फेरि कटति नहिं आनि ॥ ३ ॥

अथ पीठि फूलैकी दवा ।

दोहा–जो सूजनि हय पीठिलखि, चिकनी माटी आनि ॥
सानि ताहि वापर धरै, मिटिहै सूजि प्रमानि ॥

अन्य ।

दोहा–इसबगोलको पीसिकै, तापर देइ लगाय ॥
याहूसों मिटिजायगो, पीठिसोथ सुखपाय ॥

अन्य ।

दोहा–की साबुन पानी गरम, धोय ताहिसों देय ॥
याहूसों मिटिजातहै, पीठिसूज सुख लेय ॥

अन्य ।

दोहा—की कटु तेल लगायकै, बासीजलसे धोय ॥
याहूसों मिटिहै सुघर, धरै जीन नहिं कोय ॥

अन्य ।

दोहा—पानी खूब गरमकरै, तिहि पट बोरि निचोइ ॥
यही सेंक जो देउ नृप, पीठि सोथ हरिलेइ ॥

अथ पीठिलागैकी दवा ।

दोहा—लीलाथोथा फटकरी, खैर पापरी शार ॥
कडूतेलसम लीजिये, मलहम करु निरधार ॥ १ ॥
काँसे बासन राखिकै, पीठि लगावै कोय ॥
याविधि औषध कीजिये, घावनीक सो होय ॥ २ ॥

चौपाई—साबुनऔ लिलबरी मँगावै । कडुयेतेल मध्य औटावै ॥
पीठीपर लावै जो कोई । घावनीक सो याते होई ॥

अन्य ।

दोहा—चून पुराना आठ भरि, पाव एक कटुतैल ॥
डारि चून जलमें प्रथम, फिरि कटुतेल जु घेल ॥ १ ॥
खूब फेंटि दीजौ मिलै, लै उठाइ जलत्यागि ॥
लकरीमें फाहा बनै, याही विधि तहँ लागि ॥ २ ॥
कई रोज नित बार बहु, लावै छतपर जानु ॥
माखीतहाँ न बैठिहै, सूखै जलदी मानु ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—आधसेरलै तेलतिल, कली चून इन्मान ॥
पानी पाव प्रमान करि, फेंटिलगाव विधान ॥

अन्यमतं मदऊमें रगर लागै या पीठि कटिजाय तिसकी दवा ।

दोहा—रगर लगै मदऊ विषे, की थोरा कटिजाइ ॥
लीलबरी जल घोरिकै, तामें देउलगाइ ॥

अन्य ।

सोरठा—नींबपात मँगवाइ, पीसै लोन मिलाइकै ॥
रोज लगावत जाइ; साफहोइजौलौं नहीं ॥

अन्य ।

दोहा—आँबाहलदी पीसिकै, तापर देउ लगाइ ॥
पाँचसात दिन माहिमें, सूखि जखम सब जाइ ॥

अन्य मदऊफूलिजाय तिसकी दवा ।

दोहा—औषध कीन्हें जासुकी, सूजानि उतरै नाइ ॥
माटी लेउ पकाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
पाकिजाइ मदऊ तबै, फूटि फेरि बहिजाइ ॥
नीबपात अरु लोनको, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥
सोरठा—पीब साफ ह्वैजाइ, मलहम फेरि लगाइयो ॥
जखम नीक ह्वैजाइ, कवि श्रीधर यह जानियो॥

अन्य पीब लबाब सम निकरै ताकी दवा ।

दोहा—जो दधिको जल डेढ़पल, ताको लेउ छनाइ ॥
पैसाभरि पुनि चूनको, तामें देउ मिलाइ ॥
सोरठा—बाती ऊपर लाइ, सो बाती धरि जखमपर ॥
फाहा देउ बनाइ, ता ऊपर सो लाइकै ॥

अन्य मलहम ।

दोहा—पाउ एक तिलतेललै, दीजै आँच चढ़ाइ ॥
घुँघुँचिल लाउ सफेद पुनि, नरके नहँ मँगवाइ ॥
सोरठा—जारि तैलके माहि, रगरै लकरी नींबसों ॥
एक माहिं मिलि जाहि, तब धरि राखै ताहिको ॥
दोहा—फाहा ऊपर ताहिको, रोज लगावत जाइ ॥
जखमहोइ मदऊ विषे, जलदी नीक देखाइ ॥ १ ॥

यह मलहम नासूरसें, जो कोइ देय लगाय ॥
चंगा होवे अश्व अति, जख्म नीक होजाय ॥ २ ॥

मुर्दारमांस दूरिकरनेकी दवा ।

दोहा–दुइपल लैकै तेलतिल, दीजै अग्निचढ़ाइ ॥
मोम विरोजा दुहुँनको, तोले चारि मँगाइ ॥ १ ॥
तेलमाहि सो डारिये, पाकि खूब जब जाइ ॥
तबै उतारै अग्नितें, लीजै ताहि छनाइ ॥ २ ॥
तोलाभरि जंगाललै, दीजै तामें डारि ॥
थोरा ताहि पकाइकै, लीजै तुरत उतारि ॥ ३ ॥
जख्म ऊपरै ताहिको, फाहा देउ लगाइ ॥
मांस फटत मुर्दारहै, जख्म साफ ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

अथ जखममें खुश्की आनेकी दवा ।

दोहा–रेवतचीनी तज सहित, मैदा लकरी आनि ॥
और हिरामिजी लीजिये, यक यक तोले जानि ॥ १ ॥
सबको पीसै एकसें, राखै ताहि धराइ ॥
नीर माहि सो सानिकै, थोरा देइ लगाइ ॥ २ ॥

नासूरकी दवा ।

दोहा–सेर एक तिलतेललै, दीजै अग्नि चढाइ ॥
मालकाँगनी एकपल, तामें देइ जराइ ॥ १ ॥
नींब पातलै एक पल, टिकिया तासु बनाइ ॥
तेल माहिं सो जारिकै, डारै तिहि निकराइ ॥ २ ॥
मोम रार इन दुहुँनको, लीजै तोला चारि ॥
ताहि मिलाइ पकाइकै, लीजै फेरि उतारि ॥ ३ ॥
सेंदुर मासे चारि सम, लीलाथोथा लाइ ॥
ताहि मिलाइ पकाइये, जब शीतल ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

ताहि मलावै जखमपर, अरु नासूरहि माहि ॥
भरि आवत नासूरहै, जखम नीक ह्वैजाहि ॥ ६ ॥

अथ नासूरकी दवा ।

दोहा—लीलाथोथा मधु खदिर, फोंटि जु बाती भेइ ॥
देइ नसूरहि छेदमें, मिटै रोग सुख लेइ ॥

अन्य ।

दोहा—लेउ कमीला अतिखरो, नौमासे भरि जानि ॥
कत्था मासे तीनि भरि, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
लीलाथोथा लेउ पुनि, मासे दोइ मँगाइ ॥
विना बुझाये चूनको, यक मासे भरिलाइ ॥ २ ॥
गोघृत तोले तीनि भरि, इन्हैं मिलावै आनि ॥
रगरै ताको जोरसों, पहर एक सो जानि ॥ ३ ॥

मलहम सबतरहको जखम जल्द पूरै ।

दोहा—मोम सफेदा लीजिये, खैरपपरिया लाइ ॥
दो दो तोले ये सबै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
गाजर सलगम बीज पुनि, यक यक तोले आनि ॥
लीजै मुर्दाशंख पुनि, दश मासे सो जानि ॥ २ ॥
आधपाव तिल तेलमें, दीजै अग्नि चढाइ ॥
नींबपात पल एकलै, टिकिया तासु बनाइ ॥ ३ ॥
जारै ताको तैलमें, डारै फेरि निकारि ॥
सबै दवाई पीसिकै, दीजै तामें डारि ॥ ४ ॥
षट मासे सेंदुर बहुरि, तामें देउ मिलाइ ॥
रगरै लकरी नींबसों, एक रूप ह्वैजाइ ॥ ५ ॥
ताहि लगावै बाजिके, जखम जहां पर होइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, जलदी नीको सोइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा-कत्था एक छटाँक भरि, दूनी रार मिलाइ ॥
आधपाव तिल तेलमें, तीनों देउ डराइ ॥ १ ॥
लीलाथोथा फटकरी, दूनौं खील कराइ ॥
दुइ दुइ मासे तौलिकै, तेऊ लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
फूल कि थारी माहि करि, कवि श्रीधर यह जानि ॥
धोवै ताको बार शत, एक बार अस जानि ॥ ३ ॥
फाहा ऊपर ताहिको, दीजै खूब लगाइ ॥
पीब छुटति है जखमते, पूरि जल्द सोजाइ ॥ ४ ॥

अथ जखमपर बार जामैंकी दवा ।

दोहा-बार जमायो घाव पर, चहै सु तेल मँगाय ॥
कइउबार थुकसों घसै, दीजै तहाँ लगाइ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतअश्वघाववर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ सीनाबंदके लक्षण ।

दोहा-हयते मेहनति लीजिये, अरु ठाढो करि देय ॥
ताते सीना भरतहै, जानि विचक्षण लेइ ॥

गर्मीके दिननकी दवा ।

दोहा-खील सोहागा फटकरी, रेवतचीनी पाइ ॥
गूगुरयुत सब औषधी, सोरहतोले लाइ ॥ १ ॥
सज्जीसाबुन लीजिये, तोले दश मँगवाइ ॥
दो तोले हलदी सबै, पीसै गुड़हि मिलाइ ॥ २ ॥
पीडा बाँधै ताहिके, वजन छटाँक सुजानि ॥
हयको दीजै एक नित, प्रातकाल सो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–छामासे फटकरीको, लावा लेइ कराय ॥
पीसि मिलावै नीरमें, वाही रोज पिआय ॥

अन्य ।

दोहा–तेलीके कोल्हू विषे, बरद फिरतजहँ आनि ॥
माटी लीजै ताहिकी, अरु बाँबीकी जानि ॥ १ ॥
भैंसाके गोबर सहित, रेहू माटी आनि ॥
भेंडीकी लेंडी बहुरि, अरु सेंहुडको जानि ॥ २ ॥
भटकटाइ औरौ कही, पाव पाव सब आनि ॥
लीजै सज्जी लोनको, आधपाउ सो मानि ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिये, यक वर्त्तनमें लाइ ॥
अरु पानीको डारिकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लीजै ताहि उतारि फिरि, जब गुनगुन रहिजाइ॥
ठाढ़ कीजिये अश्वको, धूप माहिं बँधवाइ ॥ ५ ॥
काँधेते सीना तलक, छोपकरै तिहि लाइ ॥
एकरोजमें छादफे, लेपाकिये रुजजाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौपाई–तोला एक मुसव्वर लीजै । तासम और कैफरा कीजै ॥
अंडा मुरगीको यक लावै । झिकवारीको अर्क कढ़ावै ॥
दोहा–नरके लीजै केश अरु, एक हजामति जानि ॥
सबै औषधी कूटिकै, लेउ एकमो सानि ॥ १ ॥
एक अहै मौताज यह, हयको देउ खवाइ ॥
पानी दीजै गर्मकरि, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥
तीनिरोज यह दवा करि, दाना आधा देइ ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, तुरीनीक करिलेइ ॥ ३ ॥

अन्य गर्मीके दिनकी दवा ।

दोहा–गुडपुरान हरदी सहित, सेर एक मँगवाइ ॥
सॉंभरि लीजै पाव भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
बोडी लीजै पोस्तकी, आधपाव यह जानि ॥
धूधुर तोले दोइ भरि, लीजै गुडमें सानि ॥ २ ॥
याकी गोली आठकरि, प्रातहि एक खवाइ ॥
फिरि टहलावै अश्वको, आइपसीना जाइ ॥ ३ ॥
हथ्थीते छाती मलै, सूखि पसीना ताहि ॥
याविधि कीजैआठ दिन,छाती तवखुलिजाहि॥ ४ ॥
दाना ताहि नदीजिये, सो जानौ मन माहिं॥
शालहोत्र मुनिके मते, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–हरदी तोले चारिलै, महुआ छालि मँगाइ ॥
हरदीके सम छालिकरि, दोऊ लेउ कुटाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै एक फिरि, हयको देउ खवाइ ॥
याविधि कीजै तीनि दिन, सीना तौ खुलि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी लीजै सोंठि पुनि, मैदा लकरी आनि ॥
तोला तोला लीजिये, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
हालिम तोले पाँच लै, सबको लेउ कुटाइ ॥
नरके मूत्रहि माहिंमो, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
लेपकीजिये ताहिको, हयकी छाती माहिं ॥
बाँधै घामें ताहिको, छाती तब खुलिजाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–खील सोहागा फटकरी, मूसव्वरको लाइ ॥
दुइ दुइ तोले औषधी, लेउ सबै पिसवाइ ॥ १ ॥

ग्यारह तोले गुड़ सहित, गोली एक कराइ ॥
हयको साँझी बेरमें, दीजैताहि खवाइ ॥ २ ॥

चौपाई–दाना ताको नाहिं खवावै । राति दिवस कैजा करवावै ॥
भोरभये कैजा उतराई । चना सेरु भरि देइ खवाई ॥
फेरि गर्दनी ताहि बंढ़ावै । होइ सवार खूबफिरवावै ॥
खूब पसीना ताको आवै । छातीमा कमरी बँधवावै ॥
रसे रसे ताको टहलाई । सूखि पसीना जब सबं जाई ॥
तबै थानपर बाँधौ भाई । हथ्थीते छाती मलवाई ॥
एक रोजमें नीक न होई।तौ दुसरे दिन कीजैसोई ॥

अन्य ।

दोहा–लीजै गूगुर टका भरि, गोमूत्रहिमें सानि ॥
तप्त कीजिये अग्नि पर, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
याविधि कीजै सात दिन, अंग सकलखुलिजाहि ॥
शालहोत्र मत जानि करि, श्रीधर कहो सराहि ॥ २ ॥

अन्यमत ।

दोहा–शिरदै हाथ हटावई, हटै तुरत नाहिं बंद ॥
जोर कियेते नहिं हटै, कहिये छाती बंद ॥

चौपाई–ताकी तुरत दवा करवावै । नीक होय छाती खुलिजावै ॥
देरभयेते नीक न होई । कितनौ दवा करौ बुध कोई ॥
गूगुर लेव छटाँक मँगाई । हरदी पाव एक पिसवाई ॥
पिपरामूल भरंगी पीपरि । डेढ पाव तीनौं लै सम करि ॥
लेउ मैनफल पट करि गंती । रनिकी छाली औ लै पत्ती ॥
मुंडीलेउ समूल मँगाई । कूटि छानि एकत्र कराई ॥
एक छटाँक वजन तिहि कीजै । साँझ सकारे घोड़े दीजै ॥

अन्य ।

चौपाई-बैंगन सिलै देउ दानाको । पानी गरमपिलावो नितको ॥

अन्य ।

चौपाई-हालिम हरदी साबुन लावै । ढाई ढाई सेर मँगावै ॥
आधसेर ले पिपरामूरी । कूटि छानि मैदा करि धरी ॥
पाँचसेर घृत शक्करलीजै । यकइस दिन हेलुआकरिदीजै ॥
आधसेर नित देउ खवाई । छातीबंद रोग मिटिजाई ॥
यक दिन प्रथम नीरनहिं दीजै । रोगहरै जो औषध कीजै ॥

अन्य शर्दीगर्मीसे छाती भरिजाइ तिसकी दवा ।

चौपाई-पिपरी पिपरामूलरुसोंचर। यक यक तोला तीनिवजन कर॥
हर्रा पाव एक मँगवावै । पीसि छानि छिरका सनवावै ॥
तीनि रोज घोड़ेको दीजै । दाना पानी बंद करीजै ॥

अन्य ।

चौपाई-कंचनारिपु फटकरी मँगावै । खील बनाय वजन करवावै ॥
कालेश्वर औ वाइभरंगा । मेलि अफीम ताहिके संगा ॥
मासे पाँच पाँच करु पाँचौ । हींग एकमासे लै साँचौ ॥
अजवाइनि अजमोद मँगावै । दश दश मासे सो करवावै ॥
साबुन मैसा गूगुर लीजै । तोला तोला वजन करीजै ॥
तोला तीनि पुरानि मिठाई ।पीसि छानि गोली बनवाई ॥
तोलाभरिकी गोली करै । सातरोज घोड़े मुख धरै ॥
प्रथम दिवसदे शीतलनीरा । फेरि गर्मकरिदे मतिधीरा ॥
थानै खुलै न दाना देई । आठरोजमें नीको लेई ॥

अन्य ।

दोहा-की अकड़ाहोवै तुरँग, छातीबंद कि होय ॥
वायधरे होवै किधौं, ताकी औषध जोय ॥ १ ॥

रंडबौर खारी नमक, पाव पाव सब लेइ ॥
तीनि दिवस लग दीजिये, जल अरु अशन न देइ ॥ २ ।
जो गर्मीते बंद लखि, पानी गर्म पिआय ॥
चारि घड़ा जल एक भरि, अजवाइनहिं चुराय ॥ ३ ॥
की मँगाय जर अर्ककी, एक भवँरमें भूँजि ॥
उतनोही गूगुर मिलै, गुड़ मिलाइदे गूँजि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—की अफीमलै एक भरि, जलमें घोरि मिलाय ॥
आटा तामें सानिकै, गोला एक बनाय ॥ १ ॥
आँबाहरदी टका भरि, सज्जी उतनी आनि ॥
दुऔ कूटि उतनोहिलै, महिषागूगुर सानि ॥ २ ॥
गोलेके मधि राखिकै, गाडि भँवरमें देय ॥
पकिजावै तब काढ़िकै, षटगोली करिलेय ॥ ३ ॥
साँझ भोर नित दीजिये, युद्धधीर करिनेम ॥
खुलिजैहै सीना तुरत, रहै सदा तनुक्षेम ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—छाती जाकी बंदहै, शरदीते यह जानि ॥
यह औषध ताकी करै, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
समुदषारको लीजिये, तोलाभरि यह जानि ॥
लीजै पपरी खैरकी, ताते चौगुन आनि ॥ २ ॥
ताहीके रस माहिमें, लीजै खरिल कराइ ॥
गोलीबाँधै ताहिकी, उर्द समान बनाइ ॥ ३ ॥
गोली एक खवाइये, प्रातकाल तिहि लाइ ॥
चारिघरीके बाद सो, देइ नहारी आइ ॥ ४ ॥
चौदह दिन यहि विधि करै, अश्व तुरत खुलिजाइ ॥
शालहोत्र मत जानिकै, कीजै यही उपाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–सबै औषधी करिचुकै, अश्वखुलै जो नाहिं ॥
फस्त लीजिये ताहि के, तुरी तुरत खुलिजाहि ॥ १ ॥
याहूते जो ना खुलै, कीजै और उपाय ॥
दोनौं तरफन आनिकै, दीजै ताहि दगाय ॥ २ ॥

अथ सब देहँ जकरिजाय तिसकी दवा ।

दोहा–एक छुहारे माहिमें, देउ अफीम भराइ ॥
कपरौटी तापरकरो, लीजै अग्निभुँजाइ ॥ १ ॥
चारि छुहारे आनिकै, याविधि लेइ बनाइ ॥
आधा आधा अश्वको, देत नितैप्रति जाइ ॥ २ ॥
पानी दीजै तत्त करि, दाना दीजै नाहि ॥
याविधि दीजै आठ दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी साबुन पोस्तलै, हालिम हर्दी लाइ ॥
टका टकाभरि औषधी, लीजै सबै पिसाइ ॥ १ ॥
पावसेर गुड़ ताहिमों, लीजै सबै मिलाइ ॥
भूँजे आटा ताहिमों, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
साँझ सबेरे अश्वको, यक यक गोली देइ ॥
याविधि कीजै सात दिन, अश्वनीक करिलेइ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–साँभरि लहसुन लीजिये, टका पचीस मँगाय॥
सो दीजै दिन तीसलौं, अंग सकलखुलिजाइ॥

अन्यमत ।

दोहा–जो जकड़ो घोड़ा तुरत, हनि कोडा दौराय ॥
खूब पसीना गलित लखि, पटदे खूब उढाय ॥ १ ॥

टहलावै अतिही तुरँग, जावै अरक सुखाय ॥
बंद मकानहि बाँधिये, कबहू पवन नजाय ॥ २ ॥
फिरि कंमरते पोंछिकै,परै न लखि यक रोम ॥
सेरशराब पिआइये, अरष बढै तन तोम ॥ ३ ॥
लखै फायदा करत नित, उतनीही लैप्याइ ॥
यहहै अजमाइसकियो, जकड पैर खुलिजाइ॥ ४ ॥
की जलमे पैरावई, लै तुरंग नित जाय ॥
तबहूँ खुलिजैहै जकड, सो अतिही सुख पाय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–की मदारको पातलै, देउ अढाई आनि ॥
मलि पाती मुख लाइ घृत,दिवस एक दै जानि ॥

अन्य ।

दोहा–आधपाव इसवंदसम, नागौरी असगंध ॥
अजवाइन उतनीहिलै, खुरासानि लखिबंध ॥ १ ॥
आँबाहरदी सम करौ, गूगुर महिष समान ॥
पाव मालकाँगनि मिलै, लहसुन पाव प्रमान ॥ २ ॥
लै फटकरी छटाँक यक, सज्जीलोट छटाँक ॥
डारि सोहागा खील सम, सुवाफटकरी पाक॥ ३ ॥
पीसि छानि सम लीजिये, गुड़ पुरान यक सेर॥
सोरहगोली करि धरौ, साँझ भोर मुख गेर ॥ ४ ॥
दानानीर न दीजिये, जबलौं गोली खाय ॥
जो पानी दीन्हों चहै, दीज लोह बुझाय ॥ ५ ॥
कई बेर याको सुघर, राखोहै अजमाय ॥
जकड़ा सब खुलिजाइहै, दवा करौ मनलाय॥ ६ ॥

अन्य ।

चौपाई-लेउ अकरकरहा मँगवाई । एक छटाँक वजन करवाई ॥
कालीमिर्चअसगँध नागौरी । आध आधपावै लै धरी ॥
एक जायफर देउ मिलाई । सहत सानि गोली बनवाई ॥
चनाके आटा साथ खवावै । जकड़ा खुलै अश्वसुखपावै॥

अथ सीना सोथकी दवा ।

चौपाई- जो घोडेको सूजै सीना । ताकी औषध सुनौ प्रवीना ॥
अहिकेसरि अँवरा दुइ लीजै। गुरचसत्त जातीफल दीजै ॥
दाडिमफल शक्कर औ लोधा।दश दश दमरी भरिसबशोधा॥
चौथाई घृत डारि खवावै । हरैसोथ बाजी सुखपावै ॥

अन्य ।

चौपाई-काँजी खुरासानि बच आनै । गोरोचन अरु मोम विधानै॥
पाँच पाँच दमरी मित कीजै । सेर एक घृतमें औटीजै ॥
नितही नित बाजीको दीजै । कईरोज इमिजतनकरीजै ॥

अन्य ।

दोहा-औंरा नागेश्वर गुरच, बरैं सोरा आनि ॥
फल अनार अरु जायफल, सैंधवसम करिजानि॥ १ ॥
सवा सवा भरि पीसि जल, चौथाई घृत नाय ॥
अवशि जानियो ताहिको, दीन्हें दुःख नशाय ॥ २ ॥
जो घोडेके तँग लगे, छूटै यही उपाय ॥
जलमें कागज भेइ तहँ, लाय तंग कसिजाय ॥ ३ ॥

अथ सर्व अंग सोथ ।

चौपाई-जो घोड़ाके सोथा पकरै । ग्रीवा जिहि औरो तनु जकरै ॥
ताको प्रथम सेंक यह करै। घुघुवारी सैंधव करिधरै ॥

अन्य ।

चौपाई–ता पाछे यह लेपन करै । अंगरोग घोड़ेको हरै ॥
दोहा–अजवाइनि अजमोदलै, हींग सोंठि सम लेउ ॥
काराजीरी मिर्चसो, लेपन तिहि करिदेउ ॥
सोरठा–जबै सोथ मिटिजाय, सूधी गर्दन होइ तब ॥
कीजै यही उपाय, रग छातीकी खोलिय ॥

अन्य ।

चौपाई–तूत बकायन रंड सँभारू । अवरबेलि धतूरा डारू ॥
दाड़िमले दल और मकोई । लेउ बुद्धि जन सम करि सोई ॥
जलमें चुरै बफारा दीजै । सकल सोथ हयको हरि लीजै ॥

अथ मिषरोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–हयके सीना माहिंमें, होत वर्मजो आइ ॥
दर्द होतहै ताहिमें, औरौ यह दरशाइ ॥ १ ॥
गर्मलगै करके हुये, तौन वर्म यह जानि ॥
दाना घास न खातहै, रहत सुस्त यह मानि ॥ २ ॥
राई सरसौं जरद लै, अरु अजवाइनि लाइ ॥
जवाषार अरु सोंठिलै, हरदी सहित पिसाइ ॥ ३ ॥
अरु अँबिलीके पातलै, तेऊ लेउ पिसाइ ॥
जेतीहैं सब औषधी, तिनको देइ मिलाइ ॥ ४ ॥
सोरठा–लीजै गर्म कराइ, ताहि लगावै वर्मपर ॥
रंडपात सेंकवाइ, ता ऊपरते बाँधिये ॥
चौपाई–ऊपर कपरा देइ बँधाई । बहुमजबूत ताहि करवाई ॥
वर्म बैठि ताहीसे जावै । नाहिं बैठै तौ फोरि बहावै ॥
पीब निकासि जब जावै ताको । नीबि उसेइ धुवावै वाको ॥
फिरि तापर मलहम लगवाई । होइ अराम अश्व सुखपाई ॥

अन्य खानेकी दवा ।

दोहा–अजवाइनि अजमोदले, पिपरामूल मँगाय ॥
चीता हरदीदारुलै, और कैफरा लाय ॥ १ ॥
स्याहमिर्च सम भाग सब, कूटै सबको आनि ॥
पैसा साढ़े तीनि भरि, सबै औषधी जानि ॥ २ ॥
रेंडतेलको लीजिये, तोले चारि मँगाइ ॥
ताहीमें सब औषधी, दीजै आनि मिलाइ ॥ ३ ॥
दाना पीछे साँझको, औषध देउ खवाय ॥
पानी दीजै गर्मकरि, जब ठंढा ह्वैजाय ॥ ४ ॥
एक खुराक दवा कही, जानिलेउ मनमाहिं ॥
जबतक होइ अरामनाहिं, देत दवा नितजाहि ॥ ५ ॥

अथ बलगीरा रोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–छाती भारी होइ जो, नेकौ चला नजाइ ॥
दम भरि आवै ताहिके, बलगीरा सो आइ ॥ १ ॥
हालिम हरदी सोंठिलै, सज्जी साबुन लाइ ॥
लेउ सोहागा वजन सम,गुड़के साथ मिलाइ ॥ २ ॥
दोइ टकाभरि औषधी, हयको देउ खवाय ॥
याको दीजै आठदिन, तौ छाती खुलिजाय ॥ ३ ॥
कही एक सौताज यह, टका चारि भरि जानि ॥
भरो सही खुलिजायगो, सातरोजमो आनि ॥ ४ ॥

अन्य बंद बंद जकडेकी दवा ।

चौपाई–बलगीराकी औषध कही । बंद बंद जो जकडो सही ॥
गूगुर दुइ पैसाभरि लीजै । गऊमूत्रमें औटि करीजै ॥
प्रातै घोडे देव खवाई । बंद बंद जकडो खुलि जाई ॥

अन्य ।

दोहा–साँभरि लहसुन भाग सम, दीजै नित्त खवाय ॥
जकरो सो खुलि जाइहै, लंघन ताहि कराय ॥ १ ॥
तसनीर नित दीजिये, दाना देउ न ताहि ॥
औषध दीजे नेमसों, नीको लीजो वाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–गूगुर टका एक भरि लेहू । हींग सोहागा खील करेहू ॥
अजवाइनि सोंचर मिलवाई । घोड़ेको दे प्रात खवाई ॥

अन्य ।

चौपाई–हींग सोहागा मासे वीसा । औषध वजन बराबरि पीसा ॥
दाना मेटि मसाला दीजै । सातरोज मा नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–प्रथम छोहारा खाली करै । लै अफीम ताहीमें धरै ॥
करि कपरौटी दीजै ताही । आधारोज खवावै वाही ॥
अश्व अंग खुलिजाय तुरंता । दाना मति दीजै बुधवंता ॥

अन्य ।

चौपाई–सज्जी साँभरि बोडी पोस्ता । हालिम गुड़ साबुनले दोस्ता ॥
टंक टंक भरि औषध लेहू । पावसेर गुड़ तामें देहू ॥

अन्य ।

चौपाई–हालिम हरदी गुड सम लेहू । प्रात समय घोडे को देहू ॥
चारि घरी कैजा करि राखै । नीकोहोय अश्वऋषि भाषै ॥

अन्य ।

चौपाई–अश्वाकी छाती ह्वै भारी । हिलै नहीं जो दीजौ टारी ॥
हफतम दाम फस्त खुलवावै । नाशैसकलरोग बहिजावै ॥
जो छातीको लोहू लीजै । तौ विचार या विधिसों कीजै ॥

प्रथम घरी यक राह चलावै । ता पाछे रग सीर खुलावै ॥
गर्ममसाला दीजै ताही । क्रमते दाना दीजे वाही ॥
गर्मनीर अचवनको दीजे । छातीखुलै मानि यह लीजे ॥

अन्य ।

चौपाई–हालिम हरदी सोंठि सोहागा । सोंचर साबुन सज्जी पागा ॥
गुड़सों मिलै वजन सम लेहू । टंक सोहागा तामें देहू ॥
सातरोजलौं घोड़े दीजै । छाती भरी नीकि सो लीजे ॥

अथ जौगीरा लक्षण वा दवा ।

चौपाई--दाना वाजी खायो होई । तुरतै पानी पीवै सोई ॥
ताते होत रोग तनु आई । छाती फूलि ताहिकी जाई ॥
दोहा–लीजे रेहू सोंठि अरु, वजन बरोबरि आनि ॥
गरमकैरै जल सानिकै, ऊपर लेवै जानि ॥

खानेकी दवा ।

दोहा–लेउ सोहागा फटकरी, काराजीरी आनि ॥
अरु कुटकीको लीजिये, भाग बरोबरि जानि ॥ १ ॥
ए सब लीजे कूटिकै, सोरह तोले आनि ॥
गूगुर हरदी हींग लै, अरु हालिम को मानि ॥ २ ॥
दुइ दुइ तोले लेहु ये, सोऊ लेउ कुटाइ ॥
अरु अजवाइनि लीजिये, साबुन सहित मिलाइ ॥ ३ ॥
दोऊ लीजै पाव यक, भाग बरोबरि जानि ॥
तोले एक अफीमलै, सो लीजै जल सानि ॥ ४ ॥
फिरि मानुषके बारलै, तिनको लेउ जराइ ॥
यवको आटा सेर भरि, सोऊ लेउ मँगाइ ॥ ५ ॥
गोलीबाँधौ वीससब, यवके आटा सानि ॥
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा–सोंठि मिरच अरु पीपरी, हींग फटकरी लाइ ॥
अजवाइनि सोंचर सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दशदशमासे औषधी, सबको लेउ मँगाइ ॥
दाना दीजै नाहिं तिहि, देत औषधी जाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, सातरोज लगु देइ ॥
रोगहरै अरु बलबढै, बाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्यमत जौगीरा लक्षण वा दवा ।

दोहा–वहुदिन थाने वँधिरहै, करै न लीदि पेशाब ॥
नथुना मारि जु दमकरै, रहै जकड़ि बेताब ॥
चौपाई–सेंहुड़को पोढा लैआवै। बित्ता बित्ता ताहि कटावै ॥
ताके बीचम लोन भराई । ऊपरते माटी थुपवाई ॥
पावक में पकाइ सो लीजै । सूखि जाय तब बाहर कीजै ॥
ताकी माटी सकल छुटावै । पीसि कूटि कपरा छनवावै ॥
एक मास घोड़ेको दीजै । जौगीरा याहीसों छीजै ॥
पिपरी सहत खवावै कोई । जौगीरा ताके नहिं होई ॥

अन्य ।

चौपाई–सोंठिबेतरा हींग मँगावै । पिपरी मिर्च श्याम लैआवै ॥
लहसुन लेउ जौन इक पुतिया ।तामें डारौ अदरख बतिया ॥
जवाषार अरु लोटासज्जी । आधपाव दोनौं करिलेजी ॥
लेउ फटकरी एक छटाँका । गनती चारि मैनफल पाका ॥
मदिरा एकसेर मँगवावै । दवापीसि तामें सनवावै ॥
गोली करौ छटाँक प्रमाना । प्रात एक नित दीजै खाना ॥
या विधि दवा करै जो कोई। जौगीराको नाशकरेई ॥

इतिश्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृत सीनासोथवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

अथ लीदिकी पहिचान ।

चौपाई—देखो लीदि करै जो पतरी । अति बदबोहि करै तिहिअँतरी ॥
लघु दाना तिहि हजम नहोवै । कईरोज दाना नहिं देवै ॥
गेरहरोज जुदेय ससाला । मिलै टकाभरि भाँग सुआला ॥
शुद्ध उदरते लीदि करावै । अश्व अरामहोइ सुखपावै ॥
पेटचलै पिचकाकी सरसै । ताको भाँग देइ सुख वरसै ॥
लुगदी बनै छटांक प्रमाना । दीजै तीनि दिवस सुखमाना ॥

अन्य ।

चौपाई—की छटाँक मेहदी लै आवै । टका प्रमाण कतीरा नावै ॥
जीरासासा एक जु लीजै । गूदा बेल टकाभरि कीजै ॥
सबको पीसि नान्ह करि छानौ । ताको लै पानीमें सानौ ॥
आधी प्रात साँझ दे आधै । बहुतै उदर तुरैको बाँधै ॥

अथ बहुत दस्त आवैं तिसकी दवा ।

चौपाई—दस्त बहुत आवैं जिहि तुरगा । ताकी दवा करौ संसर्गा ॥
घोड़ा जो बेताब दिखावै । अरु दस बहुत करै दुखपावै ॥
करि पुरान चावरको भाता । ईसबगोल मिलाइ सुखाता ॥
दधि गाईको देउ मिलाई । तामें दस्तबंद ह्वैजाई ॥

अथ अतीसार ।

दोहा—अरसीपातरु नींबको, पात फूल थुतलेहि ॥
सरसर दमरी सकल जल, साथ पीसिकै देहि ॥

अन्य आनूनाम मर्ज ।

चौपाई—लीदिमाहँ चिकनाई दरसै । आनूनाम मर्जको सरसै ॥
सो तुरंगको दीजै राई । आनू याते रोग नशाई ॥

अथ लीदिमें लोहू आवै तिसकी दवा ।

दोहा—देवदारु जर मुरहरी, अरु अँगेथु असगंध ॥
पारासर मासे सकल, पीसि दिये सुखसंध ॥

अन्य ।

दोहा–अँवरा परवर मूलसम, कुकुरौंधा बुध आनि ॥
चाउर साठी सुरहरी, नितदै दशमा सानि ॥ १ ॥
अश्वजतन याविधि करै, शालहोत्र मत देखि ॥
रहै अरोगी सर्वदा, नित सवार सुखपेखि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–हर्रा असिल सबुज लैआवै । देवदारु अरु पीपरि नावै ॥
महुरेठी जर असगँध आनै । पाँच पाँच दमरी सब ठानै ॥
पानी साथ पिसाय सुलीजै। शालहोत्र मुनि वचन करीजै॥
नितही नित्त तुरग यह पावै । लीदि बेकार रुधिर नहिं आवै॥

अन्य ।

दोहा–लीदिकरै जो रक्तयुत, ता वाजीको देहु ॥
तुरत रोग ताको हरै, नकुल मतो सुनि लेहु ॥
छंद–हर्रै महुरेठी विचारु । ले पीपरी अरु देवदारु ॥
घृत साथ सानि मोथा मिलाउ।लै तुरत ताहि बाजीखवाउ॥

अथ रक्तविहीन अतीसार ।

छंदतोमर–लीजिये जो सोराकंद । महुरेठी औ आनंद ॥
मोथे बहेरे चारु । गिरिकरनिका निरधारु ॥
हयहोत रक्त विहीन । तिहि पिंड देउ प्रवीन ॥
सब मिटैरोगनिदान । यह कहत सुकविविधान ॥

अन्य ।

चौपाई–दोनौं हर्रैं गंधक लीजै । करुयेतेल सानिकै दीजै ॥
रक्तविहीन दोष सब हरै । शालहोत्र वाणी उच्चरै ॥

अन्य ।

चौपाई–अरसी पत्र नींबिके लेहू । पीपरकली भलीविधि देहू ॥
पिंड बनाय बाजिमुख धरै । अतीसार सब याते हरै ॥

अन्यमत संग्रहणी ।

दोहा–शिशिर और हेमंतऋतु, पेटझरै जो आइ ॥
और वताने साहिसो, शरदी कछु दरशाइ ॥ १ ॥
औरागूदी बेलकी, नागरमोथा लाइ ॥
सौंफ फटकरी पोस्ता, कली अनार मँगाइ ॥ २ ॥
टका टकाभरि वजन सम, सबको लेउ भुँजाइ ॥
आधादीजै अश्वको, आधादेउ धराइ ॥ ३ ॥
पानीदीजै गर्मकरि, दानादीजै नाहि ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, पेट बंद ह्वैजाहि ॥ ४ ॥

अथ गर्मीकी ऋतु चैतते कुवाँर लगु पेटझरै तिसकी दवा ।

दोहा–गरमीकी ऋतु माहिंमें, पेट झरत जो होइ ॥
होइ वताना सुरुख जो, शरदी मायल सोइ ॥ १ ॥
औंरा जीरा फटकरी, कली अनार मगाइ ॥
लेउ बराबरि सबनको, तोले षट मँगवाइ ॥ २ ॥
पृथक पृथक भूँजै सबै, सबको कूटि मँगाइ ॥
कही एक मौताज यह, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
औषध दीजै तीनि दिन, साँझ सबेरे लाइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, दस्तबंद ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

बदहजमीते पेटझरै तिसकी दवा ।

दोहा–होत हाजमा जाहिते, कही औषधी आइ ॥
दीजै ताहि मिलाइकै, यही दवामें लाइ ॥ १ ॥

दाना जाको नाहिं पचै, बदहजमी दरशाइ ॥
पेटझरन ताते लगै, याविधि करै उपाइ ॥ २ ॥
जलदी तामें नाहिं करै, दोइ पहर लगुजानि ॥
बंदहोनकी औषधी, दीजै नाहिंन आनि ॥ ३ ॥
दाना जौलौं लीदिमें, देत देखाई ताहि ॥
चारि पहर लगु ताहिको, औषध दीजै नाहि ॥ ४ ॥
बोड़ी लेउ अनारकी, सौंफ सहित भुँजवाइ ॥
मिरच स्याह अरु पीपरी, देउ बहेर मिलाइ ॥ ५ ॥
लीजै सोंचर लोनु पुनि, अजवाइनि अरुजानि ॥
औषध तोले दश सबै, भाग बरोबरि आनि ॥ ६ ॥
औषधि देउ खवाय यह, अरु कैजा करि देइ ॥
यहि विधि कीजै तीनि दिन, बाजी नीको लेइ ॥ ७ ॥
पेट झरति है जाहिको, दानादीजै नाहि ॥
कोई होइ विकार जो, कौन्यो महिना माहि ॥ ८ ॥
अतीसार संग्रहणी, कीसाधारण माहि ॥
आवैं जाको दस्त सो, यही औषधी ताहि ॥ ९ ॥

अथ कोषि चढिजाय तिसकी दवा ।

दोहा—कुटकी एक छटाँकलै, दूनी मिरचै गोल ॥
मदिरा बोतल एकलै, कूटि पिलावै घोल ॥

लेप ।

दोहा—राई खारी निमकलै, पीसि लेप कर कोषि ॥
शालहोत्र मुनिके मते, लेहै रुजको सोषि ॥

अधिक दौरायेते जो रोग पैदा होवें तिसकी दवा ।

दोहा—अति दौराएते तुरै, श्वास अधिक उपजात ॥
ताकी श्री हरिजातिहै, नकुलमते विख्यात ॥

चौपाई—चाउरको चूरण करि लीजै । गौके दूध मिलाइक दीजै ॥

अथ उदरवायु बंद पेटफूलेकी दवा ।

दोहा—उदर जु फूला देखिये, वायु बंद है ताहि ॥
दवा किये खुलिजातिहै, यामें विस्मय नाहि ॥

चौपाई—उदर होइ घोड़को बंदा । औषध कीजौ चेतनचंदा ॥
राई आँटा तक्र मिलाई । तुरत दीजिये ताहि खवाई ॥
देतै पवन लीदिको करिहै । उदर विकार अश्वकी हरिहै ॥

अन्य ।

चौपाई—प्रथम सोंठि अजवाइनि लावै । मैदाकरि घटमें औटावै ॥
मलै उदर औ कोषि लगाई । ता पाछे यह करौ उपाई ॥

अन्य ।

चौपाई—सोंठि सोहागा सोंचर गंधी । सहिंजनके रस गोली बंधी ॥
उदर व्याधि चौरासी बाई । हरै शूल सब अश्व जु खाई ॥
एकटकाकी वजन प्रमाना । पवनरोगको हरै निदाना ॥

अथ लीदिबंदकी दवा ।

चौपाई—सोंठि मिर्चकी गोली बाँधौ । मूलद्वार मध्य सो साधौ ॥
टहलावै फेरै चित लाई । लीदिकरै जो करौ उपाई ॥

अन्य ।

चौपाई—काराजीरी मिर्च मँगावै । खील सोहागाकी करवावै ॥
सज्जी राई कुटकी लेहू । हींग टकाभरि तामें देहू ॥
जवाषार औ वायभिरंगा । खारी सोंचर सोंठि प्रसंगा ॥
अजवाइनिलै सब सम कीजै । अदरखरसमा गोली कीजै ॥
एक छटांक अश्वको दीजै । वायुदोष अरु गुल्म हरीजै ॥

अन्य ।

दोहा—सोंठि घीवमें सानिकै, गुदा मध्यदे मेलि ॥
लीदि करै क्षण एकमें, देइ रोगको ठेलि ॥

अन्य ।

चौपाई–ककरी भांटा भरत करावै । राई पीसि तक्र मिलवावै ॥
खारी डारि अश्वको दीजै । उदरव्याधि याते हरिलीजै ।

अन्य ।

दोहा–हींग टकाभरि लायकै, घिउ कच्चे दुइ सेर ॥
दूबाकै कै दीजिये, लीदि करै बहुतेर ॥

अथ वातोदर रोग ।

सोरठा–बाढ़ि पेट बहुजाय, वातोदर सो जानिये ॥
ताको कहौं उपाय, शालहोत्र मत जानिकै ॥

दवा ।

दोहा–हरदी तिल औ फटकरी, कालीमिरच मँगाइ ॥
टका टकाभरि औषधी, चूरण लेउ कराइ ॥ १ ॥
कुम्हड़ाकेरे फूल पुनि, अरु सेहुँडके पात ॥
राख दुहुँनकी लीजिये, एक टकाभरि तात ॥ २ ॥
गाइ दहीको तोरु पुनि, टका चारिभरि लाइ ॥
टका एक भरि औषधी, ताके संग खवाइ ॥ ३ ॥
दशदिन औषध दीजिये, नितप्रति हयको आनि॥
चारिघरी दिनके चढ़े, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अथ जलोदर रोग ।

सोरठा–पेट बढत नित जाइ, झलझलाँइ ताकी नसैं ॥
ये लक्षण दरशाइ, ढबढबाइ डोलति विषे ॥
दोहा–जवाखार सैंधव सहित, सोंचर सांभरि आनि ॥
दश दशपल ये लीजिये, सज्जी सहित बखानि ॥ १ ॥
दुइसै पल अरु लीजिये, गायमूत्र मँगवाइ ॥
तामें इनको डारिकै, दीजै अग्निचढाइ ॥ २ ॥

चौथे हींसा जब रहै, लीजै ताहि उतारि ॥
गोहूँ लीजे सात पल, दीजै तामें डारि ॥ ३ ॥
भींजिजाइँ गोहूँ जबै, तिनको लेउ सुखाइ ॥
तिनको फेरि पिसाइकै, दूधमाहिं चुरवाइ ॥ ४ ॥
फेरि सुखावै धूपमें, दोइ टकाभरि लेइ ॥
टकाएकभरि गुड मिलै, मेथीके सँग देइ ॥ ५ ॥
औषध दीजै तीस दिन, दुहूँ पहर यह जानि ॥
क्षुधाबढै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अथ उदरदाहकी दवा ।

चौपाई–दूधमाहिं पत्रजै पकावहु । मिश्री और इलाची लावहु ॥
दाहहोय जिहिके हिय माहीं । सो हय शीतल होत सदाही ॥

अन्य ।

चौपाई–यवजीराको मिलै सबेरे । दीजै पिंड कहतिहौं टेरे ॥
ग्रीषमऋतुकी औषधिजानौ । तुरँग सुखी तनु बहु सुखमानौ ॥

अन्य ।

दोहा–लहसुन तेल मिलाइकै, जल संयुत करिदेहु ॥
दाहमिटै हयकी सकल, वर्षाऋतुकी येहु ॥

अथ उदरज्वालाकी दवा।

दोहा–आदी भीमकपूरलै, टुकराभरि परमान ॥
सोंठि इलाची लीजिये, दश दश मासे जान ॥ १ ॥
ता आधी पत्रज मिलै, धूपकाल अनुमान ॥
माठामिलै सु दीजिये, उदरज्वाल हरजान ॥ २ ॥

अथ अजीरणकी दवा ।

दोहा–सोंठिबैतरा पीपरी, मिर्च हरकी छालि ॥
अजवायन विरिया नमक, दश दश मासे डालि ॥ १ ॥

गोदाधि मिलै सुदीजिये, दाना नहीं खिलाय ॥
दिवस आठयें नमकदै, तुरत अजीरण जाय ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृतउदरव्याधिकथनन्नामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ बिषहरण विधि ।

दोहा–तीनि भांतिके विष सबै, थावर जंगम मानि ॥
कृत्रिम जानौ तीसरो, इनमें सब विष जानि ॥ १ ॥
अरुण आँखि आँसू चलैं, कोवा फाटो होइ ॥
गिरै परै उठि बलकरै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥
कंद मूल फल आदिदै, थावर विष पहिचानि ॥
तिनकी औषधि कहतहौं, लक्षणसहित बखानि॥

थावरविषहरण दवा ।

दोहा--नागफली रसघृत सहित, औ नारीको आनि ॥
बदरीफल केसरि सहित, भाग समान बखानि ॥ १ ॥
तक्रमाहिं सो घोरिकै, हयको देहु पिआइ ॥
शालहोत्रमुनि सो कहैं, थावर विष मिटिजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–असगँध मधु लै आठपल, दशपलघृतहि मिलाइ ॥
सो बाजीको दीजिये, थावरविष मिटिजाइ ॥

अन्य भेद ।

दोहा–घास होत यक शरदऋतु, ताहि बाजि जो खाय ॥
प्रथमहि सूखै देह सब, फिरि पाछे मरिजाय ॥ १ ॥
सुंडी मूसरि सहित मधु, और बिजौरा लाइ ॥
दोइ दोइ पल लाइकरि, लीजै क्राथ बनाइ ॥ २ ॥

हयको दीजै तीनि दिन, उतरि तासु विष जाय ॥
शालहोत्रमें यह कहो, नाहिन और उपाय ॥ ३ ॥

जंगम विषहरण दवा ।

दोहा–जंगम विष सर्पादि हैं, ते जो काटैं आनि ॥
ताके लक्षण कहतहौं, शालहोत्र मत जानि ॥

सर्प काटनेका लक्षण वा दवा ।

दोहा–अंग तोरि गिरि गिरि परै, दाना घास नखाय ॥
अरुणनेत्र कोवा फटैं, सर्पडसा सो आय ॥ १ ॥
लीदिबंद नहिं होतिहै, छलकै बारंबार ॥
लार बहुत मुखते गिरै, जानौ सर्पविकार ॥ २ ॥
जटामासि रसउत सहित, बचहि कुलींजन लाइ॥
दोइ दोइ पल तौलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–चंदन अरु लै उर्दको, आठ टकाभरि आनि ॥
हयको दीजै नीरसों, शालहोत्र मत जानि ॥

अन्य ।

दोहा–दुद्धी रसउत रूसको, बारह पल मँगवाइ ॥
तासम मदिरा मिलैकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
गरवारियाले बोलिसो, गरुड़मंत्र पढवाइ ॥
निर्विषकीजै बाजिको, दिये औषधी जाइ ॥ २ ॥
निर्विष होवै बाजि जब, तब यह औषधि देइ ॥
साँझ सकारे सात दिन, तुरी नीक करिलेइ ॥ ३ ॥
कानाटेरी अर्कजर, मिरचै सम करि लेइ ॥
संगनीरसों पीसिकै, प्रात साँझ नित देइ ॥ ४ ॥

अन्य भेद ।

दोहा–छोट सँपोला घासमें, धोखेहै हय खाय ॥
बारि बहुत मुखते गिरै, फूलि ग्रीव अरु जाय ॥

सोरठा–अंग फूलि सब जाइ, मन मलीन बाजी रहै ॥
औषधदीजै ताहि, शालहोत्र मत जानिकै ॥

दोहा–केंचुआलीजै पाँच पल, मिर्चें लेउ मिलाइ ॥
सेरु घीउमें बाँटिकै, हयको देउ खवाइ ॥

सर्व जंगम विषहरण दवा ।

दोहा–चौराई अरु अर्कजर, लीजै अदरखपान ॥
मिर्च कसौंजी अंडजर, सबको एक प्रमान ॥ १ ॥
दूनो घीउ मिलाइकै, हयको देउ पिआइ ॥
शालहोत्रमें यहकहो, विषधरको विष जाइ ॥ २ ॥

अन्यमत साँपकाटेके लक्षण वा दवा ।

चौपाई–ऐसी घरी साँप जिहि डसै । सो अवश्य यमपुरमें बसै ॥
पशुमनुष्यको डसै भुजंगा । सो विचारि लीजै सब अंगा ॥

कवित्त–मूल मघा कृत्तिका विशाखा औ भरणी शिव,
नषत फनिंदको कहत बुधवानहैं ॥
छठि आठैं पंचमी चतुर्दशी और नौमी,
भौम शनिवार कहैं वेदनकथानहैं ॥
रवि और चंद्रमाके ग्रहण समय में काटै,
एते अहि काटेन का कछू ना जतनहै ॥
गरुड जो राखै चाहै अमृतदै अभिलाष,
येते तौ जात प्राणी यमके निकेतहैं ॥

दोहा–ओंठ चिबुक गल जठर शिशु,उरु बाहू औ काँध॥
इंद्रि काँखमें जो डसै, परै सो नर यम बाँध॥

चौपाई—देवालय पुरानि फुलवाई । औ मशानकी भूमि जनाई ॥
साँप धौरहरसें जो डसै । यमनिकेत निश्चयसो बसै ॥
सौनहोइ की भौंरी आवै । दाह स्वेद तनु पीर जनावै ॥
शूलहोइकी ग्रीव पिराई । हिचुके चलै जीभ ठिठुराई ॥
ऊरध श्वास चलै अकुलाई । पीरहोइ पेडुारिनमों आई ॥
डसे उर्ग ये लक्षण देषै । निश्चय तासु मरन अवरेषै ॥
अंगतरी घोडा जो गिरै । दाना घास सबै परिहरै ॥
सीककरै छुलकै बहुबारा । ताको काटो भुजँग विचारा ॥

दोहा—जो घोडेको सर्पने, काटो होय सुजान ॥
जीभ देखि स्याही लखै, दवा करौ बुधवान ॥ १ ॥
गरुडमंत्र पढ़वायकै, निर्विष कीजै ताहि ॥
औषध तासु खवाइये, दिना सात लगु वाहि ॥ २ ॥

दवा ।

चौपाई—पानपाढिकी मूल मँगावै । एक छटाँक ताहि पिसवावै ॥
स्याहामिर्च तिहि आधी लीजै। जलके संग अश्वको दीजै ॥

अन्य ।

दोहा—लाची कछुही मांसमें, मूल विजोरा नाय ॥
गूलरिफल सम घृतमिलै, नास दिये विष जाय ॥

अन्य ।

दोहा—गूलरिदुद्धी लै सुघर, नागकेसरी नाय ॥
गुंजाफल अरु मधु गुरच, नासु दिये विषजाय ॥

अन्य ।

दोहा—चीत मूल अरु मालती, रसधतूरको आनि ॥
पीसि नासुदे अश्वको, करिहै विषकी हानि ॥

अन्य ।

चौपाई–कालीमिर्चे नींबकी पाती । जितनै तुरँग खाय दिन राती ॥
तासों जहर शांति ह्वैजावै । औषध किये सुःख तनु पावै ॥

अथ कृत्रिमविषहरणं ।

दोहा–विष जे होवें योगते, कृत्रिम कहिये ताहि ॥
सहत घीउके योग ज्यों, कृत्रिम विष त्यों आहि॥

दवा ।

दोहा–फनि केसरि पुनि कुसुम मधु, और केतकीलाइ ॥
सो घोड़ेको दीजिये, कृत्रिमविष मिटिजाय ॥

बाघने पकराहोइ तिसकी दवा ।

दोहा–दाँत लगे जहँ बाघके, फूलि तहाँ फिरिजाइ ॥
पाकत फूटत फिर भरत, नाहीं नीक देखाइ ॥ १ ॥
मछरी लैकै तीसपल, तिनको लेउ पकाइ ॥
जीरा पीसै पाँचपल, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै जखम पर, विष ताको मिटि जाइ ॥
नीकहोइ जबलौं नहीं, रोज लगावतजाइ ॥ ३ ॥

अथ कुत्ताके काटेकी दवा ।

सोरठा–लघु बिरवा यक होइ, निकट ताल की भीटपर ॥
है मंजरियुत सोइ, पाती तुलसी सम अहै ॥
दोहा–श्वेतफूल ताते कढै, नहीं गंधको लेस ॥
श्वान डसे तेहि बाजिको, औषध जानौ वेस ॥ १ ॥
मिर्चैपैसा एक भरि, औषधि पाती टंक ॥
याको दीजै सातदिन, विष नाशै निरशंक ॥ २ ॥

चांडाल की गोलीसे मरने वाले घोडेकी दवा ।

चौपाई—ले गिरगिट दुइ चारि सँगाई । जलसँग पावक मध्य पकाई ॥
नारि सराय अश्वमुख नावै । सो गोलीसे मरै न पावै ॥

अथ माहुरकी गोली ।

दोहा—जहरशंखिया तेलिया, समुद्रषार हटतारु ॥
स्याहधतूरे बीजलै, कुचिला तामें डारु ॥ १ ॥
पारा लेउ अफीम पुनि, और हर्दिया लाइ ॥
खुरासानि अजवाइनी, अरु अजमोद सँगाइ ॥ २ ॥
आकरकरहा पीपरी, खील सोहागा आनि ॥
कालेश्वर अरु मिर्चलै, सर्ज्जीस्याह बखानि ॥ ३ ॥
नागौड़ी असगँध सहित, बहुरि लौंगको आनि ॥
एक एक तोले सबै, येती औषधि जानि ॥ ४ ॥
अर्कदूध पुनि लीजिये, तोले पाँच सँगाइ ॥
खैरु पपरिया लेउ पुनि, छा तोले तौलाइ ॥ ५ ॥
मरीगाइको पित्त पुनि, तीनि अदति सो जानि ॥
खरिल कीजिये तीनि दिन, अदरखके रस सानि ॥ ६ ॥
गोली ताकी बाँधिये, छोटे चना प्रमान ॥
बलगम वायु नशातहै, सत्यबात यहजान ॥ ७ ॥
दाना दैकै साँझको, गोलीएक खवाइ ॥
यवके आटा संगमें, अदरखरसहि मिलाइ ॥ ८ ॥
चारिघरी कैजा करै, जहरबात मिटिजाइ ॥
नाशैबलगमरोग सब, सकल वायु नशिजाइ ॥ ९ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतविषवर्णनोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ कुलिंजरोग वर्णनम् ।

दोहा—तीनि प्रकार कुलिंजहै, कहत सबै गुणखानि ॥
ताको वर्णन करतहौं, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आँत एक कूलूनहै, नाभि पिछारी जानि ॥
वायुभरातिहै ताहिमें, करत दोष बहु आनि ॥ २ ॥
करत नहींहै लीदिको, अरु पेशाब नहिंहोइ ॥
फिरि ताकति नहिं रहतिहै, ये लक्षण सब जोइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा—सोंठि चीत अजमोदलै, दुइ दुइ तोला लाइ ॥
घोड़बच लौंगै दुहुँनको, दुइतोले मँगवाइ ॥ १ ॥
आधसेर गुड़ डारिकै, पाँचसेर जल माहि ॥
तप्त कीजिये अग्निपर, जब आधा जरिजाहि ॥ २ ॥
ताहि उतारौ अग्नितें, लीजै ताकोछानि ॥
फेरि पिआवै वाजिको, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
फिरि हुकना हयको करै, औ कैजा करिदेइ ॥
सीताराम प्रसादतें, बाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अथ बेलिरोग लक्षण ।

दोहा—बेलि कहतहैं ताहिको, दोनौं रानन माहि ॥
अगिले दोनौं पाँइमें, निकसतिहै वह आहि ॥ १ ॥
पहिले सूजनि होतिहै, दुइ दुइ राहै जानि ॥
बाढिकै सूजनि फिरिवहै, पाकि जाति यह मानि ॥ २ ॥
पाकति फूटति फिरि भरति, यह गति ताकी होइ ॥
मलहम कितनौ जो धरौ, नीक नहीं वह सोइ ॥ ३ ॥
जो कदाचि केहुँ जतननते, नीक कहूँ ह्वै जाइ ॥
तौ निश्चय यह जानियो, निकसतिहै फिरि आइ ॥ ४ ॥

दवा।

दोहा—पहुँचा आँगुर आठको, सेंहुडको यक लेउ॥
तासैं एक भेंलाव धरि, लेपि मृत्तिका देउ॥ १॥
गाड़ै ताको आगिसें, खूब पाकि जब जाइ॥
लीजै ताहि निकारि तव, माठा देउ छँडाइ॥ २॥
आटा लीजै सोठको, तासें देउ मिलाइ॥
दाना पाछे साँझको, हयको देउ खवाइ॥ ३॥
एक भेंलाव बढाइये, रोज दूसरे माहि॥
और यही सबविधि करै, शालहोत्र मत आहि॥ ४॥
चौपाई—नित प्रति एक भेंलावबढावै। याविधि चौदह रोज खवावै॥
एक एक घटवत फिरि जाई। शालहोत्र यह दियो बताई॥
दोहा—तीनि दफा यहिविधि करै, रोज बयालिस माहि॥
दाना दीजै सोठको, सेर एक सो ताहि॥

अन्य

दोहा—मिरचै तोले दोइलै, सोठ महेला माहि॥
दानापाछे साँझको, हयको दीजौ ताहि॥ १॥
दुइ तोले भरि मिर्चको, रोजबढ़ावत जाइ॥
आधपाव पहुँचै जबै, तब फिरि नहीं बढ़ाइ॥ २॥
चालिस रोज खवाइकै, क्रमते देउ छँड़ाइ॥
शालहोत्र मुनि यों सबै, रोग नाश ह्वैजाइ॥ ३॥

अन्य।

चौपाई—खुरासानि अजवाइनिलेहू। गुड़पुरान सो तामें देहू॥
दोनौं तोले दश भरि लीजै। पारा तहँ तोलेभरि कीजै॥
दोहा—सबको मिलवै एकमें, काँसे थारी माहिं॥
लेइ कटोरी काँसकी, तासों घोटति जाहि॥ १॥

तबलगु ताको घोटिये, जब पारा मिलिजाइ ॥
साढ़े ग्यारह तासुकी, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
गोली दीजै रोज यक, बखत शामके आनि ॥
दाना पहिले देइकरि, श्रीधर कहो बखानि ॥ ३ ॥
भूँजो आटा मोठको, सूखो देउ खवाइ ॥
दीजै सूखीघास तेहि, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

अथ सूखीखांसीकी दवा ।

दोहा—दिये मसाला बहुतविधि, मिटत नहीं वहआहि ॥
आवति सूखी धाँसहै, गरमी जानौ ताहि ॥ १ ॥
दूध निखालिस गाइको, तीनि सेर मँगवाइ ॥
डारै चावर तासुमें, आधसेर पुनिलाइ ॥ २ ॥
खीरबनावै तासुकी, प्रातहि देइ खवाइ ॥
औषधि दीजै सातदिन, सूखीधाँस नशाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—जुँदवेदस्तरके सहित, सौंफ कलौंजी आनि ॥
तीनि तीनि तोले सबै, औषधकही बखानि ॥ १ ॥
तिल अरु लाही तैलको, सत्तरि तोले लाइ ॥
तीनौं औषधि पीसिकै, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि रोजमें देउ सब, औषध गर्म कराइ ॥
सूखीधांसनि जाइ मिटि, बड़े सबेरे खाइ ॥ ३ ॥
औषध यतनी लेइ फिरि, तीनिरोजलौं देहि ॥
बाजी मोटो होइ अरु, शालहोत्र मत येहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—अदरख पीपरि लीजिये, तोले चारि मँगाइ ॥
सैंधव तोले एकभरि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥

औषध दीजै सात दिन, सोठ सहेला माहि ॥
धाँसत बाजी होइ जो, तासु रोग मिटिजाहि ॥ २ ॥

अथ खांसी लक्षण ।

दोहा–घास संग काँटा कहूँ, खाइ बाजि जो जाइ ॥
अटकि नरीके भीतरै, दैवयोग यह आइ ॥ १ ॥
ताते खाँसत बाजिहै, और दूबरो होइ ॥
घूँटि घूँटि जलको पियै, खात घास कम सोइ ॥ २ ॥
की फुंसी परिजातिहै, की कछु और विकार ॥
कीसूखोबलगम जमै, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–लकरी लावै नींबकी, थोरी टेढ़ी होइ ॥
ना अति मोटी लीजिये, ना अति पातरि सोइ ॥ १ ॥
लंबी लीजै एक गज, ताको साफ कराइ ॥
एक छोरमें ताहिके, कपरा देउ बँधाइ ॥ २ ॥
लकरी युत घिय माहिमो, दीजै ताहि भिजाइ ॥
लीजै माटी चूल्हकी, तोले डेढ़ मँगाइ ॥ ३ ॥
चौपाई–स्याहमिर्च षटमासे लीजै । दोनौं मिलकै पीसि धरीजै ॥
लकरी कपरा बँधी जौनहै । तापर दवा लगाउ तौनहै ॥
अश्वगरे सो लकरी बाँधै । तीनिरोज याही विधि साधै ॥
जब लकरीको लेइ निकारी । तब कपराते सेंकै भारी ॥
पानी फेरि देरको प्यावै । होइ अराम अश्व सुखपावै ॥

अथ रक्त खाँसी की दवा ।

दोहा–आवत खाँसी बाजिको, रक्त गिरत ता माँहि ॥
खाँसी सोहै रक्त युत, जानिलेउ सो ताहि ॥ १ ॥

मिश्री लीजै एक पल, तासम सौंफ पिसाइ ॥
सेर एक गोदूधसँग, प्रातहि देउ पिआइ ॥ २ ॥
घास खानको दीजिये, हरी दूब मँगवाइ ॥
बाँधै शीतल छाँहमें, हरीघासबिछवाइ ॥ ३ ॥
जल पीवनको दीजिये, कूपोदक यह जानि ॥
औषधदीजै सात दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अन्यमत खांसी वा धाँसैकी दवा ।

दोहा— मधु बच गुरच इदोरनी, सकल पीसि छनवाय॥
लै दशमासे दीजिये, शीतधाँस मिटिजाय ॥

अन्य ।

चौपाई—ककरासिंगी हर्र मँगावै । अँवरा सैंधव सज्जी लावै ॥
सेंहुडा दमरी पाँच मँगाई । समकरि पीसि अश्वसुखनाई ॥

अन्य ।

चौपाई—लोध बहेरा सज्जी लीजै । मालकांगनी सम सब कीजै ॥
चालिसटंक दवा पिसवावै । पाँचसेर गुड़ तामें नावै ॥
पिंड बनाय सातदिन दीजै खाँसीजाय व्यथा हरिलीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—सेरएक बहेरा लावै । अजवाइनि दुइसेर मँगावै ॥
रूसेके पाता यक सेरा । तीनौं लै हाँड़ीमें भरा ॥
प्रथमपात हाँडीमें धरै । ऊपर बहेर जवाइनि भरै ॥
आधे पात उपर धरवावै । क्वाथ बनाय उपरते नावै ॥
लेउ समूल कटैया गोली । ताहि क्वाथ करु विधिवत सोली॥
जेहि हाँड़ीमेंहै अजवानी । तामें काढ़ा डारो छानी ॥
सो हाँडी चूल्हेपर धरिकै । काढ़ा पचै जवाइनि चुरिकै ॥
लेउ जवाइनि छाँह सुखाई । एक छटाँक वजन नितखाई ॥
यकइस दिन घोड़ेको दीजै । खाँसीजाय दुःख सब छीजै ॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–अदरखसुचारिभरि ले मँगाय। तिहिकोरि छमासे हींग नाय
तिहि भूँजि कुचिलि दीजै खवाय। दानाके बाद खाँसी नशाय

अन्य ।

छंदपद्धरी–की दै पियाजपानी पियाय। करि तौल पाँच भरि दुख विहाय

अन्य ।

छंदपद्धरी–की वाँसपात इतनेहि मान। ताको खवायहै सुखद जान॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–की आधपाव लै कंटकारि। दे भुलभुलायहै घांस हारि ॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–की सेर जवाइनि ले पिसाय। तिहि कपरामें लीजै छनाय॥
वह राखतीनिदिन सो खिलाय। करिवजन चारिभरिदुख विहाय॥
दानाके बाद जब अस्त भान। तबहीं हयको दे यह विधान॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–की देइ मलाई पाव एक। पानीके बाद पुनि दिन अनेक॥
जबलौं नमिटै हय घाँस जान। तबलौंयह दीजौबुधनिधान
जो खुश्क घाँस घाँसै तुरंग। दे ताहि नमक राई औ भंग

अन्य ।

छंदपद्धरी–कचरीकिचारिभरिरलि पिसान। दाना खवाय दे यह विधान

अन्य ।

दोहा–देउ बहेरे शोधिकै, लोन सु कुटिकी संग॥
अजवाइनि सम पीसिदै, जैहै घांस तुरंग॥

अथ शिरदमके लक्षण वा दवा ।

दोहा–करै अधिक दम अश्व जो, जानौ शिरदम तासु ॥
ताहि दपटिबो जहरहै, रंगीभाणित प्रकासु ॥ १ ॥

दुइ सेर प्याज मँगायकै, कतरि पावभरि लेय ॥
नमक डारि तोला दुइक, आसु तुरीको देय ॥ २ ॥
याम अवधि जल देइकै, तबहीं तुरी खवाय ॥
आठ दिवस यहि रीतिदे, नहिं गरमी डरुलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-मधु बच गुर्च इंदारुनी, ताफल लेउ मँगाय ॥
मासा दश सम पीसिदे,शीत श्वास मिटि जाय ॥

अन्य ।

दोहा-प्राते खसै भिजाय निज, धनियां तोले चारि ॥
दाना बाद खवाइये, कइउ रोज़ सुखकारि ॥

अथ गर्मीते दम करै तिसकी दवा ।

दोहा-दूधसेर लै आठ भरि, चीनी अरु करपूर ॥
मासा भरि तिहि घोरिदै, तीनि दिवस सुख सूर ॥

अन्य ।

सोरठा-त्रिफलासेर भिजाय, तासु जोस लै आठ भरि॥
घोरि सिता उतनाहि,तीनि दिवसप्यावोगुणद॥

अथ शूनकपाली मगजहीन लक्षण ।

दोहा-जो मगमें काँपत चलै, सुधि नरहै जिहि गात ॥
सून कपाली तुरँग सो, अतिपीड़ै मगजात ॥

दवा ।

दोहा-सेतूलीजै प्रातही, आधी सहजर लेय ॥
गोपयसों सम भाग करि, वासर मुनि तिहि देय ॥ १ ॥
गोघृत मिर्च पिसाइकै, सो तुरंगको देइ ॥
महाबली सो होतहै, सूनकपाली खोइ ॥ २ ॥

अथ गर्ममिजाजकी दवा ।

दोहा–शक्कर ईसबगोललै, यवापिसान सँग देय ॥
शालहोत्रके वचन यह, गर्मीको हरिलेय ॥

अन्य

दोहा–दधि गाईको लायकै, कपरा बाँधि झुलाय ॥
पानीवाको झरि गिरै, दाना साथ खवाय ॥

अन्य प्रकार रोग लक्षण वा दवा।

दोहा–मुँहबाये बाजीरहै, मंदअग्नि अरु होइ ॥
भूमिखनै अरु पाँय सों, ऐसे लक्षण सोइ ॥ १ ॥
गजपीपरि सैंधव सहित, हींग भरंगी आनि ॥
कुटकी और अतीस पुनि, टका टकाभरि जानि॥ २ ॥
सबै औषधी पीसिकै, छानै कपरा माहि ॥
धेनदूधलै पाँच पल, कवि श्रीधर चित चाहि॥ ३ ॥
औषधि लीजै एक पल, दूध माहि मिलवाइ ॥
डेढपहर दिनके चढे,, औषध देउ पिआइ ॥ ४ ॥
पंचमूललै बीसपल, आठसेर जल माहि ॥
ताहि चढावै अग्नि पर, सातसेर जरि जाहि ॥ ५ ॥
ताहि पिआवै साँझको, कपरा माहि छनाइ ॥
रहै औषधी शेष जो, तिलके तेल जराइ ॥ ६ ॥
तैल लगावै देहमें, श्रीधर कहो बखानि ॥
याविधि कीजै पाँच दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अथ राजरोग लक्षण ।

दोहा–पित्त हृदयमें वहुबढै, नेत्र अरुण अरु होइ ॥
करै पेशाब जु रक्तकी, अरु मल सूखो सोइ ॥

सोरठा—आवै खाँसी सूखि, शीश लचाये अरु रहै ॥
देत भूँखको दूखि, दाना घास नखाइ कछु ॥ १ ॥
सूजैं पाछिल पाँइ, हुऔ कोषि मारे रहै ॥
गूँथी सी परिजाँइ, ता हयकी सब देहमें ॥ २ ॥
पानी बहुत सुहाय, थानविषे अतिसुख रहै ॥
ये लक्षण दरशाइ, राजरोग सो जानिये ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा—पीपरि लौंग कपूर अरु, बडीइलाची आनि ॥
स्याहश्वेत जीरा दुवौ, केसरिनाग बखानि ॥ १ ॥
ज्यानोरी जैफर सहित, चंदन कहो उसीर ॥
वंशलोचनहि लीजिये, सकल हरतहै पीर ॥ २ ॥
लेउ मिर्च कंकोल अरु,अगरु तगरुको आनि॥
कमलगटा पुनि लीजिये, येती औषध जानि ॥ ३ ॥
चारि चारि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ ॥
मिश्री लीजै येक पल, सबको पीसि मिलाइ ॥ ४ ॥
षट तोले यह औषधी, जलमें लेउ मिलाइ ॥
चारिघरी दिनके चढ़े, हयको देउ पिआइ ॥ ५ ॥
दिन यकइसलौं अश्वको, या औषधिको देउ ॥
सीतारामप्रतापते, बाजी नीको लेउ ॥ ६ ॥

अथ पीनसरोग लक्षण वा दवा ।

दोहा—कीडा परत दिमाकमें, गिरत नाकते आइ ॥
बहुत गंधि नासा करै, विकल अश्व दरशाइ॥

दवा ।

दोहा–जर लटजीराकी सहित, बीज कसौंजी आनि ॥
काराजीरी लुहचनै, दीजै गोघृत सानि ॥ १ ॥
टका एकभरि औषधी दोइ टका भरि घीउ ॥
याविधि दीजै पाँचदिन, सुखीहोइ हय जीउ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–अरुणकटैया जर सहित, सेर सेर मँगवाइ ॥
फिरि जलबारह सेरमें, ताको लेउ चुराइ ॥ १ ॥
तीनिसेर बाकी रहै, लीजै ताको छानि ॥
पीपरि पैसा पाँच भरि, डारै तामें आनि ॥ २ ॥
ताहि कराही माहिकरि, दीजै अग्नि चढाइ ॥
सहत डारिये एक पल, जब गाढो ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
यवके आटा संगमें, दीजै दिनप्रति सात ॥
दाना यवको दीजिये, साँची मानौ बात ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–गंधित परिमल आनिकै, ताको रांग कढ़ाइ ॥
फूँकिदेइ नथुना विषे, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–जलसों घोरि कपूरको, डारै नथुना माहि ॥
साँची मानौं बात यह, कीट सबै झरि जाहि ॥

अथ गंडमाला ।

दोहा–गरेमाहि गूंथी परै, श्रवै रुधिर तिन माहि ॥
गूंथीनीकी होंइ जो, वैसिय फिरि ह्वैजाहि ॥ १ ॥
धनियां मिरच कपूर अरु, तिनको लेउ पिसाइ ॥
टका एकभरि औषधी, ताको अर्क कढ़ाइ ॥ २ ॥

सो लैडारै कानमें, लुबुदी देइ खवाइ ॥
याविधिकीजै पाँचदिन, रोग नाश ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
दानादीजै मूँगको, श्रीधर कहो बखानि ॥
हरीदूबको दीजिये, दिन चौदहलौं आनि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—मेंहदी पीपरि सोंठि अरु, चँदसुर दाख मँगाइ ॥
पुनि जर लीजै उरदकी, लोध सहित कुटवाइ ॥ १ ॥
टका टका भरि औषधी, चौगुन जलमें डारि ॥
ताहि पकावै अग्नि पर, मंद आँचको वारि ॥ २ ॥
चौथ हींसा जल रहै, लीजै तबै उतारि ॥
ताहि छनावै बसनसों, सहत टकाभरि डारि ॥ ३ ॥
याविधि ताको पाँचदिन, मूँगमहेला देउ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, बाजी नीको लेउ ॥ ४ ॥

अथ अंडसूजानि ।

सोरठा—स्वाथ अंडमें होइ, छुवत माहिं जूडो लगै ॥
शालहोत्र मत सोइ, सिरा अंडकी बेधिये ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि मिर्च अतीस बच, कूठ रेणुका आनि ॥
सोंठि सहित सब औषधी, टका टका भरि जानि ॥ १ ॥
औषध पैसा तीनिभरि, प्रातहि देउ खवाइ ॥
टका एकभरि औषधी, तिलको तैल मँगाइ ॥ २ ॥
तोले तीनि मिलाइके, दुओ कान डरवाइ ॥
पाँचरोजके भीतरै, अंडवृद्धि मिटिजाइ ॥ ३ ॥

अन्य प्रकार राज रोग ।

दोहा—अंगहोइ दुर्बल सबै, फाटि जीभ गइ होइ ॥
बाईहोइ शरीर में, भूखप्यास नहिं सोइ ॥

अन्य ।

चौपाई–दैतलगास सदा दुख पावै । छाहीं ताको वहुत सुहावै ॥
भौंहन ऊपर गड़वा होई । तरुण होइ तौ जीवै सोई ॥
दोहा–कष्टसाध्य सो जानिये, तरुण तुरी जो होइ ॥
जानौ वृद्ध असाध्यहै, ऐसे लक्षण सोइ ॥

दवा ।

दोहा–त्रिफला तीनिटका वजन,चीत टकाभरि आनि ॥
रंडी गूदी लीजिये, चारिटका भरि जानि ॥ १ ॥
टका एक भरि औषधी,षोड़श गुणजल जानि ॥
काढा कीजै तासुको, श्रीधर कहो वखानि ॥ २ ॥
दोइटकाभरि जलरहै,लीजै ताहि छनाइ ॥
मदिरा डारै एक पल, हयको देउ पिआइ ॥ ३ ॥
वा अदरखरस डारिकै, औषध दीजै प्रात ॥
दश पल आमिष सुअरको,कीस्याहीको तात ॥ ४ ॥
सूखोताहि भुँजाइकै, मध्यदिवसको देइ ॥
दाना दीजै तीसपल, बाजीनीको लेइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–सरवनिं पिथवनि हरें पुनि,पित्तपापरा आनि ॥
लीजै वाइभरंग पुनि, भाग समान वखानि ॥ १ ॥
गोघृत ताहि मिलाइकै, दीजै ताको नासु ॥
यह औषधकरु रातिको, रोगनाश अति आसु ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–दशपल रक्तछागको लीजै । चारि टकाभरि पानी कीजै
दोइ टकाभरि गोघृत लेऊ । सैंधव पैसा यकभरि देऊ ॥

दोहा—सबको मिलवै एकमें, हयको देउ पिआइ ॥
चौदह दिन याविधि करै, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥

अथ कान बहिरहोइ तिसकी दवा ।

दोहा—टका एकभरि लीजिये, लाही तैल मँगाइ ॥
रंडपातको अर्क पुनि, तासम लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
हींग सोंठि सूरीबिया, नौनौ मासे लाइ ॥
रंडपातके अर्कमो, टिकिआ तासु कराइ ॥ २ ॥
अर्क सहित जो तैलहै, दीजै अग्नि चढ़ाइ ॥
गर्म खूब जब होइ वह, टिकिया देउ डराइ ॥ ३ ॥
सोरठा—टिकिया देउ जराइ, काढि डारिये ताहि फिरि ॥
राखै तैल धराइ, नितप्रति डारै कानमो ॥
दोहा—तीनि रोजके भीतरै, बधिर कान खुलिजाइ ॥
शालहोत्र मत देखिकै, श्रीधर वरणो आइ ॥

अथ तिल्ली बढ़िजाइ तिसकी दवा ।

सोरठा—हय असवारी माहि, कसर लगावत चलतहै ॥
चढ़ो न ताते जाहि, ऊँचिभूमि पर वाजिसो ॥
दोहा—ताकी दोनौं कोखिमें, खड़ो दाग दगवाइ ॥
फिरि वाजीको दीजिये, या औषधिको लाइ ॥ १ ॥
सोंठि मिरच पीपरि सहित, और सोहागा आनि ॥
सज्जी चीता नमक पुनि, भाग बरोबाई जानि ॥ २ ॥
छटतोले यह औषधी, तामें सहतु मिलाइ ॥
सात रोज लगु बाजिको, रोज खवावत जाइ ॥ ३ ॥

अथ पैरके नस्तर रोगका लक्षण वा दवा ।

चौपाई—चला न जाय उतानै गिरै । धरती पाँउ देत नाहिं परै ॥
धीरा पाँव धरत अति गाढ़ो । चलतै गहबर रहिगा ठाढ़ो ॥
एते लक्षण जीमें आनी । सो नस्तर लीजै पहिंचानी ॥

दवा ।

चौपाई–सैंधव बच अजवाइनि आनौ। बाइयनस्तरसहि निज जानौ॥

अन्य खानेकी दवा ।

चौपाई–वायभरंग पीपरी लावै । पिपरामूल सौंफ मँगवावै ॥
पाँच पाँच टंक सब लीजै । कूटि छानि मैदा करि दीजै ॥
प्रात खवावै घोड़े आनी । वाइसनस्तरसहि निज जानी ॥

अन्य ।

चौपाई–गोघृत अरु तिल तेल मँगावै । चहूं चरण मालिसि करवावै ॥
यहिविधि मर्दन कीज प्राता। निर्मल होइ अश्वको गाता ॥

अथ अपरोग पाँवसूझनेका ।

सोरठा–काटै जो निज पाँव, सूजैं चारौ पाँव शिर ॥
याको करौ उपाव, शालहोत्र मुनि जो कहो ॥ १ ॥
खुरासानि बच आनि,वै चाँदी अरु खिरहरी ॥
और चिरैता जानि, देवदारु सम टंक दश ॥ २ ॥
घृतसों सबन मिलाय,जो दीजै हयको सुघर ॥
रुजको देय नशाय, शालहोत्र मुनिके मते ॥ ३ ॥

अथ विषबोलि कुष्ठ ।

दोहा–पहिले लोहू काढिये, चौबंदी रग खोल ॥
पीछे औषध कीजिये, शालहोत्रके बोल ॥

चौपाई–प्रथम मेलावाँकी विधि कीजै । एक एक बढ़ि सौलग दीजै॥
सौते एक एक कम करै । एक रहै तब मलहम धरै ॥

मलहम ।

चौपाई–पात बबूर नीबके लीजै । मेषशृंगकी भस्म करीजै ॥
मुर्दाशंख सोहागा लावै। अजै क्षीरसें खरल करावै ॥
खैर पापरी सेंदुर सानै । सर्षपतेल मोमको आनै ॥

सबको खरल करौ दिन एका । मलहम कीजै बुद्धि विवेका ॥
अंग अश्वके लेपन करै । सो विषबेलिकुष्ठ सब हरै ॥

अथ चमडा सख्तकी तरकीब ।

दोहा—सख्तचर्म होवै जहाँ, तौ घृत नमक मिलाय ॥
कईरोज लावै तहाँ, ह्वै पपरी गिरि जाय ॥ १ ॥
तौ फटकरी लगाइ बहु, पीसि महीन सुजान ॥
अतिही सुखपावै तुरँग, भाष्यो सुमति प्रमान ॥ २ ॥

अथ पित्ती उखरे के लक्षण वा दवा ।

दोहा—परैं ददोरा गातमें, बहुत भाँति अलसाय ॥
ताको पित्ती कहतहैं, जतन किये रुज जाय ॥ १ ॥
केंचुलि लेउ छटाँक यक, गेरू आधा पाव ॥
गुड़ यक पाव मिलायकै, घोड़े प्रात खवाव ॥ २ ॥

अन्यमत ।

दोहा—बहुत ददोरा वाजि तनु, अकस्मात परि जाहि ॥
की असवारीमें परै, पित्ती जानौ ताहि ॥ १ ॥
लोनु घोरिकै देहमें, प्रथमहि देउ लगाइ ॥
ता पाछे औषध कहौं, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—दुइ दुइ तोले लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ ॥
खील सोहागा की बहुरि, मासे छा मँगवाइ ॥
सोरठा—हरिको देउ खवाइ, मिटैं ददोरा देहके ॥
रोग नीक ह्वैजाइ, शालहोत्र यहहै कहो ॥

अन्य ।

दोहा—बाँसपात लै सेर दश, जलसों ताहि उसेइ ॥
सगरी देहीं बाजिकी, धोइ तासुते देइ ॥

अग्निसें जरै तिसकी दवा ।

दोहा–कुचिलि पिआजै को सुघर, रस सब लेइ निचोय ॥
जरो जहाँ व्रण पाइये, तहाँ ताहि चुपरोय ॥

अथ बोगमारोग लक्षण वा दवा ।

दोहा–मनमलीन अतिहीविकल, बहै पसीना जोर ॥
ईश दयाते हय बचै, बोगमा मारोजोर ॥

चौपाई–बहुत पसीना हयके छूटै । सर्व अंगते धारा फूटै ॥
पहर एक दुइमा मरि जाही । नकुलमतो यह संशय नाहीं ॥
ताकी दवा करौ ततकाला । रोग जानियो हयको काला ॥
आँवाकी बहु भस्म मँगावै । लैलै अश्व बदन मलवावै ॥
सूखै स्वेद साध्य तबजानौ। नहिं सूखै असाध्य अनुमानौ॥

अन्य ।

चौपाई–दुइ गुल दोउ श्रुति भीतर दागै । एकै गुल दुमनोकमें लागै॥
चालिस दिन नाहिं दाना देवै। बचै तौ फिरि नहिं बोगमाहोवै

अन्य ।

चौपाई–बिनुआँकंडा भस्म करावै । आँवा राख ताहि मिलवावै ॥
दोनौं भस्म कि मालिसि करै। अंग पसीना हयको हरै ॥
सेंदुरुफ गुटिका मुनिवर भाषो । सर्वरोगपर सो मुनिराखो॥
गोली चना प्रमाण खवावै । अश्वरोग सब दूरि करावै ॥

अन्य ।

चौपाई–निंबुकागजीको रस लाई । लेउ पियाज अर्क निकराई ॥
और पुदीनाको पिसवावै । तीनौं तीनि छटाँक मिलावै ॥
चनाके आटा साथ खवाई । रोग अश्वको सकल बिहाई ॥

दोहा–एक ग्रंथमें जानिये, बोगमा नाम बखानि ॥
दूसरमत अब कहतहौं, अरषनाम सो जानि ॥

अथ कमरी घोड़ाके लक्षण ।

दोहा–नीचेते ऊंचे सुथर, चाबुक मारि चढ़ाय ॥
साफ चढ़ै नाहिं कमर कज, अड़ि कमरी लखिजाय ॥ १ ॥
निशिमें थाने बैठियो, साफ उठै कज नाहि ॥
ठहर उठै कमरी लखै, तजै तुरत लखिताहि ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–पाँच महीनेको सुमति, पुष्ट वराह मँगाय ॥
तीनि भाग करि एकलै, रांधि मसाला नाय ॥ १ ॥
सेर एक गेहूँ मिलै, पकि सीरो ह्वैजाय ॥
तौ हालिममैदा बनै, आधसेर तहँनाय ॥ २ ॥
चालिसरोज खवाइये, नितको वजन बनाय॥
राखै खूर उढाय पट, कमर ऐब मिटिजाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई–लहसुन और भेलाँवजवाइनि। दुइ दुइ सेर करौ यक ठाइनि
हाँड़ी मध्य भरावौ भाई। तेल पताल यंत्र निकराई ॥
विधि सों हांडी छिद्र करावै । लहसुन और भेलाँडभरावै॥
ताके नीचे दूजी हाँड़ी। अजवाइनि तामें धरु भाँडी ॥
वाको तेल जवायानि खपवै। तौनि जवायानि घोड़े देवै ॥
एक छटाँक देउ जो वुधवर। दवा अजूबा सर्वरोग हर ॥
नवदिन करै दवा मन लाई। शालहोत्र मत दियो बताई ॥

अथ पीठिमें लचका परै ताकी दवा ।

दोहा–लखु घोड़ेकी पीठिमें, जो लचका परिजाय ॥
तौ लै चावर पीच बहु, गरमै थार भराय ॥ १ ॥
पूँछंदडि तिहि बोरिदे, खोलि पछारी देहि ॥
झरझरायहै झटकि अँग, मिटै लचक सुखलेहि ॥ २ ॥

अथ झोली काढनेकी विधि ।

दोहा–जो झोली काढ़िबो चहै, तौ यह जतन विधान ॥
दाग चारि पारा करै, पसुरीपै बुधजान ॥ १ ॥
पाव एक लै सोंठि अरु, सज्जी आधापाव ॥
पाव उर्द आटा मिलै, रोटी बनै पकाव ॥ २ ॥
धरि अहराकी अग्निसें, ताका देइ जराय ॥
काढ़ि पीसि बारीखकरि, पुरिया चालिस ठाय ॥ ३ ॥
जलके साथ खवाइये, नितही नित मतिवान ॥
सो झोली निश्चयकटै, रंगी भनित प्रमान ॥ ४ ॥

अथ शरदी गर्मीकी दवा ।

दोहा–सज्जी लौंग अफीस पुनि, अकरकरहको आनि ॥
खुरासानि अजवाइनिहि, छा छा मासे जानि ॥ १ ॥
गुग्गुल हालिम कैफरा, खील सोहागा आनि ॥
बच अरु हरदी सोंठिलै, यक यक तोले जानि ॥ २ ॥
साबुन तोले दोइभरि, गुड़पुरान मिलवाइ ॥
पैसा पैसा भरेकी, गोलीलेउ बँधाइ ॥ ३ ॥
यक यक गोली दीजिये, साँझ सबेरे माहि॥
शालहोत्र मुनि यों कहै, शरदी गर्मी जाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–सुमिलषार अरु शंखिया, खीलसोहागा आनि ॥
पुनि अफीम अरु येलुआ, मासे बीस बखानि॥
सोरठा–सबको भाग समान, दश मासे सज्जी बहुरि ॥
तिल दशटंक प्रमान, टंक टंक गोलीकरै ॥ १ ॥
ताहि खवावै प्रात, शर्दी गर्मी नाशकरि ॥
क्षुधा अधिक सरसात, हयको दीजै तीनि दिन॥ २ ॥

अथ शीतकी दवा ।

दोहा—सहदेई अरु कूट बच, इंद्रायनफल चारु ॥
दूनी लीजै वारुणी, पिंडाकरि निरधारु ॥ १ ॥
सहत सहित दीजै विधिहि, हयको साँझ सबेर ॥
अश्वशीतनाशैसकल,कहत नकुलमत टेर ॥

अन्य ।

चौपाई—गूलरिफल जो लावै आछे । शूकरमांस मिलावै पाछे ॥
औ महिषीदधि मधुहि मिलावै । शीतामिटै हय पेलि खवावै ॥

अथ घोडीके गर्भ न रहतहोय तिस की दवा ।

दोहा—रोहूमछरी साठिपल, थोरी लेउ पकाइ ॥
ताके सुरुआँ माहिमों, रोटी देउ सनाइ ॥ १ ॥
अरघी घोड़ी होइ जो, ताको देउ खवाइ॥
औषधकैकै तीन दिन, घोडी देइ छडाइ ॥ २ ॥
गर्भरहतहै ताहिके, बच्चा नीको होइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो,शालहोत्र मत सोइ ॥३॥

अथ बच्चाको देनेकी दवा ।

चौपाई—गोघृत तोले तीनि मँगावै । चौबिसरत्ती हींगमिलावै ॥
सो बच्चाको देउ पिआई । दूध हजम ताको ह्वैजाई ॥

अन्य ।

दोहा—निंबूके रस माहिमो, गर्मनीर मिलवाइ ॥
सोरहमासे तौलिकै, दीजै ताहि पिआइ ॥

अथ घोडीके दूध नहोइ तिसकी दवा ।

चौपाई—मैदा गोहूँकी लै आवै । तासम शक्कर ताहि मिलावै ॥
ताहीके सम गोघृत लीजै । तामें मिलै येलुआदीजै ॥

दोहा—डेढपहर दिनके चढे, यलुआ देइ खवाइ ॥
दिन यकइसलै तासुको, दूध अधिक सरसाइ ॥

अन्यमत अथ घोडेको नवसंगम बार ।

दोहा—रवि गुरु औ बुधबार लखि, घोड़ीको हय देहि ॥
साँझ सकार न दीजिये, सरा होत अच्छेहि ॥ १ ॥
लघु न्याजा जिहि अश्वको, असिल कौम तिहिजानि ॥
लघुयोनी घोडी लखै, शुभग जनै बखानि ॥ २ ॥

अथ घोडी अलंग करैकी विधि ।

दोहा—आँटा और मसूरको, समकरि ताहि पकाय ॥
तीनि दिवस घोडी दिये, अति मस्ती करिजाय ॥

अन्य ।

दोहा—की बासी रोटी दिये, ताहि अलंग जनाय ॥
आखिर होत अलंग लखि तौ घोड़ा दै जाय ॥ १ ॥
दोष तीनि दिन ताहिको, दाना नहिं दैजात ॥
शुरू अलंग मराय जो, घोडी नहिं ठहरात ॥ २ ॥
जो गाभिनि ह्वैजाय लखि, कम कम अंश घटाय ॥
अधिक अशनते दबिगिरै, की शिशु लघु प्रगटाय॥ ३ ॥
एकदाँय जो प्रगट शिशु, तौअलंग नहिं काज ॥
जनै बादि षटदिवसपै, फिरि मराय करिसाज ॥ ४ ॥
जो नजीक जानिबो लखै, घृतदे दिन चालीस ॥
पाव वजन बलवान शिशु, जानिबो सुगम सुदीस ॥ ५ ॥

अथ घोड़ाकी मस्ती घोड़ीकी अलंगशांति करनेकी विधि ।

दोहा—बासी जल दश दिवसलै, पोतापर छिरकाय ॥
है अजमायो तुरँगकी, मस्ती कम ह्वैजाय ॥

अन्य ।

दोहा—कईरोज बासी जलहि, छिरकि योनिपर देइ ॥
करिहै दफा अलंगको, कहौं नकुलमत सोइ ॥

अथ घोडा मस्त करनेकी विधि ।

दोहा—घोड़ीकी मुत्तालिका, निजकरमें भरिलेहि ॥
नथुनामें फिरि वाहिके, दे लगाय बल तेहि ॥ १ ॥
तीनि दिवस यहिविधि करै, कामबढै हयगात ॥
परखि योनिनेजा सुघर, घोडै करिकै घात ॥ २ ॥

अथ घोडा झरतहोय तिसकी दवा ।

चौपाई—जीराश्वेत कतीरा लीजै । धनियां वजन बराबरि कीजै ॥
पीसि छानि बुकुनू करवावै। चारिटकाभरि साँझ भिजावै ॥
भोरभये घोडको दीजै । सात दिवसमों नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—धनियां जीरा श्वेत सँगावै । बीजा मेहदीकेर मिलावै ॥
टका टका भरि साँझभिजाई । सातरोज उठि प्रात खवाई ॥

दोहा—यवको आटा पावयक, दवा पीसि सब लेइ ॥
सानि अश्वको दीजिये, रोग दूरि करिदेइ ॥

अथ आखता करनेकी विधि ।

दोहा—बच्चापैदा होय जब, मलि पोता घृत लाय ॥
घोड़ी देखि न मनकरै, मध्य जवानी आय ॥

अन्यमत अथ मदन अधिक करन विधि ।

दोहा—बल केवलहै वीर्य को, क्षीण होइ जब ॥
बल ताको तब नारहै, सुस्तरहै हय सोइ ॥

दवा ।

चौपाई—लैकंकोल केतकी आनै । दाख खांड जेठी मधु सानै ॥
घृत सों इनको पिंड बनाई । घोड़हि देउ पुष्ट परि जाई ॥

दोहा—पीपरि मिर्चै सोंठि पुनि, टका टकाभरि लेइ ॥
सीन साँस पकवाइ घृत, द्वोइसेर सो देइ ॥
चौपाई—मदिरा दधि मधुमापी आनै । हरियारा सम भाग बखानै ॥
यह घोड़ेको देउ खवाई । छीनोधातु पुष्ट परिजाई ॥
दोहा—कपरासों दधि बाँधिकै, सेतुआ ताहि मिलाइ ॥
आधसेर नित दीजिये, बूढ़ तरुण ह्वैजाइ ॥ १ ॥
औषधदीजै पुष्टकी, दिन यकइसलौं जानि ॥
दीजै ताहि प्रमाणकरि, कद सोसम पहिचानि ॥ २ ॥

अथ मदहरनविधि ।

दोहा—तालसाहिं गद्दी विषे, सुर्खकीट वह होइ ॥
जीवत लावै तुरतही, टकादोइ भरि सोइ ॥ १ ॥
लीजै सिंहजराव पुनि, खदिर भाँग अरु आनि ॥
हयको दीजै पाँचदिन, दोइ दोइ पल जानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—लेउ फटकरी दोइ पल, तासम सिंहजराउ ॥
मासे चारि कपूर पुनि, तासें आनि मिलाउ ॥ १ ॥
हयको दीजै सातदिन, उतरि तासुमद जाय ॥
दीजै चौदह रोजसो, अतिसीधा ह्वैजाय ॥ २ ॥
सोरठा—लील दोइ पल लेइ, तासम लावै फटकरी ॥
सातरोज लगु देइ, मद बाजीके नहिं रहै ॥

अन्य ।

दोहा—नीलाथोथा फटकरी, ताहि कपूर मिलाइ ॥
दीजै पैसा एक भरि, तीनि दिवस लगु लाइ ॥ १ ॥
दूबर बाजी जो रहै, करत बदी जो होइ ॥
गुड़दैकै मोटा करै, होत सीध तब सोइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—झल्लापन बाजी करै, अरु बोलत जो होइ ॥
ताकीऔषध कहतहौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
आधसेर: परमान करि, गोहूँ मैदा लाइ ॥
रोटी तासु पकाइ करि, बासी देउ धराइ ॥ २ ॥
मसकालीजै गाइको, पावसेर सो जानि ॥
हयको दीजै सातदिन, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥
सहित कतीरा खदिरधुनि, धनिआँ ताहि मिलाइ॥
हयको दीजै सातदिन, झल्लापन मिटिजाइ ॥ ४ ॥

अथ रंग बदलैकी विधि ।

दोहा—ऐबरहै नहिं जाहिते, पलटि रंग अरु जाइ ॥
शालहोत्र मुनि जो कहो, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि बार मुड़ाइकै, साबुन देइ लगाइ ॥
धोवै कुम्हडानीरसों, रोज रोज सो लाइ ॥ २ ॥
लीजै साबुन फटकरी, कुम्हड़ा नीर मिलाइ ॥
खरिल करै सो पहर भरि, ताकी विधि यह आइ ॥ ३ ॥
धरिराखै सो छाँहमें, रोज लगावै ताहि ॥
एकमास यहि विधि करै, रंगश्वेत ह्वैजाहि ॥ ४ ॥

अन्य श्वेतरंग करनैकी विधि ।

दोहा—बीरबहूटी लीजिये, एक टकाभरि सोइ ॥
लेउ निसोदर ताहि सम, बहुत खरा सोहोइ ॥ १ ॥
और लेउ हटतारको, जौन तावकी आनि ॥
पीसै तीनौं एकमें, ताकी यह विधि जानि ॥ २ ॥
खबहा कुम्हड़ा पेंड़में, लाग जहाँपर होइ ॥
ताहि छेदकरि दवाभरि, बंद कीजिये सोइ ॥ ३ ॥

ताको बौंड़ा साहिसो, लगारह सो देइ ॥
पाकिस्नूस जब जाइ वह, तोरि तासुको लेइ ॥ ४ ॥
जहाँ श्वेत कीन्हों चहै, डारै बार मुँड़ाय ॥
फेरि फटकरी पीसिकै, तापर देउ मलाय ॥ ५ ॥
वाही कुल्हड़ा नीरसों, धोवै ताको आनि ॥
कविश्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत जानि ॥ ६ ॥

अन्य नील रंग करन विधि।

दोहा–खबहा कुल्हड़ा एक लै, पाकि गयो जो होइ ॥
भरै ताहि वासन विषै, फाँकी करिकै सोइ ॥ १ ॥
गंधक लीजै सेरभरि, तासें देउ डराइ ॥
आगि बरत जहँ नितरहै, दीजै तहाँ गड़ाइ ॥ २ ॥
गाड़ोराखै सातदिन, लीजै फेरि निकारि ॥
वाही वासन माहि कारि, धरिये तासु सुधारि ॥ ३ ॥
सोरठा–श्वेतरंग जहँ आइ, कियोचहै तहँ श्यामको ॥
दीजै तहाँ लगाइ, सातरोज दोनौंबखत ॥
दोहा–धोवै अठयें रोज फिरि, नील रंग ह्वैजाइ ॥
शालहोत्र मत देखिकै, केशव दियो बताइ ॥

अन्य माथेकी सफेद चित्ती मिटावैकी विधि।

दोहा–सोंठि वैतरा रगरिकै, अरु हटतार पिसाय ॥
कइउ रोज रगरै सुघर, चित्ती श्वेत मिटाय ॥

अन्य।

दोहा–यक भाँटाको काटिकै, पानीसें दे डारि ॥
मींजि तासु वापर मलै, मिटै सफेदी झारि ॥

अथ थनीदोष मिटावैकी विधि।

दोहा–सज्जी चूना जल मिलै, घसिकारि थनी लगाय ॥
कईरोज याहिविधि करै, थनी दोष मिटिजाय ॥

अथ भौंरी मिटावैकी विधि ।

दोहा–जहँ भौंरी बद देखिये, सो यहि रीति मिटाय ॥
तहँकी खाल तरासिकै, सेंदुरतेल लगाय ॥ १ ॥
बार बराबरि निकरिहै, जो तनिकौ रहिजाय ॥
फेरि दुबारा लाइयो, कहो सुधीन उपाय ॥ २ ॥

अन्यमत वदनपर चित्तीपरैं तिसकी दवा ।

दोहा–बीज कुसुमके लीजिये, आधसेर परमान ॥
ताहि पकाय खवाइये, दाना साथ विधान ॥ १ ॥
कईरोज दीजै तुरँग, चित्तीबदन नशाय ॥
यहि समान औषध नहीं, जो कीजै मनलाय ॥ २ ॥

अथ अकरब सितारा मिटावैकी विधि ।

दोहा–भाल सितारा अकरबै, मेटै यही उपाय ॥
घिसि घिसि बार उड़ाइदे, हरदी पीसि लगाय ॥ १ ॥
ताजि सितरंग सो अंग रँग, बारनिकरिहैं चारु ॥
युद्धधीर यहिविधि कहौं, शालहोत्र मत सारु ॥ २ ॥

अथ अंगमें बार बढानेकी दवा ।

दोहा–लेपुरान तंदुल पकै, तासु पीच मलिकेश ॥
की चावरको धोवनो, मलै बढैं कच वेश ॥

अथ बछेरा ऊपरका ओंठ अपनी ओर ऊपर खींचै तिसकी दवा ।

चौपाई–ओंठ बीचमें जो नस देखै । खडी होय ताको अवरेखै ॥
काटि देइ तबहीं वहि नसकै । हरदी नमक ताहिमें भरिकै ॥
कटुकतैल तामें मिलवावै । दिनमें कइउ बेर चुपरावै ॥

अथ घोड़ा उन्मीलिकै आगेको हालै तिसकी दवा ।

चौपाई–हींगपलाश बीज मँगवावै । गुड़ घृत और बिजौरा लावै ॥
मिलै कचूर भागसमकीजै । आगू हालन मिटै जुकीजै ॥

अथ घोड़ा जल्द करैकी दवा ।

चौपाई—हरदी दारुहरद लै आवै । अँवरा सरसौं तेल मिलावै ॥
पानी साथ पीसिकै देवै । यकइस दिनमें जल्द करेवै ॥

अन्य ।

चौपाई—दारुहरद हरदी लैआवै । गंधक अँवरासार मँगावै ॥
पाँच पाँच दमरी भरि लीजै । तामें सरसौं तेल करीजै ॥
वासीजलसों पीसि पियावै । नितही नित यह जतन बनावै॥
शालहोत्र यह वचनबखानै । जल्दहोइ अतिही सुखमानै ॥

अन्य चलैकी दवा ।

चौपाई—कुटकी पाव एकलै लीजै । गूगुर और सोहागा दीजै ॥
और अँगथुवा छालि मँगावै ।अजमोदा यकभरि सब लावै॥
हरदीलै सबकी चौथाई ।तासे अर्द्ध अफीम मिलाई ॥
सबन पीसि दिन सात खवावै । पानी एकै बार पिआवै ॥
तबलौं हयको अशन न दीजै। अठयें लावा धान सुकीजै॥
नवयें दिन बेसन हयपावै । पिंडा सात दिवसतक खावै ॥

अथ अश्वकी बदी वर्णन ।

चौपाई—पानी देखे अधिक डराई । पक्षी उडत चौकरी जाई ॥
तंग कसत पर पाछे गिरै । सरपटमें नहिं फेरे फिरै ॥
होत सवार थान नहिं छाँडै । असवारीमें पाछ निहारै ॥
घोड़ी देखि न आगे जावै । दगै भुशुंडी पेलि परावै ॥
मोजा पकरै उलटै पाछे। करत खरहरा खींचै काछे ॥
शालहोत्र इनको तजि दीनो ।ए करिहैं असवारहि हीनो ॥

अथ ऐब छूटनेकी विधि ।

चौपाई—पानी देखे जो हय उझकै । करि समीप जल औंगी चटकै ॥
आगेते पाछे वड़गल्ला । तुरतै तुरै मारिगा हल्ला ॥

यहिविधि करै मास जब एकै । छाँडि देइ हय जलकी टेकै ॥
जो हय पक्षी उडते भटकै । ताके उपर भुशुंडी चटकै ॥
पग घायेपर करै अवाजै । फेरि कबहुँ नाहिं करै अकाजै ॥
तंगलेत जो पाछू टूटै । गांठि फराकी कबहुँ नछूटै ॥
गांठि सवारीते रहै थानै । छाँडिदेइ कछुदिवस बितानै ॥
मुँहका जोर न मानै घोड़ा । खबरदार दुइदे मुख तोड़ा ॥
श्वेत दूब घृत लै मुख मलिये।रोगके रुकै चलाये चलिये॥
असवारीसों फेरि लैआवै । पत्थर चून कपोल लगावै ॥
आगेदेइ सईसै बासै । पाछेजाइ तुरैके पासै ॥
रुकतेबेर चाबुकै मारै । कबहुँ तुरी अड़थान नकरै ॥
जो घोड़ा आननकर काचो । आलबराबरि देइकमाचो ॥
बागजेर बद ढीली बाके । कबहुँ तुरै पाछे नहिं ताके ॥
घोड़ी देखि तुरँग जो अड़तो।ताको नकुल मसाला पढ़तो॥
खरी जु लीदि खैरकी बुकनी । सातादिवसलौं दीजै धुकनी ॥

अन्य ।

चौपाई—लकरीमेको कीरा खावै । तनुते मदन दूरि ह्वैजावै ॥

अन्य ।

चौपाई—अंडचिराय आखता कीजै । जासों तुरी बदी नहिं कीजै ॥
दगे भुशुंडी जो हय भागै । ताके निकट खवाइसि दागै ॥
जादिशिजाय वही दिशिदागै । चौंकछुटै कबहूँ नहिं भागै॥

अन्य ।

चौपाई—मोजा पकरि करै यहि कामै । चाम तोंवरी घालि लगामै ॥
मुँहमारेते तोंवरी आड़िहै । कबहुँ तुरंग न मोजा धरिहै ॥

अन्य ।

चौपाई—करत खरहरा जो हय पकरै । घास समीपे खंभा जकरै ॥
तुकता ऐंचि खंभ ढिग करै । कबहूँ तुरँग सईस नधरै ॥

अन्य ।

दोहा–मारै पुत्तक जो तुरँग, देइ सवार गिराय ॥
कर सँभारि कोड़ा हनै, ताहि बुलंद चढ़ाय ॥ १ ॥
चढ़त चलबली जो करै, चढै नदेइ सवार ॥
थोर अशन बाहब अधिक, चढ़ि उतरैं बहुबार ॥ २ ॥
दृढ़ साँकरमैं मेलिहै, राखै तहँ जन कोय ॥
एकहूल मारै सँभरि, मिटै तासु बद खोय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–अधिक चलाकी चलबली, बल दिमाक जिहि माहि ॥
मध्यसवारी अडकरै, तासु भेद अस आहि ॥ १ ॥
दौरावै बहु तुरैको, जबलौं कूबति ताहि ॥
थकित होय जब तुरँग बल, खोवै गति सो ताहि ॥ २ ॥

अन्य बदी छूटेकी धूप वा अंजन ।

दोहा–दुष्ट अश्वहित मंत्र अरु, यत्न पूर्वही उक्त ॥
धूपांजन अब कहत जो, करौ मुनीश प्रयुक्त ॥ १ ॥
बीछि डंक अरु अस्थिलै, अतिकराल अहिमेल ॥
सिद्धिकरै घृत सानि सब, विषम धूप करि खेल ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–दुलौ इलाँची अगर लै, अरु उसीर बुध आनि ॥
अहिकेसरि चंदन गुरुच, तेल खजूरिहि सानि ॥ १ ॥
अनलडारि धूपित करै, दुष्ट अश्वके पास ॥
सकल बदीको मूलतें, कारक तुर्त विनास ॥ २ ॥
तीसर विष लोवान लै, दधि घृत चंदन तेल ॥
मेलि गदैला धूप करि, दोष अश्वको ठेल ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—गोमैंहै सब संधिसें, लेपिनिशीथ प्रभात ॥
धूपित करि लहि अष्टमी, दुष्ट साधि ह्वैजात ॥

अन्य बदी छूटैको नासु ।

चौपाई—लघु सोंठी अरु सैंधव लीजे। पीसि महीनसु जल सों दीजै॥
नासुदेय नथुनाके माही। बदी छूटि बहु सुख उपजाही॥

अथ लारबहैकी दवा ।

छंद मंदिरा—वारुणीको लेउ बुधजन, और मिश्री जान ।
सहत औ निंबूविजौरा, चारु चारु समान ॥
सबनको यक ठौरकरि, जल कूपलेउ पचाइ ।
उदर कृमि अरु लार नाशै, क्वाथ देइ पिआइ ॥

वारुणी विधि ।

दोहा—लैअंगूर कि दाखको, मदिरा करौ सुजान ॥
ताको कहिये वारुणी, नकुलमते परमान ॥

अथ मसाहरणविधि।

दोहा—या बाजीकी देहमें, मासा जो परिजाय ॥
काटेते सो ना मिटै, होहि फेरि ह्वैजाय ॥ १ ॥
अदरख गांठी चारि लै, सीपचून मँगवाइ ॥
सेंकि सेंकि रगरै बहुत, तौ मासा मिटिजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—चोंगली कागदकी करै, मासा ऊपर लाइ ॥
एक तरफ मो ताहिके, दीजै आगि लगाइ ॥ १ ॥
सब चोंगली जारिजाय जब,मासा तब नाशिजाइ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, गुरुखुरू बहुरि नशाइ ॥ २ ॥

अथ बादी वायुसीरके लक्षण वा दवा।

दोहा–क्षण क्षण वह अपशब्दको, करत तुरी जो होइ॥
ऐलक्षण सो जानिये, वायुसीरहै सोइ॥ १॥
घिउ गाईको पावभरि, गोंहू रोटी माहि॥
दीजै चालिस रोज तक, वायुसीर मिटिजाहि॥ २॥

अथ कीरापरेका मलहम।

दोहा–लीजै चूना सीपको, सोतौ तोले चारि॥
मासे छा पुनि तूतिया, लीजै तामें डारि॥ १॥
लीजै तेल छटांक भरि, तिलको कहो बखानि॥
रारसफेदा दुहुँनको, तोला तोला जानि॥ २॥
नीबसँभारु वकायनहि, और सरीफा जानि॥
पाती लीजै सबनकी, पुनि भँगराकी आनि॥ ३॥
सोरठा–तिनको रँगनु कढ़ाय, तीनि तीनि तोले सबै॥
राखै तिनहि धराय, अब मलहमकी विधि कहौं।
दोहा–रार चून पुनि तैल घृत, कांसे थारी माहि॥
एक उपर शतबार लौं, जलसों धोवै ताहि॥ १॥
अर्क सबै तब डारिकै, फिरिकै धोवै वाहि॥
डारै औषध फिरि सबै, जब सफेद दरशाहि॥ २॥
कीट होइ जिस जखममें, डारै कीट निकारि॥
लावै मलहम जखमपर, दिनमें बेरा चारि॥ ३॥
फेरि परत नहिं कीटहैं, जखम सूखि अरु जाइ॥
शालहोत्रमें देखिकै, केशव वर्णो आइ॥ ४॥

अथ बहुत रोग हरण औषध।

दोहा–पातधतूर मदारके, ग्यारह ग्यारह आनि॥
मिर्चैलीजै स्याह पुनि, सौ अरु सोंठि वखानि॥ १॥

मासाएक अफीम पुनि, समुद्रफारको लाइ ॥
दोऊ एक समान करि, पात सहित पिसवाइ ॥ २ ॥
गोली बाँधै तासुकी, झलबेरी परमान ॥
दीजै साँझी बेरयक, गोली एक बिहान ॥ ३ ॥
दाना दैकै साँझको, गोली देउ खवाइ ॥
गोलीदैकै भोरहीं, देउनहारी लाइ ॥ ४ ॥
सीना जाको बंदहै, अरु मठकनि जो होइ ॥
शर्दीको नाशत अहै, कफको डारै खोइ ॥ ५ ॥
शर्दीके महिना विषे, अति गुणज्ञ सो आहि ॥
शालहोत्र मत देखिकै, श्रीधर वर्णों ताहि ॥ ६ ॥

अथ जिसकी कमर मटकतिहोइ तिसकी दवा ।

दोहा—नकछिकनीको लीजिये, षटमासे मँगवाइ ॥
दुइ दुइ तोले लीजिये, हर्दी सोंठि मिलाइ ॥ १ ॥
तोलाभरि पुनि मिर्चलै, सबको लेउ पिसाइ ॥
मुर्गी अंडा एक लै, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
जानो यक मौताज यह, सातरोज लगुदेइ ॥
दीजै दोनों बखतमें, बाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥
औषधि दैकै बाजिको, घटिका चारि बिताइ ॥
तब दानाको दीजिये, तुरी नीक होजाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—हर्दी तोले तीनि भरि, गूगुल तोले दोइ ॥
मांस एक खरगोसको, की सियारको होइ ॥ १ ॥
आधपावघिउ माहिमो, थोरो ताहि पकाइ ॥
सबै औषधी पीसिकै, तामें देउ मिलाइ ॥ २ ॥

लीजै बँगलापान पुनि, यकतालीस मँगाइ ॥
औषधमाहिं मिलाइकै, हयको देइ खवाइ ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, सो दीजै दिन सात ॥
दाना दीजै नाहिं तिहि, तुरी नीक ह्वैजात ॥ ४ ॥
पछिले दोनों पाँइ जो, तुरी घसीटत होइ ॥
ताके भीतर पाँवकी, रगै दगावै सोइ ॥ ५ ॥

अथ मलग्रहणी लक्षण ।

दोहा–जो पियरो पानी गिरै, मुख अरु नासा माहि ॥
मलग्रहणी लक्षण निरखि, यतन करौ हय चाहि ॥
चौपाई–मधु अरु दूध मिलायक दीजै । मलग्रहणी ताकी हरिलीजै

अथ शीतलतारोग देहमें काम नरहै ।

दोहा–बीजालेउ पलाशके, टंक एक मँगवाय ॥
बीज केवाँच समानलै, सैंधवटंक मिलाय ॥ १ ॥
गोघृतके सँग दीजिये, जाय शितलता रोग॥
औषधकरै विचारिकै, भाषत कोविद लोग ॥ २ ॥

अथ विषशोधन विधि ।

दोहा–बिन शोधे विष औषधी, खान न दीजौ मीत ॥
अति दुखदायक होतिहै, करत जीव भयभीत ॥
सोरठा–सुमिलषारले जानि, जहर शंखिया होत जो ॥
सुनौ सकल बुधवान, विष शोधनकी जतन अब॥
चौपाई–प्रथम शंखियाकी विधि जानौ । एकटकाभरि सो परमानौ ॥
फिरि अमलोनियाँको मँगवावै । चारिटका भरि सो तौलावै॥
दोनों एकम खरिल करावै । एक पहर मौताज बतावै ॥
पतरी पतरी टिकिया करै । घामें सुखै और विधि धरै ॥
लीजै अजयादूध मँगाई । एकसेर पक्के तौलाई ॥

इक माटीकी हाँड़ी लावै । दूधडारि तिहि अग्नि पकावै ॥
टिकिया कपरा पोटरी बाँधै । डोरा कसि हाँडी बिच साधै ॥
दूधमबूडी पोटरी राखो । डोलयंत्र या विधि कहि भाखो ॥
जस जस दूध कमी ह्वैजावै । तस तस पोटरीका सकिलावै ॥
दूधक बाहर जबै निकारी । कपराकी तह करु तब चारी ॥
तामें पोटरी फेरि बँधावै । वाकी ऐसी जतन करावै ॥
पाव एक रस छिरका लावै । तिहि मा डोलयंत्र पकवावै ॥
चौथाई छिरका रहिजावै । तब उतारि टिकिया जलध्वावै ॥
करिकै साफ सुखैकै धरै । सुमिलषार या विधि अनुसरै ॥

अथ काषादि विष शोधन ।

सोरठा—कारियारी बछनाग, और सिंगिया हरदिया ॥
पुनि कुचिला निर्दाग, काष्ठादि विष जो सबै ॥

चौपाई—प्रथम एक विष शोधन कीजै । ताको तौलि टकाभरि लीजै
पानी पाँचसेर मँगवावै । महिषाको गोबर लैआवै ॥
माटीकी हाँडीमें भरै । कंडा आंच यामत्रय करै ॥
जल जारि जाय और फिरि भरै । जहर धोयकै कतरा करै ॥
चारि टकाभरि लै चौराई । मूल सहित लीजो पिसवाई ॥
सेरक पानीमें घुरवावै । कतरे जहर डारि पकवावै ॥
पहर सवाइक आँच करावै । फेरि उतारि ताहि धुलवावै ॥
कपरामें पोटरी करवाई । अजयादूध डेढ़ स्यर लाई ॥
हाँडीमें भरि अग्नि पकावै । तिहिमा डोलयंत्र करवावै ॥
जस जस दूध घटै हँड़ियामें । तस पोटरी सकिलावै वामें ॥
दूध जबै थोरा रहिजावै । पानी मा तब ताहि धुवावै ॥
घामें सुखै धरौ तब भाई । दवा माहिं याको डरवाई ॥
याहीविधि सब विष शोधवाइ । कुचिलै मति डारौ चौराई ॥

अथ काढासर्वरोगघ्र ।

छंद हरिगीतिका—अंगराजहि लै भलीविधि मांसपिंडहि आनि
लेउ फल इंद्रायनीके औ पुरनवाँ मानि ॥
बेल लोधो लाखलैकै सैंधवै सब सानि ।
कूपजलमें औटि लीजै अष्टअंश प्रमानि ॥
दोहा—सिद्धिअर्थ काढा कहो, बाजिनके सुखहेत ॥
अंगरोग नाशै सकल, तुरँग बली बहु होत ॥

अन्य ।

छंदतोमर—लै मोथ महुआ पात । अरु नागकेसरि तात ॥
समलोन सेंहुड़ा दूध । करि क्वाथ देउ अमुग्ध ॥
सब मिटै बाजी सोग । तहँ हरै बाइस रोग ॥
यह मानि लीजौ मित्त । अतिहोय चंचल चित्त ॥

अन्य ।

छंद छप्पय—दारु हर्द अरु सहत लेउ सैंधव समान करि ।
सर्षप सरस सफेद खाँड़ सौंफै मिलाय धरि ॥
औंरा समकरि देउ लेउ इमि फूल फिरंगहि ।
समकरि तुलसी बीज डारि औषधके संगहि ॥
कीजै क्वाथ कूपजललै सो अंश तीसरो दीजिये ।
वात पित्त कफरोग जे सब अश्वके तनु छीजिये ॥

अन्य ।

छंद भुजंगप्रयात—सोंठी हर्र लैकै सुमोथा मिलावै ।
तहाँ फालसीमास पिंडा रलावै ॥
सब्रली हरिद्रा मालती मिलावै ।
तुरंगैहिलै तीसरो अंश प्यावै ॥

सोरठा–सन्निपात मिटिजाय, नशैतीजरो बाजिको ॥
बहु उपचार बनाय, भाष्यो ग्रंथन नकुलमत ॥
चौपाई–महुरेठी औ केसरिनागा । लेउ भेलाव पातरज भागा ॥
शँखाहूलि बहेरे लेहू । त्रिफला ताहि युक्त करिदेहू ॥
क्वाथ बाजिको दीजौ चारू । धाँस मिटावै सुधकर सारू ॥
दिन दिन सबल करै उत्साहा । जानिलेउकाढा नरनाहा ॥

अथ पिंड सब रोगनाशन ।

छंद–कुटकी जेती लीजिये महुरेठी पिपरी प्रमान ।
वच पीसिकै मोथा मिलावहु पंच अमृत ज्ञान ॥
पिंड याको देउ हयको रोग अंगन सब नसै ।
पुष्टहोय मुनीन्द्र भाषैं चारुचरणनसों लसै ॥
सोरठा–दूरिहोत सब रोग, जा बाजीको दीजिये ।
कहत सयाने लोग, शूल आदि मिटिजाँय सब ॥

अन्य ।

चौपाई–केसरिफलश्रीकमलकआनौ।तारामखिागेरिकनिकाजानौ ॥
लै सबको करि पिंड खवावो। बाजी पवन समान चलावो ॥

अन्य ।

छंदचर्चरी– बच कपूर मँगाय सैंधव कीजिये यक ठाँव ।
सहत पीपरि गुर्च मेलो पिंड याको नाव ॥
देउ प्रथम खवाय बाजी होय हलुको अंग ।
शालहोत्र विचारिये यह वरणिये शुभ संग ॥

अन्य ।

चौपाई–मिर्चस्याहअरु लहसुन लेहू । केसरिनाग युक्त करिदेहू ॥
मास दुगुनमें ठीकोकरौ । पिंड बनाय अश्वमुख धरौ ॥
दोहा–यह खवाइ सब दुखहरौ, मारग चलै सचेत ॥
शालहोत्र मत पिंड यह, भाषो ग्रंथ निकेत ॥

अन्य ।

छंदहूलना—पतालफिरंग सोबरू सँगाइये ।
पंकज केसरि आनि जँभीर रलाइये ॥
रक्तदोष मिटिजाय सु पिंड बताइये ।
होत तुरी आनंद सो ग्रंथन गाइये ॥

अन्य ।

छंद नराच—तमालपत्र सालिमो सो पुहकरो समानिको ।
तहाँसो लोध चिरचिरा औ तेंदुवा प्रमानिको ॥
करौ सुपिंड दूधमो हरौ सो वातरोगको ।
सो शालहोत्र देखिकै करौ जु बाजिभोगको ॥

अन्य ।

दोहा—लेउ चिरैता कूटिकै, छिरका मध्य पचाय ॥
पिंडखवावै वाजिको, शूल सकलमिटिजाय ॥

अन्य ।

छंदहरिगीतिका—मूँग को रस औटि लीजै देउ मिर्च मिलाइकै ।
सहिंजना रस औटि लीज देउ नासु बनायकै ॥

अथ सर्वरोग नाशन ।

छंदछप्पय—इंद्रायनि फल चारु कमलगट्टा सुलेउ युति ।
शिलाजीत दुइ निंबु नागकेसरि विशाल अति ॥
कमलके फल औ सहत लेउ बुधिवानटंक भरि ।
महुरेठी तिहि युक्त जानि लीजै समान करि ॥
तिहि लेउ सकल घृत अठगुनो शोधि अग्नि परिपक्व करि ।
पुनि देउ बाजी पुष्ट करिहै सबै व्याधि इमि जाय हरि ॥

अन्य ।

दोहा—बाम अंग हय पासुरी, नीचे लहसुन होय ॥
दुःखदेइ अति शूल करि, गोल कठोरनि सोय ॥
सोरठा—हृदय व्याधि कृशहोय, वाजि अग्निसों लीह युत
तिनहिं मिटावै सोय, सोघृत दीजै जो कहो ॥

अन्य ।

छंदभुजंगप्रयात—बहेरे नयेके सोहै चारि आनै ।
कहोटंकलैकै कुसुंभै प्रमानै ॥
तुचा दाड़िमै कुसकुमैलै मिलावै ।
सबै एककै घीगुनै अष्ट लावै ॥
करैदूरि आवश्यकै चोट नासै ।
बढ़ै पौरुषै औ हियेमें विलासै ॥
हरै तापको चारु वेगै वढ़ावै ।
कहौं ग्रंथकी रीतिसोप्रीति भावै ॥

अथ पित्तशांतिघृत ।

छंद—बचाहि करौ जो कूटि सो मेल लाइये ।
अजयाघृत लै प्रमाणसों सबै मिलाइये ॥
अग्निमाहि परिपक्क सो अश्व खवाइये ।
पित्त शांति करिदेत सो ग्रंथन गाइये ॥

अथ खजुलीघृत ।

छंद—त्रैहरदयुतकरिजातु गंधक मैनशिलयुतआनिये ।
पुनि तिगुन ले नवनीत ताते यहै घृत्त वखानिये ॥
परिपक्क याको करहु नीको तुरी देउ बनाइकै ।
जाइ खजुरी वाजितनु की अंग अंग मलाइकै ॥

अन्य ।

चौपाई—सहत निंबु नखगुलको आनौ । घिउ परिपक्क अठगुणो जानौ
तिनमें औषध चारि मिलावै । रोगमिटै हय पेलि खवावै ॥

दोहा—जिहि प्रकार सब नकुल मत, घृतको कहो विधान ॥
रोचक चारु तुरंग हित, वरणो सुकवि निधान ॥

अथ बछेरा आरोग्य करण विधि ।

छंद—विन ऐब बछेरा कियो चाहि । नित भूँजि सोहागा देइताहि
मासा तीनिक पानी मिलाय। सब रोग दूरि करि तुरँग खाय

अन्य ।

छंद—चारौ बँदके भीतर सुजान । दागै द्वै द्वै खत करि प्रमान ॥
बिन ऐब बछेरा होत आसु । कीजै सुधारि यहरीतितासु ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतफुटकररोगवर्णनोनामअ-
ष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथ षटऋतुके नास वर्णनम् ।

दोहा—वात पित्त कफते सुमति, उपजै तुरै अजार ॥
वरणौं तासु विनाशहित, नासुछऋतु उपचार ॥

वसंतऋतु ।

चौपाई—मीनै मेष बसंत बखानौं । मास चैत बैशाख सुठानौ ॥
नींबपात रस लेउ निकारी । मोथा सोंठि बूँकि तिहि डारी॥
पात दतूनि गर्मपै गेरै । नासु दिये रुज हनत घनेरै ॥

अन्य ।

चौपाई—महुआ अरु इंद्रारुनि लावै । खाँड और परवर रस नावै ॥

ग्रीष्मऋतु ।

चौपाई— ष औ मिथुन ग्रीषमै भाषो । मासज्येष्ठ आषाढ़ सुराखो ॥

ग्रीषम पिपरामूल मँगावै । ताको कपरछान करवावै ॥
थोरा जल मिलायकै दीजै । नासु दिये सब रोग छीजै ॥

वर्षाऋतु ।

चौपाई—कर्क सिंह वर्षाऋतु जानौ । सावन भादौं मास बखानौ ॥
नीबपात वैतरा मँगावै । टुकरा टुकरा भरि सम नावै ॥
जलसों पीसि नासुदे भाई । पावसमें सब रोग विहाई ॥

अन्य ।

चौपाई—खाँड़ सफेद सहत सम लीजै । पीपरकी जर तामें दीजै ॥
ढाई ढाई टंक सुआनौ । पीसि नासु दीजै मतिवानौ ॥

शरदऋतु ।

चौपाई—कन्या तुला शरदऋतु कहिये।आश्विन कातिक मास सुलहिये
इंद्रजवा अरु जवाषार वच । तामें मिलै धतूर नासु रच ॥
शरदीऋतुमें हयको दीजै । नाशै रोग परमसुख लीजै ॥

हिमऋतु ।

चौपाई—धनवृश्चीक शिशिर ऋतुवरनौ।अगहन पूषमास सो जानौ ॥
पिपरामूरि बूँकिकै छानै । तामें बकरीमूत मिलानै ॥
हिमऋतु नासु वाजिको दीजै ।होय सुखी अतिही दुखछीजै

शिशिरऋतु ।

चौपाई—मकर रु कुंभ शिशिरऋतु कही।माघफाल्गुन महिना सही ॥
दाड़िमरस कटुतेल मिलावै। अपामार्ग गोमूत्र मँगावै ॥
लै झलारिजर सहित विधानै । नासुदेइ शिशिमें सुखमानै॥

अन्य ।

चौपाई—लहसुन पिपरामूलहि लावै । सुंडी अहिकेसरि लै नावै ॥
सबको पीसि नासु हय दीजै। होय सुखी तनु रोगहि छीजै॥

अथ सितंगको नासु ।

चौपाई–सुंडी सिता तालदल लीजे । पीसि कूपजलसों तिहि दीजै॥
दीन्हें नासु तुरै सुखमानै । प्रबल सितंग तुरतही भानै ॥

कफते रोगहोय ताको नासु ।

चौपाई–अँवरा अँविलबेत लै आवै । अजामूत्र गोमूत्र मँगावै ॥
लोन सबै समभाग मिलावै । जलसों पीसिनासु सुख पावै ॥

अथ वातरोगको नासु ।

चौपाई–हर्रकि बकली फोरिक लीजे । पानीके सँग नासु करीजै ॥
वातरोगको तुरत नशावै । शालहोत्र यह नासु बतावै ॥

अन्य ।

चौपाई–अजामूत्र कटुतेल मिलावै । की गोमूत्र तैल सँग भावै ॥
वातरोग यह नासु विनाशै । शालहोत्र मुनि सार प्रकाशै ॥

अन्य ।

चौपाई–अपामार्ग पानीसों पीसै । नासु दिये अतिही सुख दीसै ॥
शालहोत्र यह सार बतावै । नासु दिये बाजी सुख पावै ॥

अन्य ।

चौपाई–लै अहिफेन पीपरामूरै । वायभरँग नागेश्वरचूरै ॥
लै समभाग सुजलसों पीसै । नासु दिये बाजी सुख दीसै ॥

अन्य ।

चौपाई–खुरासानि वच सोंठि मँगावै । परवरकी जर गोघृत नावै ॥
नासु दिये हय बात विनाशै । अरु शिररोग सकल सो नाशै ॥

अथ तलषीको नासु ।

चौपाई–तलषीको केसरिदै नाशै । रिससों रुजको अन्य प्रकाशै ॥

अन्य ।

चौपाई–दुवो सोंठि सित सिरसौं लेई । मलिकै पानी पीसिक देई ॥

अन्य ।

चौपाई–शंखाहूली हर्रा आनै । और शतावरि कुचिला ठानै ॥
समकरि जलसे पीसिबनावै । नासु दिये बाजी सुखपावै ॥

अथ नेत्ररोगनासु सर्वरोगपर ।

सोरठा–नेत्ररोग कछु होय, पिपरी पीसौ शीतजल ॥
दीजै नासु अनोय, नैन अरोगी होतिहैं ॥

अन्य ।

चौपाई–चारि भेद जो नास बतायो । ताको शालहोत्र दरशायो ॥
सीठो कटु रूखो चिकनोई । नासु चतुर विधि गुदा गनोई ॥
सीठो पित्त वात कटुदीजै । रूखोकफको शमन करीजै ॥
उत्तम टंक बयालिस दीजै । मध्यम चौंतिस टंक गनीजै ॥
अधम टंक छाव्विस परमाना । शालहोत्र यह रीति वखाना॥

दोहा–बावन दिन उत्तम कहे, छब्बिस मध्यम जान ॥
तेरह दिन पुनि अधमहैं, यहै नासु परमान ॥

छंदभुजंगप्रयात–तुचा दाडिमै कमलगट्टा प्रमानौ ।
तहां श्वेतलै दूब अंकूर आनौ ॥
इन्हैं पीसिकै शीत पानी मिलावै ।
भले नासुदै रक्तदोषै मिटावै ॥

अन्य ।

छन्दभुजंगप्रयात--बहेरे औ लौंगै सो मुत्रै मिलावै ।
कफै नाशको नासु सो वाजिपावै ॥
घृतै क्षीर सोंठी भलो सारु आनै ।
नशै वायु हयके निसैसो वखानै ॥

अन्य ।

चौपाई—गुर्च सोंठि मेथी सम आनौ। सरसों तगर सकल लैमानौ ॥
सन्निपात वाजीको जाई। जो यहि नासै देउ बनाई ॥

अन्य ।

सोरठा—लाख शतावरि आन,औंरा हर्र इलायची ॥
देउ नास परमान, सन्निपात नाशै सकल ॥
दोहा—नासु नकुलमत जो कहे, ते हयके सुख मूल ॥
समय अवस्था रोग बल, समुझि देउ अनुकूल ॥

कुरकुरी का नासु ।

दोहा—अदरखकोरस लीजिये, एक छटाँकै जान ॥
आधपाव गोमूत्र मिलि, और दवा पहिंचान ॥
चौपाई—सैंधव नमक सोंठि पिसवावै। चारौं रकमैं एक मिलावै ॥
नासुदेउ अश्वाको जबहीं। मिटिहै शूर कुरकुरी तबहीं ॥

अन्य कुरकुरीका नासु ।

चौपाई—सेंउढा दूध कपूर मिलाई । पैसा पैसा भरि तौलाई ॥
फूल पलाशसूख पिसवाई । एक छटाँकै देउ मिलाई ॥
नासुदेउ रुज नीको लीजै । मिटिहै शूल कुरकुरी छीजै ॥

अन्यमत नासुवर्णनम् ।

दोहा—मिष्ट सचिक्कन रुक्ष कटु, नास चारि विधि होइ ॥
वात पित्त कफ रक्तको, दोष नशावत सोइ ॥ १ ॥
मिष्टरुक्षहै वातको, कविश्रीवर यह आनि ॥
कटु अरु रुक्ष बखानिये,कफको नाशक जानि ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तते, श्रम आलस जो होइ ॥
" " " " " " ॥

पीपरि पिपरामूल अरु, बहुरि नीबरस जानि ॥
गोपय सैंधवलोन पुनि, टंक टंक सब मानि ॥ ४ ॥
सोरठा—तीनि दिवस उठि प्रात, नासापुटमें दीजिये ॥
औषध मासे सात, नाशै कासश्वासको ॥
दोहा—चैतमास खसकेररस, जवाषारको लाइ ॥
दोइ औषधी और पुनि, तासें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
त्रिफला शक्कर दूध वट, मिलै वैद्य जो देइ ॥
नासापुटमें नासु यह, सर्वरोग हरिलेइ ॥ २ ॥
माघमास फागुन विषे, तेजपत्रको आनि ॥
कमल गिलोइ मिलाइये, तीनि तीनि पल जानि ॥ ३ ॥
कूपवारि युत बाजिको, नास प्रात उठि देइ ॥
शालहोत्रमें यह कहो, रोग सकल हरिलेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—मिर्च सोंठि भूनींब अरु, समभागहि करिलेउ ॥
कूपवारि गजपल विषे, पित्तनास कहँ देउ ॥ १ ॥
छोटिकटैया तगर पुनि, सरसौं केवल श्वेत ॥
कूपवारिमें सानिकै, नासु प्रात उठि देत ॥ २ ॥
आठ टका भरि औषधी, तीनि दिवस महँ देइ ॥
सांची जानौ बात यह, वातरोग हरिलेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—श्वेत दूब चंदन सहित, लीजै मिश्री तोय ॥
दीजै याको नास जो, रक्तदोष नहिं होय ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि सैंधव सोंठि अरु, षारीलोन समेत ॥
दूरिहोइ श्लेष्मा, नासापुटमें देत ॥

अन्य ।

सोरठा–पात सँभालू लाइ, नासु दीजिये बाजिको ॥
तौ कनार मिटि जाइ,निकसिपरत बलगम अहै॥

अन्य ।

दोहा–मिर्च सोंठिको कूटिये, और कसौंजी लेइ ॥
हो श्लेष्मा जाहिको, और शीतनाशिदेइ ॥

अन्य ।

सोरठा–कंठरोग जब होइ, लटजीरा गोमूत्र लै ॥
अजामूत्र महँ सोइ, खरिल कीजिये पहर भरि॥
दोहा–दीजै नासापुटविषे, रोग दूरि ह्वैजाइ ॥
शालहोत्र मुनि यह कहो, यासम नाहिं उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा–आँखिढबैली बाजिकी, बनी रहति जो होइ ॥
ताकी औषध कहतहौं, शालहोत्र मत सोइ ॥ १ ॥
कमलगटाको पीसिये, बासीनीर मिलाइ ॥
दीजै नासापुट विषे, आँखि साफ ह्वैजाइ ॥ २ ॥
नेत्र कंठ मुख भालसों, नासापुटमें जानि ॥
एते ठौरन बाजिके, होत रोग जो आनि ॥ ३ ॥
औषध दीजै नास तब,शालहोत्र मतजोइ ॥
वात पित्त कफ रक्तको,दोष देतहै खोइ ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतसर्वरोगनाशकनासुवर्णनो नामएकोनविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ रसादि रक्त लेनेकी विधि ।

दोहा–सात रसादिक धातुहैं,तिनको करौं बखान ॥
जो जाने ते जानिये,अश्वरोग पहिंचान ॥ १ ॥

हयके रुधिर विकारते,होत बहुत विधि रोग ॥
ताके रुधिर निदानमो, कीन्हों प्रथम प्रयोग ॥ २ ॥
रुधिर विकार विचारिकै,करौ चिकित्सा चित्त ॥
औरौ भाषौं तीनि विधि, पित्त वात कफ मित्त ॥ ३ ॥
छंद-आषाढ करौ कम बाजि श्रोन।ताको भैषज करु बाँधिभौन॥
सहत घोरि साबुनहि देहु । हैहै वालिष्ठ मत ग्रंथ येहु ॥
छंदभुजंगप्रयात-जहाँ बाजिके अंग लोहू न होई ।
खवावै कछू रुक्ष संगै नसोई ॥
तहाँवातको कोप आनौ तुरंतै ।
करै रोगको आनि देहैदुरंतै ॥

अन्यमत फस्त खोलनेकी रगे जाननेकी विधि ।

दोहा-बहुतरोग ऐसे अहैं, फस्त खुलाए जाँय ॥
ताके मैं लक्षण कहौं, भिन्न २ बिलगाय ॥
चौपाई-ग्रंथ पढ़ै अरु गुरुतेसीखै । अपने नयनन खोलन देखै ॥
सिरामोक्ष क्रमहै बहुगूढ़ा । ताको नहिं करिहै नर मूढा ॥
मुनिन कछुक प्रथमै लिखिराखा।तिहि अनुसार करतहौं भाषा
सकल शरीर रगनको जारा । हैं विशेष यकइस रुजहारा॥
जगह ठौरके नाम बखानौ । तामें फस्त खोलिबो जानौ ॥
सकलचौपयाके रग होई । याही ठौर कहै सब कोई ॥
अश्वाके तनु यकइस खोलै ।और पशुनके कमकम बोलै ॥

अथ जिह्वामें फस्त खोलनेके लक्षण ।

चौपाई-दुइरग दुऔ तरफ जिह्वातर । दशन सामुहे ताहि कहैं नर ॥
इनकी फस्तजु बुधजन खोलै ।हलक नरकसी मुखरुज डोलै

अथ नथुननकी फस्तके लक्षण ।

दोहा-नथुननके भीतर अहैं, दुऔ तरफ रग दोइ ॥
नेत्र श्रवण मुखरुजहरै, फस्त खुलावै कोइ ॥

अन्य काननकी फस्त ।

दोहा—दूनौं श्रवणनके तरे, दुइ रग अहैं सुजान ॥
तौन गईं ग्रीवा तरफ, ताको करौं बखान ॥
चौपाई—करनखाजुली कचको गिरना । सगजसोथ हर फस्तै खुलना

अन्य सोढनकी फस्त ।

दोहा—दुइ रग दूनौं ओरहैं, सोढ़न पर बुधवान ॥
तौनगईं पीठी अलँग, ताके गुण पहिचान ॥
चौपाई—इनफस्तनको खोलै भाई। चारिठौरके रोगनशाई ॥
कटि अरु पीठीमें रुज जानौ । उठि बैठैमें दुख पहिचानौ ॥
हाथ पाँउ जो खींचै लाई । ताकी फस्तै यही खुलाई ॥

अन्य जांघनकी फस्त ।

दोहा—दुइरग दूनौं जंघमें, गईं पेटकी ओर ॥
इनके खोले जातहैं, सुनो रोगके ठौर ॥
चौपाई—सिरींखफती अरु बेहोसा । शिर दैदेमारै बहु रोसा ॥
औरौ एक रोग छुड़हलना । यतने जाँइ फस्तके खुलना ॥

अथ छातीकी फस्त ।

दोहा—दुइ रग छातीमें अहैं, गईं शीशके ओर ॥
पग छातीके रोगहर, फस्त खोलु यहिठौर ॥

अथ चारों चरणनकी फस्तैं ।

दोहा—चारौ चरणन घूटना, ताके नीचे जानु ॥
भितरी तरफ बखानिये, ताके गुण पहिचानु ॥
चौपाई—यकतौ सुस्ती सकल शरीरा । दूजे भरा चलै मग धीरा ॥
कौनौ अंगहिसोथ दिखावै । कोई रोग पैरमें आवै ॥
जौन चरणमें रुज पहिचानौ। तौनेही लखि फस्त बखानौ॥

अन्य ।

दोहा–चारौ पगके घूटना, ताके नीचे जानु ॥
बहिरी तरफ बखानिये, दूसरिविधि पहि वानु ॥
चौपाई–गरमी देखे जो हय तनमें । कोई रुज देखै जो पगमें ॥
ताकी फस्त यहै खुलवाई । नीकहोइ सब दुख मिटिजाई ॥

अथ गुदाके नीचे फस्त ।

दोहा–दुमके नीचे एक रग, गुदातरे पहिंचान ॥
अंडकोश रुज हरणको, मानो काल समान ॥
चौपाई–फस्त खुलावो रुज पहिंचानी । याके किये नहोई हानी ॥
एक रोग कौनौ जोहोई । फस्त खुलावो ताक्षण सोई ॥
दोहा–बाजी रग ऐसी अहैं, बाँधे जाहिर देइ ॥
कोइ कोइ विन बाँधे लखै, जो पहिचानै कोइ ॥
चौपाई–जौनी रगैं देखि नहिं पावै । तहँके बार तुरत मुँड़वावै ॥
दोहा–रुधिर लेउ परमान भरि, पीछू बंदिसि खोलि ॥
ता ऊपर पट जल भिजै, बाँधि देउ रग ठेलि ॥
चौपाई–जो शोणित नहिं बंद दिखावै । ताकी जतन और करवावै ॥
कपरा फूँकि भस्म भरवाई । कीतौ कागजभस्म लगाई ॥
बब्बुर गोंदै पीसि मँगावै । छतके ऊपर सो चपकावै ॥
कीदंबुलअखवैन भरावै । अरु रूमीमस्तगी लगावै ॥
शोणित बंदहोइ जो करिये । मनमें चिंता कछू नधरिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतबाजीशिरामोक्षणवर्णनोनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ वर्षभरकी चिकित्सा ।

दोहा–तीनि फस्ल षष्टऋतुअहैं, बारह महिना जानि ॥
एक शालमें होतहैं, जानिलेउ सुखदानि ॥ १ ॥

तासु चिकित्सा कहतहौं, जानिलेउ मतिधीर ॥
रोगनिकट आवै नहीं, मोटाहोइ शरीर ॥ २ ॥

अथ तीनि फस्ल कथनम् ।

दोहा--औषध दीजै बाजिको, रोग मुनासिबहोइ ॥
होइ मुनासिब फस्लको,तब गुण हयको सोइ ॥ १ ॥
रोग शरदहै वाजिको गर्मीकेरि बहार ॥
औषधदीजै गर्म त्यहि, पै यह करै विचार ॥ २ ॥
ताकी औषध माहिसें, अतीगर्म जो होइ ॥
औषध आधे भाग करि, डारि दीजिये सोइ॥ ३ ॥
सोरठा–अहै गरमतर जौन, होइ मुनासिब रोगके ॥
हयको दीजै तौन, रोगहरै सब बाजितनु ॥
दोहा–सो बहार बरसातिसो, रोग गरम जोहोइ ॥
औषध दीजै गर्म त्यहि, खुश्की लीन्हें सोइ ॥ १ ॥
जौंही जाड़े माहिसें, रोग रक्तकर आहि ॥
औषध दीजै शरदसो, नहीं वातकर ताहि ॥ २ ॥

अथ गर्मीकी फस्ल ।

दोहा–मौसिम गर्मी माहिसो, कोप पित्तको जानि ॥
राज्यरक्तकर होतहै, कफको संचय मानि ॥ १ ॥
वात भईहै नाश अरु,यह लीजै जिय जोइ ॥
होइ मुनासिब नाहिनै, औषध दीजै सोइ ॥ २ ॥
राखै हयको याहिविधि,गर्मीकी ऋतु माहिं ॥
ंधे ऐसे पेंडमें, गर्मी लागै नाहिं ॥ ३ ॥
तीनिबखत महँ दिन विषे,दीजै नीर पियाय॥
निशिमें बाँधै बाजिजहँ,प्रथम भूमि छिरकाय ॥ ४ ॥
निशिभरि राखै ओसमहँ रोजरोज यह जानि ॥
धोवै दुसरे रोज तिहि, दिनके अंत बखानि ॥ ५ ॥

यवभूंजे पिसवाइकै, शक्कर नीर मिलाय ॥
हयको भोजन दीजिये, हरीघास मँगवाय ॥ ६ ॥
होइ मिजाज मुनासिबे, लेउ विहार विचारि ॥
औषध दीजै भूखकी, कवि श्रीधर निरधारि ॥ ७ ॥
होइ मुनासिब फस्त जो, ताकी तारू माहि ॥
खोलिदीजिये फस्तको, कही तासु विधि आहि ॥ ८ ॥
कोऊ पंडित यह कहत, मधु माधवमो जानि ॥
कोपहोतहै रक्तको, सफरा राज्य बखानि ॥ ९ ॥

अथ वर्षाकी फस्ल ।

दोहा—राज्यहोतहै वातको, अरु संचय जिय जानि ॥
शांतरक्त अरु पित्तहै, कफको कोप बखानि ॥
सोरठा—क्षुधामंद परिजाइ, बाजी जाति कनारिहै ॥
औषध दीजै ताहि, जासों होइ कनार नहिं ॥
दोहा—देइ दवाई वाजिको, पीपरि सोंठि मँगाइ ॥
दोनों हरैं सहित पुनि, गऊमूत्र भिजवाइ ॥ १ ॥
कटुकतैलके साथमें, हयको देउ खवाइ ॥
दीजि गरम मिजाजको, तिलको तेल मिलाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै साँझको, रोग न आवै तीर ॥
हरियरि घास खवाइये, देउ कुआँको नीर ॥ ३ ॥
बाँधै शीतल छाँहमें, वायु लगति जहँ होइ ॥
देउ धुवाँ करवाइ तहँ, मच्छड भय नहिं सोइ ॥ ४ ॥
धोवै तिसरे रोज प्रति, बाजीको सुखदानि ॥
दीजै वर्षानीर नहिं, सो बलगमकी खानि ॥ ५ ॥

अथ जाडेकी फस्ल कथनम् ।

दोहा—कोपहोत है वातको, कफकी शांति बखानि ॥
पित्त खून संचय अहै, कवि श्रीधर यह जानि ॥ १ ॥

बांधै ऐसे ठौर महँ, लागै नहीं बयारि ॥
दिनको बांधै धूपमहँ, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
भोजन दीजै बाजिको, हर्दी सोंठि मिलाइ ॥
गुड़ या शक्कर साथमें, तौ मोटो ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
सेहनाति लीजै वाजिसों, जैसी इच्छाहोइ ॥
देइ मसाला भूँखको, राजीको गुण सोइ ॥ ४ ॥

अथ ऋतु उपचार वर्णनम् ।

दोहा–अब बाजिनको कहतहौं, षटऋतुको उपचार ॥
तामें भोजन विविधविध, शालहोत्रको सार ॥ १ ॥
भिन्नभिन्न भोजन कहौं, ऋतु ऋतुको मतिधीर ॥
जासों पौरुष अतिबढ़ै, मोटो होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ वसंतऋतुवर्णन ।

दोहा–घीउ बाजिको दीजिये, यवकी रोटी माहिं ॥
आठ टकाभरि वजन घृत, शालहोत्र मत आहि ॥

मसाला ।

दोहा–त्रिफला लीजै तीनिपल, लोन एक पल साथ ॥
हयको दीजै नित्तप्रति, यह भाष्यो मुनिनाथ ॥

अन्यमत ।

दोहा–मीन मेष संक्रांति कहि, चैत्र और वैशाख ॥
ऋतुवसंत सो जानिये, नकुलमते सो भाष ॥

छंदतोमर ।

छंदतोमर–ऋतुहै वसंत सुभाग । जहँ फूलियो वन बाग ॥
तहँ भँवर गुंज अनंत । जनु मैन बीज बयंत ॥
हयहोत उर उत्साह । तहँ चाहिये नरनाह ॥
नितही फिरावत बाजि । पुनि चढ़ै ते नृप साजि ॥
तिहि निंबु देउ सलोन । सहतैल भाषत कोन ॥
कछु जानिये जब रोग । तब और औषध योग ॥

दोहा-एकैठौर न राखिये, होत वाजि आलस्य ॥
मंदअग्नि तासों बढै, भक्षण भक्षत सस्य ॥

अन्यदवा।

छंद-यवकूट बराबारिही भुँजाइ। तिहि मोटा अरदावा पिसाय ॥
दीजै बसंत सुख तुरेहोत। अति मोटो तनु बल अधिक देत॥

अन्य।

चौपाई-चैतमास अरदावा दीजै। हरदी तैल लोन युत कीजै ॥

अन्य।

चौपाई-पानीके सँग सत्तू पावै। कबहूं तुरँग न गरमी आवै ॥

अन्य।

चौपाई-ऋतुवसंत चैतै वैशाखा। सैंधव घृत अरु तेलक चाखा ॥
घाम न खाय तुरहे अरोगी। फेरै अति आलस संयोगी ॥

अथ ग्रीष्मऋतु।

दोहा-ग्रीषम ऋतुहि बखानिये, जेठ अषाढ प्रमानि ॥
वृष अरु मिथुन सुजानिये,बुधजन लीजो मानि ॥ १ ॥
ग्रीषमऋतुमें दीजिये, यवके सेतुआ लाइ ॥
देउ मसाला तिर्फला, खांड़माहिं मिलवाइ ॥ २ ॥

छंदछप्पय-तप्त तरणि आकाश धरणि जलचर थला।
विकलहोत सब मृगा दुखितवनचरनला ॥
जरत नदी नद पीन सकल व्याकुल विहंगगन।
चीर भीज बहुनीर धीर लेवत पटोर तन ॥
यहिविधि तप ग्रीषम मिटै गृही गुलाबसुगंधअति।
तहँ चहिय तरुनि पंकज नयनि चंद्रबदनि इमि हंसगति॥

दवा।

चौपाई-ग्रीषम शीतल भोजन दीजै। औ हयकोघृत पान करीजै ॥
शिरामोक्ष हयके अंग करौ।सो घृत पिंड तासु मुख धरौ ॥

दोहा—यहिप्रकार जो कीजिये, बाजीको उपचार ॥
होय सकल अंगन बढै, नकुलमते अनुसार ॥

अन्य ।

चौपाई—ग्रीषम जेठ अषाढ कहीजै । औ वचदेहै शीतल कीजै ॥
घृत अरु भात देय नितही नित। नाशैरोग होय तनु सुखहित

अथ वर्षाऋतुवर्णन ।

दोहा—वर्षाऋतुमें जानिये, कर्क सिंह संक्रांति ॥
सावन भादौं मासहै, समुझि लेउ यहि भांति ॥
कुण्डलिया—वर्षामें नहिं कीजिये, तुरँग सवारी रीत ।
निर्बल याते होत है, जानिलेउ तुम मीत ॥
जानि लेव तुम मीत कूपजल पीवन दीजै ।
लै सर्षपको तेल अंगमें मर्दन कीजै ॥
कहै नकुल तहँ बाँधु वायु नालागै भाई ।
होय सबल सो पुष्ट सकल बाधा मिटिजाई ॥

मोदक ।

चौपाई—अंतरदै यक दिवस खवावै । लोन टका दो तौलि मँगावै ॥
सूधरहै तनु औ सुख जानै। क्षीर पिआइ निदान वखानै ॥
दोहा—यहि प्रकार वर्षासमय, सेवहु वाजि विनोद ॥
शालहोत्र मत समुझिकै, रहै न उरमें खेद ॥

अन्य ।

चौपाई—साँठीके चावर गुण सेरै। खीर पकाय दूधसँग घेरै ॥
गोघृत शक्कर देउ मिलाई। घोड़को नित प्रात खवाई ॥
यहि विधि खीर खवावै भाई। ताजाहै सब सुख उपजाई॥

अन्य ।

दोहा—सावन भादौंमें चही, जो वर्षाऋतु जानि ॥
गोहूंको गजरा भलो, घीउ खांडमों सानि ॥

अन्यमत ।

दोहा—सावन भादौं मास दुइ, ऋत वर्षाकी जानि ॥
गोहूँ दरिया खीरकरि, देउ खाँडसों सानि ॥ १ ॥
दूधहोइ जो तीसपल, तौ दरिया पल चारि ॥
सात टका भरि खाँड पुनि, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
यासों कम दीजे नहीं, शालहोत्र मत जानि ॥
शतपल दरियाते अधिक, देत नहीं सुखदानि ॥ ३ ॥
दूध लीजिये सतगुणा, आधी शक्कर जान ॥
खीर दीजिये अश्वको, कद अरु भूँख समान ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—खीर दीजिये मोठकी, यही प्रकार बनाय ॥
फेरि मसाला दीजिये, खीर हजम ह्वैजाय ॥

खीर हजम होनेका मसाला ।

दोहा—हर्दी लीजे चारिपल, दुइपल सज्जी आनि ॥
हयको दीजे साँझको, दाना पाछे जानि ॥
चौपाई—वीसटकाभरि दरिया कीजै । यतना ताहि मसाला दीजै ॥
कम ज्यादा दरिया जो कीजै। तिहि मौताज मसाला दीजै॥

अथ शरदऋतुवर्णनम् ।

दोहा—आश्विन कातिक मासमें, कन्या तुला प्रकास ॥
शरदऋतुहि ताको कहैं, मानिलेउ विश्वास ॥
कुण्लिया—आईजानो शरदऋतु, कीजै यही विचार ।
दीजै नीको बाजिको, खीर खाँड़ आहार ॥
खीरखाँड़ आहार शरदमें भोजन दीजै ।
दूध औटिकै शीतरातिको पान करीजै ॥
और मधुर दे वाहि उदर करि सक सितलाई ।
देउ मोठि घृत पिंड रीति ऐसी चलिआई ॥

अन्य ।

दोहा—आश्विन कातिक शरद ऋतु, सोंठ मूंग अधिकात ॥
काचो दाना दीजिये, औ हरदी गुड प्रात ॥

अन्य ।

चौपाई-शरद ऋतुहि आश्विन औ कातिक। भात पकाय देइ रुजनाशक
चीनी दूध भात मलिदीजै । औ तड़ागजल पिया करीजै ॥
उठि प्रभात अरदावा दीजै । सकल दुःख अश्वाकोछीजै ॥

अन्यमत ।

दोहा—आश्विनकातिक शरदऋतु, जानिलेउ मनमाहि ॥
लालि मिठाई दीजिये, सोंट महेला माहि ॥ १ ॥
होइ मिठाई तीस पल, तौ हरदी पल चारि ॥
दीजै दुपहर मध्यमें, श्रीधर कहो बिचारि ॥ २ ॥
हर्दीकी विधि यह अहै, पयमो देउ भिजाइ ॥
भीजी राखै तिन दिन, छाहीमो सुखवाइ ॥ ३ ॥
गुड़मिलाइके दीजिये, हर्दी हयकोमीत ॥
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ यहरीत ॥ ४ ॥

अथ हेमन्तऋतु वर्णन ।

दोहा—ऋतु हेमंत वखानिये, अगहन पूसै मास ॥
वृश्चीकै धनहोतहैं, नकुल मते विश्वास ॥
छंदनराच—जबै हेमंत आवई क्रिया करै यहै भली ।
जहाँ न पवन लागई बँधाइये तुरी थली ॥
घृतै कछू पिआइये चलाइये सो मंदही ।
विचारि बाजि राखिये सो पाइये अनंदही ॥

अन्य ।

छंद—हिमऋतु जब आवै तेल पिआवै अष्टटंक परमान मनौ ।
दिन यकइस दीजै पुनि गुनि लीजै खुइ दिखवावै भाँति भनौ

दिन वीस प्रमानौ यह मत जानौ जौंके अंकुर आनि लहौ।
बाजी अनुरागै वायु नलागै शालहोत्र यह मते कहौ ॥

अन्य ।

छंद–दाना जौं दीजै यह गुणिलीज अग्निमाहँ परिपक्क करौ ।
जब जौं नहिं पावै चना सुलावै शुद्ध सकल सब भाँति करौ॥
जब चना न पावै माष मँगावै पीसि मिलावै तेलु तही ।
यहि भाँतिन पालौ बाजि बिसालौ शत्रुनघालौ जंग मही ॥

दोहा–दाना वरणे जे सबै, तिनमें मोठ विशेषि ।
भाष्यो चेतनचंद यह,शालहोत्र मत देखि ॥

छंदपद्धटिका–सब भैषज महँ कुरथीदेहु । घृत तैल वाजि कहँ पंथ एहु
करुअग्नि माहँपरिपक्क सोय।जब जौं नहोइ तबचना देय

दोहा–ताते जौं दीजै तुरी, अच्छीभांति पकाय ॥
होइ बली दूषणरहित,ऋतु हेमंत सुखपाय ॥

अन्य ।

चौपाई–अगहन पूसै हिमऋतु भाषौ । घोड़को छाहींमें राखौ ॥
उरद पकाय देइ घृतनाई । कीतौ तिलका तेल मिलाई ॥
चढै थोर अतिही सुखपावै । रोगहरै सब सोक नशावै ॥

अन्य ।

दोहा–मोठ महेला दीजिये,घीव वीसपल सानि ॥
कीतौ करुवा तैलको,आठटकाभरि आनि ॥ १ ॥
मोठमहेला माहिमो,ताहि नहारी देइ ॥
शालहोत्र मुनिके मते,यही रीति करिलेइ ॥ २ ॥

अथ शिशिरऋतु वर्णनम् ।

दोहा–शिशिर ऋतुहिमें जानिये,माघ फाल्गुन मास ॥
मकर कुंभ संक्रांतिहै,चेतनचंद प्रकाश ॥

चौपाई–माघ फाल्गुन शिशिरऋतुकही। तेल मँगाइ देनको चही॥
बसुपल यकइस दिन सुख नावै। हरियर जौं की चना खवावै॥
की हरिहरिससुरीमँगवावै। घृत अरु तेलमिठाई पावै॥
लहसुन मेथी निमक सुदीजै। होइ पुष्ट तनु रोगैछीजै॥
दोहा–माघ फाल्गुन शिशिरऋतु, घीउ महेला सान॥
मिर्च साथ सो दीजिये, होइ महाबलवान॥ १॥
शिशिर माघ फाल्गुन कहो, दाना दीजै मोठ॥
गुड़के साथ खवाइये, मिर्च पीपरी सोंठ॥ २॥

अथ बारहों महीनाके रातिब सावन भादौंवर्णनम्।

दोहा–खरे चनाके दिउल करि, तिनको लेउ पिसाइ॥
तामें नीर मिलाइकै, लीजै खूब पकाइ॥
सोरठा–अठगुन नीर मिलाइ, ताहि पकावै पहर भरि।
जब गाढ़ा ह्वैजाइ, लीजौ ताहि उतारि तब॥
दोहा–धरिराखै सो राति भरि, अठगुणदूध मिलाइ॥
ताको मीसै हाथसों, नाहिं गुलथी रहिजाइ॥
सोरठा–ताहि खवावै आनि, साठरोज नित वाजिको॥
की चालिस दिन जानि, कीतौ दीजै बीसदिन॥
दोहा–वेसन आधी खाँडलै, कीतौ गुड़हि मिलाइ॥
दीजै दुपहरके बखत, प्रथमहि नीर पिआइ॥

अन्य विधि।

दोहा–गोहूँ दरिया सेरभरि, नीर माहि पकवाइ॥
अठगुन माठा डारिकै, लीजै फेरि पकाइ॥ १॥
सोंचर लीजै दोइपल, तामें देउ मिलाइ॥
दोइ पहर दिनके चढे, हयको देइ खवाइ॥ २॥
दीजै चालिस रोज तक, बीसरोजकी मानि॥
करत मिठाईते अधिक, तौन फायदा जानि॥ ३॥

अथ आश्विनकार्तिक वर्णन ।

दोहा–सोंठपत्र फालिका सहित, डारै ताहि खँदाइ ॥
अश्व अगारी माहिं सो, दीजै ताहि धराइ ॥ १ ॥
थोरी थोरी रोजप्रति, ताहि बढ़ावत जाइ ॥
मंद मंदकरि घासको, दीजै सबै छड़ाइ ॥ २ ॥
तेल कटुकलै आठपल, दुइपल लोन मिलाइ ॥
कद अरु बैस विचारिकै, दीजै रोज खवाइ ॥ ३ ॥

अथ अगहन पौष माघ फाल्गुन भोजनविधि ।

दोहा–जानहुँ शिशिर हेमंतमें, बहुविधि भोजन आहि ॥
जासों मोटा होइ हय, औ पौरुष सरसाहि ॥

अथ चैत वैशाख भोजनविधि ।

दोहा–मधु माधव महिना विषे, दही तीसपल लाइ ॥
बाँधै कपरा माहिमों, जब पानी चुइजाइ ॥ १ ॥
सहत मिलावै चारि पल, हयको देउ खवाइ ॥
की सेतुआको दीजिये, खाँड सुतासु मिलाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–खबहा कुम्हडा छोलिकै, घीमें ताहि भुँजाइ ॥
गुड़में ताको पागिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कुम्हड़ा दीजै तीस दिन, शालहोत्र मत जानि ॥
सेतुवा दीजै जेठमों, यहौ मतो उर आनि ॥ २ ॥

अथ मसाला ।

दोहा–चारि टकाभरि तिर्फला, तासम खांड़ मिलाइ ॥
दानादैकै साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

अथ ज्येष्ठ आषाढ़ भोजनविधि ।

दोहा–खरी लीजिये बीसपल, सो अरसीकी होइ ॥
दूनादुध मिलाइकै, आनि भिजावै सोइ ॥ १ ॥

सोंठ सहेला साथसैं, हयको देउ खवाइ ॥
दशदिन दीजै याहि विधि, दशपल और बढ़ाइ ॥ २ ॥
दोइ मास तक दीजिये, खरी दूध मिलवाइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कह्यो, तुरी नीक ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

मसाला।

दोहा—कचरी लीजै दोइपल, पल भरि सोंचर आनि ॥
तीनि टकाभरि तिरफला, यवके आटा सानि ॥ १ ॥
डेढपहर दिनके चढ़े, हयको देउ खवाइ ॥
दोइ घरी कैजा करै, पाछे नीर पिआइ ॥ २ ॥

अथ बारहोंमासके उपचार चैत्र वैशाख वर्णनम्।

दोहा—औंरा हर्र बहेर पुनि, सैंधव लोन मँगाइ ॥
एक एक पल लायकै, चारौ लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
कोबरकोरसु डारिकै, ताहि खवावै आनि ॥
नाशै आलस बलबढै, मधु माधवमासानि ॥ २ ॥
बाँधो राखै बाहिरै, शीतल छाहीं माहि ॥
औषध दीजै प्रातही, मंदअग्नि मिटि जाहि ॥ ३ ॥
सोरठा—धूपहोइ जब आनि, भीतर बाँधै थानपर ॥
शालहोत्र मत जानि, कविश्रीधर वर्णन कियो ॥

अथ ज्येष्ठ आषाढ वर्णनम्।

दोहा—आठ टकाभरि तैल घृत, दोऊ लेउ समान ॥
तामें डारौ अर्कको, दूध टका परमान ॥ १ ॥
एक एक दिन बीचदै, ताहि खवावत जाहि ॥
हरीदूब अरु दीजिये, मास अषाढहिमाहि ॥ २ ॥

अथ सावन वर्णनम्।

दोहा—लहसुन सोंठि जवाइनी, आठ आठ पलआनि ॥
दोइ सेर गुरमाहिमो, इनको लीजै सानि ॥ १ ॥

दीजै पिंडा बाँधिकै, तीनिरोज लग नित्त ॥
सावन महिना माहिमो, हरीघासदे मित्त ॥ २ ॥

अथ भादौं वर्णनम् ।

दोहा–दूध विषे जल डारिकै, चौथे अंश प्रमानि ॥
प्यावै भादौं मासभरि, रोग नाश यह जानि ॥

अथ आश्विन वर्णनम् ।

दोहा–दूध लीजिये साठि पल, करै अधाउट ताहि ॥
ताहि पिआवै वाजिको, आश्विन भरि निर्बाहि ॥ १ ॥
लेउ बकैनाफलनको, पुनि रनिके फल लाइ ॥
दोनौं लीजै पाँचपल, रोज खवावत जाइ ॥ २ ॥
याविधि करै कुवाँरभरि, कवि श्रीधर मतिधीर ॥
आलस नाश बलबढै, मोटाहोइ शरीर ॥ ३ ॥

अथ कार्तिक वर्णन ।

दोहा–मोठपत्र फलिका सहित, हयको दीजै नित्त ॥
नीर पिआवै तालको, थोरा फेरै मित्त ॥ १ ॥
देउ मसाला बाजिको,कहो जु आश्विन माहि॥
मोटा होत शरीरहै, अरु आलस नशिजाहि ॥ २ ॥

अथ अगहन पौष वर्णनम् ।

दोहा–मार्गशीर्ष अरु पौषमें, बाँधै घामें माहि ॥
मोठ चना अरु उर्दको, देउ महेला ताहि ॥ १ ॥
देउ मसाला भूँखको, फेरत नितप्रति जाहि ॥
तौ बलबाढै बाजिको, आलस तासु नशाइ ॥ २ ॥

अथ माघ फाल्गुन वर्णनम् ।

दोहा–माघफाल्गुन मासमें, मोठ महेला माहि ॥
तैल मिलावै पांच पल, रोज खवावत जाहि ॥

अथ तीनोंकाल वर्णनम् ।

दोहा—त्रिफला दीजै खाँडसों, ग्रीषम और वसंत ॥
रोगहरै तनु बल बढै, जानिलेउ बुधिवंत ॥

अन्य ।

चौपाई—सहत पंद्रह टंक मँगावै । ग्यारहटंक कूट लैआवै ॥
बच दश टंक लेउ मँगवाई । पीसि छानि मैदा करवाई ॥
जौंके आटा साथ खवावै । अश्वाके तनु सुख उपजावै ॥

अथ वर्षाकाल ।

दोहा—हरदी वर्षा शरदमें, घोडे दीजै नित्त ॥
नित्तनेवाला दीजिये, सुखीरहै तनु चित्त ॥

चौपाई—वर्षाजल सों तुरँग नभीजै । धुवाँ बयारि धूरि धोईजै ॥
हरियरि दूब कूपजल पीजै । दाना नमक मिलै तिहि दीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—घुडबच पंद्रहटंक मँगावै । लोनके पानी साथ पिसावै ॥
आटामें पिंडा करि दीजै । वात पित्त कफ किर्म हरीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—चूना और कपूर मँगावै । टका टका भरि दोनों लावै ॥
कुँवारिकै पानीमें दीजै । सातरोजमें किर्मि हरीजै ॥

शीतकाल ।

दोहा—त्रिकुटा दीजै गुड़ सहित,हेम शिशिरऋतु माह ॥
शीतकाल व्यापै नहीं, कहत कविनके नाह ॥

चौपाई—लहसुन मिर्चा अरुणमँगावै । टका टकाभरि नित्त खवावै ॥
दानाखाय होय तब दीजै । ताके पाछे कैजा कीजै ॥

अथ आह्निक वर्णनम् ।

दोहा—रातिरहै घरि चारि जब, देउ सईस जगाइ ॥
होइ सईस नपाक जो, देउ ताहि अन्हवाइ ॥

चौपाई–फेरि सईस पास हय आवै । लीदि उठावै थान बनावै ॥
फिरि दानाको देइ खवाई । मूठिक दीजै घास हलाई ॥

दोहा–घासखाइ दुइचारि मुँह, कैजा देइ कराइ ॥
करै खरहरा चारिघरि, सो हयको सुखदाइ ॥

सोरठा–यक उरमाल भिजाइ,पोंछै हयकी आंखिमहँ ॥
अंडलेउ पुछवाइ, पाछे दोनौं कुक्ष फिरि ॥

दोहा–भयो चहै असवार जो, हयको लेउ कसाइ ॥
दोइ घरीलौं फेरिकै, फिरि टहलावै धाइ ॥ १ ॥
फेरि खरहरा कीजिये, दीजै घास हलाइ ॥
खाइरहै सुखसों तुरी, शालहोत्र मत आइ ॥ २ ॥
डेढ़पहर दिनके चढे, देउ मसाला ताहि ॥
दोइघरी कैजा करै, फिरि जल दीजै वाहि ॥ ३ ॥

सोरठा--पावत रातिब होइ, जलके पाछे दीजिये ॥
नाहिन दीजै सोइ, पावत दाना होइ सो ॥ १ ॥
थोरी घास खवाइ, दोइघरी कैजाकरै ॥
दीजै घास हलाइ, खातरहै सुख पूर्वक ॥ २ ॥

दोहा--दानादेकै साँझको, थोरी घास खवाइ ॥
फेरि मलै घरि चारिलौं, कैजाको करवाइ ॥

सोरठा--गर्मीकी ऋतु माहि, पहर एक दिनके रहे ॥
फिरि जल दीजै ताहि, शालहोत्र मुनि योंकहै ॥

दोहा--एक बखत जल दीजिये, दोइ पहर दिन माहि ॥
जाड़ेके महिना विषे, रहै बढावत ताहि ॥

सोरठा–मलै वाजिको आनि, पहर एक दिन जब चढै ॥
चारिघरीलौं जानि, फेरि बढावै बाजिको ॥

दोहा–फिरि दानाको दीजिये, बखत साँझको पाइ ॥
रहै वढ़ाये ताहिको, कैजादेउ कराइ ॥ १ ॥
भयो चहै असवार जो, गर्मीऋतुकी माहि ॥
फेरै ठंढे वखतसें, शालहोत्र मत आहि ॥ २ ॥
सोरठा–जाडेकी ऋतु माहि, चारिघरी दिनके रहे ॥
तब सो फेरै ताहि, साँझलगे यह जानिये ॥
दोहा–नहींहोइ असवार जो, सब महिननमों जानि ॥
वागडोरि पर खोलिकै, देखै बाजी आनि ॥
सोरठा–सब महिननमो जानि, दोइघरी दिनके रहे ॥
देखै बाजी आनि, बागडोरि पर खोलिकै ॥ १ ॥
दानादीजै नाइ, होइ अनमनो बाजि जो ॥
जासों कसरि नशाइ, देउ मसाला भूँखको ॥ २ ॥
दोहा–सबविधि बाजी सुख लहै, ताकी या विधि आहि ॥
देउ मसाला भूँखको, गयो पहर निशि माहि ॥ १ ॥
देइमसाला नितप्रति, जाडेकी ऋतु जानि ॥
एक रोजको बीचदै, गर्मीकी ऋतुमानि ॥ २ ॥
घास अगारी माहिसें, दीजै ताको डारि ॥
खाइ चहै तब घासको, सोइ जाइ रुजहारि ॥ ३ ॥

अथ दाना वर्णनम् ।

दोहा–तासों जौं जैसे बनै, दीजै सब ऋतुमाह ॥
सूखा कै गोला भुँजै, होत बाजि चितचाह ॥
चौपाई–जाको बाजि खाय जौं सदा । विन अहार मासे रह लदा ॥
शूल नहोइ खांसनहिं आवै । मलबेकार रक्त हरि जावै ॥
सोरठा–मिलै न जो जिहि ठाँव, चनादेय तत्कालही ॥
जो न चनाको नाँउ, दीजै मोठ समेत महि ॥

अन्य ।

सोरठा—मूंग देइ अभिराम, मोठ मिलै ना जाहिको ॥
होइ सकल बलधाम, तैल सहित दीजै तुरी ॥ १ ॥
वाजी दाना हेत, और अन्न दीजै नहीं ॥
भाष्यो ग्रंथ निकेत, दिये दोष बाढ़ै सदा ॥ २ ॥

अन्यमत ।

दोहा—उत्तम दाना मोंठको, मध्यम चनां बखानि ॥
साधारण जौं जानिये, कविश्रीधर सुखदानि ॥ १ ॥
मोठमहेला दीजिये, जाड़ेकी ऋतु माहि ॥
जौं अरु चना भुँजाइकै, करि अरदावा ताहि ॥ २ ॥
सोरठा—गर्मीकी ऋतु माहि, अरदावाको दीजिये ॥
चना दराय भिजाइ, सो दीजै वरषातमों ॥

सूखे चना देनेकी विधि ।

सोरठा—लीजै चना मँगाइ, मटर कंकरी बीनिकै ॥
हयको देउ खवाइ, याविधिदीजै शालभारि ॥

अथ देश विभाग दानाविधि ।

दोहा—जौको दाना दीजिये, सिंध नदीके पार ॥
लहिला यमुना पारमें, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
शाहजहानाबादके, चारौं तरफ बखानि ॥
मोठमहेला दीजिये, कवि श्रीधर सुखदानि ॥ २ ॥
मध्यदेश पूरुव लगे, वाजि मिजाजहि जानि ॥
माफिक जौन मिजाजके, दाना दीजै आनि ॥ ३ ॥
सोरठा—पित्तप्रकृति जो होइ, यवको दाना दीजिये ॥
वातप्रकृति हयसोइ, देउ महेला मोठको ॥
दोहा—कफको होइ मिजाय ज्यहि, चनादेउ तिहिआनि ॥
रक्तमिजाजहि माहिमें, अरदावाको जानि ॥ १ ॥

टका तीस परमानसो, कस ज्यादा नहिं देइ ॥
टका तीनिसैरे अधिक, दाना कबहुँ नलेइ ॥ २ ॥
यहिविधि दाना दीजिये, कद अरु भूँख विचारि ॥
जासों बाजी सुखलहै, सो लीजै निरधारि ॥ ३ ॥
शारँगधर अरु नकुलमत, शालहोत्रको पंथ ॥
सोविचारि अनुसार मत, भाषा कीन्हों ग्रंथ ॥ ४ ॥

अथ चनादेनेकी विधि ।

दोहा—चनापत्र फलिका सहित, बिरवा लेउ मँगाइ ॥
तिनको जलमें धोइकै, दीजै धूप धराइ ॥ १ ॥
जबै जाँइ एलाइ वै, लीजै तबै खँदाय ॥
आठ टकाभरि तेलको, जलमो लेउ मिलाय ॥ २ ॥
लीजै सोंचरलोनको, चारि टकाभरि जानि ॥
ताहि मिलावै तैलमें, शालहोत्र मत मानि ॥ ३ ॥
तामें बिरवा सौंदिकै, हयको देउ धराइ ॥
खातरहै सो रातिदिन, दाना देउ छँड़ाइ ॥ ४ ॥
मंदमंद करि घासको, हयको देउ छँड़ाइ ॥
सौंदे बिरवा खाइनहिं, ताकी यहविधि आइ ॥ ५ ॥
सोरठा—जब बिरवा एलाँइ, हयको दीजै काटिकै ॥
तैल लोनको लाइ, दीजै बेसन सानिकै ॥ ६ ॥
दोहा—खुइदि माहिं जस गुणअहै, तस याको दरशाइ ॥
दीजै चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वैजाइ ॥

अथ खुइदि देनेकी विधि ।

सोरठा—खुइदि हरी जब होइ, गांठि परन अरु लागई ॥
हयको दीजै सोइ, अब देनेकी विधि कहौं ॥

दोहा—बाँधै ऐसे थान हरि, जहाँ न लागै बाइ ॥
और अँधेरा कीजिये, लघु दरवाज रखाइ ॥ १ ॥
दीजै चालिसरोज नित,हरी खुइदिको आनि॥
कीतो दीजै तीसदिन, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥

अथ खुइदिके बाद यह मसाला देइ ।

दोहा—लालि मिठाई बीसपल, यतनी अदरखजानि ॥
लहसुन लीजै ताहिसम, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
ताके हींसा तीनकरि, प्रातहि एक खवाय ॥
चारिघरी कैजा करै, जानिलेउ मनलाय ॥ २ ॥
डेढ़ पहर दिनके रहे, दूसर हींसा देइ ॥
एक घरी कैजा करै, बाजी रुज हरिलेइ ॥ ३ ॥
साँझ समयमें दीजिये, तीसर हींसा ताहि ॥
चारि घरी कैजा करै, जानिलेउ मन माहि ॥ ४ ॥
हर्दी लीजै चारिपल, दुइपल सज्जी लाइ ॥
पहरएक रजनी गये, हयको देउ खवाइ ॥ ५ ॥
यहिविधि दीजै खुइदिको, शालहोत्र मत जानि ॥
औरौ भोजन विधि कहौं, सो अब लीजै मानि ॥ ६ ॥

अथ खिचरी देनेकी विधि ।

दोहा—डेढ़पाव चावर सहित, दालि अढाई पाउ ॥
दालिहोइसो मूँगकी, दुइपल अदरखलाउ ॥ १ ॥
धोवै ताको नीरमें, फिरि भूँनै घी माहि ॥
ताहि मींजिये हाथसों, एक माहि मिलिजाहि ॥ २ ॥
हर्दी लीजै चारि पल, दुइपल सज्जी लाइ ॥
खिचरी माहि मिलाइकै, पींड़ा लेउ बनाइ ॥ ३ ॥

बासर बीते पहर दुइ, हयको देउ खवाइ ॥
दीजै चालिसरोजलौं, तुरी मोट ह्वैजाइ ॥ ४ ॥

अथ मोठ की खीर।

छंद–पकवाय सहेला मोठ क्यार। लीजौ उतारि तबदूध डार ॥
सीठा मिलाय तब आँच राखि।लखिपको खूब धरु भूमि भाषि
दानाबदले याही खवाइ। जो थोरहोय नहिं जल मिलाइ॥
नहिं वजन तासु कीन्हों प्रमान।मौका जितनो तित करु विधान॥

अथ बछेराकी तैयारीकी विधि।

छंदपद्धरी–अतिसेर दूध औटै चढ़ाय। गोहूँदरिया यकसेर नाय ॥
जब पकै खाँड़ यकसेर घोलि।पानी पिआय हय वदन मेलि
दरिमिर्च चारि तोले सुजान।यकपाव मेलु तामें पिसान ॥
याको खवाय तबदेइ नीर। दीजै यहिविधि नहिं भलो खीर

अन्य।

छंदपद्धरी–हरदी हांडीमें धरु कुटाय।तिहिको प्रभातले आध पाय ॥
पयसें भिगोय वसु याम राषि।यहि खाय नहारी तबहिं भाषि
यक पाव करै कम कम बढ़ाय।दिन चालिसलौंयहतुरँगखाय
अति करत आसुही देह पुष्ट। जो होय बुरो लखि परत सुष्ट ॥

अन्य।

छंदपद्धरी–यक सेर चना बेसन भुँजाय।तिहि सानि चारि रोटी पकाय
यकसेर दूध अरु खाँड़लाय। दै सानि दिवस चालिश दिढ़ाय ॥
पानी पिआय फिरि देउ याहि। अति निबल अश्व सो सबल ताहि

अन्य।

छंदपद्धरी–लखिहरित बालि जौंकी मँगाय।जित अश्वखायसोदेखवाय
मुख रुकै तबहिं गलियाइ देय। यक पहर बाद गुड़ सेर लेय ॥
दै कबहुँ पाव अदरख मिलाय। यकपाव कबहुँ लहसुन खवाय ॥

यहि रीति करै तवलौं सुजान । जबलौंरहि हरियर जौ प्रमान ॥
जौं भूँजि चहै दीजै सुजान । करि आधसेर घीमें मिलान ॥
चालीसरोज दीजै बनाय । दाना तबलौं नहिं तिहिखवाय ॥
राखैहय जहँ अतिही अँधेर । बारै चिराग निशिहू सबेर ॥
जो करि पेशाव अरुलीदि लेइ । हयके तनुमें सो लेपि देइ ॥
हत्थी खरहर कुछ नहिं मलाहि । दिन चालिसलौं याहीनिबाहि ॥
जब दिवस पूर खोलै तुरंग । तब देखै तैयारीक ढंग ॥

अथ तैयारीकी शिशुचासनी ।

दोहा—जौंपिसानकी रोटिको, अतिमहीन करवाय ॥
सर्षपतैलहि सानिकै, शिशुको देइ खवाय ॥

अन्य ।

चौपाई—अजवायनि अजमोद मँगावै । खुरासानि अजवायनि लावै ॥
लहसुन साँभरिसम करिलीजै । जौंपिसानमें गोला कीजै ॥
साँझ सकारे गोली दीजै । शिशुको रोग सकल हरिलीजै ॥

अन्य ।

सोरठा—शिशुतुरंगको देय, हालिम टंक नखारलै ॥
अतिमोटो सो होय, ऊपर दूध पियाइए ॥

अन्य ।

चौपाई—कानिक माँड़िकै घोरै पानी । झीने कपरा लीजो छानी ॥
ताहि औटिकै लाटी कीजै । प्रातकालघोड़ेशिशु दीजै ॥

अन्य ।

सोरठा—हरदी गोपय संग, वाजी बालक दीजिये ॥
गात बढ़ै सब अंग, वर्ष एकलगु जो करै ॥

अन्य ।

चौपाई–अजवाइनि दूनौ मँगवावै । हरदी हरैं जंगी लावै ॥
साँभरिसिलै सुचूरणकरै । सकल अजीरणशिशुको हरै ॥

अन्य ।

चौपाई–हालिम हरदी सज्जी लेहू । मिर्च भरंगी मेथी देहू ॥
पोस्तादाना सरसौं राई । कंचनरिपुकी खीलकराई ॥
कुंड कुंडभरि यहि सब लेहू । पल अफीम तिहिमाहीं देहू ॥
चूरणकरि सब एकम लीजै । टंक टंक नित प्राते दीजै ॥
वायुअजीरण खाते हरै । भूँखचौगुनी सैंधव करै ॥

अन्य ।

चौपाई–राई साँभरि भाँग मँगावै । अजवाइनि कालेश्वर लावै ॥
गऊमूत्रसों भिजै सुखावै । दुइटंकै परभात खवावै ॥
भूँख चौगुनी लागै ताही । वात रोगको दूरि कराही ॥

अन्य ।

चौपाई–सुरभीदूध सेर दश लीजै । दुइटंकै हालिम तिहि दीजै ॥
खीरकरौ गुड़ सैंधव खाता । अश्वाबहुत पुष्ट ह्वैजाता ॥

अथ दुर्बल घोड़ेकी दवा ।

दोहा–आधपाव चँदसुर मिलै, दूध सेरभरि माहि ॥
औटि तुरँगको दीजिये, मांस बढै तनुचाहि ॥ १ ॥
कृशतनु अबल तुरंगको, पावसमें घृत देइ ॥
अनलकोप ताको करै, रोगहरै सुखहोइ ॥ २ ॥

अथ तैयारीकी विधि ।

चौपाई–चावर चौदह पाव मँगावै । सेर पाँच गोदूधहि लावै ॥
डेढ़पाव शक्कर बुधलीजै । भात पकाय एक करि दीजै ॥
यहिविधि यकइस रोज खवावै । दुर्बल बहु तनुमांस बढ़ावै ॥

अन्य ।

चौपाई–सेरपाँच गोदूध औटिकै । निशिमें देय दृढ़ै तनु अतिकै

अन्य ।

चौपाई–पकवै मोथी तिलके तेलै । देय तुरँग दुइमास महेलै ॥
असवारी नाहिं तापर करै । अतिहि मोटह्वै बलको धरै ॥

अन्य ।

चौपाई–अरदावा तिल तेल मिलावै । यकइस दिन लगु तुरै खवावै ॥
की अरदावामें घृत दीजै । बाँधि मासभरि बहु सुख लीजै ॥

अन्य ।

चौपाई–कारे उरद कि मसुरी मेलै । मेथी चुरै मेलि तिल तेलै ॥
यही महेला अश्व खवावै । मांस बढै सबरोग नशावै ॥

अन्य ।

चौपाई–मासएक जौं खुइदि खवावै । चना हरित की मसुरी पावै ॥
अतिहि मोटहय बलको धारै । शालहोत्र मत यहै विचारै ॥

अन्य ।

चौपाई–जौकी दरिया खीर खवावै । याहूसों बल बहुत बढावै ॥

अन्य ।

चौपाई–बच्चाहिकच्चा क्षीर पियावै । सैंधवमेलै बहु सुखपावै ॥
युवा अश्वको औटि खवावै । अति बल रोस दिनौदिन आवै ॥

अथ जौंकी दरिया देनेकी विधि ।

दोहा–जौंकी बाली सेर दश, पक्कीतौल मँगाइ ॥
तिनको सींकुर झरसिकै, लीजै फेरि कुटाइ ॥ १ ॥
लालमिठाई सेरु भरि, तामें देउ मिलाइ ॥
पै भूसा नाहिं काढ़िये, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

थाको दीजै साँझको, दाना दीजै नाहि ॥
बाजी मोटा होइ बहु, औ पौरुष सरसाहि ॥ ३ ॥

अथ हर्दी देनेकी विधि ।

दोहा–हर्दी लीजै आठपल, ताको लेउ पिसाइ ॥
दूध अध उटा वीसपल, तामें देउ भिजाइ ॥ १ ॥
चारिघरी भीजतिरहै, ताकी यह विधि आइ ॥
सोठ महेला साथसो, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज लगु, यत्ती यत्ती लाइ ॥
बहुविधि भोजन वाजिके, कहँलौं वरणे जाँइ ॥ ३ ॥
सोरठा–जौने भोजन माहि, वेला ताकी नाहिं कही ॥
सो दुपहरके माहि, पानी दैकै दीजिये ॥ १ ॥
जब भोजनको देइ, होइनहीं असवार तब ॥
जानिमतो यह लेइ, पैखाली नित फेरिये ॥ २ ॥
दोहा–जो असवार भयो चहै, तौ दौरावै नाहि ॥
और कुदावै नाहिनै, संदसंद लै जाहि ॥ १ ॥
कही जौन मौताजहै, तामें लेउ विचारि ॥
कम ज्यादा करिदीजिये, कद अरु सूख निहारि ॥ २ ॥

अथ महेलाकी विधि ।

छंदपद्धरी–जो चहै महेला गुणद कीन । मेथी मिलाय पकवै प्रवीन ॥
खावैतुरंग बहु गुण बढाय । हय उदर व्याधि सगरीनशाय ॥

अन्य ।

छंदपद्धरी–कच्चादाना जो तुरँग खाय । ताको तर करिकै तिहि खवाय ॥
यह हजम करै दाना जु खाय । किंचितहि मसालातुरँगपाय ॥

कीसौंफलेय दशसेर आनि।आधी भुजाय दोउ कूटिधानि॥
दाना खवायदे आध पाय।अतिही सुख दायक तुरँग खाय॥

अथ हेलुवा बनानेकी विधि ।

छंदपद्धरी–ले सेर अढाई घृत मँगाय । उतनो प्रमाण हरदी पिसाय॥
अदरख पीसौ उतनै सुजान । मेथीलै पीसै सो प्रमान ॥
दीजै कराहमें घृत चढाय । दे छौंडि खूब हरदी पकाय ॥
तब अदरख औ मेथीको डाल।सब भूँजि खूब कीजो सुलाल
देपांचसेर मीठा मिलाय । दशसेर दूध तिनमें रलाय ॥
जब ह्वैजावै हलुआ सुढार । तब लेउ आगिपर सो उतार ॥
दे पावसेर हय जलपिआय।यकसेर तलक क्रम क्रम बढ़ाय॥
अकसीर समुझुहकमें तुरंग । जाड़ेतक करि दीजो हिरंग ॥

अथ मूँगका हलुआदेनेकी विधि ।

दोहा–अदरख हर्दी खांड़ घिउ, औरौ मूँग पिसान ॥
एती चीजै लेउ सब, तिनको भाग समान ॥ १ ॥
घीसों चौथे भाग कम, लेउ पिआजु मँगाइ ॥
घीमें भूँजे ताहिको, डारै फेरि कढ़ाइ ॥ २ ॥
हर्दी आदि पिसानको, घीमेंलेउ भुँजाइ ॥
पृथक पृथक ये भूँजिये, मंद आँच करवाइ ॥ ३ ॥
खाँड़माहि जलडारिकै, लेउ जलाउ बनाइ ॥
हर्दी आदि पिसानको, तामें देउ मिलाइ ॥ ४ ॥
दीजै चालिस रोज लौं, ताकी यह विधि आहि ॥
आठ आठ पलचारि दिन, फेरि बढ़ावै ताहि ॥ ५ ॥

अठयें दिनते तीसपल, रोज खवावत जाइ ॥
युवा वाजिको कोकहै, बूढ़ तरुण ह्वैजाइ ॥ ६ ॥

अथ सामान्य मोटा करेकी विधि ।

दोहा–स्याहमिर्च पीपरि सहित, पिपरामूल बखानि ॥
लीजै राई सोंठि पुनि, वीस वीस पल जानि ॥
चौपाई--मेथी हालिम हर्दी लावै । तीस तीस पल सो तौलावै ॥
तीसटका भरि जो घृत लावै । ताते दूनी खाँड़ मिलावै ॥
दोहा–खोवा लीजै गाइको, पाँचसेर यह जानि ॥
तौल पोखता जानियो, श्रीधर कहो बखानि॥ १ ॥
सबको भूँजै घीउमो एक माहिं मिलवाइ ॥
शीतल करिकै ताहिको, पिंडालेउ बनाइ ॥ २ ॥
टका अठारह तौलिकै, रोज खवावत जाइ ॥
जाडेके महिना विषे, तुरी मोट ह्वैजाइ ॥ ३ ॥
पानीदीजै बाजिको, दोइ पहर दिन माहि ॥
दीजै चालिस रोज लगु, बूढ युवा ह्वैजाहि ॥ ४ ॥

अथ चारौ रोगन देनेकी विधि ।

दोहा--जर्द स्याह रोगन दुवौ, शूकर चर्बी आनि ॥
तिनको कीजै भाग सम, औरौ साबुन जानि ॥

बनानेकी विधि ।

दोहा–घियके चौथे भाग करि, हर्दी लेउ मँगाइ ॥
घीमें ताको भूँजिये, राखै फेरि धराइ ॥
सोरठा--घी बाकी रहिजाइ,डारि कराही माहि सो ॥
तातर आगि बराइ, तीनौं रोगन मिलैकरि ॥
दोहा--चारौ रोगन पघिलिकै, एक रूप ह्वैजाइ ॥
हर्दी भूँजी जो धरी, तामें देउ मिलाइ ॥

सोरठा—लीजे फेरि उतारि, जब ठंढो ह्वैजाइ वह ॥
पिंडा करौ सुधारि, दश दश पलके तौलिकै ॥
दोहा—एक एक पिंडा बाजिको, दीजै रोज खवाइ ॥
चालिस दिनमो बलबढ़ै, तुरी मोट ह्वैजाइ ॥

अथ पिंडादिवर्णनम् ।

दोहा—कहत यथामतिसों अहौं, शालहोत्र मत जानि ॥
पिंडादिक जे बाजिके, करैं रोगकी हानि ॥ १ ॥
मधुमाषी मोथा सहित, हरैं सैंधव आनि ॥
पिंडा बाँधौ भाग सम, गऊमूत्रमो सानि ॥ २ ॥
हयको दीजै पाँच दिन, मंदअग्नि मिटिजाइ ॥
भोजन अति रुचिसों करै, दिनदिन तुरी तजाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—लटजीरा तेंदूसहित, पुहकरमूल तमाल ॥
लोध दुग्ध युत पिंडकारि, वातमिटै ततकाल ॥

अन्य ।

दोहा—धूप मूँगके जूसमें, बचको लेउ मिलाइ ॥
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—मिश्री दूध कपूर पुनि, एलापत्रज लाइ ॥
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटिजाइ ॥ १ ॥
ग्रीषमऋतुमें जानिये, कोपापित्तकर होइ ॥
तब यह औषध दीजिये, चौरेहनी सों मोय ॥ २ ॥
लीजै लहसुन तैल पुनि, छाग माँसु मिलवाइ ॥
ताहि खवावै बाजिको, वातापित्त मिटिजाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—दूध खाँड़ अरु महिषि घृत, ताहि कपूर मिलाइ ॥
सो लै दीजै बाजिको, कफको देत नशाइ ॥

अन्य ।

दोहा—औंरा गौरोचन सहित, बीज बरेरालाइ ॥
सो लै दीजै बाजिको, गुल्म हृदय मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—सहदेई बच कूट पुनि, अरु इंद्रायनि आनि ॥
अतिहि श्वासको हरतिहै, वरुण सहित सो जानि ॥ १ ॥
सज्जी लोन प्रियंगु पुनि, औरं बहेरा लाइ ॥
यह घोड़ेको दीजिये, तौ खांसी मिटिजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—हर्दी सोंचरु पीपरी, अरु इंद्रायनिलाइ ॥
सो घोड़ेको दीजिये, मूतकर्कमिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा—जेठीमधु पीपरि सहित, देवदारुको जानि ॥
गंधक बहुरि हरीतकी, भाग समान बखानि ॥ १ ॥
गोली ताकी बाँधिकै, हरिको देउ खवाइ ॥
लीदिकरै जो रक्तयुत, सो पीड़ा मिटिजाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई—दूनी हर्दी गंधक लाई । करुयेतेलहि पिंड बनाई ॥
सो घोड़ेको देउ खवाई । रक्तविकार तुरत मिटिजाई ॥

अन्य ।

दोहा—वटकालिका अरु नीबलै, अरसीपत्र मिलाइ ॥
घोड़ेको दीजिये, अतीसार मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा–जो घोड़ेकी देहमें, कृमि अव्रण ह्वैजाइ ॥
थूहर रंडापात लै, ताको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कद अरु मोसम देखिकै, बहुरि मिजाज विचारि॥
पिंडादिक तब दीजिये, श्रीधर कवि निरधारि ॥ २ ॥

अथ तुरंग तेज करैकी विधि।

दोहा–पीपरि सैंधव सोंठि पुनि, सरसों तेल गिलोय ॥
आँविलबेत पुनि लीजिये, समकरि सबै मिलेय ॥ १ ॥
औषध यकइस दिनलगे, रोज पाँच पल देइ ॥
नाशै आलस बलबढ़ै, जल्द तुरत करिलेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–त्रिफला कुटकी चीतलै, मोथा वायभरंग ॥
औषध दीजै पाँचपल, खरी मद्यके संग ॥

अन्य ।

दोहा–रहसनि पीपरि मधुसहित,केसरि श्रीफल आनि ॥
औरौ लीजै तालफल, ताकी गूदी जानि ॥ १ ॥
औषध भाग समानसों , चारिटका भरि लेइ ॥
दीजै प्रातहि सात दिन, अतिचंचल करिदेइ ॥ २॥

अथ बहुत कोश चलानेकी विधि।

चौपाई–कालासाँ पुबड़ा लै आवै । तनु नहिं फूटै रुधिर न आवै ॥
ताके मुहँमें चना भरावै । गंती यकशत कम न करावै ॥
माटीके घट भीतर धरिकै । मोहराबंद बहुत विधि करिकै ॥
भूमिखोदि यक गड़हा करै । ताके भीतर घटको धरै ॥
आसपास बहु लीदि तुपावै। चालिस दिन यहिभाँति रखावै
ताके पीछे घट खुलवाई । सर्पके मुँहके चना चुवाई ॥

घामें सुखेराखु धरिभाई । तीनिचनाका रोज खवाई ॥
शीतकालमें ताहि खवावै । तुरँग बहुत सो वृद्धि करावै ॥
बहुत दौर दमकस परमानैं । दक्षिणके उस्ताद बखानै ॥
सत्तरि साठिकोशलगु दौरे । दवा प्रमाण कीन शिरमौरै ॥
ऐसी दवा और नहिं कोई । की सत्तू दाना सँग देई ॥

अथ बरजतिया सर्प खवानेके गुण ।

दोहा–ज्यों सुमेरु गिरि अचल है, औ शस्त्रनमें बान ॥
त्यौं वाजीको सर्पहै, सब औषध परमान ॥ १ ॥
बरजतिया अहिमारिकै, घुडशालामें राषि ॥
देवताहि ऋतु शिशिरमें,नकुलमते यह भाषि ॥ २ ॥
चौपाई–ज्योंरविकिरण तिमिर हरिलेई।त्यों सब सुख वाजीको देइ॥
शिशिर खवावै सुनु बुधवंता । करत सकलरोगनको अंता॥

अथ मिठाई खवानेके गुण ।

दोहा–मीठामें गुण तीनहैं, शिता खांड गुड माहि ॥
अतिगुणदायक सोखकृत, वदी करै गुड़ चाहि ॥

अन्य ।

दोहा–तिललै खूब कुटाइये, गुडसम देउ मिलाइ ॥
पिंड बनाइक दीजिये, सेर नित्त यहि भाय ॥
चौपाई–माघमास घोडेको दीजे । अति बलकरै रोगको छीजे ॥

अथ तिलदेनेकी विधि ।

दोहा–एक सैकरा साठि पल, कारे तिल मँगवाइ ॥
तासम अरसी लीजिये , दोऊ लेउ भुँजाइ ॥
सोरठा–तिलको लेउ कुटाइ, हर्दीको गादा बहुरि ॥
अदरख लेउ मँगाइ, चारौ चीजैं भागसम ॥

दोहा-चारौके सम लाल गुड़, तामें देउ मिलाइ ॥
चालिस पिंडा कीजिये, रोज खवावत जाइ ॥ १ ॥
दीजै चालिस रोज लगु, बाजी मोटा होइ ॥
जाडेकी ऋतु देखिकै, इयको दीजै सोइ ॥ २ ॥

अथ जलेबी देनेकी विधि।

दोहा-सेरएक सो दीजिये, पाँचसेर लगु जानि ॥
देउ जलेबी वाजिको, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
स्याहमिर्च लै दोइ पल, अरु अदरख पल चारि ॥
इयको दीजै आनिकरि, लोन दोइ पल डारि ॥ २ ॥

अथ मेषको सींग देनेकी विधि ।

दोहा-सींग मेषको लीजिये, अग्नि माहिं भुजवाइ ॥
जरे सींगको लीजिये, खूब मिहीं कुटवाइ ॥ १ ॥
माटीकी हाँडी विषे, ताको देउ धराय ॥
तामें सहत मिलाइकै, कवि श्रीधर सुखदाइ ॥ २ ॥
नाअतिगीली कीजिये, ना सूखो रहिजाइ ॥
हाँडी पर परिया धरै, माटी देउ लगाइ ॥ ३ ॥
चौपाई-फिरि दुइ सेर कंडाले आवै । हाँडीके तर तिनहिं जरावै ॥
हाँडी जबहीं जाइ जुड़ाई । औषध तासों लेउ कढ़ाई ॥
पीपरि मिर्च सोंठि लैआवै । सोंचर सज्जी लोन मिलावै ॥
सूख सहतरा तामें दीजै । पीसि कपरछन सबको कीजै ॥
षटमासे अरु मासे तीनी । एक एक औषधि कहिदीनी ॥
सबै औषधी लेउ मिलाई । औषधि सींग समान कराई ॥
दोहा-औषधि पैसा एकभरि, गूगुर मासे तीनि ॥
औषधि दीजै बाजिको, प्रथम दिवसकहि दीनि ॥

सोरठा—उतने घूघुर माहि, औषधि पैसा दोइ भरि ॥
हयको देउ खवाहि, जानौ दुसरे दिन विषै ॥
दोहा—औषधि पैसा एक भरि, रोज बढावत जाइ ॥
दीजै वासर सातलौं, घूघुर उतनै लाइ ॥ १ ॥
औषध पैसा पाँचभरि, तामें लेउ मिलाइ ॥
चारि टकाभरि खांडको, घोड़े देउ खवाइ ॥ २ ॥
याविधि दीजै सातदिन, फिरियाही विधि जानि ॥
औषध पैसा पाँचभरि, आधपाव घिउ सानि ॥ ३ ॥
दीजै वासर सातलौं, वात रोग नशिजाइ ॥
मोटहोइ अरु बल बढै, चोट पुरानी जाइ ॥ ४ ॥

अथ तैयारीकी दवा।

चौपाई—लेउ बकैना पात मँगाई। हरियर ताजे नरम सुहाई ॥
पीसि महीन सेर यक लीजै। आध सेर यव आटा दीजै ॥
साँभरिनमकपाव अवलीजै। पिंडबनाइ अश्व मुख दीजै ॥
एक मासभरि देउ खवाई। ताजा होइ बहुत सुखपाई ॥

अथ महेला ताजा होइ झोंझ बढै।

दोहा—साग चकैड़ा लीजिये, वर्षाऋतुमें जानु ॥
जबलौं नाहिं फूलै फरै, करौ जतन यह मानु ॥
चौपाई—पाँचसेर यह साग मँगावै। चारि सेर मोथी लै आवै ॥
आधपाव लै साँभरि नमका। पकै महेला देउ तुरँगका ॥
एक माह यह जतन करीजै। रुष्ट पुष्ट बहु झोंझ बढ़ीजै ॥

अथ पानी पियानेकी विधि।

दोहा—कर्क आदि इमि रीतिते, भाषो मकर प्रयंत ॥
दीजै पानी तुरँगको एक दाँइ बुधवंत ॥ १ ॥

कुंभ प्रथमदै मिथुन लघु, तीनिबेर जल देय ॥
तुरँग सुखी दिन प्रति सदा, जानि लेउ बुधसोय॥ २ ॥

अथ ईंगुर गुटिका ।

दोहा–सुमिलषार ईंगुर सहित,त्रिकुटा गुग्गुल आनि ॥
शोधा विष पुनि लीजिये, टंक टंक सब जानि ॥ १ ॥
लौंगै अदरख पान पुनि, खील सोहागा आनि ॥
एक एक प्रति दोइ पल, श्रीधर सुकवि बखानि॥ २ ॥
खरिल कीजिये दोइदिन अदरखके रस माहि ॥
झलबेरियाकी सहशही, गोली बाँधै ताहि ॥ ३ ॥
आटा भूँजे जवनको, वह गोली तिहि संग ॥
हयको देउ खवाय सो, रहै नरोग प्रसँग ॥ ४ ॥

अन्य ईंगुर गुटिका शोधन विधि ।

दोहा–विष अरु ईंगुर शंखिया, तोले तोले आनि ॥
पपरी लीजै खैरकी, बारह मासे जानि ॥ १ ॥
लेउ अकरकरहा बहुरि, अरु अजमोद सँगाइ ॥
छा छा मासे दुहुँनको, कवि श्रीधर तौलाइ ॥ २ ॥
अदरखको रस डारिकैं,दिनभरि खरिल कराइ॥
तोलाभरि पारा बहुरि, तामें देउ मिलाइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–बँगलापान सँगाइकै, ताको अर्क कढ़ाइ ॥
एकदिवस फिरि ताहिमें, लीजै खरिल कराइ ॥ १ ॥
माटी बाँबीकी बहुरि, सोरहमासें आनि ॥
ताते तिगुना लीजिये, दूधमदार बखानि ॥२ ॥
फेरि खरिल ताको करै, जब रसरहैं समान ॥
शालहोत्र मुनि कहतहैं, गोली तासु विधान ॥ ३ ॥

ईंगुर गुटिका का गुण ।

दोहा—किफ अरु वात विकारते, रोग जिते सब होंइ ॥
देतै गोली एकके, तुरतै डारै खोइ ॥
सोरठा—महिना जाड़े माहि, यक यक गोली तीनि दिन ॥
जवके आटा माहि, जाय खवावत बाजिको ॥
दोहा—राहचलैपै ना थकै, कीतौ थकिगा होइ ॥
दीजे गोली एक तिहि, भरत नहीं है सोइ ॥

अथ हियातवटी सर्वरोग पर ।

दोहा—सिंदुरुफ तोला चारि भरि, शँखिया सुमिल समान ॥
उतनो भूँजा कनकरिपु, सम पपरी खदिरान ॥ १ ॥
बेसन तोला चारि भरि, लखि अदरखरस सान ॥
दशरत्ती ओजन बनै, ताकी वटी विधान ॥ २ ॥
देइ सबेरे अश्वको, अतिगुणदायक जानु ॥
सकल रोग हरजानु यह, वटी हियात प्रमानु ॥ ३ ॥

अथ अमृतवटी सर्व रोगपर ।

चौपाई—ईंगुर सुमिलषार मँगवावै । टंक टंक भरि वजन करावै ॥
गूगुर लौंग सोहागा आनै । पैसा पैसा भरि परमानै ॥
पीपरि मिर्च मेलि सम करै । अदरखपान अर्कमा धरै ॥
खरिलकरै दिन तीनि बनाई । गोली चना प्रमाण कराई ॥
दोहा—अमृत वटिका दीजिये, भूँजे आटा माह ॥
सर्वरोगहर बलकरै, मिटै जहर जो छाह ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहेकेशवसिंहकृतवर्षभरेकीचिकित्साकथनम्नामएकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ मांस देनेकी विधि ।

दोहा–आमिष दीजै छागको, कद अरु भूँख विचारि॥
छागहोइ हलवानसो, यह राखौ निरधारि ॥ १ ॥
आमिष लीजै साठिपल, ताको साफ कराइ ॥
ताको फेरि पकाइये, हर्दी दही लगाइ ॥ २ ॥
घीव लीजिये आठपल, दुइ पल लेइ पिआज ॥
गरममसाला डारिकै, ताहि पकावै साज ॥ ३ ॥
हाड़ निकारै मांसके, रोटी मीसि खवाय ॥
सुरुवाँ राखै नाहिनै, दीन्हीं जतन बताय ॥ ४ ॥

आमिष वा गूदा देनेका मसाला ।

चौपाई–एक टकाभरि मिरचै लावै । तासम हर्दी आनि मिलावै ॥
अदरख और मिठाई लीजै । आठटकाभरि दोनों कीजै ॥
दोहा–सो पानीके प्रथमही, हयको देउ खवाय ॥
पानीदैकै वाजिको, दीजै आमिष लाय ॥

मेषका मांस देनेकी विधि ।

दोहा–लीजै आमिष मेषको, चालिस पल तौलाइ ॥
कही पकावन विधि अहै, ताहीविधि पकवाइ॥ १ ॥
जौंकीरोटी वीस पल, तामें लीजै सानि ॥
दशपल डारै ताहिके, संग मद्यको आनि ॥ २ ॥
बूढ़ तुरंगम होइ जो, दीजै चालिस रोज ॥
वाजीहोइ जवान जो, ताको वीसै रोज ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा–लहसुन मिर्चैं सोंठि पुनि, एक एक पल आनि ॥
सरसों सैंधव एकपल, श्रीधर कहो बखानि ॥

सोरठा—याको देइ खवाइ, होय घरी कैजा करै ॥
फिरि जल दीजै लाइ,ता पीछे आमिष कहो ॥

शूकरका मांस देनेकी विधि।

दोहा—पल पचास तौलाइये, शूकरमांसहि जानि ॥
ताहिपकावै नीरमें, केवल हर्दी सानि ॥ १ ॥
गूलरके फल सात पल, महिषी दही मिलाइ ॥
दीजै बूढ बाजिको, सोट सही ह्वैजाइ ॥ २ ॥
कही क्षुधाकर औषधी, सो दीजै नितलाइ ॥
याविधि दीजै साठिपल, बूढ तरुण ह्वैजाइ ॥ ३ ॥

अखनी देनेकी विधि।

दोहा—एक सैकरा साठि पल, आमिष छाग मिलाइ ॥
थोरे घीसें भूँजिये, थोरी हर्दी लाइ ॥ १ ॥
फेरि चुरावै नीरसो, अखनी लेउ कढ़ाइ ॥
ताकी विधि अब कहतहौं, जानिलेउ सुखदाइ ॥ २ ॥
ताहि बघारै घीउमें, तीनिबार यह जानि ॥
दीजै चालिसरोज लग, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥

मसाला।

दोहा—जवाखार साँभरि सहित, सोंचर सैंधव आनि ॥
चारौ लीजै एकपल, दुइपल कचरी जानि ॥ १ ॥
कुटकी मिर्चै सोंठि पुनि, डेढटकाभरि लेइ ॥
एकरोजको बीचदै, सो बाजीको देइ ॥ २ ॥
फल भोजन जिनके कहे, शालहोत्र मत माहि ॥
यह औषध सबमें उचित,जानि लेउ तुम ताहि ॥ ३ ॥

मुर्ग देनेकी विधि ।

दोहा–मुर्गा दीजै बीस दिन, की चालिस दिन जानि ॥
छुट्टामुर्गा चुनै सो, नितप्रति एक बखानि ॥
सोरठा–लीजै ताहि पकाइ, जौन पकावन विधि कही ॥
हड्डी तासु कढाइ, बासी रोटी सानिकै ॥ १
हयको देउ खवाय, औषध दीजै गरम नहिं ॥
साँकरोग नशिजाय, दीजै बात बचाइ जो ॥ २

अन्य मांसदेनेकी विधि ।

दोहा–तीतर लवा बटेरको, और कपोत बखानि ॥
मांस दीजिये ए सबै, सकल रोग हर जानि ॥

मांस पकानेकी विधि ।

दोहा–आठ टकाभरि घीवमें, प्रथमहिं भूँजै आनि॥
फेरि पकावै नीरमें, पहर एक यह जानि ॥ १ ॥
गोहूं रोटी बीस पल, तामें लीजै सानि ॥
पानी देकै वाजिको, ताहि खवावै आनि ॥ २ ॥
जा बाजीके तनुविषै, वातरोग जो होइ ॥
रोटी दीजै मोठकी, बहुरि गर्मकरि सोइ ॥ ३ ॥

अथ मुर्गीके अंडा देनेकी विधि ।

दोहा–अंडादीजै वाजिको, ताकी यह विधि आहि ॥
दिन प्रति एक बढ़ाइये, दश वासरलौं ताहि ॥
सोरठा–ग्यारह दिनमें वाहि, दश अंडा अरु दीजिये ॥
फिरि नव वासर माहि, दिनप्रति एक घटाइये ॥
दोहा–प्रति अंडाके भाग अध, लीजै खांड मिलाइ ॥
ताते आधा घीवलै, सोऊ लेउ मिलाइ ॥

चौपाई–दुइसारे अदरखरस लीजै । प्रति अंडामें ताको दीजै ॥
सोटमहेलामें सनवाई । कहे अंडा रोज खवाई ॥
दोहा–बल जाको घटि गयो अरु, जलदी जो थकिजाइ ॥
याविधि अंडा दीजिये, जोरु तासु सरसाइ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–अंडादीजै बीस दिन, दिनप्रति एक बढ़ाइ ॥
एक एक कमती करै, क्रमसों देउ छँडाइ ॥ १ ॥
हरदी मासे दोइलै, ताको लेउ पिसाइ ॥
एक एक अंडा विषै, दीजै ताहि मिलाइ ॥ २ ॥
सो रोटी सँग भिजैकै, हयको देउ खवाइ ॥
शालहोत्र मत कहतहौं, दिन दिन बल सरसाइ ॥ ३ ॥
ढीलो बाजी जो चलै, देह हलावत होइ ॥
याविधि अंडा दीजिये, चुस्त चलत पुनि सोइ ॥ ४ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–दिनप्रति अंडा दशकहे, सो चालिस दिन देइ ॥
ताकी विधि अब कहतहौं, जानि तासुको लेइ ॥ १ ॥
घीमो अंडा भूँजिकै, दुइ पल हर्दी लेइ ॥
अंडनके सम खाँड़को, दोनौं तामें देइ ॥ २ ॥
ताहि खवावै बाजिको, कवि श्रीधर यह जानि ॥
मोटा बाजी होतहै, बाढै बलकी खानि ॥ ३ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा–अंडा दीजै बाजिको, ताकी यह विधि जोइ ॥
पहिले दिनमें एकदै, दूजे दिनमें दोइ ॥ १ ॥

तीजे दिनमें तीनिदै, याविधि और बढाइ ॥
दीजै चालिस रोजसो, हयको आनि खवाइ॥ २ ॥
सहत रुपैया दोइभरि, प्रतिअंड़ामो जानि ॥
साढे दश मासे बहुरि, अदरखके रस सानि ॥ ३ ॥
अंडाके रस माहिमो, दोऊ देउ मिलाइ ॥
भूँजो मोठ पिसानलै, तामें ढील सनाइ ॥ ४ ॥
मोटा बाजी होइ अरु,बल ताको अधिकाइ ॥
औरौ बहुत कहा कहौं, बूढ तरुण ह्वैजाइ ॥ ५ ॥
सोरठा—विप्रवर्ण जो होइ, अंडा ताको नहिं परै ॥
जानिलेउ जिय सोय, औरौ विधि यक कहतहौं॥
दोहा—अंडा जाको नहिं परै, अरु मुर्गाको मांसु ॥
ताकी यह पहिचानिहै, प्रथमहि कीजै तासु ॥ १ ॥
सूर्यऋचा आकृष्णहै, पढै कानमें तासु ।
या अंडा या मुर्गको, तुमको देहौं मासु ॥ २ ॥
यह कहि दीजै कानमें, दीजै राति बिताइ ॥
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत आइ ॥ ३ ॥
प्रातभये फिरि देखिये, जबहीं आवै आँसु ॥
ताको अंडा देइ नहिं, अरु मुर्गाको माँसु ॥ ४ ॥
हठकरि कोऊ देइ जो, तौ रोगी ह्वै जाइ ॥
बाजी दूबर होइ अरु, अकसरकरि मरि जाइ ॥ ५ ॥

अथ मछरीखवानेकी विधि।

दोहा—रोहू मछरी साठि पल, तिनकी खाल कढाइ ॥
घीमें तिनको भूँजिकै, पानीमो पकवाइ ॥ १ ॥
काँटाडारै काढि सब, दशपल घीउ मिलाइ ॥
मोटी रोटी साथमें, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

चौपाई—निर्बल अश्वहि देउ खवाई।चालिस दिन मा बल बढिजा॥
अति बूढो बाजी जो होई। यासम औषध और नकोई॥

मछरी देनेकी अन्य विधि।

दोहा—रोहू मछरी दोइलै, साठि साठि पल होइ॥
की कम ज्यादा होइ कछु, या परमानहि सोइ॥ १॥
तिन मछरिनकी देहमें, देउ पिंडोर लेसाइ॥
भुँइमें गड़वा खोदिकै, कंडा देउ भराइ॥ २॥
तामधि मछरी गाड़िकै, दीजै आगि लगाइ॥
कवि श्रीधर यह कहतहैं, तापर और उपाइ॥ ३॥
बारबार घिउ डारिकै, मछरीके मुखमाहि॥
सुर्खहोइ जौलौं नहीं, तौलौं डारत जाहि॥ ४॥
सोरठा—पाकि खूब जब जाँइ,खाल काँट सब काढ़िये॥
हयको देउ खवाइ, मोटी रोटी सानिकै॥ ५॥

मसाला।

दोहा—सोंठि मिर्च अरु पीपरी,टका टका भरि आनि॥
सो छिरका मधि सानिकै, हयको दीजै मानि॥

अन्य मछरीके मूँड देनेकी विधि।

चौपाई—दशशिर रोहूके लै आवै। घीमें तिनको आनि भुँजावै॥
तिनको भेजा लेउ कढाई। बेसनसों फिरि ताहि सनाई॥
दशदिन यहिविधि रोज खवावै।दशदिनते दश और बढ़ावै॥
बीसरोज याविधि सो दीजै। फेरि और दश ज्यादा कीजै॥
दोहा—तीस तीस फिरि दीजिये,दिन चालिस लौं जानि॥
शालहोत्र मुनिके मते, अश्वहोइ बलखानि॥ १॥
बूढ़े हयको दीजिये, करि मछरीको प्रेम॥
युवा बाजिको देइ नहिं, शालहोत्रको नेम॥ २॥

अथ बोकराका शीश देनेकी विधि ।

चौपाई–यक बोकराको शीशमँगावै । नितप्रति प्रात पकाइ खवावै॥
यकइस दिनलौं याविधि कीजै। बृद्ध अश्वको ज्वानकरीजै॥

रुधिर देनेकी विधि ।

चौपाई–यक बोकराको रुधिर मँगावै । प्रातखवाय जवान करावै ॥
यकइस दिनलौं नितप्रति दीजै । वृद्धअश्वकोज्वान करीजै ॥

चर्बी देनेकी विधि ।

चौपाई–बोकराकी चर्बी मँगवावै । एक पाव नित प्रात खवावै ॥
यकइस दिन याहूको दीजै । वृद्धहोइ तिहि ज्वानकरीजै ॥

अथ बरियां देनेकी विधि ।

दोहा–उर्ददालि को लीजिये, बत्तिसपलै भिजाइ ॥
कचरा ताको पीसिकै, बरियां लेउ बनाइ ॥ १ ॥
धरि राखै सो रातिभरि, हयको देइ खवाय ॥
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बरियां दीजै वाजिको, दही माहिं भिजवाइ ॥
राई लहसुन सोंठि पुनि, चारिकर्ष मिलवाइ ॥

अन्य ।

दोहा–लालमिठाई तीसपल, कीजै तासु जलाउ ॥
तामें बरियां भिजैकै, हयको सोइ खवाउ ॥ १ ॥
बरा दीजिये माघभरि, और मासमो नाहि ॥
वाजी मोटा होइ बहु, बाढै पौरुष ताहि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतमांसवर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ मसालासाठिया ।

चौपाई–जवाखार अरु पापरखारी । सज्जीखार मैनफल डारी ॥
बच अरु पिपरामूरि मँगावै । अजवायनि खुरसानी लावै ॥
लेउ कैफरा और फटकरी । सैंधव सोंचर लोन साँभरी ॥
पक्के कुआँ कि काई चँदसुर। कटु तुँबरी दल अर्क लेउ बर ॥
यहिषोड़शलै दवा पिसावै । एकैएक छटाँक मँगावै ॥
कुटकी कूट भरंगी मेलै । बीज चकेड़ा मिरचै गोलै ॥
घुड़रहसनि अरु हींग मँगाई । तुचा बकैना फलको लाई ॥
मुर्रा अरु हुरहुरके पाता । दश अधपई लेउ सम ताता ॥
हरदी मिरचा धनिआ लावै । हैंसिमूलकी छालि मँगावै ॥
भँगरैला असगँध अजमोदा।गेरू घुरिय अरुकंजकमूदा ॥
रूसकटैया गोलिनवाली । दूनौंजरका तुचा निकाली ॥
काराजीरी पिपरी लावै । घुघुआरी का गूद मिलावै ॥
मालकाँगनी गूगुरभैंसा । दारु सोहागा भूँजि महीसा ॥
लीजै दवा सत्तरह आनी । पाव पावकीहै परमानी ॥
राईदेशी भाँग मँगावै । दुइ दुइ सेर वजन करवावै ॥
सोवा सोंठि पाव लै तीनी । सेर अढ़ाई लहसुन देनी ॥
अर्कफूल बंडार जुलीजै । मूल धतूरे तुचा करीजै ॥
टका टका भरि तीनौंमेलौ । कचरी सेर एकतिहिघेलौ ॥
देशी अजवायनि लै त्रिफला । बाँसपात औ अदरखमेला ॥
फल इंद्रायनि पाक फूँकिके । मेथी रंडपात जोगियाके ॥
यहि नौ औषधकरौ विधाना । आधआध सेरै परमाना ॥
राई लेउ बनरसी भाई । सेरएक तामें मिलवाई ॥
सर्जनजरकी छालि मँगावै । और पुराना गुड़ लैआवै ॥

दश दश सेर हुऔ परमानै । सकल पीसि कपरामें छानै ॥
भैंसीकेरो दही मँगावै । तामें औषध सब सनवावै ॥
वामें सुखै पीसि फिरि लीजे । तामें छिरका मर्दन कीजै॥
तुचा सहींजन सिल पिसवावै । एक कराही जल भरवावै ॥
तामें छाली देव भराई । पीछे डारु मिठाई भाई ॥
दूनों जब पानीसें चुरे । ताके पाछे औषधभरे ॥

दोहा—सकल पकावै एकमें, जब पानी जारि जाय ॥
तबहीं धरै उतारिकै, घामें लेइ सुखाय ॥ १ ॥
आधपाव नित दीजिये, तुरँग अरोगी होय ॥
भूंखबढै तनु बलकरै, उदर व्याधि हरिलेय ॥ २ ॥

अथ प्रथम मसाला बत्तीसा सर्व रोग पर ।

दोहा—जिस ओषधि का वजननहिं,यामें कुछ दरशाय ।
वह ओषधि चोखी लियो, टका टका भरि भाय ॥

चौपाई—पिपरी लहसुनऽ- पिपरामूरी । कुटकी बायभरंग कचूरी ॥
मिर्च सोहागाऽ-काराजीरी । अजवायनि हरदी वहुपीरी ॥
बच गूगुर अरु हर्र मँगाई । सज्जी जवाखारको लाई ॥
मेथीऽ-सोंठि मैनफल लेहू । बीजकसौंजी तामें देहू ॥
चीतो बीज पवाँर विधारो । कालेश्वर जीरा विधि न्यारो ॥
सेर आध विजयाको लीजै । हींग टकाभरि तामें दीजै ॥
लेउ सोहागा और फटकरीऽ-। भूँजि खील सो दूनो धरी ॥
साँभरि सोंचर सैंधवखारी । आधसेर लीजै यह चारी ॥
मानुषकी खुपरी लै आवै । महिषा सींगै ताहि मँगावै ॥
दुइ दुइ पलकी राख करावै । ताही क्रमते हींग मिलावै ॥
पीसि छानि सब औषध लीजै । चनाके आटामें तिहि दीजै ॥
टका टकाभरि ताहि खवावै । रोगजाय सब बल उपजावै ॥

अथ द्वितीय मसाला बत्तीसा ।

चौपाई–अँगरैला औ भाँगभरंगी । सोंठि सोहागा सोवा संगी ॥
कुटकी कूटि कैफरा कचरी । मेथी धनियाँ लहसुन पिपरी॥
दोनौं मिर्च मैनफल राई । त्रिफला डारु फटकरी आई ॥
अजवाइनि असगँध अजमोदा । बचबंडार पीत बहु हरदा ॥
अजवाइनि लीजै खुरसानी । सातौ खार मिलावौ आनी ॥
काराजीरी हींग मँगावै । अदरख अरु मुर्रा लैआवै ॥
समकरि भाग कूटि बहु पीसा । चूरण कहिये यह बत्तीसा ॥
टका टकाभरि प्रात खवावै । अश्वाके कोइ रोग नआवै ॥

अथ तृतीय मसाला बत्तीसा ।

चौपाई–हरदी अजवायनि अरु राई । हालिम भँगरैलाको लाई ॥
धनियाँ काराजीरी सोवा । सौंफ हर्र वैशाषी मोवा ॥
हरैं जंगी गूगुर साई । काकजंघ मेथी मँगवाई ॥
पिपरी सोंठि पीपरामूरी । सनबीजा बंडार सुनौरी ॥
खवरा बावभरंगजपीपरि । कैफरलीजै चीतशतावरि ॥
लोध भेलावाँ मैदा मोथा । भाँग मैनफलको करु साथा ॥
सकल दवा समभाग पिसावै । अश्वैप्रात छटाँक खवावै ॥
होय तयार रोग सब खोवै । नकुलमतो बत्तीसा देवै ॥

अथ चतुर्थमसाला बत्तीसा ।

चौपाई–बास जवास इँदारुनि आनै । रंडमूल दल अर्क प्रमानै ॥
बीज कसौंजी औ कुकुरौंधा । कनकबीज दुधियायुत पौधा॥
साँभरि भँगरैलाको लीजै । गोभीरै खरपुरना कीजै ॥
घुम्मा सहिजन छालि मँगावै । कल्पनाथ कालेश्वर लावै॥

मेहदी सेहुँड़ बबुर कि छाली । मेथी हरै हरदी घाली ॥
जीरा सींककेर अरु राई । मुंडी लेउ सनाय मँगाई ॥
पचगुरिया पँवारके बीजौ । नैरपात अजवायन लीजै ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै। दशयें अंश नमकडरवावै ॥
देउ नहारी संघ छटांका । रोगहरै बढ़ि क्षुधा घड़ाका ॥

अथ मसाला सोरहिया ।

चौपाई—राई हरदी लोन मँगावै । सोंठि सोहागा सोवा लावै ॥
पिपरीपिपरामूरि जवाइन । त्रिफला मिलै करौ यकठाइन ॥
बच बंडार जुहींगमँगावै । लहसुन लै समभाग पिसावै ॥
टका टकाभरि घोड़े दीजै । सोरहगुणको जाल करीजै ॥

अथ मसाला वाराही चिकित्सा ।

दोहा—मधु सैंधव कुकुरावँधा, हर्रा समहि मिलाय ॥
गऊमूत्र यव अरदवा, घालि दिये अतिखाय ॥ १ ॥
केला केथरापातलै, श्वेतखाँड़ घृत आनि ॥
समकरि हयको देइ नित, अधिक क्षुधाकर जानि ॥ २ ॥

अथ मसाला कामधेनु चूरण वातरोगपर ।

चौपाई—लहसुन मेथी मिरचैं गोली । पिपरामूल भरंगी मेली ॥
लेउ सोहागा कैके फुकनी । तामें डारु तमाखू थुकनी ॥
लेउ भेलावाँ मैनफल हरदी । तोला दुइ दुइकी करु गरदी ॥
सनफर लेउ भाँग मँगवाई । तोले चारि चारि मेलवाई ॥
दोहा—सबको कूटि यकत्र करि, सहिंजनरसमें सानि ॥
दुइ तोलाकी वजन करि, गोली तासु विधानि ॥ १ ॥
कामधेनु याको कह्यो, हयको देउ सुजान ॥
उदर शूल मंदाग्नि हर, अतिहि गुणदकी खान ॥ २ ॥

अथ मसाला भस्मावती दाना चारा बढानेका ।

चौपाई—सोंठि बैतरा सिचैं पीपरि । कुटकी चारौ सेर सेर धरि ॥
कालानमक सेर लै आधो । कूटि छानि एकैमें साधो ॥
प्रात छटाँक अश्वको दीजै । बढ़ै खुराक रोगतनु छीजै ॥
भसमावंती याको नामा । नकुलसतेकोहै अभिरामा ॥

अथ मसाला क्षुधाकरन ।

चौपाई—गोदधि दुइसन लेउ मँगाई । छालि सहींजन छासेर लाई ॥
सैंधव साँभरि सज्जी लीजै । सोंचरखारी तामहँ दीजै ॥
राई लहसुन काराजीरी । अजवाइनि हरदी बड्डापिपरी ॥
बावभरंग लीजिये संग । खील सोहागा करि यकअंग ॥

दोहा—कूटि छानि दधिमें मिलै, घाममें देउ धराइ ॥
टका टका भरि दीजिये, जब औषध उफनाय ॥ १ ॥
ग्रीषमऋतुहि बचायकै, जो घोड़ेको देय ॥
होयबलिष्ठ शरीर तिहि, क्षुधा अधिक सो होय ॥ २ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन ।

चौपाई—सज्जी अजवाइनि औ राई । सांभरि वावभरंग कटाई ॥
सोंचर सैंधव समकरि लीजै । वजन बराबरि ये सब कीजै ॥
काराजीरी औ चौराई । लहसुन पिपरामूर मँगाई ॥

दोहा—कूटि छानिकै दीजिये, मोठमहेला माहि ॥
टका टका भरि वजन नित, यहि सम औषधं नाहि ॥

अन्य ।

चौपाई—नीबि बकैंना और कसौंजी । कंजसहित पौधी चारौ जी ॥
ता पाछे विषखपरा लीजै । सेर सेर ए सब करिदीजै ॥

अदरख पान मिर्चको लेहू । कारि गुटका घोड़ेको देहू ॥
चालिसदिन अश्वा जोपावै । क्षुधा अधिक बहु अंग बढावै ॥
सोरठ—धूँजे आटा माहि, प्रातसमय नित दीजिये ॥
बल दिन दिन सरसाय, चेतनचंद प्रमाण यह ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

चौपाई--सेर एक महुआ मँगवावै । अरसी सहित भार भुँजवावै ॥
अजवाइनि मेथी औ भाँगा । टका टका भरि खीलसुहागा॥
सकलपीसि मैदा करवाई । सेर दोय गुड़ देउ मिलाई ॥
एकदिनाकी है मौताजा । दिन यकइस याहीविधि साजा ॥
दोहा—जाय बंद नहिं दीजिये, देखत मोटा होय ॥
शालहोत्र इमि उच्चरै, बढ़ै पराक्रम सोय ॥

अन्य ।

चौपाई—हरदी सेर आठ लैआवै । सुरभी क्षीरमध्य भिजवावै ॥
दिना सातलौं भीजा करै । छाँह सुखाय पीसिकै धरै ॥
सेर एक सोंठीको लावै । दुइसेर गोघृत आनि मिलावै ॥
पाँचसेर गोहूंकी मैदा । सकल मिलाइ धरौ कहचंदा ॥
पावसेरातिहि नित्य निकारै । दूधखाँड सँग हलुआ करै ॥
दोहा—याविधि औषध कीजिये, एकमास नित प्रात ॥
चेतनचंद प्रमाण यह, मोटा ह्वैहै गात ॥

अथ मसाला तुच्छअहारी ।

दोहा—तुच्छकरै आहार जो, दुर्बल रहै शरीर ॥
तुच्छ अहारी नाम तिहि, रोग सुनौ मतिधीर ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोदलै, हरैं दूनौं आनि ॥
साँभरि संग खवाइये, भूँखताहि अधिकानि ॥ २ ॥

अथ मसाला बलगम का तैयारीका ।

चौपाई-कुटकी कूटर कारजीरी । कालेश्वर हरदी बहु पीरी ॥
वारभरंग सोहागा लीजै । भूँजि फटकरी तामें दीजै ॥
मिर्च कंज औ पिपरामूरी । पीपरि सोंठि समेत कचूरी ॥
त्रिफला अँविलतासुको लीजै।असगँध नागौरी तिहि दीजै ॥
अजवाइनि मेथी औ राई । लेउ पुरानो गुरहि मिलाई ॥
सब यकत्र करि सम पिसवावै । औषधते गुड़ दून मिलावै ॥
आधसेरका पिंड बनाई । घोडेकादे प्रात खवाई ॥
बलगम जहरवातको नाशै । नीक होय औ रूप प्रकाशै ॥

अन्य ।

दोहा-लौंग मिर्च औ पानले, अदरख पिपरामूरि ॥
नित्त नेवाला दीजिये, रोगरहै तिहि दूरि ॥

अथ मसाला ताजाहोनेका ।

चौपाई-राई मेथी हालिम हरदी । पीसि छानि कीजै सब गरदी ॥
दोहा-डेढ़पाव तिहि लीजिये, गोहूँ दरि यक सेर ॥
तीनिसेर गोदूधमें, साँझ भिजैदे भोर ॥ १ ॥
घोडा दुर्बल देखिकै, चालिसदिन नितदेय ॥
रोगहरै बहु बल करै, हृष्टपुष्ट तनु होय ॥ २ ॥
चौपाई-सोवा अजवाइनि दुइसेरै । राई लहसुन उतनै गेरै ॥
लेइ पियाज सेर दुइ छीली । आध सेर साँभरि तिहिमेली ॥
छंद-सब कूटि दही दशसेर राखि । धरु सातरोज घामेंसो भाखि ॥
लेपाउ कि आटा आधसेर । कैबूट मोथ हय वदन गेर ॥

अथ मसाला क्षुधाकरन।

दोहा–गुड़तीनिसेर गोमूत्र सँग, दीजै ताहि पकाय ॥
मूँखबढै बहु बल करै, सुँदर वदन दिखाय ॥

अन्य ।

चौपाई–मिर्च लेउ कंकोल मँगाई । मिर्चा अरुण बराबरि लाई॥
केवडाकी जर खाँड मँगाई । जेठी मधु सज्जी मिलवाई ॥
सातौ दवा बराबरिलीजै एकै टंक मात्र नित कीजै ॥
दोहा–गुड़ दुइ स्यर घृतमें मिलै, पिंड करौ नित एक ॥
सातरोज लग दीजिये, रुष्ट पुष्ट तनु झेक ॥

अथ मसाला निर्बल घोडेका ।

चौपाई–मेथी सोरह टंक पिसावै । ईंगुर औ कंकोल मँगावै ॥
गंधपसार श्याम जो लीजै । और विजौरा सम सब कीजै ॥
सोरठा–अबल सबल ह्वैजाय, जो हयको कीजै जतन ॥
दवा किये रुज जाय, शालहोत्र इमि उच्चरै ॥

अथ मसाला वृद्ध घोडेका ।

दोहा–अमिष चुरै मधु दधि मिलै, दीजै वृद्ध तुरंग ॥
चौदह दिन नित दीजिये, होय युवा सम अंग ॥

अथ मसाला घोडेकी तैयारीका ।

चौपाई–पिपरी पिपरामूल भरंगी । तोला दुइ दुइ करु यक संगी ॥
अदरख पाव एक मँगवावै । मिरचै आधपाव मिलवावै ॥
गानिकै लौंग एकइस लीजै । बँगलापान एकशत कीजै ॥
कूटि छानि मैदा करवावै । तोलाभरि सो नित्त खवावै ॥
जौंके आटा सानिक दीजै । तुरँगतयार बहुत सुख लीजै ॥

अथ मसाला पाचकका ।

दोहा-मिर्च जवाइनि मैनफल, पिपरी बचहि मिलाय ॥
सज्जी सैंधव जीरिया, सम करि सकल पिसाय ॥ १ ॥
बड़े अश्वको दीजिये, दुइ पैसा भरि रोज ॥
लघुको पैसा एकभरि, दैहिलवा सँग मौज ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई-हर्रोहर जवाइनि लोनू । पीसि छानि बरतन धरु तौनू ॥
एक छटाँक साँझ भिजवावै । प्रातनहारी साथ खवावै ॥

अथ मसाला खुराक बैठका ।

दोहा-नमक भाँग अरु काचरी, राई सब सम आनि ॥
कूटि सबै आटामिलै, अशन बादद जानि ॥

अथ मसाला कम पानी पियै ताको ।

दोहा-तोला चारि जवायनी, दानाबादखवाय ॥
पीवै पानी बहुत सो, अतिही सुख दरशाय ॥

अथ मसाला अठरोजा ।

दोहा-कहौं मसाला अठरोजा, अठयें दिन जो देइ ॥
भूँखबढै बहु अश्वकी, कोई रोग नहोइ ॥

चौपाई-सोंचरनमक भेलावांलीजे । आधआधसेरदोउ कीजे ॥
आधसेर अजमोद मिलावै । तिहि पाछे विधि और बतावै ॥
बाउभरंग कूट अरु बचुकी । सोंठि और मीरोरफलनकी ॥
सोवाबीज बनरसी राई । घुड़बच लोटा सज्जी लाई ॥
नरकचूर अरु काराजीरी । बीजपलाश ताहिमें डारी ॥

यहि बरहौ औषध तौलावै । पाव पाव सम वजन करावै ॥
पीसिकूटि सब छानि धरीजै। दुइतोला अठयें दिन दीजै ॥

अथ मसाला भस्मावंती चूरण ।

दोहा—भूँखबढै वादी हरै, चारा हजम कराइ ॥
भस्मावंती नाम यहि, कहो मसाला आइ ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोदको, लोटा सज्जी लेउ ॥
घुड़वच सोंठी वैतरा, मिलै ताहिमें देउ ॥ २ ॥
सोवा बीज समीतहै, ये षट औषधजानु ॥
आध आध सेरै कही, यह परमान बखानु ॥ ३ ॥

चौपाई—नरकचूर औ कुटकी वचुकी । कराजीरी वकली हड़की ॥
बीज पलाश औ वायभरंगा। चारौ नमक,करौयकसंगा ॥
पाव पाव सब वजन करीजे ।एक छटांक हींग तिहि दीजे ॥
राई जौन बनरसी भाई । सेर अढ़ाई तौलि मिलाई ॥
सकल दवा पिसवाइ छनावै । माटीके बरतन धरवावै ॥
नितप्रति एक छटांक खवावै । बरहौमास रोग नाहिं आवै ॥
सोठ पिसान मिलै सनवावै । पिंड बनाइ अश्व मुखनावै ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

दोहा—हर्र बहेरा आँवरा, कुटकी कचरी जान ॥
मेथी अजवाइनि सहित,राई कहौं बखान ॥

चौपाई—यह सब दवा सेर स्यर लीजे।साँभरि नमक तीनिस्यर दीजै॥
यह सब दवा कूटि छनवावै । माहिषीतक्रहिमिलै सरावै ॥
आधपाव नित तुरँगहि दीजै । होइबालिष्ट पुष्ट तनु लीजै ॥

अथ मसाला भूँख लगनेका ।

दोहा—सिंगिनि जर कालिम साहित, वायभरंग सँगाइ ॥
अजवाइनि अजमोदलै, सोंठि चिरैता लाइ ॥ १ ॥
पात तमाखू डाँकके, अरु औंराके जानि ॥
पुनि लहसुनको लीजिये, सैंधवलोन बखानि ॥ २ ॥
अजवाइनिको लीजिये, दूनों भाग प्रमान ॥
आधे भागहि हींगलै, सबको भाग समान ॥ ३ ॥
सबको गुड़में सानिकै, गोली लेइ बँधाइ ॥
औषध तोले चारिभरि, दीजै रोज खवाइ ॥ ४ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन ।

दोहा—खुरासानि अजवाइनिहि, कुटकी बाइभरंग ॥
सात सात तोले सबै, काराजीरी संग ॥ १ ॥
साँभरि सोंचर लोन लै, खारीलोन मँगाय ॥
दुइ दुइ पल ये लीजिये, सबको लेउ पिसाय ॥ २ ॥
धरै एक बासन विषे, गऊमूत्र मँगवाइ ॥
तामें भिजवै सातदिन, लीजै फेरि सुखाइ ॥ ३ ॥
गोली ताकी बाँधिकै, दिन यकइसमें देइ ॥
दाना पाछे साँझको, क्षुधा अधिक कै लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—काराजीरी लीजिये, हर्दी कुटकी आनि ॥
फूलकटैयाके बहुरि, बीज तमाखू जानि ॥ १ ॥
लीजै सज्जी लोन पुनि, टका टका भरि आनि ॥
गदहपुरैना पात अरु, कंजागूदी मानि ॥ २ ॥

पाँच पाँच पल दुहुँनको, सबके साथ पिसाइ ॥
टका एक भरि दीजिये, क्षुधातासु सरसाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—अजवाइनि अजमोद पुनि, सोंठि पीपरी आनि ॥
घुड़बच पिपरा मूल अरु, अदरख मिर्च बखानि ॥ १ ॥
राई जीरास्याहलै, कचरी लेउ मँगाइ ॥
औंरा हर्र बहेरकी, बकली लेउ कढाइ ॥ २ ॥
सोंचर सैंधव लोन पुनि, खारीलोन बखानि ॥
येती औषध सबनकी, पाउ पाउ भरि जानि ॥ ३ ॥
जवाषार साँभरि सहित, पाउ एक भरिआनि ॥
तोलाभरि पुनि हींगलै, पीसै सबको सानि ॥ ४ ॥
सोरठा—दहीमाहि सो सानि, डारै सिरका सेर दुइ ॥
धूसमाहि सो आनि, धरिराखैतिहितीनि दिन ॥
दोहा—दोइ टकाभरि बाजिको, दीजै आइ खवाइ ॥
दाना पाछे साँझको, और क्षुधा सरसाइ ॥

अन्य ।

दोहा—सोंठि सोहागा फटकरी, कुटकी वाइभरंग ॥
मिर्च कैफरा हींग पुनि, अरु घुडबचके संग ॥ १ ॥
जीरालेउ सफेद पुनि, सबकर भाग समान ॥
गोली बाँधै तासुकी, झलबेरा परमान ॥ २ ॥
साँझ सबेरे बाजिको, यक यक गोली देय ॥
नितप्रति देउ खवायसो, क्षुधा अधिक तिहिलेय ॥ ३ ॥

अथ मसाला क्षुधाकरन गर्मीके दिननका ।

दोहा—लै अजवाइनि पावभरि, हर्रे सेरभरि आनि ॥
जवाखार पुनि लीजिये, तोले चारि बखानि ॥ १ ॥
दही गाइको सेर दुइ, तासें लेउ पकाइ ॥
औषध पैसा चारि भरि, दीजै रोज खवाइ ॥ २ ॥
दानादैकै साँझको, हयको दीजै आनि ॥
क्षुधा तासुकी अतिबढै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अथ मसाला क्षुधाकरन और बलगम वगैरह जानेका ।

दोहा—आँरा हर्र बहेर पुनि, गोली मिर्च मँगाइ ॥
काराजीरी लेउ पुनि, अरु अजवाइनिलाइ ॥ १ ॥
पीपरि पिपरामूल अरु, हर्दी राई आनि ॥
लीजै अदरख सौंफ पुनि, हालिम सोंठि बखानि ॥ २ ॥
सोरठा—पाव पाव ये आनि, दुइ तोले पुनि हींगलै ॥
तोलेचारि बखानि, खुरासानि अजवाइनिहि ॥
दोहा—कालेश्वर घुडवच सहित, सोंचर साँभरि आनि ॥
आधे आधे पाव सब, जवाखारको जानि ॥ १ ॥
खीलसोहागाकी बहुरि, आधपाव मँगवाइ ॥
गूगुर तोले चारि भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
टका टका भरि औषधी, हयको देउ खवाइ ॥
दानादैकै साँझको, कैजा देउ कराइ ॥ ३ ॥
तासु क्षुधा बहुतै बढै, बलगम जाइ नशाइ ॥
वीसरोज यह औषधी, रोज खवावत जाइ ॥ ४ ॥

पीछे जाहि कनारके, क्षुधा मंद परिजाय ॥
यहि चूरणते बाजिको, अतिहि गुणाकर आय ॥ ५ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरन।

दोहा–खुरासानि अजवाइनिहि, राई हर्दी आनि ॥
खारी मेंहदीपात पुनि, पाउ पाउ ए जानि ॥ १ ॥
सोंचर सज्जी सोंठि तज, अरु घुड़बचको लाइ ॥
यक यक देउ छटांकसों, पुनि फटकरी गनाइ ॥ २ ॥
काराजीरी फटकरी, कुटकी बायभरंग ॥
बीज कटैया मिर्च पुनि, अरु कालेश्वर संग ॥ ३ ॥
सोरठा–साँभरि सौंफ मँगाइ, आधे आधे पाव ये ॥
लोटा सज्जी लाइ, इंदरजव गूगुर सहित ॥ १ ॥
खील सोहागा लाय, दुइ दुइ तोले तौलिसब ॥
तोला हींग मिलाइ, पुनि अजवायनि पावभरि॥ २ ॥
धरिये बासन माहि, सबै औषधी कूटिकै ॥
डारति तामें जाहि, गऊमूत्र मँगवाइकै ॥ ३ ॥
भीजि औषधी जाइ, मोहरादेइ लिसाय तब ॥
लीदि माँहि गडवाइ, खोलै चालिशदिन नहीं ॥ ४ ॥
फिरि लीजै निकसाइ, कीट परतहैं ताहिमें ॥
लीजै ताहि सुखाइ, फिरि ताको धरि राखिये ॥ ५ ॥
दोइ टकाभरि लाइ, हयको देउ नहार मुँह ॥
क्षुधाअधिक ह्वैजाइ, शालहोत्र मेंहै कह्यो ॥ ६ ॥
दोहा–गोहूँ आटा संगमें, चालिसरोज खवाइ ॥
या औषधको दीजिये, जाडेकी ऋतु पाइ ॥ १ ॥
क्षुधाबढै अरु बलबढै, मोटाहोइ शरीर ॥
चारिटकाभरि दीजिये, हरै शूलकी पीर ॥ २ ॥

अथ अन्य कुरकुरीकी औषधी ।

चौपाई—आधसेर [illegible] लावै । आधपाव दूनौं तौलावै ॥
कुकुरौंदेकी पाती लीजै । साँभर नमक ताहिमें दीजै ॥
पाव एक दूनौंले डारिये । पीसिकूटि जलमिलै पकैये ॥
सीर करस जब जानौ भाई । पाव एक गुड़ मीठ मिलाई ॥
नारि मराय पिआय सुदीजै । मिटै कुरकुरी शूल हरीजै ॥

अन्य ।

चौपाई—ऊँटाजूस सेर आधक लीजै । छुड़बच दुइ तोला करिदीजै ॥
एक छटाँक सहीजन छाली । जलमें पीसि देउ मुख घाली ॥

अन्य ।

चौपाई—बड़ीहरैंकी बकली लावै । कटुकाचिरैता पीसि मिलावै ॥
रसके शिरकासें सनवाई । तीनौं तीनि छटांक कराई ॥
पिंड बनाइ अश्वमुख नावै । शूल कुरकुरी नाश करावै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतसालावणनो
नामत्रिविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ अग्निपुराणे अध्याय २९० अश्वशांति शालहोत्र उवाच ।

श्लोक—अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्दनीम् ॥
नित्यां नैमित्तिकीं काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरञ्च श्रियमुच्चैः श्रवाश्च [illegible] ॥
हयराजं समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्धृतम् ॥ २ ॥
द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत् ॥
अश्वयुक्शुक्लपक्षस्य पञ्चदश्याञ्च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत् ॥
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४

घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान् दिक्षु दद्यात् सवस्त्रकान् ॥
यवाज्यं जुहुयात् प्राच्यं यजेदश्वांश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु ॥
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैः विष्णुं श्रियं यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माणं शङ्करं सोममादित्यञ्च तथाश्विनौ ॥
रेवन्तमुच्चैः श्रवसं दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुंभैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत् ॥
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान् देवतानां शतं शतम् ॥ ८ ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशांतिर्नाम नवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९० ॥

इति शालहोत्र संग्रह समाप्त ।

